301hi32

# 32

# विराटा की पद्मिनी

'विराटा की पद्मिनी' एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें एक दाँगी कन्या कुमुद के प्रेम और बलिदान की कहानी प्रस्तुत की गई है। इसके साथ ही इसमें बुंदेलखंड की वीरता, जुझारूपन, संस्कृति, प्राकृतिक सुषमा और वहाँ के जनजीवन का भी अंकन किया गया है। आइए, देखें कि उपन्यास में यह सब कैसे प्रस्तुत किया गया है।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- उपन्यास क्या है, स्पष्ट कर सकेंगे;
- उपन्यास और कहानी में अंतर बता सकेंगे;
- उपन्यास के तत्वों पर आधारित 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास का विश्लेषण कर सकेंगे;
- 'विराटा की पद्मिनी' की कथावस्तु के बारे में बता सकेंगे;
- उपन्यास के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण कर सकेंगे;
- उपन्यास की विषय-वस्तु और संदेश स्पष्ट कर सकेंगे;
- उपन्यास की भाषा-शैली और संवाद की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे;
- बुंदेलखंड के आंचलिक परिवेश पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- उपन्यास की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे;
- अच्छे संवादों को याद कर सकेंगे;

## क्रियाकलाप

आप फिल्म या टी.वी. पर धारावाहिक (सीरियल) अवश्च ही रुचि से देखते होंगे।

टिप्पणी

अपनी पसंद के किसी एक की प्रमुख घटनाएँ सूची बद्ध कीजिए। और प्रमुख पात्रों की सूची तथा चरित्र की दो-दो विशेषता लिखिए।

## 32.1 आइए समझें

### उपन्यास का परिचय

#### (क) कथा-कहानी तथा उपन्यास

**कथा** और **कहानी** शब्द से आप सुपरिचित है। बचपन से ही आप **कहानी** सुनते रहे हैं। कभी-कभी आप अपने से छोटे बच्चों को **कहानी** सुनाते भी होंगे। पर यदि कोई आपसे पूछ बैठे कि **कहानी** क्या है तो शायद आप बता न सकें। सबसे पहले तो आप यह जानें कि **कथा, कहानी, किस्सा** आदि शब्द प्रारंभिक तौर पर एक-दूसरे के पर्याय हैं। **प्रारंभिक तौर** पर इसलिए कि आज **कथा** और **कहानी** शब्दों के अर्थ में थोड़ा परिवर्तन हो गया है। पर इसे हम बाद में स्पष्ट करेंगे। पहले हम **कथा, कहानी या किस्सा** शब्दों के मूल अर्थ को समझ लें। **कथा** या **किस्सा** में तीन बातें प्रमुख होती हैं– **1. घटनाएँ, 2. समयानुक्रम और 3. उत्सुकता जगाने की शक्ति। घटना** का अर्थ तो आप जानते ही हैं: जो घटित हो वही **घटना** है। **समयानुक्रम** का अर्थ है काल की कड़ी: जैसे, सुबह-दोपहर-शाम-रात..... या आज-कल-परसों-नरसों.....आदि। जब घटनाएँ इस समयानुक्रम में गूँथ दी जाती हैं तब कथा बन जाती है। **जैसे–एक राजा था। वह बीमार पड़ा और मर गया। फिर उसकी रानी भी मर गई.....।** यह **कथा** का प्रारंभिक रूप है। पर यह कथा तभी कथा होगी जब घटनाओं में नयापन और कौतूहल पैदा करने का गुण हों। उदाहरण के लिए एक कथा लें, जो अक्सर माँ-बाप बच्चों को चिढ़ाने के लिए कहा करते हैं। **एक आँगन में बहुत-सी चिड़ियाँ दाना चुग रही थीं। उनमें से एक चिड़िया उड़ी फुर्र; फिर दूसरी चिड़िया उड़ी फुर्र; फिर तीसरी चिड़िया उड़ी फुर्र.. .....।** यदि इसी प्रकार एक-एक चिड़िया को फुर्र-फुर्र उड़ाया जाए तो यह कहानी नहीं कहलाएगी। सुनने वाला बच्चा भी 'धत्तेरे की' कह कर चलता बनेगा। अतः घटनाओं में नयापन और उत्सुकता पैदा करने की क्षमता होने पर ही कहानी कहानी बनती है।

मूलतः इसी **कथा, कहानी** या **किस्सा** से **कथा साहित्य** या **उपन्यास, कहानी** जैसी साहित्यिक विधाओं का विकास हुआ है। फिलहाल हिंदी में 'कथा साहित्य' व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होने वाला साहित्यिक पद है। इसके अंतर्गत सभी तरह की लिखित और काल्पनिक **गद्य कथाएँ, उपन्यास, कहानी, लघु कथा** आदि आते हैं। यहाँ फिर **कहानी** और **लघु कथा** पद आपको भ्रमित कर सकते हैं। यह हमेशा याद रखें कि प्राथमिक अर्थ देने वाला **कहानी** शब्द और साहित्यिक विधा के रूप में प्रयुक्त होने वाला **कहानी** शब्द, दोनों एक-दूसरे से भिन्न हैं। **लघु कथा** पद का प्रयोग भी एक खास अर्थ में होता है।

#### उपन्यास का अर्थ

पर सबसे पहले हम **उपन्यास** पद का अर्थ जानने की कोशिश करें। हिंदी और बँगला में **उपन्यास** पद का प्रयोग अंग्रेज़ी के **नॉवेल** के अर्थ में होता है। यहाँ हम **उपन्यास**

के व्युत्पत्तिपरक या ऐतिहासिक अर्थ पर विचार न कर उसके स्वरूप को ही समझने की कोशिश करें। इस संबंध में पहली जानने की बात यह है कि उपन्यास कथा से भिन्न होने पर भी कथा से मुक्त नहीं होता। उपन्यास में कथा **अवश्य** होती है, चाहे उसकी **मात्रा** या **रूप** जो रहे। एक मानक उपन्यास में **कथा** की मात्रा तो कम होती ही है, उसका रूप भी भिन्न हो जाता है। पहली बात तो यह होती है कि **घटना** का स्थान **कार्यव्यापार** ले लेता है। घटना में आकस्मिकता और चौंकाने वाले तत्त्व ज़्यादा होते हैं, जबकि **कार्यव्यापार** जीवन में सामान्य रूप से घटित होने वाले कार्य होते हैं। एक उदाहरण से इस अंतर को समझिए। रेल दुर्घटना या बैंक में डकैती **घटना** है, जबकि दोस्तों में कहासुनी हो जाना या किसी को उसके जन्मदिन पर उपहार देना **कार्यव्यापार** है। कथा में घटनाएँ प्रमुख होती हैं, जबकि उपन्यास में कार्यव्यापारों की योजना की जाती है।

**कथा** और **उपन्यास** में दूसरा प्रमुख अंतर यह है कि कथा में समयानुक्रम सीधा चलता है, जैसे आज, कल, परसों, नरसों..... आदि। पर एक मानक उपन्यास में समयानुक्रम सीधा नहीं होता। वहाँ उसका क्रम बदल कर नरसों, आज, परसों, कल.....या इसी तरह का कुछ और हो जाता है। उपन्यास में कोई ज़रूरी नहीं कि पहले पात्रों का परिचय दिया जाए। हो सकता है कि शुरू में कुछ पात्रों के कार्यकलाप और वार्तालाप आपके सामने आएँ और उनका परिचय आपको बाद में तथा धीरे-धीरे मिले। 'विराटा की पद्मिनी' को ही देखें। शुरू में पहूज नदी में स्नान करने लिए आए राजा नायक सिंह और उनके दरबारियों, जनार्दन शर्मा, लोचन सिंह, सैयद आगा हैदर, कुंजर सिंह आदि के क्रियाकलाप और वार्तालाप हैं। पात्रों का परिचय न के बराबर मिलता है। बाद में धीरे-धीरे इन पात्रों का पूरा परिचय प्राप्त होता है। पर समयानुक्रम का उलटफेर मानक उपन्यास में ज़रूर ही होता है। **कथा** में ऐसा नहीं होता।

तो, इतना तो आप अब तक समझ ही गए होंगे कि उपन्यास में एक **लिखित गद्य कथा** ज़रूर होती है, भले ही **कथा** की मात्रा जितनी कम हो अथवा कालक्रम में चाहे जितना उलटफेर किया गया हो।

## कथा का स्वरूप

**कथा** के संबंध में एक और बात उल्लेखनीय है। कथा **वास्तविक** भी हो सकती है और **काल्पनिक** भी। वास्तव में जो घटित होता है और जिसके घटित होने का कोई प्रमाण या साक्ष्य होता है, वह **तथ्य** या **सच्ची घटना** कही जाती है। **इतिहास** या **जीवनी** की घटनाएँ और पात्र **तथ्य** या **सच्चे** होते हैं। इतिहास और जीवनी भी **गद्य कथा** तो है, पर वे उपन्यास नहीं हैं, क्योंकि उपन्यास के लिए जरूरी है कि उसमें आई कथा कल्पना से उत्पन्न हो।

पर, कथा के **कल्पनाप्रसूत** (कल्पना से उत्पन्न) होने का यह अर्थ नहीं कि यह यथार्थ न हो। केवल तथ्य या सच्ची घटनाएँ ही यथार्थ नहीं होतीं। काल्पनिक कथा भी यथार्थ हो सकती है। उदाहरण के लिए यदि किसी कथा में किसी मनोज नामक सज्जन के दुष्टों के चक्कर में पड़कर दुख झेलने का वर्णन आता है तो इसे काल्पनिक भले कहा जाए, **अयथार्थ** नहीं कहा जा सकता। क्योंकि भले ही मनोज और क–ख–ग नामधारी पुरुष वास्तव में न हों और उनकी कथा भी सच में न घटी

टिप्पणी

हो, पर अपने अनुभव से हम जानते हैं कि वैसी घटनाएँ जीवन में घटित होती हैं। इस प्रकार जिन घटनाओं या कथा के घटित होने की **संभावना** होती है, वे तथ्य न होने पर भी यथार्थ होती हैं। अतः यह ध्यान रखिए कि उपन्यास में आने वाली कथा कल्पनाप्रसूत होने पर भी यथार्थ होती है।

## ऐतिहासिक और जीवनीपरक उपन्यास में अंतर

यहाँ आपके मन में एक सवाल पैदा हो सकता है। यदि उपन्यास में आई कथा केवल कल्पनाप्रसूत होती है तो **ऐतिहासिक उपन्यास** या **जीवनीपरक उपन्यास** में कथा का रूप क्या होगा? इसका उत्तर यह है कि **ऐतिहासिक उपन्यास** अथवा **जीवनीपरक उपन्यास** में भी कथा कल्पनाप्रसूत ही होती है। फर्क केवल यह होता है कि **ऐतिहासिक उपन्यास** में इतिहास का आधार लिया जाता है और **जीवनीपरक उपन्यास** में किसी ऐतिहासिक व्यक्ति की जीवनी का। इसे यों समझने की कोशिश करें। मान लीजिए, आपके सामने प्रसिद्ध मुगल सम्राट अकबर के काल भी प ष्ठभूमि पर लिखा हुआ कोई **ऐतिहासिक उपन्यास** है, जिसमें अकबर, बीरबल, अबुल फ़ज़ल, सलीम, जोधाबाई आदि ऐतिहासिक पात्र भी हैं। उल्लेखनीय बात यह है कि उपन्यासकार इतिहास में वर्णित घटनाओं का पुनर्लेखन नहीं करता। ऐसा होने पर वह उपन्यास न होकर इतिहास बन जाएगा। उपन्यासकार ऐतिहासिक पात्रों के चरित्रों का पुनर्निमाण करता है। अर्थात् वह अकबर, बीरबल आदि पात्रों के चरित्र के उस आंतरिक पक्ष का, मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक पहलू का उद्घाटन करता है जिसका इतिहास में संक्षिप्त उल्लेख या संकेत मात्र होता है। वह ध्यान केवल इस बात का रखता है कि उसके द्वारा निर्मित अकबर, बीरबल या किसी दूसरे ऐतिहासिक स्त्री-पुरुष का चरित्र इतिहास में दिए गए तथ्यों के प्रतिकूल न हो। उपन्यासकार ऐतिहासिक व्यक्तियों के जीवन में घटित प्रसिद्ध घटनाओं को भी, जैसे उनके युद्धों, संधियों, शासन, विद्रोह, दमन आदि को अधिक महत्त्व देने को बाध्य नहीं है। उसका उद्देश्य इतिहास-पुरुषों के काल का ऐतिहासिक यथार्थ प्रस्तुत करना होता है। अर्थात् उस समय का जन-जीवन, संस्कृति, रीतिरिवाज़, विचारधारा, मनोभाव आदि कैसे थे, इसका अंकन करना उसका मुख्य लक्ष्य होता है। एक अच्छा **ऐतिहासिक उपन्यास** वही माना जाता है जिसमें इतिहास में वर्णित तथ्य कम-से-कम और **युग-सत्य** तथा **इतिहास-बोध** अधिक-से-अधिक हो।

यदि हम इसे गणित की भाषा में प्रस्तुत करें तो कहेंगे कि ऐतिहासिक उपन्यास की कथा एच+एक्स के रूप में होती है। इसमें **एच** (H) तो इतिहास का प्रतीक है जिसमें उपन्यासकार कोई भी परिवर्तन नहीं कर सकता। अधिक से अधिक वह उसे छोटा या हल्का कर सकता है। सूत्र का **एक्स** (X) कथा का कल्पना वाला पक्ष है जिसके अनंत रूप संभव हैं। वह अनुपात में भी बड़ा होता है और रूप में भी। यही उपन्यास का मुख्य पक्ष है। 'विराटा की पद्मिनी' को ही लें। यह इतिहास की किताब नहीं है। इसमें इतिहास का अंश भी कम ही है। दूसरी तरफ इसमें ऐतिहासिक यथार्थ का, उस काल में बुंदेलखंड की आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, वैचारिक, मनोवैज्ञानिक अवस्था आदि का अधिक चित्रण है। इसमें इतिहास कम, ऐतिहासिक यथार्थ पर आधारित कल्पना अधिक है।

टिप्पणी

जीवनीपरक उपन्यास पर भी यही बात लागू होती है। उदाहरण के लिए आप **हजारी प्रसाद द्विवेदी** के **'बाणभट्ट की आत्मकथा'** या **अम त लाल नागर** के **'मानस का हंस'** को लें। हमें विश्वास है कि आपने ये उपन्यास पढ़े होंगे। यदि अब तक न पढ़ें हों तो आशा है भविष्य में आपको इन्हें पढ़ने का मौका ज़रूर मिलेगा। **'बाणभट्ट की आत्मकथा'** में प्रसिद्ध संस्कृत गद्य लेखक **बाणभट्ट** की और **'मानस का हंस'** में **गोस्वामी तुलसीदास** की जीवनी को आधार बनाया गया है। उनके जीवन के संबंध में जितनी बातें इतिहास या किवदंतियों से ज्ञात हैं उन्हें तो उपन्यासकारों ने ग्रहण कर लिया है, पर उनके आधार पर अपनी कल्पना को उन्होंने खूब स्वतंत्रता दी है। ध्यान केवल इस बात का रखा गया है कि कल्पनाजन्य कोई भी प्रसंग या विचार उस युग की भावना या यथार्थ का विरोधी न हो। यदि कोई प्रसंग विशुद्ध रूप से कल्पित भी है तो इसका तर्कसंगत होना आवश्यक है।

आशा है आप अब ऐतिहासिक उपन्यास के कल्पनाप्रसूत कथा-संसार का अर्थ अच्छी तरह समझ गए होंगे। सूत्र रूप में इसे यों भी रख सकते हैं:

(क) सामान्य उपन्यास का कथा-संसार विशुद्ध रूप से कल्पनाजन्य होता है। उसके पात्र सर्वथा कल्पित होते हैं। स्थानों के नाम वास्तविक भी हो सकते हैं और काल्पनिक भी। स्थानों के विवरण में तथ्य और कल्पना दोनों का मिश्रण संभव है। कभी-कभी सड़कों, गलियों और मकानों के नाम तथा नंबर तो वास्तविक होते हैं पर उनमें रहने वाले पात्र काल्पनिक ही होते हैं।

(ख) ऐतिहासिक उपन्यास की कथा इतिहास पर आधारित होती है, पर उसमें इतिहास का अंश बहुत कम होता है। उपन्यासकार इतिहास के पात्रों और घटनाओं में कोई परिवर्तन नहीं करता, पर पात्रों के भावजगत, मनोविज्ञान, विचारधारा आदि का अपनी कल्पना से निर्माण करता है। वह गौण पात्रों की कल्पना से स ष्टि करके ऐतिहासिक युग के यथार्थ का उद्घाटन करता है।

## उपन्यास का आकार

सामान्य उपन्यास और ऐतिहासिक उपन्यास के अंतर को समझ लेने के बाद अब यह जानना भी जरूरी जान पड़ता है कि कोई उपन्यासकार उपन्यास क्यों लिखता है। उपन्यास में उसका रचयिता अपने अनुभवों, संवेदनाओं और विचारों को व्यक्त करना चाहता है। वस्तुतः अनुभव, संवेदना और विचार की नवीनता और मौलिकता के कारण ही उपन्यास में नयापन आता है, जिससे अंग्रेज़ी शब्द नॉवेल की सार्थकता बनती है। उपन्यास पद में 'नएपन' का संकेत न होने पर भी यह विशेषता उसमें अंतर्निहित है।

उपन्यास का आकार कितना बड़ा हो, इसका निर्धारण आज तक नहीं हो सका है। यह संभव भी नहीं है। **ई. एम. फोर्स्टर** नामक अंग्रेज़ विचारक ने उपन्यास के लिए कम-से-कम पचास हजार शब्दों के आकार का सुझाव दिया है। पर इस शब्द-संख्या पर उनका भी अधिक ज़ोर नहीं है। यह शब्द-संख्या कम भी हो सकती है, पर कितनी कम, इसका निर्णय करना कठिन है। अतः उन्होंने यह कहकर संतोष किया है कि उपन्यास का आकार पर्याप्त लंबा होना चाहिए।

## उपन्यास की परिभाषा

अब तक के विचार-विमर्श के आधार पर हम उपन्यास की एक कामचलाऊ परिभाषा

टिप्पणी

भी बना सकते हैं। आइए, कोशिश करें। अब तक उपन्यास की निम्नलिखित विशेषताएँ हमारे सामने आ चुकी हैं:

1. उपन्यास में एक **कथा** होती है।
2. कथा **गद्य** में, और **लिखितरूप** में होती है।
3. कथा कल्पनाप्रसूत होती है।
4. कथा यथार्थ होती है।

इन विशेषताओं को एक साथ जोड़ें तो हम यह कह सकते हैं कि उपन्यास पर्याप्त आकार की एक लिखित और कल्पनाप्रसूत किंतु यथार्थ-बोध से संपन्न कथा होती है, जिसमें उपन्यासकार का अनुभव, संवेदना और विचार, मौलिकता के साथ अभिव्यक्त होते हैं। कृपया आप यह मानने की भूल न करें कि यह उपन्यास की कोई सर्वमान्य परिभाषा है। वस्तुतः आज तक उपन्यास की कोई सर्वमान्य परिभाषा बनी ही नहीं है। पर इस कामचलाऊ परिभाषा से आप पुस्तकों के ढेर में उपन्यास की पहचान तो कर ही सकते हैं।

## (ख) उपन्यास और कहानी में अंतर

पहले हम यह समझ लें कि यहाँ **कहानी** पद का प्रयोग **कथा** या **किस्सा** के रूप में नहीं किया जा रहा। **कहानी** एक आधुनिक साहित्यिक विधा है। अंग्रेज़ी में इसे **शॉर्ट स्टोरी** कहते हैं। हिंदी में भी इसके लिए 'छोटी कहानी' पद का कभी-कभी प्रयोग होता है, पर अधिक प्रचलन **कहानी** पद का ही है। इसके चलते कभी-कभी शुद्ध 'कथा' और 'कहानी' विधा में अर्थ का भ्रम भी होता है। इसलिए इस संबंध में विशेष सावधानी बरतने की ज़रूरत है।

उपन्यास और कहानी (अंग्रेज़ी की शार्ट स्टोरी) दोनों एक ही प्रजाति की साहित्य की विधाएँ हैं। कल्पनाप्रसूत, यथार्थ गद्य कथा दोनों में होती है। अनुभव, संवेदना और विचार की अभिव्यक्ति की द ष्टि से भी दोनों समान हैं। पर दोनों में परस्पर भिन्नता भी है। पहली प्रमुख भिन्नता उनके आकार को लेकर है। उपन्यास का आकार बड़ा होता है, कहानी का छोटा, पर बड़ा और छोटा सापेक्ष शब्द हैं। इन्हें एक-दूसरे से अलग करने वाली कोई निश्चित रेखा नहीं है। उपन्यास के लिए यदि निम्नतम सीमा पचास हजार शब्दों के आसपास की और कहानी के लिए अधिकतम सीमा एक हजार-पाँच सौ शब्दों के आसपास की मान ली जाए (यद्यपि यह भी विवादास्पद ही होगा) फिर भी 1,500 और 50,000 शब्दों के बीच की कथा-पुस्तक को कौन-कौन सा नाम दिया जाएगा, यह मुश्किल बनी ही रहेगी। 'लंबी कहानी' और 'लघु उपन्यास' के नाम से जानी जाने वाली विधाएँ इस बीच के साहित्य-रूप का प्रतिनिधित्व करती हैं। पर, ये भी **उपन्यास** और **कहानी** के आकार का कोई विवादरहित समाधान नहीं प्रस्तुत कर पातीं। अतः **उपन्यास** और **कहानी** के आकार की समस्या को तरल अवस्था में ही छोड़ देना अच्छा होगा। पर यह तो मानना ही पड़ेगा कि उपन्यास आकार की द ष्टि से 'बड़ा' और कहानी 'छोटी' होती है। **उपन्यास** और **कहानी** को एक-दूसरे से अलग करने वाली सर्वप्रमुख विशेषता उनके केंद्रीय विषय का स्वरूप है। एक मानक उपन्यास का केंद्रीय विषय प्रायः व्यापक होता है, जबकि एक मानक 'कहानी' का विषय कोई एक संवेदना, कोई एक अनुभव या

टिप्पणी

कोई एक विचार होता है। उपन्यास में अनुभवों, संवेदनाओं और विचारों की श ंखला होती है, जबकि कहानी में उसकी एक ही इकाई रहती है।

**उपन्यास** और **कहानी** का दूसरा प्रमुख अंतर यह है कि मानक उपन्यास में कथा का विकास होता है, जबकि मानक 'कहानी' में कथा का विकास नहीं दिखाया जाता। विकास यदि दिखाई भी पड़ता है तो बहुत थोड़ा। उपन्यास में समय का विस्तार तो होता ही है, जबकि कहानी में समय या तो किसी क्षण तक सीमित होता है या उसका प्रसार कुछ घंटों या दिनों तक सीमित होता है। इसी प्रकार उपन्यास की कथा, समय या दिन की सीमा कई दिशाओं में फैली हुई होती है, जिसकी गुंजाइश 'कहानी' में नहीं होती।

इसी से मिलता-जुलता **उपन्यास** और **कहानी** का एक अंतर यह है कि उपन्यास में एक साथ कई कथाएँ अग्रसर होती हैं तथा उनमें अनेक प्रसंग होते हैं। 'कहानी' में अनेक कथाओं की बात तो अलग है, अनेक प्रसंग भी नहीं हो सकते। कहानी के लिए एक ही प्रसंग, यहाँ तक कि एक ही क्रिया-व्यापार काफ़ी होता है।

आशा है, आप अब **उपन्यास** और **कहानी** का अंतर समझ गए होंगे। संक्षेप में इसे दोहरा लें तो अच्छा हो।

### समानताएँ

(क) उपन्यास और कहानी एक ही प्रजाति की विधाएँ हैं।

(ख) दोनों गद्य में लिखे जाते हैं।

(ग) दोनों में किसी-न-किसी रूप में कथा होती है।

(घ) दोनों जीवन के यथार्थ से जुड़े हैं।

(ङ) दोनों लेखक के अनुभव, संवेदना और विचार की अभिव्यक्ति करते हैं।

### अंतर

(क) उपन्यास की कथा लंबी और वैविध्यपूर्ण होती है।

(ख) उपन्यास की कथा काल और दिनों में फैली हुई होती है, जबकि कहानी की कथा किसी क्षण अथवा कुछ घंटों और प्रायः एक स्थान अथवा बहुत छोटे क्षेत्र से जुड़ी होती है।

(ग) उपन्यास में कथा का विकास होता है, जबकि 'कहानी' में कथा का विकास नहीं होता, अथवा बहुत कम विकास होता है।

(घ) उपन्यास में एक से अधिक कथाएँ और अनेक प्रसंग होते हैं जबकि 'कहानी' में एक से अधिक कथाओं की बात तो दूर रही, प्रसंग भी एक ही होता है। यदि किसी कहानी में एक से अधिक प्रसंग होते भी हैं तो वे मुख्य प्रसंग के अभिन्न अंग के रूप में होते हैं।

(ङ) उपन्यास का केंद्रीय विषय व्यापक और बहुआयामी होता है, जबकि 'कहानी' का कोई एक अनुभव, संवेदना या विचार ही पर्याप्त होता है।

## 32.2 उपन्यास का पठन

सर्वप्रथम हम यह जान लें कि उपन्यास कैसे पढ़ना चाहिए। जब भी हमारे सामने कोई किताब आती है तो वह कुछ छपे हुए प ष्ठों के संग्रह के रूप में ही होती है। प ष्ठों पर

टिप्पणी

मुद्रित शब्द होते हैं, जो वाक्यों में निबद्ध होते हैं। शब्दों की क्रम-भिन्नता के कारण गद्य और काव्य के वाक्यों में भिन्नता आ जाती है। इस भिन्नता के और भी कारण होते हैं, जिन्हें आप पिछले पाठों में पढ़ चुके हैं। यह तो आप जानते ही हैं कि कुछ रचनाएँ गद्य में होती हैं और कुछ काव्य अथवा कविता में। गद्य में वाक्यों की बनावट हमारे लिए सुपरिचित होती है, क्योंकि हम अपनी दैनिक बातचीत में भाषा के गद्यरूप का ही प्रयोग करते हैं। काव्य में वाक्यों की बनावट गद्य से भिन्न होती है। इस कारण गद्य और काव्य पढ़ने के तरीके भी एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं। उपन्यास गद्य में होता है, अतः उसमें आए वाक्यों का अर्थ समझने में अधिक कठिनाई नहीं होती। उपन्यास में कठिन या अपरिचित शब्दों का प्रयोग प्रायः कम होता है। इस कारण भी उसे समझने में कम कठिनाई होती है। कथा के कारण भी उपन्यास पढ़ना आसान और सुखद होता है।

इसका यह अर्थ नहीं कि उपन्यास पढ़ने के लिए किसी विशेष योग्यता की ज़रूरत नहीं पड़ती। हमें यह याद रखना चाहिए कि उपन्यास और कथा दोनों एक नहीं है। कथा पढ़ने के लिए अधिक योग्यता की ज़रूरत नहीं पड़ती। उपन्यास पढ़ने के लिए कुछ अधिक योग्यता चाहिए। उपन्यास पढ़ना भी एक सर्जनात्मक क्रिया है। उपन्यासकार अपनी रचना में एक कथा-संसार का निर्माण करता है। यह निर्माण शब्दों के माध्यम से होता है। ये ही शब्द मुद्रित होकर पुस्तक का रूप धारण करते हैं। उपन्यास के रूप में ऐसी ही एक किताब आपके हाथों में है। छपे हुए प ष्ठों के पठन से ही आपका मस्तिष्क एक कथा-संसार का निर्माण करता है। वस्तुतः उपन्यास पढ़ते समय आप भी एक रचनाकार होते हैं। यदि आपमें यह सर्जन-क्षमता न होती तो आपके मानस में इस कथा-संसार का निर्माण होता ही नहीं, उदाहरण के लिए आप अपनी ही उम्र के किसी नवसाक्षर को 'विराटा की पद्मिनी' पढ़ने को कहें। वह उसे नहीं पढ़ पाएगा और यदि किसी प्रकार पढ़ भी ले तो उसके पल्ले कुछ भी न पड़ेगा। इसका कारण यह है कि उसका मस्तिष्क उतना विकसित नहीं है कि वह छपे शब्दों के द्वारा कथा-संसार की रचना कर सके।

जब आप कोई उपन्यास पढ़ना शुरू करते हैं तो आपके मस्तिष्क में या तो कोई कथा प्रस्तुत होती है या कोई द श्य उभरता है। आप अनुभव करते हैं कि कोई अद श्य कथाकार आपको कोई कथा सुना रहा है। आपके मानस-पटल पर किसी एक या एकाधिक पात्रों की कथा उभरती चली जाती है। कुछ देर के बाद आप अनुभव करते हैं कि कोई द श्य आपके सामने है, जिसमें कथा के कुछ पात्र आपस में बातचीत कर रहे हैं। बातचीत के समय उनके हाव-भाव और क्रिया-व्यापार का बिंब भी शब्दों के द्वारा बनता दिखाई देता है, पर कथा कहने वाला बिल्कुल गायब है, रंगमंच के पीछे, नेपथ्य में चला गया है। यह सिलसिला पूरे उपन्यास में चलता रहता है। पर कथा के प्रवाह में आप इस प्रकार बहते रहते हैं कि इस परिवर्तन का आपको पता भी नहीं चलता। भविष्य में आप जब भी कोई उपन्यास पढ़ें तो इस बात पर अवश्य ध्यान दें कि कहाँ कोई अद श्य कथाकार आपको कथा सुना रहा है और कहाँ आप बिना कथाकार की उपस्थिति का बोध किए किसी द श्य को अपने मन की आँखों से देख रहे हैं।

उपन्यास पढ़ते हुए एक और बात का ध्यान रखना ज़रूरी है। अधिकतर उपन्यासों में

एक साथ कई कथाएँ अग्रसर होती हैं। उनमें कोई एक कथा मुख्य होती है और अन्य कथाएँ गौण। मुख्य कथा को **आधिकारिक** कथा भी कहते हैं। गौण कथाएँ भी उपन्यास के विषय से संबद्ध होती हैं। वे कभी तो मुख्य कथा में समाप्त होती हैं और कभी मुख्य कथा के साथ अंत तक चलती रहती हैं। उपन्यासकार किसी एक कथा को लगातार कई परिच्छदों में नहीं प्रस्तुत करता। यदि उपन्यास में तीन कथाएँ हैं तो वे प्रायः पहले तीन परिच्छेदों में अलग-अलग प्रस्तुत की जाती हैं। अगले परिच्छेदों में उनका बारी-बारी से विकास दिखाया जाता है। प्रथम परिच्छेद की कथा यदि चौथे, छठे, सातवें, नवें.....परिच्छेदों में अग्रसर होती है तो दूसरे परिच्छेद की कथा पाँचवें, आठवें, दसवें.....परिच्छेदों में और तीसरे परिच्छेद की कथा क्रमशः ग्यारहवें, बारहवें..... .....परिच्छेदों में प्रस्तुत की जा सकती है। पर इसका कोई निर्धारित और स्थिर नियम नहीं है। विभिन्न कथाओं के महत्त्व के अनुपात में उनका परिच्छेदों में वितरण होता है। आपको उपन्यास पढ़ते समय सावधानी यह बरतनी है कि जब कोई कथा पहले या दूसरे परिच्छेद में समाप्त होकर चौथे या पाँचवे परिच्छेद में फिर शुरू होती है तो उनका संबंध स्थापित करने में कोई चूक न हो। दरअसल आपको अपने मस्तिष्क को सतर्क रखना होगा कि वह एक से अधिक कथाओं को साथ-साथ, युगपत रूप में अग्रसर होता हुआ अनुभव करे। इसे पारिभाषिक शब्दावली में **युगपत कथा संक्रमण प्रविधि** कहते हैं, जो प्रायः सभी उपन्यासों में पाई जाती है।

उपन्यास में अनेक पात्र होते हैं। पूरी कथा को समझने के लिए पात्रों का नाम स्मरण रखना जरूरी होती है। यदि आप अपनी स्मरण शक्ति से पात्रों के नाम याद रख सकें तो बहुत अच्छा, अन्यथा पात्रों के नाम किसी कागज पर लिखते जाएँ और जब उनकी कथा अगले परिच्छेदों में आए तो कथा की संगति जोड़ लें। पात्र क्या बोलते हैं या मन में क्या सोचते हैं, इसे भी स्मरण रखने की कोशिश करें, ताकि उनके चरित्रों को समझने में सहायता मिले। पर इस बात को कभी न भूलें कि उपन्यास स्वस्थ मनोरंजन का साधन है। अतः सहज रीति से पढ़ें और उसका आनंद लें। दूसरी बार, जब उपन्यास का विवेचन और मूल्यांकन करना हो, उसे अधिक सतर्कतापूर्वक, आलोचनात्मक द ष्टि से पढ़ें और उस पर अपने विचार व्यक्त करें। दूसरी बार के पठन में यदि कागज पेंसिल का इस्तेमाल करें और अपनी प्रतिक्रियाएँ लिखते जाएँ तो उपन्यास के विवेचन-मूल्यांकन में सहायता मिलेगी।

## 32.3 मूलपाठ

आइए, 'विराटा की पद्मिनी' नामक उपन्यास के मूलपाठ का एक बार वाचन कर लें। इसकी भाषा-शब्द और वाक्य-रचना प्राचीन समय की बुंदेलखंडी है, जो आज की भाषा से भिन्न है। इस उपन्यास को अध्ययन की सुविधा की द ष्टि से चार इकाइयों में विभाजित किया गया है और बीच में कुछ पाठगत प्रश्न दिए गए हैं यदि आप उनके उत्तर दे देते हैं और उत्तरमाला से मिलान करने पर सही पाते हैं तो बहुत अच्छा है और यदि नहीं दे पाते तो निराश न हों इकाई को पुनः ध्यान से पढ़िए और सही उत्तर देने का प्रयास कीजिए। तो आइए, उपन्यास को एक बार ध्यानपूर्वक पढ़ जाते हैं।

टिप्पणी

# 'विराटा की पद्मिनी'

## खंड-एक

मकर-संक्रांति के स्नान के लिए दलीप नगरी के राजा नायक सिंह पहूज में स्नान करने के लिए विक्रमपुर आए। विक्रमपुर पहूज नदी के बाएँ किनारे पर बसा हुआ था। नगर छोटा-सा था, परंतु राजा और राजसी ठाठ-बाठ के इकट्ठे हो जाने से चहल-पहल और रौनक बहुत हो गई थी।

दूसरे दिन दोपहर के समय स्नान का मुहूर्त था। राजा के कुछ दरबारी संध्या के उपरांत राजभवन में मुज़रा के बहाने गपशप के लिए आ गए। जनार्दन शर्मा मंत्री न था, तथापि राजा उसे मानते बहुत थे। वह भी आया।

राजा ने जनार्दन से कहा, 'पहूज में तो पानी बहुत कम है। डुबकी लगाने के लिए पीठ के बल लेटना पड़ेगा।'

**नायक सिंह का पहूज में स्नान**

'हाँ महाराज,' जनार्दन ने सकारा, 'पानी मुश्किल से घुटनों तक होगा। थोड़ी दूर पर एक कुंड है, यदि मर्जी हो तो उसमें स्नान हो।' अधेड़ अवस्था का दरबारी लोचन सिंह, जो अपने सनकी स्वभाव के लिए विख्यात था, बोला, 'दो हाथ के लंबे-चौड़े उस कुंड में डुबकी लगाकर कीचड़ उछालना होली के हुल्लड़ से कम थोड़े ही होगा।'

जिस समय लोचन सिंह राजा के सामने बातचीत करने के लिए मुँह खोलता था, अन्य दरबारियों का सिर घूमने लगता था। लोचन सिंह की बात पर राजा ने गरम होकर कहा, 'तब तुम सबको कल कोस-भर नदी खोद कर गहरी करनी पड़ेगी।

लोचन सिंह बोला, 'मैं अपनी तलवार की नोंक से कोस-भर तो क्या बेतवा को भी खोद सकता हूँ हुक्म-भर हो जाए।'

राजा का कोप तो कम न हुआ, परंतु खीज बढ़ गई। सैयद आगा हैदर राजवैद्य एक सावधान दरबारी था। मौका देखकर बोला 'महाराज की तबीयत कुछ दिनों से खराब है। धार्मिक कार्य थोड़े जल से भी पूरा किया जा सकता है। अगर मुनासिब समझा जाए, तो गहरे, ठंडे पानी में देर तक डुबकी न ली जाए।

लोचन सिंह तुरंत बोला, 'जितना पानी इस समय पहूज में है, वह बीमारी को सौ गुना कर देने के लिए काफ़ी है।'

राजा ने द ढ़तापूर्वक कहा, 'यही तो देखना है लोचन सिंह। बीमारी बढ़ जाए तो हकीमजी के हुनर की परख हो जाए और यह भी मालूम हो जाए कि तुम मुझे पानी में एक हजार डुबकियाँ लगाने से कैसे रोक सकते हों?'

लोचन सिंह बोला, 'हकीमजी का कहना न मानकर जब महाराज को डुबकी लगाने पर उतारू देखूँगा, तब अपना गला काट कर उसी जगह डाल दूँगा, फिर देखा जाएगा।'

लोचन सिंह की सनक से राजा की भड़क का ज्वार बढ़ा। बोला, 'शर्माजी, पहूज में स्नान न होगा। उसमें पानी नहीं है। पहले तुमने नहीं बतलाया, नहीं तो उस कंबख्त नदी की तरफ सवारी न जाती।'

'महाराज!' जनार्दन ने सकपका कर कहा, 'मुझे स्वयं पहले से मालूम न था।'

राजा बोले, 'बको मत। तुम्हारे षड्यंत्रों को खूब समझता हूँ। कुंजर सिंह को बुलाओ।

**शब्दार्थ:**

**मकर-संक्रांति**– माघ महीने में 14 जनवरी को मनाया जाने वाला पर्व संक्रांति, जब सूर्य उत्तरायण होता है। उस दिन लोग नदियों में स्नान करते हैं और मेला लगता है।

**पहूज** – बुंदेलखंड की एक नदी

**मुहूर्त** – कार्य हेतु निश्चित किया हुआ विशिष्ट समय।

टिप्पणी

**कुंजर सिंह का आगमन**

कुंजर सिंह राजा की दासी का पुत्र था। वह राज्य का उत्तराधिकारी न था, तो भी राजा उसे बहुत चाहते थे। राजा के दो रानियाँ थीं। बड़ी रानी उसे चाहती थी, इसलिए छोटी का उस पर प्यार न था। राजा बहुत व द्ध न हुए थे। इधर-उधर के कई रोगों के होते हुए भी राजवैद्य ने आशा दिला रखी थी कि उत्तराधिकारी उत्पन्न होगा। इसलिए राजा ने दूसरा विवाह भी कर लिया था और दासियों को बढ़ाने की प्रव त्ति में भी, चाहे पागलपन से प्रेरित होकर चाहे किसी प्रेरणावश, बहुत अधिक कमी नहीं हुई थी।

कुंजर सिंह आया। बीस-इक्कीस वर्ष का सौंदर्यमय बलशाली युवा था। राजा ने उसे अपने पास बिठा कर कहा, 'कल पहूज में स्नान न होगा। उसमें पानी नहीं है। हमको व्यर्थ ही यहाँ लिवा लाए।'

आत्मरक्षा में हकीम को कहना पड़ा, 'थोड़ी देर के स्नान से कुछ नुकसान न होगा।' राजा बोले, 'तब पालर की झील में डुबकी लगाई जाएगी, बड़े सवेरे डेरा पालर पहुँच जाए।'

पालर ग्राम विक्रमपुर से चार कोस की दूरी पर था। चारों ओर पहाड़ों से घिरी हुई पालर की झील में गहराई बहुत थी। उसमें डुबकियाँ लगाने के परिणाम का अनुमान करके आगा हैदर काँप गया। बोला, 'ऐसी मर्जी न हो। झील बहुत गहरी है और उसका पानी बहुत ठंडा है।'

'और तुम्हारी दवा घूरे पर फेंकने लायक।' राजा ने हँसकर और तुरंत गंभीर होकर कहा, 'तुम्हारे कुश्त में कुछ गुण होगा और तुम्हारी शेखी में कुछ सच्चाई, तो झील में नहाने से कुछ न बिगड़ेगा।'

जनार्दन विषयांतर के प्रयोजन से बोला, 'अन्नदाता, सुना जाता है पालर में एक दाँगी के घर दुर्गाजी ने अवतार लिया है। सिद्धि के लिए उनकी बड़ी महिमा है।'

'तुमने आज तक नहीं बतलाया?' राजा ने कड़क कर पूछा और तकिए पर अपना सिर रख लिया।

लोचन सिंह ने उत्तर दिया, 'सुनी हुई खबर है। गलत निकलती है तो कहने वाले को यों ही अपने सिर की कुशल के लिए चिंता करनी पड़ती।'

राजा ने जनार्दन से प्रश्न किया, 'इस अवतार को हुए कितने दिन हो गए?'

'—सुनता हूँ, अन्नदाता, कि वह लड़की अब सोलह-सत्रह वर्ष की है।' जनार्दन ने राजा को प्रसन्न करने के लिए उत्तर दिया, 'पालर में तो उसके दर्शनों के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं।'

## खंड-दो

दूसरे दिन राजा ने पालर की विशाल झील में, जो आजकल गढ़मऊ की झील के नाम से विख्यात है, खूब स्नान किया। स्नान करने के बाद कुंजर सिंह को उक्त अवतार के दर्शन की लालसा हुई। पंद्रह-सोलह वर्ष पहले नरपति सिंह दाँगी के घर लड़की उत्पन्न हुई थी। जब वह गर्भ में थी, उसकी माँ विचित्र स्वप्न देखा करती थी। लड़की के उत्पन्न होने पर पिता को ऐसा जान पड़ा मानो प्रकाशपुंज ने घर में जन्म लिया हो। उसकी माँ लड़की को जन्म देने के कुछ मास उपरांत मर गई।

**शब्दार्थः**

**कुश्त** – घूरे, कूड़े का ढेर
**विषयांतर** – विषय परिवर्तन
**दाँगी** – बुंदेलखंड की एक विशेष जाति
**विख्यात** – प्रसिद्ध
**प्रकाश पुंज** – प्रकाश का ढेर
**उपरांत** – बाद

टिप्पणी

**कुमुद का जन्म**

नरपति दुर्गा का भक्त था और जागते हुए भी स्वप्न-से देखा करता था। गाँव वाले उसे श्रद्धा और भय की द ष्टि से देखते थे।

वह कन्या रूप-राशि थी। उस पर देवत्व का आरोप होने में विलंब न हुआ। अविश्वास करने के लिए कोई स्थान न था। बालिका दाँगी की लड़की में इतना रूप, इतना सौंदर्य कभी न देखा गया था। गाँव के मंदिर में दुर्गा की मूर्ति थी, शिल्प की कला उसे वह रूपरेखा नहीं दे पाई थी, जो इस बालिका में सहज ही भासित होती है। ज्यों-ज्यों उसने वय प्राप्त किया त्यों-त्यों अंग सुडौल होते गए, सौंदर्य की विभूति बढ़ती, निखरती गई और गाँव वाले नरपति सिंह की उस कन्या को किसी निर्भ्रांत सिद्धांत की तरह स्वीकार करते गए। कभी विश्वास से फल हुआ और कभी नहीं भी। पहले बालिका की पूजार्चा नरपति सिंह के ही घर पर होती रही, पीछे बालिका द्वारा मंदिर में स्थापित मूर्ति की पूजा कराई जाने लगी।

कुंजर सिंह के मन में देवी के दर्शन की इच्छा तो हुई, परंतु लज्जाशील होने के कारण अकेले जाने की हिम्मत नहीं पड़ी। कोई शायद पूछ बैठे, 'क्यों आए? देवी अवश्य है, युवती भी है।' संयोग से लोचन सिंह मिल गया। साथ के लिए लोचन सिंह से कहा, 'दाऊजू, देवी-दर्शन के लिए चलते हो?'

**कुंजर सिंह द्वारा कुमुद के दर्शन**

उसने उत्तर दिया, 'किन बातों में पड़े हो राजा? दाँगी की लड़की दुर्गा नहीं होती। देहात के भूतों ने प्रपंच बना रखा होगा।'

कुंजर सिंह की इच्छा ने ज़रा हठ का रूप धारण किया। बोला, 'अवतार के लिए कोई विशेष जाति नियुक्त नहीं है, देख न लो।'

लोचन सिंह ने विरोध नहीं किया। आगे-आगे लोचन सिंह और पीछे-पीछे कुंजर सिंह नरपति सिंह के मकान का पता लगाकर चले। वह घर पर मिल गया। लोचन सिंह ने बिना किसी भूमिका के प्रस्ताव किया, 'तुम्हारी लड़की देवी है? दर्शन करेंगे।'

नरपति की बड़ी-बड़ी लाल आँखों में आश्चर्य छिटक गया। बोला, 'कहाँ के हो?'

'दलीप नगर के राजकुमार।' उत्तर देते हुए लोचन सिंह ने कुंजर की ओर इशारा किया।

'इस तरह दर्शन करने के लिए तो यहाँ देवता भी नहीं आते।' संदेह के स्वर में नरपति ने कहा।

'तब किस तरह देख पाएँगे?'

'मंदिर में जाओ।'

**शब्दार्थ :**

**रूप राशि** – अत्यंत रूपवती, बहुत सुंदर
**वय** – उम्र, यौवन
**निर्भ्रांत** – जिसके संबंध में कोई भ्रम न हो, अटल
**पूजार्चा** – पूजा और वंदना, पूजा और अर्चना, पूजा–पाठ
**प्रपंच** – ढोंग
**पौर** – ड्योढ़ी, दरवाजा

कुंजर सिंह की हिम्मत टूट गई। लौट पड़ने की इच्छा हुई। परंतु पैर वहीं अड़-से गए। धीरे से लोचन सिंह से कहा, 'तो चलो दाऊ' और नरपति के खुले हुए घर की ओर मुँह फेर लिया। पौर के धुँधले प्रकाश में उसे एक मुख दिखाई पड़ा, जैसे अँधेरी रात में बिजली चमक गई हो। आँखों में चकाचौंध-सी लग गई।

लोचन सिंह ने कुंजर के प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया। नरपति से बोला, 'मंदिर में पाषाण-मूर्ति के दर्शन होंगे। हम लोग यहाँ तुम्हारी लड़की को, जो देवी का अवतार कही जाती हैं, देखने आए हैं।'

प्रस्ताव की इस स्पष्ट भाषा के कारण कुंजर सिंह को पसीना-सा आ गया।

नरपति सिंह ने ज़रा सोच कर कहा, 'हमारी बेटी देवी है, इसमें ज़रा भी संदेह, जो भी

करता है, उसका सर्वनाश तीन दिन के भीतर ही हो जाता है। तुम लोगों को यदि दर्शन करना हो, तो मंदिर में चलो। यहाँ दर्शन न होंगे। कोई मेला या तमाशा नहीं है। नारियल, मिठाई, पुष्प, गंध इत्यादि ले कर चलो, मैं वहाँ लिवा कर आता हूँ।'

इतने ही में दो आदमी और आए। वेशभूषा से मुसलमान सैनिक जान पड़ते थे। उनमें से एक ने कुंजर से पूछा। 'क्योंजी, नरपति दाँगी का यही मकान है?'

'हाँ, क्यों?'

'देवी के दर्शनों को आए हैं?'

बोला, 'होगा कहीं, क्या मालूम।' कुंजर को यह अच्छा न मालूम हुआ। तीव्र उत्तर न दे सकने के कारण उसे अपने ऊपर ग्लानि हुई। वह कहने और कुछ करने के लिए आतुर हुआ।

**चित्र : लोचन सिंह और कुंजर सिंह का नरपति सिंह से मिलना**

वे दोनों उसी चबूतरे पर बैठ गए। कुछ क्षण उपरांत लोचन सिंह एक पोटली में पूजन की सामग्री बाँधे हुए आ गया।

लोचन और कुंजर के मंदिर पहुँचने के आधी ही घड़ी पीछे नरपति अपनी लड़की को लेकर आ गया। वे दोनों मुसलमान सैनिक भी पीछे-पीछे आकर मंदिर के बाहर बैठ गए। कुंजर सिंह ने देखा। मन खीझ गया। परंतु नरपति के ऊपर उन दोनों सैनिकों की उपस्थिति का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

'पूजा करो।' नरपति ने आदेश दिया।

लोचन सिंह ने बिना संकोच के लड़की को ऊपर से नीचे तक ध्यान से देखा। उसने आँखें नीची कर लीं। बोला 'किसकी पूजा पहले होगी?'

नरपति ने मूर्ति की ओर संकेत किया।

कुंजर ने भक्ति के साथ मूर्ति का पूजन किया।

'इनका क्या नाम हैं?' लोचन ने पूछा।

'दुर्गा, दुर्गा का अवतार।' उत्तर मिला।

कुंजर प्रश्न और उत्तर से सिकुड़-सा गया, परंतु नाम जानने की उठी हुई उत्सुकता ठंडी नहीं पड़ी। लड़की के मुख पर इस बेधड़क प्रश्न से हलकी लालिमा दौड़ आई। लोचन ने फिर शिष्टता के साथ पूछा, 'यह नाम नहीं, यह तो गुण है। घर में इस बेटी को क्या कहते हो?

'कुमुद-पर तुम्हें इससे क्या? पूजा हो गई। अब चढ़ावा चढ़ाकर यहाँ से जाओ। दूसरों को आने दो।' नरपति ने कहा।

कुंजर ने अपने गले से सोने की माला और उँगली से हीरे की अँगूठी उतार कर मूर्ति के चरणों में चढ़ा दी। नरपति ने प्रसन्न होकर माला हाथ में ले ली और अँगूठी लड़की को पहना दी, जिसका नाम उसके मुँह से कुमुद निकल पड़ा था। कुमुद ने पहले हाथ

टिप्पणी

थोड़ा पीछे हटाया। परंतु पिता की व्यग्रता ने उसकी उँगली को अँगूठी में पिरो दिया।

नरपति ने कुंजर से पूछा, 'आप कौन हैं?'

कुंजर के मुँह से नम्रतापूर्वक निकला, 'राजकुमार'।

लोचन ने गर्व के साथ कहा, 'यह हैं दलीप नगर के महाराजाधिराज के कुमार राजा कुंजर सिंह।'

**कुमुद का कुंजर सिंह को संकोच के साथ देखना**

कुमुद ने धीरे से गरदन उठाकर कुंजर सिंह की ओर पैनी निगाह से देखा। लालिमा मुख पर नहीं दौड़ी और न आँखें नीची पड़ी। फिर सरल, स्थिर द ष्टि से मंदिर के एक कोने की ओर देखने लगी।

## खंड-तीन

लोचन सिंह और कुंजर सिंह मंदिर के बाहर निकल आए। कुमुद भीतर ही बैठी रही। नरपति दरवाजे के पास खड़ा होकर मुसलमान सैनिकों से बोला, 'पूजा करनी हो तो कर लो, नहीं तो हम घर जाते हैं। ज़्यादा देर नहीं बैठेंगे।'

'जाइए,' उनमें से एक बोला, 'हम लोगों ने तो यहीं से दीदार कर लिया'।

'तब क्यों बैठे हो?' कुंजर ने स्पष्ट स्वर में पूछा।

उसने लापरवाही के साथ उत्तर दिया, 'चले जाएँगे, बैठे हैं, किसी का कुछ लिए तो हैं नहीं।'

कुंजर की भ कुटी टेढ़ी हो गई। 'जाओ, अभी जाओ।' आपे से बाहर होकर बोला, 'यह देवी का मंदिर है, दिल्लगी की जगह नहीं।'

नरपति ने ढले हुए कंठ से कहा, 'झगड़ा मत करिए, पूजन के लिए आए होंगे।'

**कुंजर सिंह का मुसलमान सिपाहियों से युद्ध तथा कुमुद का बीच बचाव का प्रयास।**

'पूजन के लिए नहीं आए हैं', दूसरे सिपाही ने कहा, 'मन बहलाने आए हैं। अपना काम देखो, हम भी चले जाएँगे। कड़े होने की जरूरत नहीं हैं, क्योंकि हमारी ज़बान और तेग दोनों ही कड़े हैं।'

लोचन सिंह दाँत पीसकर बोला, 'उस जबान और तेग दोनों के टुकड़े कर डालने की ताकत हमारे हाथ में है। सीधे-सीधे चले जाओ वरना कौए यहाँ से हड्डियाँ उठाकर ले जाएँगे।

दोनों सिपाहियों ने अपनी-अपनी तलवारें खींच लीं। लोचन सिंह की उनसे पहले ही निकल चुकी थी।

नरपति मंदिर की ओर मुँह करके चिल्ला कर बोला, 'भाई, भाई! निवारण करो।'

कुमुद दरवाजे के पास आ गई। कुंजर से बोली, 'राजकुमार।'

इन शब्दों में जो प्रबलता थी, जो आदेश था, उसने कुंजर को कर्त्तव्यारूढ़ कर दिया। तुरंत दोनों ओर की खिंची तलवारों के बीच पहुँच कर बोला, 'यहाँ पर नहीं, किसी उपयुक्त स्थान पर।'

कुमुद एक कदम आगे बढ़ कर एक हाथ आकाश की ओर ज़रा-सा उठा कर बोली, 'मत लड़ो, अपने-अपने घर जाओ। पुण्य-पर्व है, जो लड़ेगा, दुख पावेगा।'

दोनों मुसलमान सैनिकों ने अपनी तलवार नीची कर लीं। कुँवर ने लोचन सिंह का हाथ पकड़ लिया। वे दोनों सिपाही एकटक कुमुद की ओर देखने लगे, अत प्त, अचल नेत्रों

**शब्दार्थः**

**तेग** – तलवार
**दीदार** – दर्शन
**निवारण** – रोकना
**कर्त्तव्यारूढ़** – कर्त्तव्य के प्रति तत्पर

टिप्पणी

से, मानो अनंत काल तक देखते रहेंगे।

कुमुद ने कुंजर से कहा, 'राजकुमार, इनको यहाँ से ले जाइए।' फिर मुसलमान सैनिकों से बोली,' आप लोग यहाँ से जाएँ।'

इतने में शोरगुल सुन कर गाँव के कुछ आदमी आ गए।

मंदिर पर मुसलमानों की उपस्थिति देख कर उन लोगों ने सैनिकों पर झगड़े का संदेह ही नहीं, चुपचाप विश्वास भी कर लिया। कई कंठों से यकायक निकला, 'कौन हो? क्या करते हो? मंदिर की बेइज्जती करने आए हो?'

कुमुद भीड़ की ओर मुड़कर चिल्लाई, जैसे कोयल ने ज़ोर की कूक दी हो, 'जाओ अपने-अपने घर, व्यर्थ झगड़ा मत करो।

'जाओ कमबख्तों यहाँ से।' दोनों मुसलमान सिपाहियों ने भी कहा। कुंजर सिंह ने हाथ के इशारे से भीड़ हटाने का प्रयत्न किया।

परंतु आगे वाले पीछे को न मुड़ पाए थे कि पीछे से और भीड़ आ गई। इसमें दलीप नगर के राजा के कुछ सैनिक भी थे। वास्तविक स्थिति को बिना ठीक-ठीक समझे ही पीछे वाले चिल्लाए, 'मारो-मारो।' लोचन सिंह को तलवार निकाले और कुंजर सिंह को बीच में देखकर पीछे आए सिपाहियों ने भी तलवारें निकाल लीं।

शब्द बढ़ता गया। कुमुद का बारीक स्वर उस भीड़ के हुल्लड़ को न चीर पाया। प्रत्युत पीछे वालों को पूरा विश्वास हो गया कि न केवल लोचनसिंह उनका सरदार, बल्कि उनका राजकुमार और धर्म भी उन दो मुसलमान सैनिकों के कारण संकट में पड़ गए हैं। कुछ ही क्षण में मुसलमान सैनिक भीड़ से घिर गए।

इसी समय दो-तीन मुसलमान सिपाही और उस स्थान पर आ गए। 'क्या है?' उन्होंने आवेश के साथ पूछा।

उन नवांगतुक मुसलमान सिपाहियों के आने पर गाँव वाले ज़रा पीछे हटे और पीछे वाले दलीप नगर के सैनिक नंगी तलवारें लिए आगे आ गए। तुरंत 'मारो-मारो' की पुकार मच गई और खिंची हुई तलवारों ने अपना काम शुरू कर दिया।

लोचन सिंह ने पीछे आए हुए मुसलमान सिपाहियों में से एक को समाप्त कर दिया। पूर्वागंतुकों ने भी भीड़ के कई आदमी कतर डाले और घायल कर दिए। कुंजर सिंह तलवार निकाल कर कुमुद के पास जा खड़ा हुआ। वह कुंजर को वहीं छोड़ कर अपने पिता के साथ घर चली गई।

## खंड-चार

संध्या होने के पहले गाँव में खबर फैल गई कि चार-पाँच कोस पर मुसलमानों की एक बड़ी सेना ठहरी हुई है और वह शीघ्र की आक्रमण करेगी, गाँव में आग लगाएगी और देवी के अवतार का अपहरण करेगी।

राजा को भी यह समाचार मिल गया था।

राजा का रामदयाल नामक एक विश्वस्त निजी नौकर था। राजा ने उससे पूछा, 'तूने उस लड़की को देखा है?'

'हाँ महाराज!'

**शब्दार्थ**
**प्रत्युत** – बल्कि
**पूर्वागंतुक** – पहले आया हुआ

टिप्पणी

'बहुत खूबसूरत है?'

'ऐसा रूप कभी देखा-सुना नहीं गया।'

'कुछ कर सकता है?'

'कोई कठिन बात नहीं है।'

'राजमहल की दासियों में डाल ले।'

'जब आज्ञा होगी, तभी।'

'आज रात को।'

रामदयाल बोला, 'मुसलमानी सेना पास ही दो-तीन कोस फासले पर ठहरी हुई है। तुरही पर तुरही बज रही हैं। गाँव पर हल्ला बोला जाने वाला है।

'यह तुरही हमारी फ़ौज की थी। तू झूठ बोलता है।'

'रात को वे लोग गाँव में आग लगा देंगे और उस लड़की को उठा ले जाएँगे।'

राजा रामदयाल के इस अंतिम कथन को सुन उठ बैठे। आँखें नाचने-सी लगीं। कहा, 'लोचन सिंह को इसी समय बुला ला।'

**राजा का कुमुद पर आसक्त होना**

लोचन सिंह आ गया। जुहार करके बैठा ही था कि राजा ने तमक कर पूछा, 'तुमने आज एक आदमी मार डाला है?'

उसने शांतिपूर्वक जवाब दिया, 'हाँ महाराज, एक ही मार पाया, बाकी भाग गए।'

'यह कहाँ की सेना है?'

'कहीं की हो महाराज! मुझे तो उनमें से कुछ को मारना था, सो एक को देवी की भेंट कर दिया।'

'देवी! देवी! तुम लोगों ने एक छोकरी को मुफ्त देवी बना रखा है। मैं देखूँगा, कैसी देवी है।'

'महाराज देखें या न देखें परंतु उसकी महिमा देवी से कम नहीं।'

'उसे हमारे डेरे पर भिजवा दो, लोचन सिंह, हम उसकी रक्षा करेंगे।'

लोचन सिंह ने उपेक्षा के साथ कहा, 'कुँवर और हम उस देवी की रक्षा करेंगे।'

राजा क्रोध से थर्रा गए। बोले, 'रामदयाल, जनार्दन शर्मा को लिवा ला।'

रामदयाल के जाने पर लोचन सिंह ने कहा, 'महाराज! एक विनती है।'

भर्राए हुए गले से राजा ने पूछा, 'क्या ?'

'विनती करने-भर का बस मेरा है।' लोचन सिंह ने उत्तर दिया, 'फिर मर्जी महाराज की। वह लड़की अवश्य देवी या किसी का अवतार है। उसका बाप बज्र लोभी और मूर्ख है। परंतु बालिका शुद्ध, सरल और भोली-भाली है। अब महाराज को ऐसी बातों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए।'

राजा विष का-सा घूँट पी कर चुप रहे। इतने में जनार्दन शर्मा आ गया। राजा ने ज़रा नरम स्वर में कहा, 'शर्माजी, मेरी दो आज्ञाएँ हैं।'

'एक तो यह कि जो मुसलमान सेना यहाँ आई है, उसे किसी प्रकार यहाँ से हटा दो।'

'महाराज!' जनार्दन बोला और दूसरी आज्ञा की प्रतीज्ञा करने लगा।

**शब्दार्थ:**

**विश्वस्त** – विश्वासी, जिस पर भरोसा किया जाए।

टिप्पणी

'दूसरी यह कि लोचन सिंह को इसी समय मरवा कर झील में फिंकवा दो। ' राजा ने क्षोभातुर कंठ से बोला।

जनार्दन सन्नाटे में आ कर एक बार लोचन सिंह और दूसरी बार राजा का मुँह निहार कर माथा खुजाने लगा।

लोचन सिंह ने अपनी तलवार राजा के हाथ में देते हुए कहा, 'मुझे मारने की यहाँ किसी की सामर्थ्य नहीं। जब तक यह मेरी कमर में रहेगी, तब तक आपकी इस आज्ञा के पालन किए जाने में सहस्रों बाधाएँ खड़ी होंगी। आप ही इससे मेरी गरदन उतार दीजिए।'

राजा तलवार को नीचे पटक कर थके हुए स्वर में बोले, 'तुम बहुत बातूनी हो, लोचन।'

'जैसे था वैसे हूँ और वैसा ही रहूँगा भी। मरवा डालिए महाराज, परंतु अपने शरीर को अब और मत बिगाड़िए।' लोचन सिंह ने हाथ बाँध कर कहा।

राजा बोले, 'उठा लो तलवार, लोचन सिंह, तुमको मार कर हाथ गंदा नहीं करूँगा।'

तलवार कमर में बाँध कर लोचन सिंह ने पूछा, 'महाराज ने मुझे किस लिए बुलाया था?'

'जाओ, जाओ।' राजा ने फिर गरम होकर कहा, 'तुम्हारी हमको जरूरत नहीं है।'

राजा ने जनार्दन से पूछा, 'यह सेना कहाँ की है?'

'कालपी की अन्नदाता।' जनार्दन ने उत्तर दिया।

'भगा दो, मार दो, आग लगा दो, कोई हो, कहीं की हो।' राजा ने हाथ-पैर फेंक कर आज्ञा दी।

'अन्नदाता'

'बको मत जनार्दन, कालपी पर अब हमारा फिर राज्य होगा।'

'होगा अन्नदाता, परंतु अभी विलंब है। दिल्ली गड़बड़ के तूफान में पड़ी हुई है।'

किंतु तूफान अभी काफ़ी ज़ोर पर नहीं है। कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान की सेना मालवे में मराठों से हार कर लौटी है, परंतु अब भी इतनी अधिक है कि मुठभेड़ करना ठीक न होगा। दूसरे राज्यों का रुख हमसे कटा हुआ-सा है।

राजा फिर बैठ गए। बोले, 'अच्छा, तुम सब जाओ। जिसको जो देख पड़े सो करो। मैं सवेरे कालपी की सेना को अकेले मार भगाऊँगा। मैं निज़ाम-इज़ाम को कुछ नहीं समझता। कालपी बुंदेलों की है।'

जनार्दन और लोचन सिंह चले गए। परंतु उन लोगों ने सिवाय रक्षात्मक यत्नों के किसी आक्रमणमूलक उपाय का प्रयोग नहीं किया। जनार्दन ने राजा के डेरे का अच्छा प्रबंध कर दिया। लोचन सिंह कई सरदारों के साथ पहरे पर स्वयं डट गया।

राजा ने रामदयाल को पास बुलाकर धीरे से कहा, 'आज ही, थोड़ी देर में, अभी।'

'जो आज्ञा।' कहकर दयाल चला गया।

## खंड-पाँच

रात हो गई। खूब अंधकार छा गया। जगह-जगह लोग आक्रमण रोकने की योजना में लग गए। गाँव में खूब हल्ला-गुल्ला होने लगा, मानो असंख्य सैनिक किसी स्थान

**शब्दार्थ :**
**क्षोभातुर** – खीज के कारण बेचैन

टिप्पणी

पर आक्रमण कर रहे हों। कुंजर सिंह नरपति के मकान के बाहर, वेश बदले, शस्त्र-सुसज्जित टहल रहा था। पहरेवालों की टोलियाँ इधर-उधर से आकर, शोर करती हुई, इस मकान के सामने कुछ क्षण के लिए खड़ी होकर 'अंबा की जय, दुर्गा मैया की जय' कहती हुई गुजर जाती थीं, परंतु कुंजर चुपचाप टहल रहा था। केवल कभी-कभी कहीं दूर की आहट के लिए एक-आध बार ठिठक जाता था। नरपति के किवाड़ बंद थे, भीतर से सुगंधित द्रव्यों के होम की खुशबू आ रही थी।

थोड़ी देर में एक मनुष्य ने आकर नरपति सिंह के किवाड़ खटखटाए।

कुंजर सिंह ने कदाचित् उसे पहचान लिया। भाला साधा और स्वर बदल कर पूछा, 'कौन?'

'महाराज का आदमी रामदयाल।'

'रामदयाल, इतनी रात तुम यहाँ कैसे?'

बदले हुए स्वर के कारण रामदयाल न ताड़ पाया। समझा, दलीप नगर का कोई सैनिक है। बोला, 'महाराज यहाँ की रक्षा-निमित्त बड़े चिंतित हो रहे हैं। सारी मुसलमानी सेना छिपे-छिपे यहीं आ रही है। अबेर-सबेर आक्रमण होगा। इसलिए मैं देवी को राज महल में सुरक्षित रखने के लिए लिवाने आया हूँ।'

जब कई बार कुंडी खटखटाने पर भी भीतर से कोई उत्तर न मिला, तब रामदयाल ने कुंजर से पूछा, 'आप कौन हैं? बतला सकते हैं—नरपति सिंह कहाँ हैं और देवी जी कहाँ हैं?'

'मैं हूँ कुंजर सिंह। नरपति सिंह भीतर हैं।'

**कुंजर सिंह द्वारा देवी की रक्षा के लिए पहरा देना**

रामदयाल सकपका गया, परंतु शीघ्र सँभलकर बोला, 'राजा, यहाँ कैसे?'

'देवी की रक्षा के लिए।'

'लो, यह बहुत अच्छा, परंतु क्या राजा अकेले ही रक्षा करने के लिए डटे रहेंगे।'

'हाँ, उसके लिए मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं पड़ेगी।'

इतने में रामदयाल ने अपनी स्वभावसिद्ध स्थिरता पुनः प्राप्त कर ली। बोला, 'महाराज की आज्ञा है कि देवी राजमहल में आज की रात सुरक्षित रहें।' भाले के बल अपने शरीर को थामे हुए कुंजर ने कहा, 'रामदयाल, देवी की रक्षा उसके मंदिर में ही सबसे अच्छी होती है। तुम जाओ। मेरे साथ तर्क मत करो।'

'तो महाराज से जा कर यही कह दूँगा, राजा?'

'कह दो।'

## खंड-छह

गाँव में रात भर हो-हल्ला होता रहा, परंतु किसी ने किसी पर आक्रमण नहीं किया। सवेरे नहा-धोकर राजा के सामने लोग इकट्ठे हुए। कुंजर सिंह भी आया। रात भर के जागरण के कारण आँखें फूली हुई थीं और चेहरे पर थकावट छाई थी। प्रणाम करके राजा के पास जा कर यथानियम बैठ गया। राजा की आँखें चढ़ गईं, परंतु कुछ कहा नहीं। देर तक किसी दरबारी की हिम्मत कोई बात कहने की नहीं पड़ी।

लोगों के बीच कानाफूसी होती देख राजा उस सन्नाटे को अधिक समय तक न सह सके। 'बोलो लोचन सिंह!'

**शब्दार्थ :**
**स्वभावसिद्ध स्थिरता** – जैसा स्वभाव उसने बना लिया था।

टिप्पणी

'महाराज!' उसने उत्तर दिया।

'तुम्हारे घराने में चामुंडराय की उपाधि चली आई है, जानते हो?'

'हाँ महाराज, सारा संसार जानता है कि सिर काटने के बाद यह उपाधि हम लोगों को मिली है।'

'वह तुमको प्यारी है?'

'हाँ महाराज, प्राणों से भी अधिक।'

चामुंडराय की जो प्रतिष्ठा है वह ह दय का खून बहा कर प्राप्त की गई है। किसी भी लोभ के वश में वह दलित नहीं हो सकती।

'लोचन सिंह, तुमने रात को कहाँ पहरा लगाया था?'

'राजमहल पर।'

'झूठ बोलते हो। उस लड़की के यहाँ, जो देवी कहलाती है, रखवाली करने पर तुम भी तो थे?'

'मैं न था महाराज।'

'काकाजू, वहाँ पर मैं अकेला ही था।' बहुत विनीत, परंतु द ढ़ भाव के साथ कुंजर सिंह बोला।

'हाँ, तुम अब बहुत मनचले हो गए हो।' राजा ने उपस्थित लोगों की परवाह न करते हुए कहा, 'तुम्हारे ये सब लक्षण मुझे बहुत अखरने लगे हैं। तुम क्या यह समझते हो कि ऐसी बेहूदा हरकतों से मैं प्रसन्न बना रहूँगा?'

कुंजर सिह स्थिर द ष्टि से एक ओर देखता रहा। उत्तर में कुछ नहीं बोला। राजा, लोचन सिंह की ओर एकटक द ष्टि से देखने लगे। लोचन ने नेत्र नीचे नहीं किए।

**पहरा बिठाने के लिए महाराज की कुंजर सिंह को फटकार।**

'आज तुम्हारी चामुंडराय की परीक्षा है, लोचन सिंह।' राजा ने कुछ क्षण पश्चात् कहा।

'आज्ञा हो महाराज।' लोचन सिंह बोला।

'यह मुसलमानी फ़ौज हमको और हमारे धर्म को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए आई है।' राजा ने कहा, उन लोगों की आँख मंदिर की मूर्ति तोड़ने और मूर्ति की पूजारिन-उस दाँगी की लड़की-को उड़ा ले जाने पर है। मेरी आज्ञा है, उस सेना का मुकाबला करो और लड़की को सुरक्षित दलीप नगर पहुँचा दो।'

कुंजर सिंह काँप उठा। जनार्दन को रोमांच हो आया और लोचन सिंह की नहीं पर सबकी आशा जा अटकी।

लोचन सिंह ने हाथ बाँध कर उत्तर दिया, 'उस सेना का सामना करने के लिए मैं अभी तैयारी कराता हूँ अपने पास उस युद्ध के लिए काफ़ी सैनिक नहीं हैं। दलीप नगर से और सेना बुलाने का प्रबंध कर दीजिए। दूसरी आज्ञा जो दाँगी की लड़की को दलीप नगर पहुँचाने से संबंध रखती है उसका पालन उस लड़की की इच्छा पर निर्भर है। यदि वह दलीप नगर न जाना चाहेगी तो मैं उसे पकड़ कर न भेजूँगा।'

उसी समय ढोल, ताशों, रमतूलों का शब्द फिर सुनाई दिया।

## खंड-सात

राजा के जासूसों ने बाजों का पता दिया। मालूम हुआ, एक दरिद्र ठाकुर की बारात आ रही है, और दूरी पर उसके पीछे-पीछे, छिपी-छिपी कालपी की सेना भी आक्रमण

**शब्दार्थः**

**स्वभावसिद्ध** – स्वाभाविक
**यथा नियम** – नियम के अनुसार
**आक्रमण मूलक** – जिसका उद्देश्य आक्रमण करना हो

टिप्पणी

करने के लिए आ रही है।

हकीम ने मना किया परंतु राजा ने एक न सुनी। घोड़े पर सवार हो कर लड़ाई की तैयारी कर दी।

हकीम ने जनार्दन से कहा, 'पंडितजी, इस राज्य की खैर नहीं है। अब क्या होगा?' जनार्दन ने माथा ठोक कर उत्तर दिया, 'बड़ी कठिनाइयों से राज्य को अब तक बचा पाया है। मंत्री केवल गुणा-भाग जानता है। नीति-वीति कुछ नहीं समझता। कुमार दासीपुत्र है। अधिकांश सरदार उसे अंगीकार न करेंगे। रानियों में लड़ाई ठनी रहती है। लोचनसिंह एक महज झंझावात है। उत्तराधिकारी कोई नियुक्त नहीं है। महाराज का पागलपन और भी अधिक बढ़ गया है। राज्य की नैया डूबने से बचती नहीं दिखाई देती।'

यह कष्ट-कहानी शायद और लंबी होती, परंतु इसी समय राजा की सवारी आ पहुँची। पीछे-पीछे कुंजरसिंह का घोड़ा था। जहाँ जनार्दन और हकीम खड़े थे, राजा ने घोड़े की बाग थमा कर कहा, 'आप लोग लड़ नहीं सकते। पीछे रहें।' फिर मुड़ कर कुंजर सिंह से कहा, 'तुम मेरे साथ मत रहो। लोचन सिंह इधर आएँ।'

लोचन सिंह तुरंत घोड़ा कुदाकर आ गया।

'क्या आज्ञा है?'

'कालपी की फ़ौज पर धावा बोल दो।'

'जो हुकुम।' लोचन सिंह ने उत्तर दिया। दलीप नगर की सेना जासूसों के बताए मार्ग पर चल पड़ी।

कुंजर सिंह मन मसोस कर पीछे रह गया था। नरपति के दरवाजे के सामने से निकला। उधर द ष्टि गई। कुमुद को देखा। सचमुच अवतार। कुंजर ने नमस्कार किया। कुमुद ज़रा-सी मुस्कराई, शायद उसे मालूम भी न हुआ होगा कि मुस्करा रही है।

कुंजर सिंह आगे बढ़ गया।

जिस घर बारात आ रही थी, उसके दरवाजे पर तोरण-वंदनवार लगे हुए थे। वहीं होकर दलीप नगर की सेना निकली। राजा ने लोचन सिंह से पूछा, 'क्या यहीं उस ठाकुर की बारात आ रही है?'

'हाँ महाराज।' लोचनसिंह ने उत्तर दिया।

राजा ने कहा, 'बहुत दरिद्र मालूम होता है। द्वार पर कोई ठाठ-बाट नहीं।'

'होगा महाराज, किस-किस का दुख रोवें।'

'अजी नहीं।' राजा ने चलते-चलते कहा, 'सब शरारत है, बदमाशी है; घर में संपत्ति गाड़ कर रखते हैं, ऊपर से गरीबी का दिखलावा करते हैं। इस लड़ाई से लौट कर साहूकारों से सारी क्षति की पूर्ति कराऊँगा। बहुत दिनों से उनसे कुछ नहीं लिया है।'

लोचन सिंह कुछ नहीं बोला। थोड़ी देर में दलीप नगर की छोटी-सी सेना पालर के बाहर जंगल के मुहाने पर पहुँच गई। ठाकुर की छोटी-सी बारात एक ओर से आ रही थी। वह कुछ दूरी पर ठिठक गई। दूल्हा पालकी में। कहार पालकी को अपने कंधों पर ही लिए रहे।

राजा ने लोचन सिंह से कहा, 'इस घमंड को देखते हो? पालकी नहीं उतारी गई। चाहूँ तो अभी दूल्हा के खंड-खंड कर डालूँ।

टिप्पणी

लोचन सिंह ने उपेक्षा के साथ कहा, 'महाराज! यह बुंदेला की बारात है। दूल्हा किसी के लिए भी पालकी से नहीं उतरेगा। निर्धन हो, चाहे श्रीसंपन्न, परंतु बुंदेले आपस में सब बराबर हैं।'

थोड़ी देर में कालपी की सेना से राजा की मुठभेड़ हो गई। राजा का घोड़ा आहत हो गया। राजा के घोड़े से उतरते ही उनके अन्य सरदार भी पैदल लड़ने लगे।

कालपी की सेना बड़ी द ढ़ता और दिलेरी के साथ लड़ी, परंतु वह अल्पसंख्यक थी। दलीप नगर की सेना बहुत न थी। एक को दूसरे के बल का पता न था। टुकड़ियों में बँटकर दोनों ओर की सेनाएँ भिड़ गईं और कटने लगीं।

कालपी की टुकड़ी ने राजा को उनके कुछ सरदार सहित धर दबाया। रोगग्रस्त होने पर भी राजा पागलों की तरह लड़ने लगे। कई आक्रमणकारी हताहत हुए, परंतु ठेल पर ठेल होने के कारण एक किनारे दूर तक राजा को हटना पड़ा। उनके साथी ज़रा दूर पड़ गए। राजा मुश्किल से अपना बचाव करने लगे। क्षण-क्षण पर यह भासित होता था कि राजा अब आहत हुए और अब। सहायता के लिए ऐसे समय में पुकारना राजा की बचीखुची शक्ति के बाहर था। इतने में पेड़ों के एक झुरमुट के पीछे इधर-उधर कुछ आदमी ज़ोर से भागे। हमला करने वालों का ध्यान ज़रा उचटा कि ब्याह का झाँगा पहने और मुकुट बाँधे बारात का वह दूल्हा तलवार भाँजता हुआ वहाँ आ टूटा। ठेठ बुंदेलखंडी में बोला, 'काकाजू, एक हाथ मोरोई देखवे में आवे।' उधर पालकी पटक कर भागे हुए कहारों ने कुहराम मचाया।

वह दूल्हा इतने वेग से लड़ा कि जगह-जगह से उसका झाँगा कटफट गया, रुधिर की धार बदन से बह निकली और सिर का मौर टुकड़े-टुकड़े हो कर धरती पर रूँध गया। उसी समय दलीप नगर की सेना सिमिट आई। तलवार अनवरत रूप में चली। ऐसे चली कि कालपी वालों के छक्के छूट गए। जो सशक्त थे वे भाग खड़े हुए। मालवा से लड़ाई हार कर तो वे आए ही थे, इस लड़ाई में भी भागने में ही कुशल देखी।

संध्या होने के पूर्व ही युद्ध समाप्त हो गया। कालपी की घबराई हुई सेना कालपी की ओर कोसों दूर निकल गई।

**राजा की देवी सिंह से मुलाकात तथा युद्ध**

राजा घायल हो गए थे और बहुत थक गए थे। दूल्हावाली पालकी में राजा को लिटा कर ले चले। दूल्हा साथ-साथ था। शरीर से रक्त बह रहा था, परंतु उसकी द ढ़ता में कमी नहीं दिखाई पड़ती थी। जान पड़ता था, मानो लोहे का बना हो।

राजा ने पालकी में लेटे-लेटे क्षीण स्वर में उसका नाम पूछा।

उत्तर मिला, 'अन्नदाता, मुझे देवी सिंह कहते हैं।'

'ठाकुर हो?'

'हाँ महाराज।'

**चित्र : राजा का देवी सिंह से मिलना**

**शब्दार्थ:**

**दिलेरी** – हिम्मत
**अल्पसंख्यक** – कम संख्या में
**मोरोई** – मेरा भी
**झाँगा** – विवाह के अवसर पर पहना जाने वाला ढीला–ढाला वस्त्र

टिप्पणी

'बुंदेला?'

'हाँ महाराज।'

'जीते रहो। तुमको ऐसा पुरस्कार दूँगा, जैसा कभी किसी को न मिला होगा।'

इस समय जनार्दन शर्मा और आगा हैदर भी पालकी के पास आ चुके थे और बड़े आदर की द ष्टि से उस दरिद्र दूल्हा को देख रहे थे। कुंजर सिंह उदास-सा पीछे-पीछे चला आ रहा था। लोचन सिंह कुछ गुनगुनाता हुआ चला जा रहा था।

वंदनवार वाले दरवाजे पर जब राजा की पालकी पहुँची तब देवी सिंह से राजा बोले, 'देवी सिंह, अब तुम अपना ब्याह करो। टीके का मुहूर्त आ गया हे। ब्याह होने के बाद दलीप नगर आना, अवश्य आना। भूलना मत।'

पालकी दरवाजे पर ठहर गई। दूल्हा ने पालकी की कोर हाथ में पकड़ कर क्षीण स्वर में कहा, 'मेरा ब्याह रणक्षेत्र में हो गया। अब महाराज के चरणों में म त्यु हो जाए, बस यही एक कामना है।'

जब तक कोई सँभालने को दौड़ता तब तक देवी सिंह धड़ाम से पालकी का सहारा छोड़ कर अपनी भावी ससुराल के सामने गिर पड़ा। कुंजर सिंह से उसे सँभाला।

सब लोग डेरे पर पहुँचे। राजा की मरहम-पट्टी हो गई। घाव काफ़ी लगे थे, परंतु कोई भय की बात न जान पड़ती थी। लोग रात-भर उपचार में लगे रहे। देवीसिंह को भी लाया गया। कुंजर सिंह उसकी दवा-दारू करता रहा। अवस्था चिंताजनक थी।

दलीप नगर के सरदार राजा को दूसरे ही दिन दलीप नगर ले गए। राजा ने देवी सिंह को भी साथ ले लिया।

## खंड-आठ

दलीप नगर पहुँचने पर राजा के घाव अच्छे हो गए, परंतु पागलपन बहुत बढ़ गया। देवी सिंह को अच्छे होने में कुछ समय लगा। राजा का स्नेह उस पर इतना बढ़ गया कि निजी महल में उसे स्थान दे दिया। राजा का स्नेह-भाजन होने के कारण बड़ी रानी भी देवी सिंह पर कृपा करने लगी और छोटी रानी अकारण ही घ णा।

**उत्तराधिकारी को लेकर रानी तथा लोचन सिंह के बीच वार्तालाप**

रामदयाल बचपन से महलों में आता-जाता था। उन दिनों तो वह राजा की विशेष टहल ही करता था। रानियाँ उससे परदा नहीं करती थीं। छोटी रानी का वह विशेष रूप से कृपापात्र था, परंतु इतना चतुर था कि बड़ी रानी को भी नाखुश नहीं होने देता था। एक दिन वह किसी काम से छोटी रानी के महल में गया। छोटी रानी ने राजा की तबीयत का हाल पूछा। फिर एक क्षण बाद बोली, 'रामदयाल, यदि धर्म पर टिका रहा, तो प्रतिफल पावेगा।'

रामदयाल ने नम्रतापूर्वक कहा, 'महाराज, मैं तो चरणों का दास हूँ।'

'तू मुझे महाराज के महलों के समाचार नित्य दिया कर। अब जा और ज़रा लोचन सिंह को भेज दे।'

थोड़े समय उपरांत लोचन सिंह आया। दासी द्वारा परदे में रानी से बातचीत हुई। रानी ने कहलवाया, 'लोचन सिंह, भगवान न करे कि महाराज का अनिष्ट हो; परंतु यदि अनहोनी हो गई, तो राज्य का भार किसके सिर पड़ेगा?'

'जिसे महाराज कह जाएँ।'

'तुम्हारी क्या सम्मति है?'

'जो मेरे स्वामी की होगी।'

'यदि महाराज कोई आज्ञा न छोड़ गए, तो?'

'वैसी घड़ी ईश्वर न करे आवे।'

'और यदि आई?'

'यदि आई, तो उस समय जो आज्ञा होगी या जैसा उचित समझूँगा, करूँगा।'

रानी कुछ सोचती रही। अंत में उसने यह कहलवा कर लोचन सिंह को विदा किया कि 'भूलना मत कि मैं रानी हूँ।'

'इस बात को बार-बार याद करने की मुझे आवश्यकता न पड़ेगी।' यह कहकर लोचन सिंह चला। रानी ने फिर रुकवा दिया। दासी द्वारा कहलवाया, 'सिंहासन पर मेरा हक़ है, भूल तो न जाओगे?'

उसने उत्तर दिया, 'जिसका हक़ होगा, उसी की सहायता के लिए मेरा शरीर है।'

'और किसी का नहीं है?'

'मैं इस समय इस विषय में कुछ कह नहीं सकता।'

'स्वामिधर्म का पालन करना पड़ेगा।'

'यह उपदेश व्यर्थ है'

'तुम्हारे आँखें और कान हैं। किस पक्ष को ग्रहण करोगे?'

'जिस पक्ष के लिए मेरे राजा आज्ञा दे जाएँगे। और यदि वह बिना कोई आज्ञा दिए सिधार गए, तो उस समय जो मेरी मौज में आवेगा।' लोचन सिंह चला गया। रानी बहुत कुढ़ी।

## खंड-नौ

कुछ दिनों बाद बड़ नगर से यह उलाहना आया कि दलीप नगर की सेना ने अपने राज्य की सीमा के बाहर उपद्रव किया और कालपी के मित्र राज्य को बड़ नगर का शत्रु बनाने में कसर नहीं लगाई। दलीप नगर उस समय के राजनीतिक नियमानुसार दिल्ली का आश्रित राज्य था। दिल्ली को उस समय दलीप नगर और कालपी दोनों की जरूरत थी। कम-से-कम दिल्ली को उन दोनों से आशा भी थी। कालपी वस्तुतः दिल्ली की सहायक थी। दोनों की मुठभेड़ में दिल्ली को कालपी का पक्ष लेना अनिवार्य-सा था। परंतु यह तभी हो सकता था, जब दिल्ली को अपनी अन्य उलझनों से साँस लेने का अवकाश मिलता। अलीमर्दान इस बात को जानता था और उसे यह भी मालूम था कि न जाने किस समय कहाँ के लिए दिल्ली से बुलावा आ जाए, इसलिए उसने पालर के पास अपनी टुकड़ी के ध्वस्त किए जाने पर तुरंत कोई बड़ी सेना बदला लेने के लिए नहीं भेजी, केवल चिट्ठी भेज दी। चिट्ठी में पद्मिनी का कोई जिक्र न किया।

यह चिट्ठी मंत्री को दी गई। मंत्री ने जनार्दन के पास भेज दी। चिट्ठी पा कर जनार्दन गूढ़ चिंता में पड़ गया। हर्जाना दे कर और माफ़ी माँग कर पिंड छुड़ा लेना तो व्यावहारिक जान पड़ता था, परंतु बाकी शर्तें बहुत टेढ़ी थीं। पद्मिनी बादशाह के

टिप्पणी

लिए नहीं माँगी गई थी, बादशाह की ओट ले कर अलीमर्दान ने उसे अपने लिए चाहा था, यह बात जनार्दन की समझ में सहज ही आ गई। लोचन सिंह को जीवित या म त किसी भी अवस्था में कालपी भेजना दलीप नगर में किसी के भी बस के बाहर की बात थी। किंतु सबसे अधिक टेढ़ा प्रश्न उस समय इन बातों को राजा के सम्मुख उपस्थित करने का था।

जनार्दन, आगा हैदर की उपस्थिति में राजा के पास पहुँचा। परंतु उसने एक बुद्धिमानी का काम किया। दूत के जरिए कालपी जवाब भेज दिया कि हरजे की रकम एक लाख बहुत है, परंतु दी जाएगी और माफी माँगने के लिए प्रधान राज्य-कर्मचारी जर्नादन शर्मा स्वयं शीघ्र दरबार में उपस्थित होंगे। दाँगी-कन्या दलीप नगर राज्य की हद के बाहर कहीं लापता है और लोचन सिंह की चिंता न की जाए।

## खंड-दस

राजा के सामने पहुँचते ही जनार्दन का मन और भी छोटा हो गया। उनकी तबीयत आज ज्यादा खराब थी। वह बहुत हँस रहे थे और बिल्कुल बेसिर-पैर की बातें कर रहे थे। आगा हैदर मौजूद था।

इतने में लोचन सिंह आया। प्रणाम करके बैठ गया।

लोचन सिंह ने हकीम से धीरे-से पूछा, 'आज अवस्था क्या कुछ अधिक भयानक है?'

'नहीं, ऐसा कुछ नहीं।'

'आप सदा यही कहते करते हैं, परंतु महाराज के जी के सँभलने का रत्ती-भर भी लक्षण नहीं दिखलाई देता है। सच्ची बात तो यह है कि राजा को वह बीमारी आप ही ने दी है।'

राजा का ध्यान आकृष्ट हुआ। जनार्दन से पूछा, 'क्या गड़बड़ है? क्या किसी षड्यंत्र की रचना कर रहे हो?' जनार्दन के उत्तर देने के पूर्व ही लोचनसिंह बोला, 'षड्यंत्रों का समय भी, महाराज, इन लोगों ने मिल-जुल कर बुला लिया है, परंतु जब तक लोचन सिंह के हाथ में तलवार है, तब तक किसी का कोई भी षड्यंत्र नहीं चल पावेगा।'

'क्या बात है?' राजा ने आँखें फैलाकर पूछा।

लोचन सिंह ने उत्तर दिया, 'महाराज अपने किसी उत्तराधिकारी को नियुक्त कर दें, नहीं तो शायद बीमारी के साथ-साथ गोलमाल भी बढ़ा चला जाएगा। जगह-जगह लोग चर्चा करते हैं– अब कौन राजा होगा?'

जनार्दन उस दिन ठीक मौका न समझ कर कालपी से आई हुई चिट्ठी के विषय में कोई चर्चा न करके लौट आया। लोचन सिंह भी साथ ही आया।

मार्ग में जनार्दन ने कहा, 'आपसे एक विनती है, ठाकुर साहब, बुरा न मानें तो निवेदन करूँ।' 'करिए।'

कुंजर सिंह को कुमुद का स्मरण

'ऐसे समय महाराज से कोई तीखी बात मत कहिए।'

## खंड-ग्यारह

कुंजर सिंह को राजसिंहासन प्राप्त करने की बहुत आशा न थी। वह यह जानता था कि राजा का अंतिम समय निकट है और उनके मरते ही सिंहासन के लिए दौड़ो-झपटो की धूम मच जाएगी। उसका संसार में कोई न था, केवल राजा का स्नेह

टिप्पणी

था, सो पालर से लौटने के बाद राजा के पागलपन में ऐसा लीन हो गया कि उसके चिह्न तक न दिखाई पड़ते थे। बड़ी रानी की जरूर कुछ कृपा थी, परंतु उस कृपा में स्नेह के लिए व्याकुल हृदय के लिए प्रीति न थी।

पालर में एक आलोक उसने देखा था। वह बिजली की तरह चमका और उसी तरह विलीन हो गया। उसकी दिव्यता का आतंक-मात्र मन पर जमा हुआ था; जैसे प्रातः काल कोई सुख-स्वप्न हो, दूर से एक क्षण के लिए किसी आकाश-कुसुम के दर्शन किए हों और वह विस्त त अनंत प्रसारमय प्रकाश में कहीं छिप गया हो।

एक-आध बार कुंजर सिंह ने सोचा, स्त्री थी, मनोहर थी, लज्जावती थी, एक बार स्नेह की द ष्टि से देखा भी था। परंतु यह भाव बहुत थोड़ी देर मन में टिकता। उसके मानस-पटल पर जो चित्र बना था, वह स्पष्ट द ष्टिवाली, अपरिमित शालीनतामय नेत्रों वाली, कठिनाइयों के सामने अपनी कोमल, गोरी भुजा की एक छोटी उँगली के संकेत से अनंत लहरावलि की प्रबलताओं को जगाने वाली दुर्गा का था। स्वप्न सच्चा था, अनूठा था और शांतिदायक था। अथवा कदाचित उत्साह-मात्र दान करने वाला। परंतु उस समय के चिंताजनक और शून्य-से काल में उस आलोक की दिव्यता-मात्र की स्म ति ही थी।

कुंजर को सिंहासन की आशा कम थी, परंतु उपेक्षा न थी। उसने लोगों से प्रायः सुना था कि संसार में पासा पलटते विलंब नहीं होता।

राजा की बढ़ती बीमारी में एक दिन बड़ी रानी ने राजा के पास से लौट कर अपने महल में कुंजर को बुलाया और कहा, 'राजा का बचना असंभव जान पड़ता है। मेरे सती हो जाने के बाद किसका राज्य होगा?'

'इस तरह की बातें सुन कर मेरा मन खिन्न हो जाता है और यथासंभव मैं इस तरह की चर्चा से बचा करता हूँ।'

'परंतु कुंजर!' रानी ने कहा, 'जो अवश्यंभावी है, वह होकर रहेगा।'

कुंजर सिंह ने एक क्षण सोचकर उत्तर दिया, 'जो आप सती हो गईं और महाराज ने किसी को उत्तराधिकारी नियुक्त न किया, तो इस राज्य का अनिष्ट ही दिखाई देता है।'

**राज्य के उत्तराधिकारी को लेकर रानी तथा कुंजर सिंह के बीच वार्तालाप**

'छोटी रानी राज्य करेंगी।' रानी ने आँखें तानकर कहा, 'वह सती न होगी।'

कुंजर सिंह बोला, 'यह आपको कैसे मालूम?'

'क्या मैं उनकी प्रकृति को नहीं जानती हूँ? वह राज्य-लिप्सा में कुछ भी कर सकती है। देखो न, देवी सिंह नाम का एक दीन ठाकुर, जिसे महाराज ने अपने महल में ठहरा रखा है, उनकी आँखों में खटक गया है। कारण केवल इतना ही कि मैंने दो मीठी बातें कह दी थीं।' रानी ने उत्तर दिया।

'परंतु।' कुंजर सिंह बोला, 'महाराज उस बेचारे को राज्य थोड़े ही दे रहे हैं, जो छोटी सरकार को खटके।' और उसने घबराहट की एक साँस को दबाया।

रानी ने कहा, 'कुंजर सिंह, जब तक मैं राज्य का कोई स्थायी प्रबंध न कर दूँगी, सती न होऊँगी। यदि मेरे पीछे रानी ने राज्य करके प्रजा को पीसा, तो मुझे स्वर्ग में भी नरक-यातना-सी अनुभव होगी।'

टिप्पणी

'मेरे लिए जो आज्ञा हो, सेवा के लिए तैयार हूँ। संसार में आपके सिवा और मेरा कोई नहीं।'

'तीन आदमियों के हाथ में इस समय राज्य की सत्ता बँटी हुइहै–है-जनार्दन, लोचन सिंह और हकीमजी। इनमें से किस पर तुम्हारा काबू है?'

'काबू तो मेरा पूरा किसी पर नहीं है।' कुंजरसिंह ने विश्वास परित्याग कर उत्तर दिया, 'परंतु लोचन सिंह थोड़ा-बहुत मेरा कहना मानते हैं।'

'और जनार्दन?' रानी ने पूछा।

'वह बड़ा काइयाँ है। उसका दाँव समझ में नहीं आता।'

'मैं उसे बहुत दिनों से जानती हूँ। मैंने उसके साथ बहुत से एहसान भी किए हैं। वह उन्हें भूल नहीं सकता। उसे ठीक करना होगा।'

'कैसे?' कुंजर सिंह ने भोले भाव से प्रश्न किया।

रानी बोलीं, 'मैं उसे ठीक करूँगी। जो कुछ कहती जाऊँ, करते जाना और यदि महाराज स्वस्थ हो गए और मैं उनके समय उस लोक को चली गई तो सोलह आना बात रह जाएगी।'

कुछ क्षण बाद फिर बोलीं, 'कालपी से एक चिट्ठी आई थी। कल महाराज को जनार्दन ने सुनाई। आपे से बिल्कुल बाहर हो गए।' रानी ने चिट्ठी का सविस्तार व त्तांत कुंजर सिंह को सुनाया।

कुंजर सिंह ने भी उस चिट्ठी का हाल सुना था, परंतु यथावत् उसे मालूम न था। रानी के मुख से संपूर्ण ब्योरा सुन कर उसे आश्चर्य हुआ।

रानी बोलीं, 'मुझे राज्य की खबरों का सब पता रहता है। यह तुमने समझ लिया या नहीं?'

कुंजर ने स्वीकार किया। बोला, 'उस लड़की का पता क्या मुसलमानों को लग गया है?'

'नहीं, परंतु जनार्दन ने पता लगा लिया है। बहुत सुरक्षित स्थान में विराटा के रजवाड़े के दाँगी राजा सबदल सिंह के दुर्ग में वह पहुँच गई है। हकीमजी जनार्दन के कहने में हैं। जनार्दन को ठीक कर लेने से वह भी ठीक हो जाएँगे।'

## खंड-बारह

**राजा का जनार्दन को कालपी पर चढ़ाई के लिए आदेश देना।**

राजा न सँभले। मर्ज बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की। अवस्था इतनी खराब हो गई थी कि आगा हैदर के सिवाय और किसी को उसकी चिंता न गई थी। सब बेचैन थे, व्यग्र थे उग्र चिंता में कि आगे क्या होगा?

जिस समय जनार्दन ने राजा को कालपी की चिट्ठी का सारांश सुनाया, उन्होंने उपस्थित लोगों को तरह-तरह की फूहड़ गालियाँ दे कर अंत में आज्ञा दी कि कालपी पर चढ़ाई करने की तैयारी कर दो।

बात-बात पर सिर काटने और कटवाने की योजना वाले लोचन सिंह को भी इस आज्ञा का पालन करने में कठिनाई अनुभव हुई।

इसलिए जनार्दन ने सेना को धीरे-धीरे तैयार कर डालना ठीक समझा। बड़े पैमाने पर सेना रखना उस समय की माँग थी। शायद इस तैयारी से अलीमर्दान सहम जाए और

टिप्पणी

यदि इससे न भी माना तो डटकर लड़ाई लड़ ली जाएगी। परंतु कालपी पर आक्रमण करना जनार्दन का ध्येय न था और न उसकी व्यवहारमूलक राजनीति में इस प्रकार के विचार के लिए स्थान था।

वास्तव में इसी का जनार्दन को बहुत खटका था। राजा कालपी पर चढ़ाई करने की आज्ञा दे चुके थे। जनार्दन दलीप नगर को इस तरह की मुठभेड़ से बचाना चाहता था। सेना की धीमी तैयारी से इस मुठभेड़ का कुछ समय तक बरकाव हो सकता था। जनार्दन को एक और आशा थी-राजा का शीघ्र मरण। और जो कुछ उसके मन में रहा हो, उसे कोई नहीं जानता था।

जनार्दन के एक दिन राजा की बहुत भयानक अवस्था देखकर और दोनों रानियों के बुलावों को टालने के बाद आगा हैदर के घर जा कर मंत्रणा की। कहा, 'आज सवेरे राजा को ज़रा चेत था। स्थिति की भयंकरता देखकर, जी कड़ा करके मैंने राजा से स्पष्ट कहा कि किसी को गोद ले लिया जाए। आश्चर्य है, वह इस बात पर नाराज़ नहीं हुए। केवल यह कहा कि अभी मैं नहीं मरूँगा, जिऊँगा। फिर मैं ज़्यादा कुछ न कह सका।'

हकीम बोला, 'अब उनके जीवन में बहुत थोड़े दिन रह गए हैं। बहुत कोशिश की, मगर यमराज का मुकाबला नहीं कर सकता। राजा की बदपरहेजी पर मेरा कोई काबू नहीं। यदि कमबख़्त रामदयाल मर जाए, तो शायद अब भी राजा बच जाएँ। उनकी नामुमकिन फरमाइशों को पूरा करने के लिए वह सदा कमर कसे खड़ा रहता है। ऐसा बदकार है कि कुछ ठिकाना नहीं।'

'हकीमजी।' जनार्दन ने साधारण निश्चय के साथ यकायक कहा, 'या तो राजा का रोग समाप्त होना चाहिए या उन्हें शीघ्र स्वर्ग मिलना चाहिए।'

'दोनों बातें परमात्मा के हाथ में हैं।' हकीम ने निराशापूर्ण स्वर में कहा।

जनार्दन बोला, 'नहीं, आपके हाथ में हैं।'

'यानी?'

**जनार्दन द्वारा राजा को मारने के लिए हकीम के समक्ष प्रस्ताव**

'यानी यह कि आप ऐसी दवा दीजिए कि या तो उनका रोग शीघ्र दूर हो जाए या उनका कष्टपीड़ित जीवन समाप्त हो जाए।'

आगा हैदर सन्नाटे में आ गया। बोला, 'शर्माजी, अपने मालिक के साथ यह नमकहरामी मुझसे न होगी, चाहे आप उनके साथ मुझे भी मरवा डालिए।'

बिना किसी व्याकुलता के जनार्दन ने अनुनय के साथ प्रस्ताव किया, 'हकीमजी, मैं हाथ जोड़ता हूँ, कुछ तो इस राज्य के लिए करो, जिसके अन्न-जल से हमारे और आपके हाड़-माँस बने हैं।'

'क्या करूँ?' हकीम ने अन्यमनस्क होकर पूछा।

जनार्दन ने उत्तर दिया, 'सैयद अलीमर्दान को मना लो। दलीप नगर को बचा लो। सुना है उसकी फ़ौज कालपी से शीघ्र कूच करने वाली है। यदि आप उसे बिल्कुल न रोक सकें, तो कम-से-कम कुछ दिनों तक अटका लें, तब तक मैं राजा द्वारा किसी उत्तराधिकारी को नियुक्त कराके राज्य को सुव्यवस्थित करा लूँगा। यदि राजा बच गए, तो उत्तराधिकारी की देख-रेख में राज-काज ठीक तौर से होता रहेगा, न बचे, तो

**शब्दार्थ :**
**बरकाव** – टालने की क्रिया, बचाव
**बदपरहेजी** – असंयम
**नामुमकिन** – असंभव

टिप्पणी

जो राजा होगा, सँभाल लेगा। इस समय सबके मन किसी अनिश्चित, अंधकाराव त्त, अद श्य, घोर विपत्ति के आ टूटने की संभावना के डर से थर्रा रहे हैं।'

हकीम सोचकर बोला, 'मैं कालपी तुरंत जाने को तैयार हूँ, परंतु राजा के इलाज का क्या होगा?'

'किसी अच्छे वैद्य या हकीम को नियुक्त कर जाइए।'

'मैं अपने लड़के के हाथ में राजा का इलाज छोड़ जाऊँगा, और किसी हाथ में नहीं।'

## खंड-तेरह

कालपी से आगा हैदर ने जनार्दन को लिखा कि अलीमर्दान नाराज तो बहुत था, परंतु अब शांत है और दलीप नगर को मित्र की द ष्टि से देखता है। लड़ाई की कोई संभावना नहीं है और मुझे कुछ दिनों मेहमान बनाए रखना चाहता है।

**जनार्दन का राजा को लेकर पंचनद की ओर प्रस्थान तथा रास्ते में देवी सिंह के शौर्य की प्रशंसा**

ऐसी परिस्थिति में जनार्दन ने राजा के मनोवेग का समर्थन किया। दलीपनगर में सेना का एक काफ़ी बड़ा भाग अपनी मंडली के कुछ विश्वस्त लोगों के हाथ छोड़ा और पंचनद की ओर राजा को ले कर कूच कर दिया। खबर लेने के लिए जहाँ-तहाँ जासूस नियुक्त कर दिए। वह राजा का साथ बहुत कम छोड़ता था। रानियाँ साथ गईं। देवी सिंह अब बिलकुल चंगा हो गया था। उसे भी राजा ने साथ ले लिया।

जनार्दन ने मार्ग में एकांत पाकर देवी सिंह से कहा, 'आप बड़े वीर हैं। उस दिन महाराज की रक्षा आप ही ने की।'

'बुंदेला का कर्तव्य ही और क्या है, शर्माजी?' देवी सिंह ने लापरवाही के साथ कहा, 'परंतु अब किस तरह उनके प्राण बचेंगे, यह मेरी समझ में नहीं आ रहा है।'

'दवा-दारू हो रही है। देखिए, आशा तो बहुत कम है।' आह भरकर जनार्दन बोला।

'ऐसी दशा में महाराज को इतनी दूर नहीं आने देना चाहिए था।'

'यमुनाजी की रज में वह अपने जन्म की यात्रा समाप्त करना चाहते हैं, इसीलिए हम लोगों ने निषेध का उपाय नहीं किया।'

**जनार्दन द्वारा देवी सिंह को राजा का उत्तराधिकारी बनाने का प्रस्ताव**

देवी सिंह ने पूछा, 'यदि महाराज का स्वर्गवास बीच में ही हो गया, तब क्या कीजिएगा?'

उत्तर मिला, 'यमुनाजी की रज में उनके फूल विश्राम करेंगे। आपके प्रश्न के साथ हम सबकी एक और घोर चिंता का भी संबंध है। वह यह कि उनके पश्चात् इस राज्य का शासन कौन करेगा?'

'सिवा बुंदेला के और कौन कर सकता है?' देवी सिंह ने कहा, 'कुंजर सिंह तो दासीपुत्र हैं, गद्दी के हक़दार नहीं हो सकते, इसलिए कोई भाई-बंद (बंधु) ही सिंहासन पर बैठेगा।

'इधर-उधर कोई भी उपयुक्त भाई-बंद नहीं। बड़ी कठिन समस्या है।'

'सब बुंदेले भाई-बंद ही हैं।'

'आप भी?' जनार्दन ने आँख गड़ाकर पूछा।

उसने उत्तर दिया, 'हाँ, मैं भी। प्रजा होने से क्या भाई-बंद में अंतर आ सकता है?'

हँसते हुए जनार्दन ने पूछा, 'आपको राजा नियुक्त कर दें तो?'

देवी सिंह सन्न रह गया। ज़रा रीती द ष्टि से जनार्दन की ओर देखने लगा।

जनार्दन बोला, 'यदि कर दें, तो गो-ब्राह्मणों की तो रक्षा होगी?' और हँसा।

**शब्दार्थ :**
**बदकार** – कुकर्मी
**यकायक** – अचानक
**अंधकाराव त** – अंधकार से ढकी
**मनोवेग** – मन का आवेग, मन में उठे विचार
**रज** – धूल
**निषेध** – नहीं, रोक

टिप्पणी

## खंड-चौदह

पालर में और आस-पास भी खबर फैली हुई थी कि घोर लूट-मार और मार-काट होनेवाली है। उपद्रवों के मारे नगरों और राजधानियों में खलबली मची रहती थी। दिल्ली डावाँडोल हो चुकी थी। उसके सहायक और शत्रु अपने-अपने राज्य स्थापित कर चुके थे। परंतु ईर्ष्या और शत्रुता बढ़ने के भय से अपनी पूर्ण स्वतंत्रता बहुत थोड़े राजा या नवाब घोषित कर रहे थे। बहुत से स्वाधीन हो गए थे किंतु नाममात्र के लिए दिल्ली की अधीनता प्रकट करते रहते थे। इनमें जो प्रबल थे वे चौकस थे, निर्भय थे और उनकी प्रजा को बहुत खटका नहीं था, किंतु ऐसे थोड़े थे। जो छोटे या निर्बल थे, वे किसी प्रबल पड़ोसी या दूर के शक्तिशाली तूफानी जननायक की ओर निहारते रहते थे।

**पालर में उठने वाले राजनीतिक उपद्रव के भय से वहाँ के ग्रामीण लोगों में चिंता का व्यापना तथा छोटे-छोटे राजाओं द्वारा सैनिक शक्ति की बढ़ोत्तरी**

बड़नगर के राजा के लिए भी कम परेशानियाँ न थीं। पालर के निकट किसी होने वाले तूफान की खबर पाकर कुछ प्रबंध करने का संकल्प किया कि दूसरी ओर बड़े झंझावातों की दुश्चिंता में फँस जाना पड़ा। पालर के निकटवर्ती ग्रामों की रक्षा का कोई प्रबंध न किया जा सका। ऐसी अवस्था में साधारण तौर पर जैसे प्रजा को अपने भाग्य के भरोसे छोड़ दिया जाता था, छोड़ देना पड़ा।

पालर के और पड़ोस के निकटवर्ती ग्रामीणों ने इस बात को समझ लिया। कोई कहीं और कोई कहीं चला गया। रह गए अपने घरों में केवल दीन-हीन किसान जो हल-खेती छोड़कर कहीं न जा सकते थे। उन्हें पेट के लिए, राजा के लगान के लिए, लुटेरों की पिपासा के लिए खेतों की रखवाली करनी थी। आशा तो न थी कि चैत-वैशाख तक खेती बची रहेगी। यदि कहीं से घुड़सवार सेना आ गई तो खेतों में अन्न का एक दाना और भूसे का एक तिनका भी न बचेगा। परंतु जहाँ आशा नहीं होती, वहाँ निराशा ईश्वर के पैर पकड़वाती है। यदि बच गए, तो कृतज्ञ हृदय ने एक आँसू डाल दिया और बह गए तो भाग्य तो कोसने के लिए कहीं गया ही नहीं।

जिस समय बड़े-बड़े राजा और नवाब अपनी विस्त त भूमि और दीर्घ संपत्ति के लिए रोज-रोज खैर मनाते थे, अपने अथवा पराए हाथों अपने मुकुट की रक्षा में व्यस्त रहते थे और उसी व्यस्त अवस्था में, बहुधा दिन में दो-चार घंटे नाच, रंग, दुराचार और सदाचार के लिए भी निकाल लेते थे, उस समय प्रजा अपनी थोड़ी-सी भूमि और छोटी-सी संपत्ति के बचाव की फिक्र करते हुए भी देवालयों में जाती, कथा-वार्ता सुनती और दान-पुण्य करती थी। संध्या-समय लोग भजन गाते थे। एक-दूसरे की सहायता के लिए यथावकाश प्रस्तुत हो जाते थे।

पालर के सीधे-सीधे जीवन में जहाँ विशाल झील में नहा-धो कर काम करना और पेट-भर खा लेने के बाद शाम को झाँझ बजाकर ढोलक पर भजन गाना भी प्रायः नित्य का सरल कार्यक्रम था, वहाँ देवी के अवतार का चमत्कार भी एक महत्त्वपूर्ण विशेषता थी। इसके रंग को बाहर वालों ने अधिक गहरा कर दिया था, क्योंकि पालर वालों ने इसकी विज्ञप्ति के लिए स्वयं कोई कष्ट नहीं उठाया था।

वही चमत्कार उन दिनों उनकी विपत्ति का कारण हुआ। असंख्य घुड़सवारों की टापों से टूटे हुए हरे-हरे पौधों की टहनियों को धूल के साथ गगन में उड़ते देखना वहाँ के बचे-खुचे लोगों का जागते-सोते का स्वप्न हो गया था।

**शब्दार्थः**
**झंझावात** – तूफान, आँधी
**पिपासा** – प्यास
**बहुधा** – प्रायः

टिप्पणी

**दलीप नगर तथा कालपी के बीच युद्ध छिड़ जाने के कारण कुमुद को लेकर उसके पिता द्वारा अपने राज्य का त्याग**

जिस दिन दलीप नगर के राजा की मुठभेड़ कालपी के दस्ते के साथ हुई, उसी दिन कुमुद का पिता उसे ले कर कहीं चल दिया था। सब धन-संपत्ति नहीं ले जा पाया था। उसका ख्याल था कि शायद शांति हो जाए। थोड़े ही दिन बाद लौट आया।

उसके पड़ोस में केवल ठाकुर की एक लड़की, जिसका नाम गोमती था, रह गई थी। वह घर में अकेली थी। देवी सिंह के साथ इसी का विवाह होने वाला था। परंतु दूल्हा को राजा की पालकी थामे हुए गिरते, लोगों ने और गोमती ने देख लिया था। लोचन सिंह की सहानुभूतिमयी वार्ता गोमती नहीं भूली थी। दूसरे दिन जब राजा नायक सिंह दलीप नगर की ओर चलने लगे, तब डर के मारे किसी पालर-निवासी ने देवी सिंह की कुशल-वार्ता का समाचार भी न पूछा था। गोमती स्वयं जा नहीं सकती थी। उड़ती खबर सुन ली थी कि हाल अच्छा नहीं है।

नरपति सिंह को गाँव में फिर देखकर गोमती को बड़ा ढाँढ़स हुआ। जाकर पूछा, 'काकाजू, कहाँ चले गए थे? दुर्गा कहाँ है?'

'मंदिर में हैं।' नरपति सिंह ने अपना सामान जल्दी-जल्दी बाँधते हुए उत्तर दिया।

बड़ी विनय के साथ गोमती ने कहा, 'काकाजू, मैं भी उसी मंदिर में तुम्हारे साथ चलूँगी। जहाँ कुमुद होगी, वहीं मेरी रक्षा होगी। इस विशाल झील के सिवा और कोई मेरा यहाँ रक्षक नहीं।'

'चल सकोगी?' करारे स्वर में नरपति सिंह ने गोमती को विचलित करने के लिए कहा।

अचल कंठ से गोमती ने उत्तर दिया, 'चलूँगी, चाहे जितनी दूर और चाहे जैसे स्थान पर हों।'

'विराटा, भयानक बेतवा के बीच में यहाँ से दस कोस।'

'चलूँगी।'

थोड़ी देर बाद दोनों पोटली बाँधकर पालर से चल दिए।

## खंड-पंद्रह

विराटा पालर से उत्तर-पूर्व के कोने में है। बेतवा के तट और टापू पर, घोर वन के आँगन में छोटी, संपन्न बस्ती थी। राजा दाँगी था। नाम सबदल सिंह। नदी की कगार पर उसका गढ़ था, जो दूर से वन के सघन और दीर्घकाय व क्षों के कारण कई ओर से दिखाई भी न पड़ता था।

विराटा में भी कुमुद के दुर्गा होने की बात विख्यात थी। राजा दाँगी था, इसलिए कुमुद के देवत्व को यहाँ और भी अधिक बड़प्पन मिला। नरपति सिंह थोड़े ही दिनों गाँव की बस्ती में रहा। नदी के बीच में टापू की पहाड़ी पर स्थित मंदिर उसे अपनी रक्षा और निधि के बचाव के लिए बहुत उपयुक्त जान पड़ा। कुमुद भी आवभगत और पूजा की बहुलता के मारे इतनी थक गई थी कि टोरिया के मंदिर के एकांत को उसने कम-से-कम कुछ दिनों के लिए बहुत हितकर समझा।

पालर से लौटकर गाँव में पहुँचने पर नरपति सिंह ने गोमती से कहा, 'तुम अब यहीं कहीं अपने रहने का बंदोबस्त करो। मैं देवी के पास मंदिर में जाऊँगा।'

'मैं भी वहीं चलूँगी।'

'बड़ा भयानक स्थान है।'

टिप्पणी

**नरपति सिंह का कुमुद को लेकर विराटा में निवास कर जाना**

'भयानक स्थानों से नहीं डरती। देवी की सेवा में मेरा संपूर्ण जीवन सुभीते के साथ बीत जाएगा।' नरपति सिंह ने ज़िद न की।

जिस समय गोमती मंदिर में पहुँची, कुमुद बेतवा के पूर्व तट के उस ओर वन के जंगली पशुओं की आवाजें सुन रही थी। संध्या हो चुकी थी। पिता को देखते ही एकांतता का गांभीर्य चला गया। हर्ष की एक सुनहली रेखा से आँखें जग गई और गोमती को देखते ही आनंद की पुलकावलि का रेखाजाल विकसित मुख पर नाचने-सा लगा।

गोमती को गले लगाकर बोली, 'गोमती, तुम भी आ गई! अच्छा किया। भूली नहीं। एक से दो हुए। अच्छी तरह हो। जब पालर चलेंगे, साथ ही चलेंगे।'

यह मिलाप नरपति सिंह को भी बुरा नहीं लगा। देवी को-अपनी कन्या को-एक घड़ी के लिए स्वाभाविक आनंद में लहराते देखकर वह बूढ़ा भी प्रसन्न हो गया।

नरपति सिंह बोला, 'गोमती, तुम इस कोठरी में अपना डेरा डाल लो। तुम्हें मैं कुछ वस्त्र और दूँगा। भोजन करके आराम से सो जाओ।'

कुमुद ने अपने सहज मीठे स्वर में कहा, 'हम और वह एक ही स्थान पर सोवेंगी। मैंने उसे अपनी छोटी बहिन बना लिया है।'

**चित्र : गोमती का कुमुद से मिलना, प्रसन्न होना**

भोजन के उपरांत नरपति सिंह मंदिर के एक बड़े कोठे में जा लेटा और तुरंत सो गया। दूसरी ओर की एक कोठरी में कुमुद और गोमती जा लेटीं।

कुमुद ने पूछा, 'उस दिन युद्ध में क्या हुआ था?'

'दुर्गा ने जो चाहा, सो हुआ। अंतर्यामिनी हो कर भी आप यह प्रश्न करती हैं, यह केवल आपकी महत्ता है।'

'फिर भी तुम्हारे मुँह से सुनना चाहती हूँ।'

गोमती ने जितना व त्तांत सुन रखा था, सुनाया। अपने विवाह से संबंध रखने वाली घटना नहीं कही।

कुमुद ने पूछा, 'उस दिन तुम्हारी बारात आ रही थी, टीका कुशलपूर्वक हो गया था या नहीं?'

गोमती ने कोई उत्तर नहीं दिया। एक आह भर ली।

कुमुद ने कहा, 'उधर के समाचार मुझे नहीं मिले। पूजा-अर्चना में इतनी संलग्न रही कि पूछ नहीं पाई।'

रूद्ध स्वर में गोमती ने कहा, 'आपसे कोई बात छिपी थोड़े ही रह सकती है? मैं क्या बतलाऊँ।'

कुमुद ने सहानुभूति के साथ कहा, 'तुम्हारे ही मुँह से सुनूँगी। सच मानो, मुझे नहीं

**शब्दार्थ :**
**पुलकावलि** – रोमांच
**अंतर्यामिनी** – मन की बात जानने वाली
**निठुर** – कठोर हृदय

टिप्पणी

**गोमती द्वारा कुमुद को उस दिन के युद्ध का वर्णन**

मालूम।'

कुमुद ने उस अँधेरी कोठरी में यह नहीं देखा कि गोमती के कानों तक आँसू बह आए।

'एक निठुर ठाकुर पास आ कर बुरी-भली बातें कहने लगा। किसी ने उसे लोचन सिंह के नाम से संबोधन किया था।' गोमती ने कहा।

'लोचन सिंह!' कुमुद ने कुछ सोच कर कहा, 'यह नाम मुझे भी मालूम है। उस दिन की लड़ाई से इस नाम का कुछ संबंध है। कहे जाओ बहिन, आगे क्या हुआ?'

गोमती कहने लगी, 'वह पत्थर का मनुष्य लोचन सिंह उन्हें ठुकरा देना चाहता था। मेरे मन में आया कि खड्ग लेकर उसे ललकारूँ और सिर काट कर फेंक दूँ। इतने में घोड़े पर बैठे राजकुमार वहाँ आ गए।'

'राजकुमार!' ज़रा चकित होकर कुमुद बोली, 'अच्छा फिर?'

गोमती ने उत्तर दिया, 'राजकुमार आ गए। उन्होंने धीरे से उनके घायल शरीर को अपने घोड़े पर कस लिया और अपने डेरे पर ले गए। उनका नाम भूल गई हूँ।'

'नाम कुंजर सिंह है।' कुमुद ने कहा, फिर तुरंत ज़रा उपेक्षा के साथ बोली, 'कुछ भी नाम सही, फिर वे सब कहाँ गए?'

गोमती ने उत्तर दिया, 'वह पाषाण-हृदय लोचन सिंह तब राजकुमार को वहाँ से जल्दी-जल्दी लिवा ले गया। सवेरे सुना, राजा अपने दल के साथ दलीप नगर चले गए।'

कई क्षण बाद कुमुद ने पूछा, 'दूल्हा का कुशल समाचार मिल गया था?'

ज़रा संकोच के साथ गोमती ने कहा, 'दूसरे दिन खबर लगी थी कि राजकुमार रात-भर मरहमपट्टी करते और दवा देते रहे। इससे आगे कुछ नहीं सुना। आप तो राजकुमार को जानती होंगी।

'मैंने उसका वह नाम यों ही सुन लिया था।' कुमुद बोली, 'अब सो जाओ, बहुत थकी हुई हो।'

## खंड-सोलह

राजा नायक सिंह अपने दल के साथ एक दिन पंचनद पहुँच गए।

पंचनद, जिसे पचनदा भी कहते हैं, बुंदेलखंड का एक विशेष स्थान है। यमुना, चंबल, सिंधु, पहूज और कुमारी, ये पाँच नदियाँ उस जगह आकर मिली हैं। स्थान की विस्त त भयानकता उसकी विशाल सुंदरता से होड़ लगाती है। बालू, पानी और हरियाली का यह संगम वैभव, भय और सौंदर्य के विचित्र मिश्रण की रचना करता है। इस संगम के करीब एक गढ़ी थी। राजा उसी में जाकर ठहरे। संध्या के पहले ही डेरे पड़ गए। मार्ग से भटकी हुई दूर की गढ़ी में पहुँचकर किसी को भी हर्ष नहीं हुआ। केवल लोचन सिंह ने ठंडा पानी पीकर, घोड़े की पीठ ठोंकते-ठोंकते सोचा कि आज रात-भर अच्छी तरह सोऊँगा। कालपी पंचनद से दूर नहीं थी। कालपी के फ़ौजदार से किसी तत्काल संकट की आशंका न थी। उन दिनों मिलाप करते-करते छुरी चल पड़ती थी और छुरी चलते-चलते मिलाप हो जाता था। जनार्दन मेल और लड़ाई दोनों के लिए तैयार था। कुछ लोग सोचते थे कि दलीप नगर छोड़ आने में राज्य की हत्या का-सा काम किया, परंतु उस परिस्थिति में राजा की आज्ञा का उल्लंघन करना असंभव था। इसलिए ऐसे लोग पछतावा तो प्रकट न करते थे; परंतु राजा के लिए चिंतित दिखाई पड़ते थे। केवल

टिप्पणी

जनार्दन कम-से-कम ऊपर से चिंतित नहीं दिखाई पड़ता था।

सभी अगुओं के मन में एक बात ही थी, राजा की समाप्ति कब शीघ्रतापूर्वक हो और कब राजसत्ता किसी अच्छे आदमी के हाथ में आए। केवल देवी सिंह भगवान से राजा के स्वास्थ्य-लाभ के लिए दिन में एक-आध बार प्रार्थना कर लेता था।

लोगों को दिखाई पड़ रहा था कि सैनिकों का विश्वास लोचन सिंह के बल-विक्रम पर और जनार्दन की दक्षता तथा कुशलता पर है। जनार्दन अपनी आर्थिक समर्थता और व्यवहार-पटुता के कारण पंचनद पर सेना के विश्वास का स्तंभ हो गया। खुल्लम-खुल्ला कोई रानी उसके खिलाफ कुछ नहीं कह रही थी। लोचन सिंह के पास न कोई षड्यंत्र था और न कोई षड्यंत्रकारी दल। षड्यंत्र की स ष्टि के लायक कुंजर सिंह में न तो यथेष्ट मानसिक चपलता थी और न किसी षड्यंत्र के प्रबल नायकत्व के लिए पूरी नैतिकहीनता। भीतर महलों में षड्यंत्र बनते और बिगड़ते थे। परंतु उनके लिए योग्य संचालक की अटक थी।

**राजा की तबीयत ज़्यादा खराब हो जाने के कारण उत्तराधिकारी की घोषणा को लेकर अटकलों का लगाया जाना तथा राजा की इस संबंध में प्रतिक्रिया पर कर्मचारियों की निगाह**

दो दिन के बाद बड़ी रानी ने कुंजर सिंह को बुला कर प्रस्ताव किया, 'दलीप नगर तुरंत लौट चलो।'

'प्रयत्न करता हूँ।' उत्तर मिला।

कुंजर सिंह वहाँ से जाने को ही हुआ था कि रामदयाल रोती सूरत बनाए आया, बोला, 'कक्काजू....'

रामदयाल ने कहा, 'जमनाजी से रज और गंगाजल मँगाने का हुकुम हुआ है। चलना होवे।'

'क्या दशा बहुत बिगड़ गई है?' रानी ने कंपित स्वर में पूछा।

'हाँ महाराज।' कह कर रामदयाल छोटी रानी के पास चला गया।

उसी समय जनार्दन वहाँ आया। रानी आड़ में हो गई। उत्तर देनेवाली दासी, जिसे जवाब कहते हैं, रानी के कहलवाने से बोली, 'कहिए, महाराज का हाल अब कैसा है?'

'पहले से बहुत अच्छा है।' जनार्दन ने उत्तर दिया, 'उन्हें खूब चेत है। परंतु अंत समय दूर नहीं मालूम होता। बार-बार देवी सिंह का नाम ले रहे हैं। वह महाराज के पास ही बैठे हैं। 'दवात-कलम मँगाई थी।'

कुंजर सिंह ऐसे हिला, जैसे किसी ने यकायक झकझोर डाला हो। बोला, 'दवात-कलम किसलिए मँगाई थी?'

स्पष्टता के साथ जनार्दन ने जवाब दिया, 'कदाचित् अपना अंतिम आदेश करना चाहते हैं। दवात-कलम पहुँच गई है, कागज पर कुछ लिख भी चुके हों।'

कुंजर सिंह सन्न हो कर बैठ गया। जनार्दन चला गया।

## खंड-सत्रह

उसी समय पंचनद की छावनी में हकीम आगा हैदर आ गया। आते ही उसने जनार्दन से कहा, 'यहाँ आकर बहुत बुरा किया। क्या राजा को मारने के लिए आए थे?'

'नहीं, उनकी इच्छा उन्हें यहाँ ले आई। अब वह जा रहे हैं।'

'ऐसी जल्दी! उफ!'

**शब्दार्थः**
**यथेष्ट** – पर्याप्त

टिप्पणी

'यह सब पीछे सोचिएगा। राजा के पास तुरंत चलिए।'

दोनों जा पहुँचे। लोचन सिंह दवा-दारू में व्यस्त था। देवी सिंह राजा के पास बैठा उनकी देखभाल कर रहा था। छोटी रानी एक ओर परदे में बैठी हुई थीं।

संकेत में आगा हैदर ने अपने लड़के से राजा की दशा पूछी। उसने सिर हिला कर निराशासूचक संकेत किया।

राजा क्षीण स्वर में बोले, 'हकीमजी, कहाँ थे?'

काँपे हुए गले से आगा हैदर ने कहा, 'कदमों में।'

'आज सब पीड़ा खत्म होती है, हकीमजी।' राजा सिसकते हुए बोले।

रोते आगा हैदर ने कहा, 'हुजूर की ऐसी अच्छी तबीयत बहुत दिनों से देखी गई थी। आशा होती है....!'

राजा ने हाथ हिला कर सिर पर रख लिया।

'हकीमजी कालपी गए थे, महाराज। वह अलीमर्दान को किसी गड्ढे में खपाने की चिंता में हैं।' लोचन सिंह ने राजा को शायद प्रसन्न करने के लिए कहा।

आगा हैदर ने हाथ जोड़ कर लोचन सिंह को वर्जित किया।

'हकीमजी,' लोचन सिंह ने धीरे से कहा, 'क्षत्रिय न तो रण की म त्यु से डरता है और न घर की म त्यु से।'

इतने में एक ओर परदे में बड़ी रानी भी आ बैठीं।

रामदयाल ने छोटी रानी के पास से आकर जनार्दन से ज़रा ज़ोर से कहा, 'आप सब लोग बाहर हो जाएँ। कक्कोजू दर्शन करना चाहती हैं।'

राजा ने यह सब वार्ता कुछ सुन ली, कुछ समझ ली। टूटे हुए स्वर में बोले, 'तब सब लोग यही समझ रहे हैं कि मैं मरने को हूँ। कुंजर सिंह कहाँ है?'

**राजा को म त्युआसन्न देख कर लोचन सिंह तथा जनार्दन का कुंजर सिंह के खिलाफ षड्यंत्र**

कुंजर सिंह तुरंत हाथ जोड़ कर सामने खड़ा हो गया। राजा की आँखों में आँसू आ गए और गला रुँध गया। कुछ कहने को हुए, न कह पाए। कुंजर सिंह की आँखें भी डबडबा आईं।

जनार्दन इस तरह बहुत सतर्क था, द ष्टि तुली हुई और सारी देह कुछ करने के लिए सधी हुई वह ऐसा जान पड़ता था, जैसे कि महत्त्वपूर्ण नाटक का सूत्रधार हो। उसने लोचन सिंह की ओर देखते हुए कहा, 'इस समय महाराज को बात करने में जितना कम कष्ट हो, हम अपना उतना ही बड़ा सौभाग्य समझें।'

लोचन सिंह ने कुंजर सिंह के पास जाकर कहा, 'राजकुमार, ज़रा इधर आइए।' इच्छा-विरुद्ध कुंजर सिंह दूसरी ओर दो-तीन कदम के फासले पर हट गया।

जनार्दन दवात-कलम और कागज ले कर राजा के पास जा कर झुक गया। राजा असाधरण चीत्कार के साथ बोले, 'मुझे क्या तुम सबने पागल समझ लिया है?' और तुरंत अचेत हो गए। रामदयाल झपट कर राजा के पास आना चाहता था, लोचन सिंह ने रोक लिया।

कुंजर सिंह ने हकीम से कहा, 'आप देख रहे हैं कि आपकी आँखों के सामने यह क्या हो रहा है?'

**शब्दार्थ :**
**कदाचित** – शायद

टिप्पणी

'मेरी समझ में कुछ नहीं आता।' हकीमजी ने आँखें मलते हुए कहा।

'यह दुधारा खाँड़ा भी आज किसी लोभ में आ गया है।' लोचन सिंह की ओर इंगित करके कुंजर सिंह ने दबे गले से कहा और द ढ़तापूर्वक अपने पिता के पैताने जा कर खड़ा हो गया।

लोचन सिंह धीरे से बोला, 'महाराज जिसे चाहेंगे, उसे लिख देंगे। किसी को उनसे अपनी माँग-चूँग नहीं करनी चाहिए।'

एक क्षण बाद राजा को होश आता देखकर जनार्दन ने ज़ोर से कहा, 'कलम-दवात मँगवाई थी, सो आ गई। देवी सिंह के लिए आदेश हुआ, वह वहाँ उपस्थित है।'

'मुझे किसलिए?' परंतु सुनाई नहीं पड़ा।

जनार्दन ने आग्रह के ऊँचे स्वर में कहा, 'अब आज्ञा हो जावे।'

**रानी द्वारा कुंजर सिंह को अपने सिंघासन के अधिकार को माँगने के लिए उकसाया जाना।**

राजा ने कुछ मुँह में कहा, एक कोने से देवी सिंह ने पूछा।

जनार्दन ने मानो कुछ सुना हो। बोला, 'बहुत अच्छा महाराज, यमुनाजी की रज और गंगाजल ये हैं।' वह सामग्री पास ही रखी थी।

रामदयाल ने छोटी रानी के परदे के पास से चिल्लाकर कहा, 'हकीमजी, यहाँ जल्दी आइए।'

हकीम राजा को छोड़कर नहीं गया। तब रामदयाल चिल्लाया, 'कुंजर सिंह राजा, आप ही इधर तक चले आओ।'

जैसे किसी ने ढकेल दिया हो, उसी तरह कुंजर सिंह छोटी रानी के परदे के पास पहुँचा। छोटी रानी ने सबके सुनने लायक स्वर में कहा, 'भकुए बने खड़े क्या कर रहे हो? तुम राजा के कुँवर हो, क्यों अपना हक मिटने देते हो? जाओ, राजा के पास अपना हक लिखवा लो।'

लोचन सिंह बोला, 'राजा जिसे देंगे, वही पावेगा। यह जबरदस्ती नहीं लिखवाया जा सकता।'

कुंजर सिंह राजा के पलंग की ओर बढ़ा। इतने में जनार्दन ने कहा, 'महाराज देवी सिंह का नाम ले रहे हैं। सुन लो चामुंडराय लोचन सिंह, सुन लो हकीमजी, सुन लो कुंजर सिंह राजा, सुन लो कक्कोजू!' और सब चुप रहे।

लोचन सिंह बोला, 'आप झूठ थोड़े ही कह रहे हैं।'

राजा ने वास्तव में देवी सिंह का नाम दो-चार बार उच्चारण किया था। परंतु क्यों किया था, इस बात को सिवा जनार्दन के और कोई नहीं बतला सकता था।

जनार्दन ने और किसी ओर ध्यान दिए बिना ही खूब चिल्ला कर राजा से कहा, 'तो महाराज देवी सिंह को राज्य देते हैं?'

राजा ने केवल 'देवी सिंह' नाम ले कर उत्तर दिया और राजा देर तक सिर कँपाते रहे। होंठों पर कुछ स्पष्ट शब्द हिले, परंतु सुनाई कुछ भी नहीं पड़ा। और लोगों के मन में संदेह जाग्रत हुआ हो या न हुआ तो, परंतु लोचन सिंह के मन में कोई संशय न रहा।

**शब्दार्थः**
**खाँड़ा** – तलवार
**इंगित** – इशारा
**भकुआ** – क्या करें, क्या न करें की मनः स्थिति

टिप्पणी

जनार्दन ने राजा के हाथ में कलम पकड़ा कर कहा, 'तो लिख दीजिए इस कागज पर, देवी सिंह राजा हुआ।' राजा का हाथ अशक्त था। किंतु किसी क्रिया के लिए ज़रा हिल उठा। सबने देखा जनार्दन ने तुरंत उस हिलते हुए हाथ को अपने हाथ में पकड़ कर कागज पर लिखवा लिया-देवी सिंह राजा हुए। उसके नीचे राजा की सही भी करा ली।

**राजा द्वारा देवी सिंह को राजा बनाया जाना**

रामदयाल चिल्लाया, 'कक्कोजू की मर्जी है कि यह सब जाल है। महाराज कुछ सुन या समझ नहीं सकते। राजा कुंजर सिंह महाराज हो सकते हैं, और किसी का हक़ नहीं।'

बड़ी रानी ने कहलवाया, 'पहले भलीभाँति जाँच कर ली जाए कि महाराज ने अपने चेत में यह आदेश लिखा है या नहीं। व्यर्थ का बखेड़ा नहीं करना चाहिए।'

बड़ी रानी की ओर हाँथ बाँधकर जनार्दन बोला, 'बड़ी कक्कोजू के जानने में आवे कि राज्य कुँवर देवी सिंह को ही दिया गया है।'

'धाँय, धाँय, धाँय।' उधर तोपों का शब्द हुआ।

'महाराज देवी सिंह की जय!' तुमुल स्वर में कोठी के बाहर सिपाही चिल्लाए।

इतने में क्षीण स्वर में 'कुंजर सिंह!' फिर कहा, 'कुंजर सिंह' और रामदयाल ने सुना शायद जनार्दन ने भी। कुंजर सिंह बोला, 'अब भी छल और धूर्त न करते चले जाओगे? मेरा नाम ले रहे हैं।'

'नहीं' देवी सिंह ने कहा, 'नहीं' जनार्दन बोला आगा हैदर चुपचाप एक कोने में खड़ा था।

छोटी रानी परदे से चिल्ला उठी, 'कायर! डरपोक! क्या राज्य ऐसे लिया जाता है?' परदा ज़ोर से हिला, मानो रानी सबके सामने किसी भयानक वेश में आने वाली हैं। रामदयाल लपक कर दरवाजे पर जा डटा।

कुंजर सिंह ने तलवार खींच ली। इतने में लोचन सिंह आ गया। बोला, 'यह क्या है कुंजर सिंह राजा?'

**प्रतिक्रिया स्वरूप कुंजर सिंह द्वारा अपनी तलवार म्यान से बाहर निकाल लेना**

'ये लोग मुझे अब अपने राज्य से वंचित करना चाहते हैं, दाऊजू। कक्काजू ने अभी नाम लेकर मुझे राज्य दिया है।'

'तलवार म्यान में राजा।' लोचन सिंह ने कुंजर सिंह के पास जा कर डपटकर कहा, 'जो कुछ महाराज ने किया है, वह सब मेरे देखते-सुनते हुआ है।' 'धोखा है।' रामदयाल चिल्ला कर छोटी रानी के दरवाजे पर डटे हुए बोला।

**महाराज का देहांत**

राजा ऊर्ध्वश्वास लेने लगे।

राजा की अवस्था ने उपस्थित लोगों के बढ़ते हुए क्रोध पर छाप-सी लगा दी। राजा को भूमि पर शय्या दे दी गई। मुँह में गंगाजल डाल दिया गया। तोपों और जयजयकार के नाद में राजा नायकसिंह की संसार-यात्रा समाप्त हो गई।

## खंड-अट्ठारह

जनार्दन प्रधानमंत्री घोषित कर दिया गया और लोचन सिंह प्रधान सेनापति। इसी बीच दिल्ली से जो समाचार अलीमर्दान को मिला, उससे उसकी बहुत सी चिंताएँ दूर हो गईं। उसने दलीप नगर पर आक्रमण करना निश्चित कर लिया। यदि अलीमर्दान को वह समाचार कुछ दिन पहले मिल गया होता तो शायद वह पंचनद पर ही युद्ध ठानने की

**शब्दार्थः**

**उर्ध्वश्वास**–मरते समय चलने, वाली लंबी साँसें

**धूर्त** – कपटी, छली, झूठा

टिप्पणी

चेष्टा करता। परंतु इसकी संभावना थी बहुत कम, क्योंकि बहुत दूर न होते हुए कालपी से पंचनद पर तोपों का घसीट ले जाना काफ़ी समय ले लेता।

थोड़े दिनों बाद यह सेना कालपी से चल पड़ी।

उधर दलीप नगर में भी खूब तत्परता के साथ जनार्दन और लोचन सिंह द्वारा सैन्य-संगठन होने लगा। प्रजा में विश्वास का संचार हुआ। देवी सिंह इस तरह राजसिंहासन पर बैठने लगा, जैसे दरिद्रता या सामाजिक स्थिति की लघुता ने कभी उसका संपर्क ही न किया हो। उसी समय समाचार मिला कि कुंजर सिंह ने कुछ सरदारों को साथ ले कर सिंहगढ़ पर कब्जा करके विद्रोह का झंडा खड़ा कर दिया है। जनार्दन ने यह भी सुना कि छोटी रानी कुंजर सिंह को उभाड़ने और द्रव्य आदि से सहायता करने में कोई संकोच नहीं कर रही हैं। इस पर भी नए राजा ने उनके साथ कोई बुरा बरताव करने का लक्षण नहीं दिखाया।

**देवी सिंह का राज के रूप में कार्यभार संभालना तथा अलीमर्दान द्वारा दलीप नगर पर आक्रमण**

इसी बीच खबर लगी कि अलीमर्दान सेना लेकर राज्य की सीमा के पास से होता हुआ बढ़ता आ रहा है। शायद कहीं और जा रहा हो। कम-से-कम अपनी तरफ से कारण न उपस्थित किया जाए। ऐसी दशा में उससे लड़ने के लिए सेना भेजना राजा देवी सिंह ने उचित नहीं समझा, परंतु अपने यहाँ चौकसी रखी। कुंजर सिंह को सिंहगढ़ से निकाल भगाने के लिए सिंहगढ़ में घेर लिया गया। सिंधु नदी साँप की तरह कतराती हुई इस किले के नीचे से बहती चली गई है। नदी के उस ओर भयानक जंगल था। किले में खाद्य-सामग्री थोड़े दिनों के लिए थी। घेरा प्रचंडता और निष्ठुरता के साथ पड़ा। किले के बाहर निकल कर लड़ना आत्मघात से भी बुरा था। किले की दीवारों पर तोपें निरंतर गोले फेंकने लगीं। बचने का कोई उपाय न देखकर जो कुछ कुंजर सिंह को अनिवार्य दिखाई पड़ा, वही निश्चय किया, अर्थात् लड़ते-लड़ते मर जाना।

मौका मिलते ही रामदयाल ने छोटी रानी के कान भर दिए। रानी के क्रोध का पार न रहा, बोलीं, 'मैं तब अन्न-जल ग्रहण करूँगी, जब जनार्दन का सिर काट कर मेरे पास ले आवेगा।'

रामदयाल को विस्मय हुआ, वह रानी के हठी स्वभाव को जानता था। उसकी यह कल्पना न थी कि बात इतनी बढ़ जाएगी। बोला, 'अभी काकाजू की तेरही नहीं हुई है; जब हो जाएगी, तब इस काम के होने में देर नहीं लगेगी।'

**रामदयाल द्वारा रानी का कान भरना तथा रानी का प्रण**

'यदि जनार्दन मार डाला गया, तो मानो राज्य प्राप्त हो गया। उसी के प्रपंच से आज मैं इस दशा को पहुँची हूँ। उसी के षड्यंत्रों से राज्याधिकार से वंचित रही। बोल, तू उसका सिर काट सकेगा?'

'मैं आज्ञापालन से कभी न हिचकूँगा।' रामदयाल ने उत्तर दिया, 'फिर चाहे चरणों की सेवा में मुझे अपने प्राण भले ही उत्सर्ग करने पड़ें।'

'तब ठीक है।' रानी ने ज़रा संतोष के साथ कहा, 'परंतु अन्न-जल तभी ग्रहण करूँगी।' रामदयाल ने विषयांतर के प्रयोजन से कहा, 'कालपी से अलीमर्दान की सेना आ रही है।' 'आती होगी, मुझे उसकी कोई चिंता नहीं।'

'इधर से सिंहगढ़ की ओर सेना भेजी गई है। बहुत-सी तोपें भी गई हैं। जनार्दन को इस समय अलीमर्दान इतना शत्रु नहीं जान पड़ रहा है जितना कुंजर सिंह राजा।'

**शब्दार्थ:**

**नाद** – स्वर, आवाज़

**तेरही** – मृत्यु से तेरहवाँ दिन, श्राद्धकर्म के अंतिम दिन का संस्कार

टिप्पणी

रानी ने चकित होकर पूछा, 'कुंजर सिंह को समाचार भेज दिया या नहीं?'

उत्तर दिया, 'कड़ा पहरा बिठलाया गया है। गुप्तचर वेश बदलकर घूम रहे हैं। वहाँ जाने के लिए मेरे सिवा और कोई नहीं है।'

रानी बोलीं, तुम किसी तरह उनके पास यह समाचार पहुँचा दो कि सिंहगढ़ की रक्षा के लिए अधिक मनुष्य एकत्र कर लो, तब तक मैं अन्य सरदारों को ठीक करती हूँ।'

सिर खुजलाते हुए अत्यंत दीनतापूर्वक रामदयाल ने कहा, 'सेना को सिंहगढ़ की ओर गए हुए देर हो गई है। बहुत तेज घोड़े की सवारी से ही इस सेना से पहले सिंहगढ़ पहुँचा जा सकता है। इधर जनार्दन की हम लोगों पर बड़ी पैनी आँख है। कोई अन्य विश्वसनीय आदमी हाथ में नहीं।'

'अच्छा, मैं पुरुषवेश में सिंहगढ़ जाती हूँ।' रानी ने तमककर कठिनाइयों का निराकरण किया, 'देखें मेरा कोई क्या करता है?'

परंतु धीरे से रामदयाल ने कहा, 'महाराज, इस तरह अपने महल को छोड़ कर स्वयं देश-निष्कासित होने से कुंजर सिंह राजा को कोई सहायता आपके द्वारा न मिलेगी और निश्चित स्थान से अनिश्चित स्थान में भटकने की नई कठिनाई का भी सामना करना पड़ेगा।'

रानी की आँख से चिनगारी छूट पड़ी। 'दलीप नगर के इस बिल में चूहे की मौत नहीं मरूँगी।' रानी ने कहा, 'बड़ी की तरह नहीं हूँ कि ऐरों-गैरों का उस पवित्र सिंहासन पर बैठना सह लूँ। घोड़ा तैयार करवा। हथियार और कवच ला।'

रामदयाल आज्ञापालन के लिए चला, फिर लौट कर खड़ा हो गया।

रानी डपट कर बोली, 'क्या मैं ही तेरी खाल खींचूँ? जानता है क्षत्रिय-कन्या हूँ, अपने हाथ से भी घोड़े पर जीन कस सकती हूँ।'

'महाराज!' रामदयाल बड़बड़ाया।

रानी ने अपने कोषागार से तलवार, ढाल और दो पिस्तौलें निकाल लीं। मुस्करा कर कहा, जैसे सावन की अँधेरी रात में बादलों के भीतर बिजली की एक रेखा थिरक गई हो, 'तुझे हथियार उठा लाने का प्रयत्न न करना पड़ेगा। घोड़ा कस सकेगा?'

'महाराज।' रामदयाल ने कंपित स्वर में कहा, 'मैं भी साथ चलूँगा। यदि सर्वनाश ही होना है, तो हो। नहीं तो पीछे मेरी लाश को किसी घूरे पर गीध और गीदढ़ नोचेंगे।'

रानी थक कर चौकी पर तकिया के सहारे बैठ गई।

एक क्षण बाद पूछा, 'बोल, क्या कहता है?'

रामदयाल ने स्थिरता के साथ उत्तर दिया, 'अलीमर्दान की सेना दलीप नगर पर आक्रमण करने आ रही है। अभी दूर है, परंतु थोड़े दिन में अवश्य ही निकट आ जाएगी। जनार्दन उस सेना से युद्ध करने की तैयारी कर चुका है। लड़ाई अवश्य होगी। संधि के लिए कोई गुंजाइश नहीं रही।'

'यह सब क्या पहेली है रामदयाल?' रानी ने झुँझला कर पूछा, 'सीधी तरह कह डाल, जो कुछ कहना हो।'

रामदयाल ने उत्तर दिया, 'अन्नदाता, अलीमर्दान ने अपने राज्य का कुछ नहीं बिगाड़ा था। लोचन सिंह दाऊजी ने नाहक उसकी फ़ौज के एक सरदार को मार डाला। यदि

**शब्दार्थ:**

**बिसावे, बिसाना**–झेल लेना, सहन कर लेना

टिप्पणी

वह बदला लेने के लिए आ रहा है, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। मंदिर और दुर्गाजी के अपमान की बात बिल्कुल बनावटी है। अलीमर्दान को केवल रुपए से गरज है।'

रानी उठ खड़ी हुईं, आँखें जल रही थीं। परंतु धीमे स्वर में बोलीं, 'देख रामदयाल, यदि तू पागल हो गया है, तो मेरी कोई दवा-दारू न होगी। यदि तेरी बात समाप्त हो गई हो और तू अचेत न हो, तो तुरंत घोड़ा कस ले।'

रामदयाल वहाँ से नहीं टला। शीघ्रतापूर्वक बोला, 'कई बार दिल्ली के बादशाहों का साथ इस राज्य ने दिया है। अबकी बार दिल्ली के सरदार से यदि सहायता ली जाए, तो क्या बुराई है?'

रानी बैठ गई, सोचने लगीं। सोचती रहीं।

रामदयाल बीच में बोला, 'अलीमर्दान से बड़नगर वाले नहीं लड़ रहे हैं, विराटा का दाँगी राजा नहीं लड़ रहा है, दलीप नगर को ही क्या पड़ी है, जो व्यर्थ का वैर बिसावे? उसकी सहायता से यदि आप या कुंजर सिंह राज–सिंहासन पा सकें तो कोई अनुचित बात नहीं।'

रानी ने थोड़ी देर में बहुत थके हुए स्वर में कहा, 'तब कुंजर सिंह के पास न जाकर अलीमर्दान के पास जा। मेरी राखी लेता जा। यदि वह मंदिर तोड़ने के लिए आया हो, तो बिना कोई बातचीत किए तुंरत लौट आना।

## खंड-उन्नीस

कुछ दिन पीछे विराटा में भी खबर पहुँची कि कालपी के सूबेदार अलीमर्दान की सेना पालर में पहुँच गई है। मंदिर तोड़कर नष्ट कर दिया है और कुमुद को लक्ष्य करके दलीप नगर पर आक्रमण करने वाली है। यह समाचार वहाँ पहले ही पहुँच गया था कि दलीप नगर का राज्य किसी एक अप्रसिद्ध, दरिद्र ठाकुर देवी सिंह को मिल गया है। किस तरह मिला, यह बात भी नाना रूप धारण करके वहाँ पहुँची थी।

विराटा छोटा-सा राज्य था, परंतु वहाँ का राजा सबदल सिंह सावधान और दिलेर आदमी था। मालूम था कि इस लड़ाई का कारण मंदिर की मूर्ति और कदाचित् कुमुद है। उसे वह सुरक्षित रखे हुए था। जब उसके पड़ोस में होकर अलीमर्दान की सेना निकली, तब उसने कोई रोक-टोक नहीं की, बल्कि खातिर से पेश आया, जिससे अलीमर्दान को कोई संदेह न हो।

इधर-उधर के समाचार कुमुद को बहुत कम मिलते थे। रात को नरपति सिंह से जो कुछ मालूम होता था, उसमें सांसारिक समाचारों का समावेश बहुत कम रहता था।

उस दिन जो कुछ गोमती ने सुना, उससे उसकी विचित्र दशा हो गई। वह कुमुद से कुछ कहना चाहती थी। पूजा और पुजारियों की भीड़ के मारे दिन में अवसर न मिला। दोनों रात गए अपनी कोठरी में चली गईं। कुमुद को विश्राम की ओर प्रव त्त होते देखकर गोमती ने कहा, 'क्या नींद आ रही है?'

'बड़ी क्लांत हूँ गोमती। आजकल काम के मारे जी बेचैन हो जाता है। मूर्ति से वरदान न माँग कर लोग मेरे सामने हाथ फैलाते हैं। मैं तो दुर्गा से केवल प्रार्थना करती हूँ, स्वयं किसी को कुछ नहीं दे सकती।'

**शब्दार्थ:**
**कलांत** – थकी हुई

टिप्पणी

गोमती उसाँस लेकर बोली, 'उधर के समाचार सुने हैं? युग परिवर्तन-सा हुआ है।'

'क्या हुआ है गोमती?' कुमुद ने ज़रा रुचि दिखलाते हुए पूछा।

'अब राजा कौन हुआ है? युवराज को गद्दी मिली होगी।' उठती हुई उत्सुकता को शांत करके कुमुद ने पूछा।

'सो नहीं हुआ।' संयत आवेश के साथ गोमती बोली, 'राजकुमार को नहीं दूसरे को राजा राज्य देकर मरे हैं।'

बड़े कुतूहल के साथ कुमुद ने प्रश्न किया, 'किसको गोमती? किसको?'

'देवी का वरदान खाली नहीं जाता।' गोमती ने कहा, 'देवी की पूजा रीती नहीं पड़ती।'

'तुमने जो कुछ सुना हो, मुझे सविस्तार बतलाओ।' कुमुद ने उत्सुकता के साथ कहा।

गोमती चुप रही, जैसे किसी ने उसका गला पकड़ लिया हो। थोड़ी देर बाद बोली, 'जिसने उस दिन पालर की लड़ाई में राजा के प्राण बचाने के लिए अपने शरीर को लगभग कटवा दिया था।'

कुमुद ने अनसुनी-सी करके कहा, राजकुमार का क्या दोष समझा गया? इस कृत्य का मूल कारण राजा का पागलपन न समझा जाए, तो क्या समझा जाए?'

'पागलपन नहीं था जीजी?' गोमती ने द ढ़ता के साथ कहा।

इस नए संबोधन से कुमुद बहुत संतुष्ट नहीं हुई। परंतु उसी सहज म दुल स्वर में बोली, 'तो क्या था गोमती?'

'राजकुमार दासी से उत्पन्न हैं, इसलिए उन्हें राज्य नहीं मिला।' गोमती ने स्वाभाविक गति से उत्तर दिया।

लंबी उसाँस लेकर कुमुद ने पूछा, 'कौन राजा हुआ गोमती?'

गोमती ने उत्साह के साथ उत्तर दिया, 'मैंने बतलाया था, जिन्होंने उस दिन राजा के प्राणों की रक्षा की थी।

कुमुद ने विस्मयपूर्वक कहा, 'तुम्हारे दूल्हा?'

गोमती ने कुछ नहीं कहा।

## पाठगत प्रश्न 32.1

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. राजा नायक सिंह ने पहूज में स्नान न करने का फैसला किया, क्योंकि-
   (क) वह लोचन सिंह से डर गया
   (ख) नदी में पानी बहुत कम था
   (ग) हकीम के इलाज पर उसका विश्वास नहीं था
   (घ) कुंजर सिंह उसके साथ नहीं था
2. लोचन सिंह ने मुसलमान-सैनिक को दुर्गामंदिर से चले जाने को कहा, क्योंकि-
   (क) वह मंदिर की मर्यादा भंग कर रहा था
   (ख) उसने कुंजरसिंह को अपशब्द कहा

टिप्पणी

(ग) वह मुसलमान था

(घ) दुर्गा की पूजा करना चाहता था

3. कुंजर सिंह को सिंहासन प्राप्ति की आशा न थी, क्योंकि-

(क) वह कायर था

(ख) छोटी रानी उसे नहीं चाहती थी

(ग) राजा उससे घ णा करते थे

(घ) वह दासी पुत्र था

4. देवी सिंह को राजगद्दी इसलिए मिली क्योंकि –

(क) वह नायक सिंह का पुत्र था

(ख) जनार्दन उसका समर्थक था

(ग) उसने नायक सिंह की जान बचाई थी

(घ) वह वीर था

दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिएः

5. राजा ने पालर झील में स्नान करने का विचार क्यों रखा ?
6. दाँगी कन्या कुमुद के दुर्गा का अवतार होने का विश्वास क्यों फैला ?
7. दलीप नगर और कालपी की सैनिक टुकड़ियों में झड़प क्यों हुई ?
8. नायक सिंह ने रामदयाल को क्या आदेश दिया ?
9. नायक सिंह कुंजर सिंह पर क्यों नाराज़ हुआ ?
10. जिस समय नायक सिंह कालपी के सैनिकों से घिर गया था, उस समय देवी सिंह कहाँ जा रहा था ?

## द्वितीय अंश

### खंड-बीस

कुंजर सिंह के विद्रोह और अलीमर्दान की अवश्यंभावी चढ़ाई का समाचार यथासमय टोरिया पर पहुँचा। गोमती ऐसे सब समाचारों को जासूसों की तरह खोद निकालने में निमग्न थी।

**गोमती द्वारा दलीप नगर के नए राजा कुंजर सिंह के विद्रोह तथा अलीमर्दान के आक्रमण की कहानी कुमुद को सुनाया जाना।**

गोमती ने वार्तालाप आरंभ किया।

'मैंने सुना है 'कि कुंजर सिंह ने राज्य-विद्रोह किया है। सिंहगढ़ पर अनधिकार चेष्टा से दखल कर लिया है और इस अनुचित, अधर्मपूर्ण युद्ध में मनुष्यों के सिर काट और कटवा रहे हैं। छोटी रानी, जो म त राजा को विष देकर मार डालना चाहती थीं, उनका साथ दे रही हैं। ग ह-कलह की ऐसी आग दोनों ने मिलकर सुलगा दी कि दलीप नगर का राज्य राख में मिल जाने ही को है।'

कुमुद के ह्रदय से एक उष्ण उसाँस निकली।

गोमती कहती गई, 'इधर कालपी के मुसलमान सूबेदार ने चढ़ाई कर दी है। वह अपने विराटा के पास से होकर आजकल में ही निकलने वाला है। उसका प्रयोजन पालर

**शब्दार्थः**

**टोरिया** – छोटी पहाड़ी, बड़े-बड़े पत्थरों से युक्त ऊँचा टीला

**उष्ण** – गर्म

**धर्मानुमोदित** – धर्म द्वारा समर्थित

टिप्पणी

**गोमती द्वारा देवी के मंदिर के अस्तित्व को लेकर आशंका व्यक्त करना**

में मंदिर को विध्वंस करने का है। उसने आपके विषय में जो वासना प्रकट की है, उसे कहने से मेरी जीभ के खंड-खंड हो जाएँगे।'

कुमुद देर तक सोचती रही। थके हुए कुछ काँपते स्वर में बोली, 'गोमती, सो जाओ, फिर कभी बात करूँगी। नींद आ रही है।

परंतु भक्त का हठ चढ़ चुका था। गोमती बोली, 'नहीं देवी, आज वरदान देना होगा, जिसमें कोई अनिष्ट न हो। यदि कहीं आपने समझ लिया कि कुंजर सिंह का पक्ष न्यायसंगत है तो दलीप नगर का, संसार-भर का सर्वनाश हो जाएगा। यदि दलीप नगर के धर्मानुमोदित महाराज, कुंजर सिंह से हार गए, यदि अलीमर्दान ने ऐसी अव्यवस्थित अवस्था में राज्य पाया, तो आपके मंदिर का क्या होगा? धर्म का क्या होगा? अन्य राजा अपनी तर्जनी भी मंदिर की रक्षा में न उठावेंगे। विराटा राज्य में इतनी शक्ति नहीं कि अलीमर्दान का मर्दन कर सके। इसलिए जननी! रक्षा करो, बचाओ।'

गोमती कुमुद के पैरों से लिपट गई और आसुँओं से कुमुद के पैर भिगो दिए।

कुमुद ने कठिनाई से उसे छुड़ा कर अपने पास बैठा लिया। सिर पर हाथ फेर कर बोली, 'क्या चाहती हो गोमती? जो कुछ कहोगी, उसके लिए माता दुर्गा से प्रार्थना करूँगी। यह निश्चय जानो कि माता का मंदिर भ्रष्ट न होने पावेगा। उसकी रक्षा भगवती करेंगी।'

'तो मैं यह वरदान चाहती हूँ!' गोमती ने अँधेरे में हाथ जोड़कर कहा, 'यह भीख माँगती हूँ कि कुंजर सिंह का नाश हो, अलीमर्दान मर्दित हो और दलीप नगर के महाराज की जय हो।'

'कुमुद ने कुछ समय पश्चात् शांत, स्थिर स्वर में कहा, 'यह न होगा गोमती। परंतु मंदिर की रक्षा होगी और अलीमर्दान का मर्दन होगा, इसमें कोई संदेह नहीं।'

'यह वरदान नहीं है।' गोमती ने प्रखर स्वर में कहा, 'यह मेरे लिए अभिशाप है'

'मैं बतलाती हूँ। ठहरो।' कुमुद ने कहा और कुछ क्षण तक कुछ सोचती रही। फिर द ढ़तापूर्वक बोली, 'तुम्हारे राजा का राज स्थिर रहेगा। मंदिर बचेगा और अलीमर्दान की जय न होगी। तुम्हें इससे अधिक और क्या चाहिए?

गोमती संतुष्ट हो गई।

## खंड-इक्कीस

अलीमर्दान एक बड़ी संख्या में सेना लिए हुए पालर जा पहुँचा। उसे अपने पड़ाव के लिए वहाँ से बढ़कर अच्छा स्थान मालूम न था। घोड़ों के लिए पानी और चारा दोनों का सुभीता था तथा उसी स्थान पर दुर्गा का मंदिर और पुजारिन का घर भी था।

बड़नगर के राजा को अलीमर्दान ने आश्वासन दे दिया था कि उसकी प्रजा के साथ किसी प्रकार का दुर्व्यवहार न किया जाएगा और न मंदिर को नष्ट। दलीप नगर के राजा को दंड देना, राज्य-च्युत करके हलवाहे को हलवाहा कर देना ही सिर्फ मेरी मंशा है। दलीप नगर और बड़नगर वर्षों से दिल्ली के मातहत राज्य थे, परंतु परस्पर स्वतंत्र थे। उनकी दिल्ली की मातहती भी दिल्ली के बल के हिसाब से घटती-बढ़ती या तिरोहित होती रहती थी। इस समय इनमें से कोई भी दिल्ली के प्रति व्यावहारिक रूप में अपनी अधीनता प्रकट नहीं कर रहा था; लेकिन खुल्लमखुल्ला विरोध भी न था।

दलीप नगर दुविधा में था। एक ओर सिंहगढ़ का घेरा, दूसरी ओर अलीमर्दान; घर में

टिप्पणी

छोटी रानी का भय और पूर्ण-दुर्व्यवस्था से राज्य को निकाल कर वर्तमान में संगठन का आयोजन।

इसलिए पालर तक पहुँच जाने में अलीमर्दान की रोक-टोक न की गई।

अलीमर्दान जब पालर पहुँचा, उसे वहाँ सिवाय किसानों के कोई नहीं मिला। मंदिर का निरीक्षण करने गया। साथ में उसका एक सरदार था। अलीमर्दान ने सरदार से कहा, 'मंदिर तो बहुत छोटा है, काले खाँ। मैंने बहुत बड़े-बड़े मंदिर देखे हैं। क्या इसी के ऊपर उन लोगों को इतना नाज़ था?'

**चित्र : अलीमर्दान का पालर पहुँचना**

**अलीमर्दान द्वारा पालर पहुँचकर मंदिर का निरीक्षण**

'हुजूर, इस जगह को उन लोगों ने अपनी नाक बना रखा है। पुजारिन कहीं भाग गई होगी, मगर पता लग जाएगा। बुंदेलखंडी लोग भागते भी हैं, तो घर छोड़कर दूर नहीं जाते।'

'तुम्हारे साथ किस जगह लोचन सिंह लड़ा था?'

काले खाँ ने स्थान बतलाकर कहा, 'इस जगह, हुजूर।'

'और वह कहाँ थी?'

लड़ाई के समय कुमुद जिस स्थान पर अपने पिता के साथ कुंजर सिंह की अभिभावकता में खड़ी थी, वह स्थान भी अलीमर्दान को बताया गया। यह सब देख-भाल कर और आसपास के रास्ते, छिपाव और आक्रमण के स्थानों की परीक्षा करके संध्या के पहले अलीमर्दान काले खाँ को साथ ले कर झील पर गया।

**अलीमर्दान को रानी द्वारा राखी भेजना तथा उससे अपनी सहायता का आश्वासन प्राप्त करना**

'पानी का बड़ा सहारा है यहाँ काले खाँ। यहीं से दस्ते बना-बना कर हमला करना अच्छा है।'

'बेहतर है हुजूर।'

'दो दिन सामान इकट्ठा कर लो। तीसरे दिन धावा कर दिया जाए। सिपाहियों को इस बीच में आराम भी मिल जाएगा।'

इतने में एक सिपाही ने सूचना दी कि दलीप नगर से कोई मुज़रा करने के लिए आया है। उससे नमाज़ के बाद तक ठहरने के लिए कह दिया गया।

नमाज़ के बाद अलीमर्दान से दलीप नगर का जो मनुष्य मिला, वह रामदयाल था। उस समय अलीमर्दान के पास काले खाँ के सिवा और कोई न था।

रामदयाल ने कहा, 'मैं सरकार के पास राखी लाया हूँ।'

'राखी!' अलीमर्दान आश्चर्य से बोला, 'किसने भेजी है? मैं राखी मंजूर न करूँगा।'

'यह राखी लौट नहीं सकती। म त महाराज की छोटी रानी ने भेजी है। जो नए राजा के विरुद्ध आपसे सहायता चाहती हैं।'

**शब्दार्थः**

**मर्दित** – पराजित, कुचला हुआ
**च्युत** – हटाना
**मातहत** – अधीन
**तिरोहित** – समाप्त
**अभिभावकता** – पिता तुल्य संरक्षण
**वत्त** – हाल
**राखी** – सूत का बना बन्धन जिसे बहन भाई को बाँधती है और उससे अपनी रक्षा का आश्वासन प्राप्त करती है।

टिप्पणी

अलीमर्दान चौंक पड़ा। 'छोटी रानी की राखी मंजूर है।' वह एक क्षण बाद बोला, 'जाओ, आज से वह मेरी धर्म की बहिन हुई।'

रामदयाल ने प्रसन्नतापूर्वक अलीमर्दान को राखी दे दी। उसने पगड़ी में रख ली। फिर रामदयाल से उसने एक-एक करके रियासत संबंधी सब वृत्त पूछ डाला। सब हाल सुनकर काले खाँ से बोला, 'तुम एक दस्ता लेकर कुंजर सिंह की मदद के लिए सिंहगढ़ जाओ। मैं दूसरे दस्ते से दलीप नगर पर धावा करता हूँ।'

## खंड-बाईस

**रानी की रक्षा के लिए कुछ सरदारों को नियुक्त कर अलीमर्दान द्वारा दलीप नगर पर आक्रमण**

अपनी सेना का एक दस्ता पालर में छोड़कर दूसरे दिन उसने कूच कर दिया। जब दलीप नगर के राज्य में कई कोस घुस गया तब रामदयाल को विदा करते समय बोला, 'रानी के पास कुछ सरदार हैं?'

'उन सबको लेकर सिंहगढ़ पहुँचो। अब रानी का दलीप नगर में रहना ठीक नहीं।'

'बहुत अच्छा। मैं अभी जाकर इसका प्रबंध करता हूँ।'

कुछ समय उसे रोक कर अलीमर्दान ने कहा, 'मंदिर के विषय में तुम्हारा क्या ख्याल है कि मैं तुड़वा दूँगा।'

'कभी नहीं।' रामदयाल ने आवेश में आकर उत्तर दिया।

ज़रा ठहर कर अलीमर्दान ने कहा, 'मगर जिस लड़की ने यह फसाद करवाया था, उसे कुछ सजा दी जाएगी।'

अलीमर्दान हँस कर बोला फिर, 'मगर उस लड़की को जो सजा दी जाएगी, वह किसी बड़े पुरस्कार से भी बढ़कर होगी।'

रामदयाल अलीमर्दान का मुँह जोहने लगा।

अलीमर्दान कहता गया, 'उसे मैं अपने महल में जगह दूँगा। पालर की अपेक्षा शायद कालपी उसे शुरू-शुरू में कम पसंद आवे, बस, इतने में ही सजा समझो। इसके बाद अगर वह सुखी न रह सकी, तो तुम मुझे दोष देना। क्या कहते हो रामदयाल?' उसने उत्तर दिया, 'इसमें तो किसी प्रकार का हर्ज नहीं दिखलाई पड़ता हुजूर।'

राजा देवी सिंह और लोचन सिंह के नायकत्व में दलीप नगर की सेना को अलीमर्दान नुकसान नहीं पहुँचा पाया। दलीप नगर की ओर उसकी बढ़ती हुई प्रगति को निश्चित रूप से रुक जाना पड़ा। नालों, जंगलों और पहाड़ियों में लड़ते-लड़ते अलीमर्दान ने सोचा, बिना किसी अच्छे किले को हाथ में किए युद्ध आसानी से, और विजय की पूरी आशा के साथ न हो सकेगा। इसलिए उसने देवी सिंह की सेना को अटकाए रखने के लिए एक दस्ता जंगल में छोड़ दिया और उसी सेना के दूसरे दस्ते को लेकर होशियारी के साथ चुपचाप सिंहगढ़ रवाना हो गया। बहुत चक्करदार मार्ग से जाना पड़ा, इसलिए वह सिंहगढ़ के निकट देर में पहुँचा।

राजा देवी सिंह को इस चाल की सूचना विलंब से मिली। उस समय पालर की छावनी से अलीमर्दान की इस नई योजना के अनुसार और सिपाही आ पहुँचे। देवी सिंह इस सेना का मुकाबला और पालर की छावनी पर धावा करने के लिए वहीं गया और लोचन सिंह को सिंहगढ़ की ओर भेजा।

परंतु इसके पहले ही रामदयाल ने छोटी रानी के पास पहुँच कर राजधानी में ही उपद्रव

टिप्पणी

जाग्रत कर दिया। जो लोग राजा देवी सिंह के अभिषेक से असंतुष्ट थे वे सब छोटी रानी के झंडे के नीचे आ गए और उन्होंने खास दलीप नगर में ग ह युद्ध आरंभ कर दिया। छोटी रानी ने एक सरदार के नीचे थोड़ी-सी सेना राजधानी को तंग करने के लिए छोड़ दी और एक बड़ी तादाद में सेना को लेकर सिंहगढ़ की ओर चल पड़ी। उसे यह नहीं मालूम था कि अलीमर्दान सिंहगढ़ की ओर गया है। मालूम भी हो जाता, तो वह न रुकती। जनार्दन ने इस विद्रोह का समाचार राजा के पास, जहाँ वह लड़ रहा था, भेजा। पत्रवाहक लोचन सिंह को बीच ही में मिल गया। तब लोचन सिंह सिंहगढ़ की ओर न जाकर सीधा दलीप नगर पहुँचा। राजधानी के बलवे को दबाने के लिए लोचन सिंह को कई दिन लग गए।

**चित्र : रामदयाल की छोटी रानी भेंट**

इस बीच में रानी और अलीमर्दान की सेनाएँ सिंहगढ़ के मुहासिरे पर पहुँच गईं। राजा देवी सिंह की सेना को कुंजर सिंह, अलीमर्दान और छोटी रानी की सेनाओं से लोहा लेना पड़ा।

## खंड-तेईस

राजा देवी सिंह की सेना सिंहगढ़ के घेरे में हार गई और भागकर दलीप नगर पहुँची। देवी सिंह ने जनार्दन से कहलवा भेजा, 'यदि लोचन सिंह से काम न चलता हो, तो किसी दूसरे सरदार को सिंहगढ़ भेजो। यहाँ उसे मत लौटाना मैं उसका मुँह नहीं देखना चाहता।'

जनार्दन ने सामयिक स्थिति पर बातचीत करते हुए लोचन सिंह से कहा, 'यदि आप सीधे सिंहगढ़ चले जाते, तो अच्छा होता। राजा की आज्ञा का उल्लंघन करके अच्छा नहीं किया।'

'वह पुरानी बात है। यदि काम करना है, तो उसे तो यों ही मानूँगा और नहीं करना है तो अपने घर चला जाऊँगा, परंतु युद्ध के विषय में मैं पंडितों की आज्ञा नहीं लिया करता।'

'महाराज ने क्या कहलवाया है, जानते हो?' जनार्दन ने उत्तेजित होकर कहा, 'और युद्ध के दिनों में घर बैठ जाना तो किसी भी सरदार को शोभा नहीं देता।'

लोचन सिंह ने तड़ककर कहा, 'तो अब राजा को सूचित कर दो कि जहाँ पौरुष की कदर नहीं, वहाँ लोचन सिंह नहीं रहेगा।' और जनार्दन के विनय-प्रार्थना करने पर भी वहाँ से उठ गया।

## खंड-चौबीस

सिंहगढ़ में कुंजर सिंह को छोटी रानी की सेना के आने का और उसके उद्देश्य का समाचार मिल गया था। इन दोनों का संयुक्त दल सिंहगढ़ के फाटक खुलवाकर

**शब्दार्थ :**
**मुहासिरा**–सीमाबंदी
**उत्फुल्ल**–प्रसन्न, खिला हुआ
**जुहार**–निवेदन

टिप्पणी

**कुंजर सिंह का सिंहगढ़ पहुँचना**

भीतर पहुँच गया। कुंजर सिंह को अलीमर्दान के दस्ते का हाल मालूम न था। रामदयाल अलीमर्दान के साथ-साथ था। डोले में रानी की सवारी सबसे पहले दाखिल होकर दूसरी ओर चली गई। कुंजर सिंह सबसे पहले रानी के पास गया। पैर छूकर खड़ा हो गया। परिश्रम और थकावट के सारे चिह्न उसके मुख पर थे, परंतु हर्ष की भी रेखाएँ चमक रही थीं; जैसे धूल में सोना दमक रहा हो।

रानी ने कृतज्ञ कुंजर सिंह से कहा, 'खास दलीप नगर में लड़ाई हो रही है। सैयद की फ़ौज देवी सिंह से पालर की ओर लड़ रही है और स्वयं सैयद को रामदयाल यहाँ लिवा लाया है। उसकी सहायता न होती, तो तुमसे मिल पाना असंभव होता।' और कुंजर के मस्तक पर हाथ फेरा।

सुनकर कुंजर की आँखों में तारे छिटक उठे। अलीमर्दान का नाम सुनते ही शरीर में पसीना आ गया। जब उसका सिर उठा, रानी ने देखा, एक क्षण पहले का उत्फुल्ल मुख मुरझा गया है, जैसे कमल को पाला मार गया हो।

'क्या है कुंजर सिंह? क्या कहना चाहते हो?' रानी ने पूछा।

'कुछ नहीं कक्कोजू!' कुंजर ने उत्तर दिया, 'मुझ सरीखे तुच्छ मनुष्य के लिए आपने जो कष्ट उठाया है, वह व्यर्थ गया-सा जान पड़ता है।'

इस रुखाई से रानी तिलमिला उठीं। बोलीं, 'तुम सदा से रोते-से ही बने रहे। क्या इस विजय से तुम्हें राजसिंहासन अपने अधिक निकट नहीं दिखाई पड़ रहा है? सेना एक-आध रोज विश्राम कर ले कि तुरंत दलीप नगर के ऊपर प्रबल आक्रमण कर दिया जाएगा और जनार्दन, देवी सिंह, लोचन इत्यादि बागियों को उनके किए का भरपूर बदला दे दिया जाएगा।'

'महाराज'-कुंजर सिंह कहता-कहता रुक गया।

'बोलो, बोलो, कुंजर सिंह क्या कहते हो?' रानी ज़रा चिढ़कर बोलीं।

सामने से रामदयाल को और उससे थोड़े ही पीछे अलीमर्दान को देख कर कुंजर सिंह ने कहा, 'अभी कक्कोजू विश्राम करें, बहुत परिश्रम किया है। अवकाश मिलने पर निवेदन करूँगा।' रानी का डोला किले के भीतर महलों में चला गया और कुंजर सिंह मुड़कर रामदयाल के पास पहुँचा।

**कुंजर सिंह का अलीमर्दान से मिलना**

रामदयाल ने महत्त्वपूर्ण द ष्टि और मिठास-भरे स्वर में जुहार किया, धीरे से बोला, 'कालपी के नवाब साहब हैं। इन्होंने बात रख ली।'

कुंजर सिंह चुपचाप बिना कोई भाव प्रदर्शित किए अलीमर्दान के पास पहुँचा। अभिवादन किया।

अलीमर्दान को जान पड़ा, इस स्वागत में अतिथि-पूजा की अनुभूति नहीं है; परंतु उसने अपनी कुढ़न को तुरंत दबा लिया। हँसकर बोला, -सिंहगढ़ के बहादुर शेर राजा कुंजर सिंह का दर्शन हो रहा है न?'

कुंजर सिंह ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया। उसका आंतरिक भाव जो कुछ भी रहा हो, परंतु उसमें इतनी शिष्टता थी कि हर्ष का उत्तर खिन्नता से न दे।

अलीमर्दान हँसकर बोला, 'राजा साहब, रामदयाल ने बड़ी सहायता की है। आपके शुभचिंतकों में ऐसे कुशल मनुष्य का होना गर्व की बात है।'

**शब्दार्थः**
**उत्फुल्ल** – प्रसन्न, खिला हुआ
**जुहार** – निवेदन

कुंजर सिंह ने संयत शब्दों में उसकी प्रशंसा की परंतु उनमें काफ़ी कृपणता थी और रामदयाल को वह खटकी। कुंजर सिंह के स्थान पर पहुँच कर अलीमर्दान ने तय किया कि रात को आनंदोत्सव मनाया जाए।

कड़ी लड़ाई के बाद सिपाही जब आनंद मनाते हैं, तब उनका वेग पाठशाला से छूटे हुए छोटे-छोटे विद्यार्थियों के हुल्लड़ से कहीं अधिक बढ़ जाता है। इस शोर-गुल को एक ओर छोड़कर अलीमर्दान, कुंजर सिंह और रामदयाल एकांत स्थान में जा बैठे।

उमंग के साथ अलीमर्दान ने कहा, 'जिस दिन राजा साहब का तिलक होगा, उस दिन जश्न और भी ज़ोर-शोर के साथ मनाया जाएगा।'

'बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ सामने हैं।' कुंजर सिंह ने गंभीरता के साथ कहा, 'मैंने तो समझा था कि सिंहगढ़ के भीतर ही रणक्षेत्र और श्मशान दोनों हैं।'

रामदयाल बोला, 'अब उतनी कठिनाइयाँ हमारे सामने नहीं हैं, जितनी देवी सिंह इत्यादि के सामने हैं।'

'आप राजा साहब,' अलीमर्दान स्वाभाविक गति के साथ बोला, 'राज्य प्राप्त करते ही रामदयाल को बड़ा सरदार बनाइएगा। मैं इनके लिए सिफारिश करता हूँ, निवेदन करता हूँ।'

'परंतु', भाव को छिपाकर बोला, 'शुभ घड़ी आने पर किसी सेवक की कोई सेवा नहीं भुलाई जा सकती, नवाब साहब। यथोचित पुरस्कार सभी को मिलेगा।'

रामदयाल के मन में इस वचन से किसी उमंग का संचार न हुआ। बोला, 'महारानी साहिबा और राजा की कृपा बनी रहे नवाब साहब हमारे ऊपर। हमें तो चरणों में पड़े रहने में ही सुख है, सरदारी लेकर क्या करेंगे?'

अलीमर्दान की समझ में न आया। 'भविष्य में आपकी क्या कार्यविधि होगी, राजा साहब? अब सेनापतित्व का भार आपको लेना होगा।'

उत्तर के लिए कुंजर सिंह तैयार था। बोला, 'मेरी गति-मति के ऊपर रानी साहिबा को अधिकार है। उनकी इच्छा मालूम करके आपसे प्रार्थना करूँगा।'

'बहुत अच्छा।' अलीमर्दान ने कहा, 'सवेरे तक बतला दीजिएगा। परंतु एक सम्मति है, उसे ध्यानपूर्वक सुन लीजिए और रानी साहिबा से अर्ज कर दीजिए। वह यह है कि सवेरे तुरंत कुछ फ़ौज दलीप नगर पर हमला करने के लिए रवाना करवा दी जाए और एक टुकड़ी पास-पड़ोस के छोटे-मोटे किलों पर कब्जा करने के लिए भिन्न-भिन्न दिशाओं में भिजवा दी जाए।'

कुंजर सिंह बोला, 'सेना को इस तरह कई भागों में विभक्त कर देना ठीक रणनीति होगी या नहीं, कक्कोजू से पूछ निवेदन करूँगा।'

उसी संध्या के बाद रामदयाल ने अलीमर्दान से बात करने का अवसर निकाला। वह भी रामदयाल की टोह में था।

'गद्दी मिलने के बाद राजा साहब दीवान किसको बनाएँगे, रामदयाल?' अलीमर्दान ने पूछा।

'हुजूर, या वह, जिसे उस पद पर बिठलाएँ।' रामदयाल ने उत्तर दिया।

'मैं तो उन्हें गद्दी पर बिठला कर कालपी चला जाऊँगा। वहीं के मामलों से फ़ुरसत नहीं। न मालूम दिल्ली जाना पड़े, न मालूम मालवे की तरफ़।'

टिप्पणी

'तब जिसे वह चाहेंगे; परंतु राज्य, इस तिलक के बाद भी, बिना आपकी सहायता के किस तरह चलेगा सो ज़रा मुश्किल से समझ में आता है। यदि महारानी के हाथ में शासन की बागडोर रहने दी जाएगी, तो निस्संदेह कठिनाइयाँ कम नज़र आवेंगी।'

अलीमर्दान हँसकर बोला, 'यदि रामदयाल को दीवान बना दिया जाएगा तो शायद ज़्यादा गड़बड़ न हो।' फिर तुरंत गंभीर हो कर कहने लगा, 'तुम क्या इसे असंभव समझते हो? दिल्ली की सल्तनत में छोटे-छोटे आदमी बहुत बड़े-बड़े हो गए हैं। दिमाग और होशियारी की कद्रदानी की जाती है, रामदयाल!'

रामदयाल चुप रहा।

अलीमर्दान ने कहा, 'तुम्हें अगर दीवान मुकर्रर किया, तो महारानी साहिबा को तो कोई एतराज न होगा?'

उसने उत्तर दिया, 'उनके चरणों की कृपा से तो मैं जीता ही हूँ।' कुछ और कहना चाहता था, झिझक गया।

अलीमर्दान ने कहा, 'राजा साहब तो बेचारे बड़े नेक और सीधे आदमी मालूम होते हैं।'

रामदयाल ने कोई मंतव्य प्रकट नहीं किया।

'हमारा कुछ काम, रामदयाल?' उसने पूछा।

रामदयाल बोला, 'आज्ञा?'

'मैंने तुमसे पालर में कुछ कहा था?'

'याद है।'

'इस बीच में तुम बहुत उलझनों में रहे हो। अगर पता लगा सको, तो अच्छा है, नहीं तो खैर।'

'लगा लिया।' रामदयाल ने कहा।

उत्सुकता के साथ अलीमर्दान ने पूछा, 'कहाँ है?'

**अलीमर्दान द्वारा कुमुद के बारे में रामदयाल से पूछताछ**

'ख़बर लगी है कि वह विराटा के जंगलों में किसी गुप्त किले की अद श्य गुफा में है।'

अलीमर्दान अपनी सहज सावधानता के व त्त का उल्लंघन करके बोला, 'रामदयाल, बड़ा पुरस्कार मिलेगा।'

'हुजूर, मैं उसे ढूँढूँगा और आपके सम्मुख कर दूँगा। इसका बीड़ा उठाता हूँ।'

ज़रा दबी जबान से अलीमर्दान ने पूछा, 'तुम उसे देवी का अवतार तो नहीं समझते?'

'ज़रा भी नहीं।' रामदयाल ने उत्तर दिया, 'यह तो मूर्खों का ढकोसला है।'

'उसका नाम क्या है?'

'कुमुद।'

## खंड-पचीस

जिस समय अलीमर्दान और रामदयाल की बातचीत हो रही थी, उस समय कुंजर सिंह छोटी रानी के पास था।

छोटी रानी उससे कह रही थीं, 'तो तुम्हारा यह तात्पर्य है कि यहाँ हम लोग न आते, तुम्हें यहीं लड़ने, सड़ने और मरने दिया जाता। ठीक है न, कुंजर सिंह?'

**शब्दार्थ:**
**मुकर्रर** – नियुक्त

'आपके दर्शनों से तो मेरे पाप कटते हैं।' कुंजर सिंह ने कहा, 'परंतु अलीमर्दान को नहीं

बुलाना चाहिए था।'

'अलीमर्दान को न बुलाया होता, तो सर्वनाश हो गया होता। उसने तो वैसे भी चढ़ाई कर दी थी। उसे रोक ही कौन सकता था? और दलीप नगर के पूर्व राजा इस तरह की सहायता का आदान-प्रदान पहले से भी करते आए हैं।

'परंतु जिस प्रयोजन से वह आया है, वह आपको मालूम है?'

'वह जनार्दन और लोचन सिंह को सूली देने आया है। यदि वह इसमें सफल हो जाए, तो मैं कहूँगी कि बहुत अच्छा हुआ।'

'वह पालर की देवी और उनका मंदिर नष्ट करने आया है। आपको यह बात स्मरण रखनी चाहिए।'

रानी ने झल्लाकर कहा, 'मुझे क्या बात स्मरण रखनी चाहिए, मैं इसे बहुत अच्छी तरह जानती हूँ। यदि तुम साथ रहकर लड़ाई करना चाहो, तो अच्छा है। यदि तुम्हारे मन को न भावे, तो जिस तरह चाहो, लड़ो, या धर्मद्रोही, स्वामिघाती जनार्दन की शरण चले जाओ और हम लोगों का अशुभ चिंतन करो।'

कुंजर सिंह का कलेजा हिल गया। नम्रतापूर्वक बोला, 'महाराज रुष्ट न हों। आप राज्य करें। मुझे राज्य की उतनी अधिक परवाह नहीं। यदि होगी भी, तो जनार्दन इत्यादि को दंड देने के उपरांत जो कुछ भाग्य में होगा, पाऊँगा।' इस नम्रता में द ढ़ता की गूँज सुन कर रानी कुछ नरम पड़ीं। बोलीं, 'अलीमर्दान का वह प्रयोजन नहीं, जो तुम समझ रहे हो। उसने मेरी राखी स्वीकार की है, मुझे बहिन की तरह माना है। हिंदुओं का धर्मनाश उसका कदापि उद्देश्य नहीं है। ऐसी हालत में तुम्हें व्यर्थ के संदेहों में माथापच्ची नहीं करनी चाहिए।'

इतने में वहाँ रामदयाल आ गया। रानी के पास किसी समय भी आने की उसे मनाही नहीं थी।

रानी ने उससे कहा, 'रामदयाल, आगे के लिए क्या ढंग सोचा गया है?'

कुंजर सिंह की ओर संकेत करके उसने उत्तर दिया, 'जैसा निश्चय किया जाए, वैसा होगा।'

'अभी तक कुछ निश्चय नहीं हुआ?' रानी बोली।

कुंजर सिंह ने कहा, 'अलीमर्दान की राय सेना को टुकड़ियों में विभक्त करके इधर-उधर बिखेरने की है। सेना का अधिक भाग वह सिंहगढ़ में रखना चाहते हैं। यदि देवी सिंह की सेना ने किसी ओर से प्रचंड वेग के साथ चढ़ाई कर दी, तो सिंहगढ़ हाथ से चला जाएगा और बिखरी हुई टुकड़ियाँ कभी संयुक्त न हो पाएँगी।'

रानी झुँझला कर बोली, 'रामदयाल, क्या इसी तरह का युद्ध करने की बात अलीमर्दान ने कही है?'

उसने उत्तर दिया, 'ठीक इसी तरह की तो नहीं कही है। नवाब साहब दलीप नगर को अधिकृत करने के लिए पर्याप्त सेना भेजना चाहते हैं।'

रामदयाल की बात कुंजर सिंह को कभी अच्छी नहीं लगती थी। इस समय और भी प्रखरता के साथ पड़ गई। बोला, 'तो कक्कोजू, रामदयाल को सेनानायक बना दें। बस, प्रधान सेनापति अलीमर्दान और सहकारी सेनाध्यक्ष रामदयाल।'

टिप्पणी

अपने इस क्षोभ पर कुंजर सिंह को तुरंत पछतावा हुआ। कुछ कहना भी चाहता था कि रामदयाल ने बहुत विनीत भाव के साथ कहा, 'कक्कोजू ने पूछा था, इसलिए मैंने निवेदन किया। यदि कोई अपराध किया हो, तो क्षमा कर दिया जाऊँ। मैं तो सदा भगवान से मनाया करता हूँ कि आप लोगों के चरणों में पड़ा रहूँ।'

रानी ने पूछा, 'तब क्या कार्यक्रम स्थिर किया?'

कुंजर सिंह ने उत्तर दिया, 'हमारी कुछ सेना सिंहगढ़ में रहे, बाकी दलीप नगर पर धावा कर दे और अलीमर्दान अपनी सेना लेकर देवी सिंह पर छापा मारे।'

रानी ने रामदयाल की ओर देखते हुए कहा, 'अलीमर्दान को पसंद आवेगा?'

'नहीं आवेगा, महाराज।' रामदयाल ने उत्तर दिया।

कुंजर सिंह ने कहा, 'मैं नवाब से बात करूँगा।'

दूसरे दिन सवेरे कुंजर सिंह ने अलीमर्दान से अपने संकल्प के अनुरूप कराने की चेष्टा की, परंतु सफल न हुआ। अलीमर्दान सिंहगढ़ को अपने अधिकार से बाहर नहीं होने देना चाहता था। दो-तीन दिन इसी विषय को लेकर वाद-विवाद होता रहा। सहज निर्णयशीला रानी कुंजर सिंह को किले के बाहर निकाल देने की कल्पना करने लगी। अलीमर्दान को रानी का यह भाव कुछ-कुछ अवगत हो गया। उन दो-तीन दिनों में कोई सेना कहीं नहीं भेजी गई। अलीमर्दान ने मुस्तैदी के साथ खाद्य-सामग्री इकट्ठी कर ली। परंतु तीन दिन के उपरांत की रण की योजना अनिश्चित ही थी।

## खंड-छब्बीस

लोचन सिंह के रुष्ट हो कर चले जाने पर जनार्दन बहुत चिंतित हुआ। वह उसके हठी स्वभाव को जानता था। इसलिए उस समय मनाने के लिए नहीं गया।

राजधानी में बलवा ऊपर से देखने में दब गया था, परंतु शांत नहीं हुआ था। जिन लोगों ने यह विश्वास करके उपद्रव किया था कि देवी सिंह यथार्थ में राज्य का अधिकारी नहीं है, बड़ी रानी अनुचित रूप से देवी सिंह का साथ दे रही हैं, और छोटी रानी अन्याय पीड़ित हैं, उन लोगों के कुचल दिए जाने से भावों की तरंग नहीं कुचली जा सकी, प्रत्युत् वह भीतर-ही-भीतर और भी प्रबल और प्रचंड हो उठी। जनार्दन इस बात को जानता था, इसलिए लोचन सिंह जैसे सबल योद्धा और सेनापति को ऐसे गाढ़े समय में हाथ से नहीं खो सकता था।

परंतु लोचन सिंह की प्रकृति में ऐसी बातों के लिए बहुत ही कम स्थान था। जनार्दन कुछ समय का अंतर देकर बिना किसी ठाठ-बाट के, अकेला, लोचन सिंह के घर गया।

जाते ही हाथ बाँध कर खड़ा हो गया। बोला, 'आज एक भीख माँगने आया हूँ।'

**चित्र : रुष्ट लोचनसिंह से जनार्दन का हाथ जोड़कर भीख माँगना**

**शब्दार्थ:**
**प्रत्युत** – इसलिए

टिप्पणी

सैनिक लोचन सिंह ने बँधे हुए हाथ छुड़ा दिए। कहने लगा, 'पंडितजी, मुझे हाथ जोड़कर पाप में मत घसीटो।'

'भीख माँगने आया हूँ। इससे तो आप ब्राह्मणों को वर्जित नहीं कर सकते!'

'मैं आपकी सब करामात समझता हूँ! आप जो कुछ माँगें, दे डालूँगा, परंतु बात न दूँगा। मैं सिहंगढ़ न जाऊँगा।'

जनार्दन ने तुरंत कहा, 'उसके विषय में जो आपको उचित दिखलाई पड़े, सो कीजिए। मैं और एक भीख माँगने आया हूँ।'

लोचन सिंह ने गंभीर हो कर पूछा, 'और क्या! पंडितजी?'

जनार्दन ने राज्य की मुहर लोचन सिंह के सामने डालकर कहा, 'सिंहगढ़ मत जाइए। कहीं न जाइए। यह मुहर लीजिए और दीवानी का काम कीजिए। मेरे बाल-बच्चों की रक्षा का भार लीजिए और मुझे विदा दीजिए। मैं बदनीनारायण जाता हूँ। ग्रीष्म ऋतु आने तक वहाँ पहुँच जाऊँगा। यदि कभी लौटकर आ सका और दलीप नगर का बचा-खुचा देख सका, तो बाल-बच्चों का भी मुँह देख लूँगा, अन्यथा ब्राह्मणों को तीर्थ में प्राणत्याग करने का भय नहीं है।'

लोचन सिंह ने अचंभे के साथ कहा, 'मैं दीवानी करूँगा? दीवानी में क्या-क्या करना होता है, इसे जानने की मैंने आज तक कभी कोशिश नहीं की। यह मुझसे न होगा।'

आतंक के साथ बाह्मण बोला, यह भी न होगा, वह भी न होगा, तब होगा क्या? बात देकर बदलता आपको आज ही देखा, अभी-अभी आपने क्या कहा था?'

लोचन सिंह की आँख के एक कोने में एक छोटा-सा आँसू ढलक आया। बोला, 'मैं हार गया।'

'क्या हार गए? भीख न दोगे?' जनार्दन ने पूछा।

'सिंहगढ़ जाऊँगा। या तो सिंहगढ़ राजा को दे दूँगा या कभी अपना मुँह न दिखाऊँगा।' लोचन सिंह ने उत्तर दिया, 'अभी सेना लेकर रवाना होता हूँ।'

## खंड-सत्ताईस

अलीमर्दान को खबर लगी कि देवी सिंह का सामना करने के लिए जिस फ़ौज को वह छोड़ आया था, उसे मैदान छोड़ना पड़ा और पालर की सेना को देवी सिंह ने इस तरह आक्रांत किया कि दूसरी टुकड़ी उसमें नहीं मिल सकी। वह चक्कर काट कर सिंहगढ़ की ओर आ रही है। यह सूचना पाकर उसने एक बड़े दस्ते के साथ दलीप नगर पर धावा कर देने का निश्चय किया। वह सिंहगढ़ को भी नहीं भूला। काले खाँ के सेनापतित्व में सैनिकों को छोड़ने का उसने प्रबंध कर लिया।

**अलीमर्दान द्वारा दलीप नगर पर धावा बोलने की योजना बनाना तथा कुंजर सिंह द्वारा उसकी सहायता लेने से इन्कार तथा उससे युद्ध का प्रण।**

रानी को भी खबर लगी। उसने कुंजर सिंह को उसी समय बुलाकर कहा, 'अब क्या करने की ठानी है मन में, अब भी परस्पर लड़ते-झगड़ते ही रहोगे?'

'मैं यदि किले में ही लड़ते-लड़ते मर जाता, तो बहुत अच्छा होता।'

रानी ने कहा, 'वह अब भी हो सकता है, कुंजर सिंह। मौत के लिए किसी को भटकना नहीं पड़ता। तुम्हें यदि क्षत्रियों की मौत चाहिए, तो योजनाओं में मीन-मेख मत निकालो। जो कहा जाए, करो।'

टिप्पणी

'मैंने अपनी नीति निश्चित कर ली है।' कुंजर सिंह ने निर्णय-व्यंजक स्वर में कहा। 'मैं इस गढ़ को अलीमर्दान के अधिकार में न जाने दूँगा। वह हमारी सहायता सेंत-मेंत करने नहीं आया है। सिंहगढ़ का परगना और किला सदा के लिए हथियाना चाहता है, क्योंकि कालपी की भूमि इसके पास पड़ती है। मैं इस बपौती को प्राण रहते न जाने दूँगा। केवल आपकी आज्ञा मुझे शिरोधार्य है, और किसी की नहीं।'

रानी ने वाक्य पूरा होने दिया। बोलीं, 'तुम कदाचित् यह समझते हो कि यहाँ न होगे तो प्रलय हो जाएगी। मैं भी सैन्य-संचालन कर सकती हूँ। लड़ना, मरना और राज्य करना भी जानती हूँ।'

असंदिग्ध भाव से कुंजर सिंह ने कहा, 'आप राज्य करें, मैं आड़े नहीं हूँ। पर मैं सिंहगढ़ को दूसरों के हाथ न जाने दूँगा।'

'मूर्ख!' रानी प्रचंड स्वर में बोलीं, 'सदा मूर्ख रहा और सदा मूर्ख ही रहेगा। मैंने अलीमर्दान को सेनापति नियुक्त किया है, उसकी आज्ञा माननी होगी। जो कोई उल्लंघन करेगा, वह दंड का भागी होगा।'

कुंजर सिंह क्रोध के मारे काँपने लगा। काँपते हुए स्वर में उसने कहा, 'आप स्त्री हैं, यदि किसी पुरुष ने यह बात कही होती, तो अपने खड्ग से उसका उत्तर देता।'

रानी का हाथ अपने हथियार पर गया ही था कि दौड़ता हुआ रामदयाल आया। यकायक बोला, 'हम लोग घिर गए हैं।'

'किनसे?' कुंजर सिंह और रानी दोनों ने पूछा।

'लोचन सिंह की सेना का एक भाग सिंधु नदी के उस पार उत्तर की ओर बहुत निकट आ गया है। दक्षिण और पश्चिम की ओर से भी एक बड़ी सेना आ रही है।'

रानी दाँत पीसकर बोलीं, 'कुंजरसिंह, जाओ। अब मेरे सामने मत आना।'

कुंजर सिंह यह कहता हुआ वहाँ से चला गया, 'मैं किला छोड़कर बाहर नहीं जाऊँगा।'

कुंजर सिंह ने अपने सब आदमी इकट्ठे करके सिंधु नदी की ओर उत्तर वाले छोटे फाटक के आस-पास फैला दिए और उन्हें अपनी स्थिति समझा दी। वे लोग बहुत नहीं थे, परंतु आज्ञाकारी थे। फिर वह अलीमर्दान के पास गया। 'नवाब साहब,' कुंजरसिंह ने साधारण शिष्टाचार के साथ कहा, 'लोचन सिंह का विरोध बड़ी सावधानी और कड़ाई के साथ करना पड़ेगा। उस सरीखा रण-सूर और रण-चतुर कठिनाई से कहीं और मिलेगा।'

अलीमर्दान ने कहा, 'आप, काले खाँ और रानी साहिबा किले के भीतर से लड़ें और मैं बाहर से लड़ूँगा।'

'मुझे यह सलाह पसंद है।' कुंजर सिंह ने एक क्षण सोचने का भाव दिखाते हुए कहा।

कुंजर सिंह अपने स्थान पर चला गया। थोड़े ही समय में उसे ज्ञात हो गया कि गढ़ का नायकत्व उसके हाथ में नहीं है और रानी के नाम की ओट में अलीमर्दान सेनापतित्व कर रहा है।

## खंड-अट्ठाईस

**लोचन सिंह का सिंहगढ़ पर आक्रमण।**

लोचन सिंह एक बड़ी सेना लेकर तूफान की तेजी से सिंहगढ़ पर चढ़ आया। चक्कर दिलवा कर उसने अपनी सेना का एक भाग सिंधु के उस पार किले के ठीक उत्तर में

टिप्पणी

भेज दिया।

अलीमर्दान ने गढ़ से बाहर निकल कर उसका सामना किया। दो दिन की लड़ाई में दोनों ओर के बहुत से आदमी मारे गए। बार-बार लोचन सिंह विरोधी दल को गढ़ में भगा देने की चेष्टा करता था और अलीमर्दान उसे विफल-प्रयत्न कर डालता था। तीसरे दिन लोचन सिंह ने निरंतर आक्रमण जारी रखने के लिए अपनी सेना के अनेक दल बनाए, जो बारी-बारी से जागते, सोते और युद्ध करते थे। यह योजना बहुत अंशों में सफल हुई और दिन-रात की लड़ाई में उसका प्रभाव अलीमर्दान की पीछे हटती हुई सेना पर दिखाई देने लगा। गढ़ अभी लोचन सिंह से दूर था। थोड़ा-सा पीछे हट कर अलीमर्दान खूब जम कर लड़ने लगा। दिन-भर ज़ोर की लड़ाई हुई। संध्या से ज़रा पहले अलीमर्दान की सेना दाएँ-बाएँ कट कर बहुत तेजी के साथ लड़ते-लड़ते भाग गई। आध-आध मील पश्चिम और पूर्व दिशाओं में भागने के बाद दूर पर एक जगह-इकट्ठी होने लगी।

लोचन सिंह की समझ में यह रहस्य न आया। परंतु सामने कहीं-कहीं आग का प्रकाश देख कर उसका भ्रम दूर हो गया। विश्रामप्राप्त दल को लेकर उसने तुरंत हमला करने का निश्चय किया।

घुड़सवारों ने आक्रमण किया। आक्रमण का वेग पहले कम, फिर प्रचंड हो उठा। जो घुड़सवार आगे थे, एक स्थान पर जाकर यकायक रुक गए। एकबारगी चिल्लाए, 'मत बढ़ो, धोखा है।' और बहुत-से सवारों का चीत्कार और घोड़ों के आहत होने का स्वर सुनाई पड़ा। तुरंत ही बंदूकों की बाढ़ दगने लगी।

**लोचन सिंह द्वारा खाई में फँसे अपने सैनिकों की सहायता।**

गोलियों की भनभनाहट के बीच लोचन सिंह अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ उस स्थान पर पहुँचा। देखा, सामने एक बड़ी गहरी और चौड़ी खाई है, जिसमें पड़े-पड़े घोड़े अपने टूटे सिर-पैर फड़फड़ा और घायल सिपाही कराह रहे हैं।

घोड़े की लगाम हाथ में पकड़े हुए, घुटने टेके हुए सैनिक से लोचन सिंह ने पूछा, 'इसमें कितने खप गए होंगे?'

'सैकड़ों।' उत्तर मिला।

'मेरे पीछे आओ।' लोचन सिंह ने कहा।

'मौत के मुँह में?'

'नहीं, मौत के मुँह से बचाने के लिए। अभागे, सब खाई में कूद पड़ो।'

बोला, 'साफा मेरी कमर में बाँध कर नीचे लटका दो। मैं वहाँ की दशा देखता हूँ। उसके बाद घोड़ों को छोड़ कर और लोग भी इसी तरह उतर आओ। घोड़ों की लोथों और आदमियों की लाशों को इकट्ठा करके गड्ढा पाट दो, और मार्ग बनाकर खाई को पार लो। एक घंटे के भीतर सिंहगढ़ हाथ में आ जाएगा। मैंने निश्चय किया है कि आज वहीं सोऊँगा।'

लोचन सिंह को नीचे अकेले न जाना पड़ा। कई सैनिक इसके लिए तैयार हो गए, परंतु लोचन सिंह सबसे पहले नीचे उतरा। नीचे जाकर इन लोगों ने लाशों को ढेर लगाकर खाई में एक सँकरा रास्ता बना लिया। वह इतना बड़ा था कि दो-तीन सवार एक साथ निकल सकते थे। दूसरी ओर से बंदूकें चल रही थीं, परंतु लोचन सिंह आगे

**शब्दार्थ :**
**साफा** – पगड़ी बाँधने का कपड़ा।
**तुमुलध्वनि** – युद्ध के लिए शंखनाद

टिप्पणी

और उसके सवार पीछे-पीछे खाई पार करके दूसरी ओर पहुँच गए। अलीमर्दान ने कल्पना नहीं की थी कि लोचन सिंह की सेना खाई पार करके शीघ्र आ जाएगी। उसने इस खाई के पश्चिमी तथा पूर्वी सिरों पर व्यूह बना लिया था और बीच की पाँत को ज़रा पीछे हटाकर जमा किया था। सिरे वाली टुकड़ियाँ उसके बँधे हुए इशारे पर काम नहीं कर पाईं, नहीं तो लोचन सिंह की सेना का बहुत बड़ा भाग थोड़ी देर में नष्ट हो जाता। लोचन सिंह की सेना ने खाई पार करके तुमुलध्वनि के साथ जय जयकार किया। खाई के उस तरफ जो लोग रह गए थे, उन्होंने भी जयकार किया। इसी बीच किले के ऊपर तोपें गोले उगलने लगीं। खाई के दोनों सिरों की टुकड़ियाँ किले की ओर भागीं। इस गोलमाल में अलीमर्दान की बीच की पाँत भी पीछे हटी। किले की तोपों ने शत्रु और मित्र का भेद न पहचाना। दोनों दलों के अनेक लोग इन गोलों से चकनाचूर हो गए।

अलीमर्दान ने किले के भीतर घुस कर युद्ध करना पसंद नहीं किया। वह पूर्व की ओर दूरी पर अपनी सेना ले कर चला गया। यद्यपि वह चतुराई के साथ पीछे हटने में दक्ष था, परंतु इस लड़ाई में उसका नुकसान हुआ।

लोचन सिंह की विजयिनी सेना किले की ओर बढ़ती गई। खाई के सिरों पर अलीमर्दान की जो टुकड़ियाँ किले की ओर भागीं, उनके लिए द्वार न खुल पाया। उत्तर की ओर से लोचन सिंह के दूसरे दस्ते ने ज़ोर का धावा किया। कुंजर सिंह के दल ने यथाशक्ति उत्तर की ओर से आने वाली बाढ़ का प्रतिरोध किया, परंतु कुछ बन न पड़ा। वह दल दूसरी ओर से किले के भीतर घुस आया। कुंजर सिंह ने अपने साथियों सहित लड़कर मर जाने की ठानी।

उसी समय रामदयाल, कुंजर सिंह के पास आया। बोला, 'राजा, महारानी के महलों पर चल कर लड़ो। यह स्थान घिर गया है। काले खाँ फाटक पर लड़ रहे हैं। उस तरफ से दुश्मन की फ़ौज दाबे चली आ रही है। यदि फाटक खोलते हैं, तो भीतर-बाहर सब ओर बैरी का लोहा बज जाएगा।'

कुंजर सिंह ने कहा, 'महारानी जितने सिर कटवा सकती हैं, उतने बचा नहीं सकतीं। इस जगह लड़ना व्यर्थ है, मैं तो बाहर जाकर लड़ूँगा।'

**काले खाँ द्वारा कुंजर सिंह को ललकारना तथा लोचन सिंह के हाथों लड़ते हुए हार जाना, फिर लोचन सिंह द्वारा रानी को बंदी बनाया जाना।**

यह कहकर कुंजर सिंह अपने आदमियों को लेकर चलने को हुआ। इतने में काले खाँ आ गया। बोला, 'कुंजर सिंह, तुमने हमारा सत्यानाश किया। कहाँ जाते हो?'

'जहाँ इच्छा होगी, वहाँ?'

'यह नहीं हो सकता। मैं कोटपाल हूँ। मेरा हुकुम मानना होगा, न मानोगे, सजा पाओगे।'

कुंजर सिंह नंगी तलवार हाथ लिए था। बोला, 'दंड-विधान मेरे हाथ में है। जाओ, अपना काम देखो। गढ़ और राज्य का मालिक मैं हूँ, और फिर बतलाऊँगा।' काले खाँ चिल्लाया, 'पकड़ो, पकड़ो।'

लोचन सिंह की सेना के जो सैनिक गढ़ के भीतर आ गए थे, वे काले खाँ की ओर झपटे। वह तो लड़ता हुआ किले की दक्षिण की ओर निकल गया, परंतु रामदयाल पकड़ा गया।

सिपाहियों ने उसे कैद कर लिया।

उधर से लोचन सिंह की सेना ने गढ़ का सदर फाटक तोड़ डाला। काले खाँ की सेना

**शब्दार्थ :**
**बैरी**–दुश्मन

टिप्पणी

घमासान युद्ध करने लगी, परंतु लोचन सिंह को पीछे न हटा सकी। काले खाँ कुछ सिपाहियों को लेकर किले से बाहर निकल गया। उसकी शेष सेना का अधिकांश भाग मारा गया; जो नहीं लड़े, वे कैद कर लिए गए।

लोचन सिंह ने रानी को भी कैद कर लिया।

मशालों की रोशनी में किले का प्रबंध करके लोचन सिंह ने किले के भीतर और बाहर सेना को नियुक्त किया। एक दल काले खाँ का पीछा करने के लिए भी भेजा। अलीमर्दान भी स्थिति को समझ कर वहाँ से दूर चला गया। काले खाँ अपने बचे-खुचे आदमी लेकर उससे जा मिला और दोनों-पालर वाले दस्ते से कई कोस के फासले पर कुछ समय उपरांत जा मिले। उस रात लोचन सिंह सिंहगढ़ में तो पहुँच गया, परंतु सो नहीं सका।

## खंड-उनत्तीस

राजा देवी सिंह ने अलीमर्दान के पालर वाले दस्ते को हटा कर ही चैन नहीं लिया। बल्कि इस बात का प्रबंध करने की चेष्टा की कि वह लौट कर फिर उपद्रव न करे। राजधानी सुरक्षित थी। सिंहगढ़-विजय का समाचार पाकर उसने दलीप नगर की सीमा को बचाव के लिए द ढ़ करना आरंभ कर दिया। उधर लोचनसिंह को उचित धन्यवाद देते हुए आदेश भेजा।

**लोचन सिंह द्वारा रानी पर दबाव डाला जाना कि दलीप नगर पर वे अपना अधिकार न समझें।**

लोचन सिंह ने रामदयाल को बुलाया। कैद में था, पहरेदारों के साथ आया। लोचन सिंह ने कहा, 'छोटी रानी से मिलना चाहता हूँ। कागज-कलम और दवात तैयार रखें।'

रानी के पास पहुँचे लोचन सिंह ने बहुत शिष्टाचार के साथ, पर कठोरतापूर्वक कहा, 'आपको कागज पर यह लिखना होगा कि दलीप नगर राज्य से आपको कोई वास्ता नहीं।'

'किसकी आज्ञा से?' रानी ने काँपते हुए स्वर में पूछा।

'राजा की आज्ञा से।' उत्तर मिला।

'राजा की आज्ञा से।' बड़ी घ णा के साथ रानी बोली, 'उस भिखमंगे की आज्ञा से! जाओ उससे कह दो कि मैं रानी हूँ, राज्य की स्वामिनी हूँ। वह लुटेरा और जनार्दन विश्वासघाती हैं, चोर हैं, मैं तुम सबको दंड की व्यवस्था करूँगी।'

'तुम अब रानी नहीं हो।' लोचन सिंह ने उत्तेजित हो कर कहा, स्त्री हो, नहीं तो....।' लोचन सिंह वाक्य पूरा नहीं कर पाया।

उस दिन लोचन सिंह ने रानी का पहरा बहुत कड़ा कर दिया।

खबर पाकर राजा देवी सिंह ने रानी को रामदयाल समेत दलीप नगर बुलवा लिया और लोचन सिंह को सिंहगढ़-रक्षा के लिए वहीं रहने दिया।

राजा ने जनार्दन से कहा, 'लोचन सिंह ने रानी के साथ बहुत कढ़ाई का बरताव किया है, परंतु इसमें दोष मेरा है। मुझे लिखा-पढ़ी कराने का काम लोचन सिंह के हाथ में न देना चाहिए था। तुम्हारे हाथ में होता तो सुभीते के साथ हो जाता।'

'नहीं महाराज।' जनार्दन बोला, 'मुझ पर तो रानी का पूरा कोप है। उन्होंने मुझे मरवा डालने का प्रण किया है। मेरे द्वारा वह काम और भी दुष्कर होता।'

टिप्पणी

राजा ने हँसकर कहा, 'मैं ऐसे पागलों की बहक की कुछ भी परवाह नहीं करता। मैं चाहता हूँ, रानी का अब किसी तरह का अपमान न किया जाए और पहरा बहुत हल्का कर दिया जाए। वह राजमाता हैं, आदर की पात्रा हैं, केवल इतनी देखभाल की जरूरत है जिसमें संकट उपस्थित न कर सकें।'

'यह बात ज़रा कठिन है' महाराज! पहरा कठोर न होगा तो किसी दिन महल से निकल भाग कर विद्रोह खड़ा कर देंगी।' जनार्दन द ढ़ता के साथ बोला।

राजा ने एक क्षण सोच कर कहा, 'तब उन्हें बड़ी रानी के महलों में एक ओर रख दो। वहाँ पहले ही से बहुत नौकर-चाकर और सैनिक रहते हैं। पहरा काफ़ी बना रहेगा और रानी को खटकने न पावेगा।'

इस प्रस्ताव को ध्यानपूर्वक सोच कर जनार्दन ने स्वीकार कर लिया।

इसके बाद दोनों छोटी रानी के पास गए।

**देवी सिंह द्वारा रामदयाल समेत रानी को दलीप नगर बुलाना।**

रानी परदे में थीं। राजा ने देहरी पर माथा टेक कर प्रणाम किया। रानी ने आशीर्वाद नहीं दिया। बोलीं, 'जनार्दन को यहाँ से हटा दो।'

देवी सिंह इस तरह के अभिवादन की आशा नहीं करता था। सन्नाटे में आ गया। उसे अवाक् होता देख जनार्दन आगे बढ़ा। कहने लगा, 'मेरे ऊपर आपको जो रोष है सो उचित ही है परंतु यदि आप विचार करें, तो समझ में आ जाएगा कि वास्तव में मेरा अपराध कुछ नहीं। और मान लिया जाए कि मैं अपराधी हूँ, तो भी आपको माता के बराबर मानता हूँ, इसलिए क्षमा के योग्य हूँ। मैंने जो कुछ किया है, राज्य के उपकार के लिए किया है।'

रानी ने टोक कर कहा, 'हम जो दर-दर मारे-मारे फिर रहे हैं, हमारे साथ जो छोटे-छोटे आदमी पशुओं जैसा बरताव कर रहे हैं, हमें बंदीग ह में डाल रखा है, वह सब राज्य का उपकार ही है न, पंडितजी? स्मरण रखना, इस लोक के बाद भी कुछ और है, और देर-सबेर वहीं जाओगे।'

जनार्दन कुछ कहना चाहता था, परंतु राजा ने आँख के संकेत से मना कर दिया और बोला 'रामदयाल को मैं इसी समय मुक्त करता हूँ। वह सदा आपकी चाकरी में रहेगा और आप बड़ी कक्कोजू वाले महल में चली जाएँ।'

'न।' रानी ने कहा, 'मैं इसी कैदखाने में अच्छी, जो पहले मेरा ही महल था, आज यातना-ग ह हो गया है।'

राजा ने जनार्दन से कहा, 'मैंने रामदयाल को मुक्त कर दिया है। आप उसे तुरंत यहाँ भेजें।'

जनार्दन रामदयाल को लेने गया।

राजा ने कहा, 'कक्कोजू, आप पंडितजी पर क्रोध न करें। राज्य सँभालने के लिए उन्हें अपना काम करना पड़ता है।'

'कक्कोजू मुझे मत कहो।' रानी ने रोते हुए कहा, 'मैं राजा की रानी हूँ और तुम्हारी कोई नहीं। यदि कोई होती, तो क्या लोचन सिंह इत्यादि मेरा ऐसा अपमान कर पाते?'

'जो कुछ हुआ, वह अनिवार्य था, कक्कोजू।' राजा बोले, 'जो कुछ हुआ, उसका स्मरण छोड़ दीजिए। आगे जो कुछ करूँगा, आपकी आज्ञा से।'

टिप्पणी

इतने में रामदयाल को लेकर जनार्दन आ गया।

राजा ने रामदयाल से कहा, 'कक्कोजू को बड़ी कक्कोजू वाले महल में पहुँचा दो। उन्हें यदि किसी तरह का कष्ट हुआ, तो तुम्हें संकट में पड़ना होगा।'

## खंड-तीस

छोटी रानी को बड़ी रानी के महल में रखने के बाद जनार्दन ने सोचा, अच्छा नहीं किया। एक तो यह कि छोटी रानी शायद उन्हें भी विचलित करने की कोशिश करें, और दूसरे यह कि वहाँ से निकल भागने का अधिक सुभीता है।

**राजा द्वारा छोटी रानी को बड़ी रानी के महल में रखा जाना।**

राजा ने छोटी रानी को बड़ी रानी के भवन में भेज देने के बाद पहरा शिथिल कर दिया और रामदयाल को उनकी सेवा में बने रहने की अनुमति दे दी। जो लोग बड़ी रानी की टहल में रहते थे, उन्हीं से छोटी रानी पर निगरानी रखने के लिए चुपचाप कह दिया।

दो-तीन दिन के बाद छोटी रानी से सलाह करके रामदयाल बड़ी रानी के पास पहुँचा। जब तक दासियाँ पास रहीं, तब तक वह केवल शिष्टाचार की बातें करता रहा। बड़ी रानी समझ गईं कि किसी गुप्तचर की उपस्थिति के कारण रामदयाल हृदय की बात कहने से झिझक रहा है। अपनी निज की दासियों को हटाकर रानी ने रामदयाल के साथ अधिक स्वतंत्र वार्तालाप की आशा की।

दासियों के चले जाने पर रामदयाल ने कहा, 'वह आपसे छोटी हैं। आप क्या उनके किए को क्षमा न कर देंगी? जो दुख आपको है, वही उन्हें भी है।'

ठंडी साँस लेकर रानी ने कहा, 'उनमें और सब गुण हैं, केवल एक वाणी उनके काबू में होती, तो व था का झंझट आपस में कभी न होता। उनके कष्ट और अपमान की बात सुनकर हृदय बैठ जाता है।'

रामदयाल ने इधर-उधर की बातें करने के सिवा उस समय और कुछ नहीं कहा। जाते समय बोला, 'यदि कक्कोजू आपके पास आएँ, तो क्या आपको अखरेगा?'

आँखें छलक पड़ीं। रुद्ध कंठ से कहा, 'वह क्या और हैं? अवश्य आवें।'

'बहुत अच्छा, महाराज।' कहकर रामदयाल चला गया।

**छोटी रानी का बड़ी रानी से मिलना**

नियुक्त समय पर छोटी रानी बड़ी रानी के पास आईं। बड़ी का चरण-स्पर्श द्वारा अभिवादन किया। बोलीं, 'जो कुछ मुझसे बुरा-भला बना हो, उसे बिसार दिया जाए, क्योंकि अब यह सोचना है कि इतने बड़े जीवन को कैसे छोटा किया जाए।'

बड़ी ने कहा, 'मैं तो आज ही जीवन को समाप्त करने के लिए तैयार हूँ, अब और क्या देखना है, जिसके लिए जीऊँ।'

छोटी रानी ने ज़रा घूँघट उघारा। बोलीं, 'मैं केवल एक अनुष्ठान के लिए अब तक जीवन बनाए हुए हूँ। बात फैल गई है, परंतु उसकी चिंता नहीं। आज्ञा हो, तो सुनाऊँ?'

'अवश्य, अवश्य।'

'जनार्दन हम लोगों के सर्वनाश की जड़ है।'

'अब उसकी चर्चा व्यर्थ है।'

'वह चर्चा अमिट है। क्या भूल गईं, किस तरह से उसने महाराज के हस्ताक्षर का जाल

**शब्दार्थ :**
**अखरेगा** – खलेगा, बुरा लगेगा
**भुला देना** – बिसारना
**अनुष्ठान** – विधिपूर्वक पूरा किया जाने वाला धार्मिक कृत्य

बनाया? किस तरह उसने एक अनजान लड़के को अपना खिलौना बनाकर सारे राज्य की बागडोर अपने हाथ में रखी है?'

बड़ी रानी ने कोई उत्तर नहीं दिया। नीचा सिर कर लिया। छोटी रानी ने ज़रा धीमे होकर कहा, 'असल में हम लोग राज्य के अधिकारी हैं। बिराने को अपनी संपत्ति भोगते देख कर छाती सुलग जाती है। यही मेरा दोष है, यही मेरा पाप है।'

'पर इसका प्रतिकार ही क्या हो सकता है? जो भाग्य में लिखा है, सो होकर रहेगा।'

'हमारे भाग्य में यह सब दुख और जनार्दन के भाग्य में हमारा अपमान करना ही लिखा है, यह कैसे कहा जा सकता है?'

बड़ी रानी छोटी का मुँह ताकने लगीं।

छोटी रानी ने उत्तेजित होकर कहा, 'हमारे भाग्य में राज्य लिखा है, प्रजापालन लिखा है, और जनार्दन के भाग्य में प्राणवध का दंड बदा है। मुझे देवी ने सपना दिया है।'

देवी के सपने की बात सुनकर बड़ी रानी बोलीं, 'अलीमर्दान को तुमने क्योंकि निमंत्रण दिया? इसे लोग अच्छा नहीं कहते।'

'न कहें अच्छा।' छोटी ने कहा, 'कष्टों से पार पाने के लिए मैंने उसके पास राखी भेजी थी। और क्या करती?'

'वह देवी का मंदिर तोड़ने आया है।'

'नहीं।'

'और मंदिर की पुजारिन को, जो देवी का अवतार भी मानी जाती हैं, नष्ट करने।'

'इसमें बिलकुल तथ्य नहीं। हमारे विरुद्ध राजा को उभारने के लिए ही जनार्दन इत्यादि ने यह षड्यंत्र खड़ा किया है।'

'लोचन सिंह सौगंध खा कर कहता है।'

'ओह! उस नीच, नराधम पशु की बात मत कहो। उस जैसी हृदयहीनता पत्थर की शिलाओं में भी न होगी। ऐसा मूर्ख, ऐसा अभिमानी...

बड़ी रानी ने धीरे से छोटी रानी की उग्रता के बढ़ते हुए वेग को रोकने के लिए टोक कर कहा, 'अपने स्वभाव को अपने हाथ में रखो। जो कुछ करो, समझ-बूझ कर करो। हमारे निर्बल हाथों में कोई शक्ति नहीं। जो सरदार किसी समय तरफ़दार थे, उनके जी मुरझा गए हैं। अब कदाचित् कोई साथ न देगा।'

'मैं किसी से नहीं डरती।' छोटी रानी ने कहा, 'मन की बात मन में ही बंद कर लेने से वह वहीं हो कर रह जाती है। आपको सीधा पा कर ही तो इन लोगों की बन आई है। आप कैसे इन लोगों की करतूतों को सहन करती हैं?'

इसका उत्तर बड़ी रानी ने एक लंबी साँस लेकर दिया। थोड़ी देर में छोटी रानी चली गई। बड़ी रानी ने सोचा, यदि मैं छोटी के साथ अपनी शक्ति को मिला देती तो ये दिन सिर न आते। मैं अपने को निस्सहाय, निराश्रय समझकर ही इस हीन दशा को पहुँची हूँ।

**शब्दार्थ:**

**प्रतिकार** – किसी कार्य को रोकने के लिए किया जाने वाला उपाय

**सौगंध** – कसम

**नराधम** – बुरा आदमी

**निराश्रय** – बिना और ठिकाने वाला

टिप्पणी

## पाठगत प्रश्न 32.2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प चुनकर सही () का निशान लगाकर दीजिए तथा पाठ के अंत में दी गई उत्तरमाला से उनका मिलान कीजिए:

1. छोटी रानी ने रामदयाल को जनार्दन का सिर काट कर लाने का आदेश दिया, क्योंकि
   (क) उसने उसका अपमान किया था
   (ख) उसने षड्यंत्र करके देवी सिंह को राजगद्दी दिला दी थी
   (ग) उसने राजा को विष दे दिया था
   (घ) उसने कुंजर सिंह को धोखा दिया था
2. अलीमर्दान दलीप नगर पर आक्रमण करता है, क्योंकि
   (क) वह कुमुद को प्राप्त करना चाहता है
   (ख) छोटी रानी ने उसे अपना राखीबंद भाई बनाया है।
   (ग) दलीप नगर को अपने राज्य में मिलाना चाहता है
   (घ) मंदिर तोड़ना चाहता है
3. कुंजर सिंह दलीप नगर के ग हयुद्ध में अलीमर्दान को बुलाने का समर्थन नहीं करता, क्योंकि
   (क) उसे अलीमर्दान पर विश्वास नहीं है
   (ख) वह अलीमर्दान से डरता है
   (ग) वह अपने घरेलू मामलों में किसी बाहरी शक्ति का हस्तक्षेप नहीं चाहता
   (घ) अलीमर्दान को देवी सिंह का दोस्त समझता है
4. देवी सिंह छोटी रानी को बड़ी रानी के साथ रखने की आज्ञा देता है, क्योंकि
   (क) छोटी रानी से उसे खतरा है
   (ख) बड़ी रानी छोटी रानी को प्यार करती है
   (ग) उसे छोटी रानी के भाग जाने का डर है
   (घ) वह चाहता है कि छोटी रानी के प्रति कठोर भी न हुआ जाए और उस पर निगरानी भी रहे

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए:

5. देवी सिंह के राजा बनने के बाद प्रधान मंत्री कौन बना ?
6. छोटी रानी ने रामदयाल को सर्वप्रथम क्या आदेश दिया ?
7. छोटी रानी ने अलीमर्दान की सहायता पाने के लिए क्या प्रयत्न किया?
8. देवी सिंह के राजा बन जाने पर कुंजर सिंह ने क्या किया ?
9. गोमती ने दुर्गा से क्या वरदान माँगा ?
10. अलीमर्दान ने रामदयाल को कौन-सा काम सौंपा ?

टिप्पणी

**कुंजर सिंह की अपने साथियों के साथ सिंहगढ़ से निकल कर विराटा में बसने की योजना।**

## त तीय अंश

### खंड-इकत्तीस

कुंजर सिंह अपने साथियों को लेकर अँधेरे में सिंहगढ़ से निकल आया था। सिंधु नदी के उत्तर की ओर कई कोस तक दलीप नगर का राज्य था। वन और पर्वतों से आकीर्ण; परंतु कोई द ढ़ किले उस ओर नहीं थे। जहाँ दलीप नगर की सीमा खत्म हुई थी, वहाँ से कालपी का सूबा शुरू हो गया था। उस ओर चले जाने पर दलीप नगर के क्षेत्र से संबंध टूट जाता और कोई पक्का आश्रय मिलता नहीं। ऐसी दशा में उसने पूर्व की ओर पहूज और बेतवा नदियों के आस-पास ठहरकर अपनी टूटी हुई शक्ति को फिर से जोड़ने का निश्चय किया।

झाँसी से पूर्वोत्तर कोण में विराटा की गढ़ी, जिसका अवशेष अब एक मंदिर-मात्र है, पच्चीस मील की दूरी पर है। रामनगर और विराटा में केवल कोस-भर का अंतर है। दोनों बेतवा के किनारे भयंकर वन में छिपे से अर्द्धभग्नावस्था में अब भी पड़े हैं।

उन दिनों विराटा में दाँगी राजा राज्य करता था और रामनगर में एक बुंदेला सरदार रहता था। ये दोनों कभी पूर्ण स्वतंत्र नहीं रहे, परंतु इनकी अधीनता भी नाममात्र की थी। कभी कालपी को कर देते थे, कभी ओरछा को और किसी को भी नहीं। उसने सोचा, मुसावली में पहुँचकर स्थिति का निरीक्षण और विराटा तथा रामनगर के सरदार से मिल कर अपने बल की पुनः स्थापना करूँगा। यदि संभव न हुआ, तो विराटा-वन के किसी एकांत स्थान में भगवती दुर्गा का स्मरण करते-करते जीवन समाप्त कर दूँगा। और अलीमर्दान इस स्थान पर किसी मतलब से चढ़ाई करे, तो उसके विरोध में शरीर-त्याग करना राज्य-प्राप्ति से भी बढ़कर होगा। उसे मालूम था कि कुमुद कहीं विराटा के आसपास ही है।

### खंड-बत्तीस

कुंजर सिंह मुसावली में एक अहीर के घर ठहर गया था। घर से लगा हुआ काँटों की बिरवाई से घिरा एक बेड़ा था, उसमें कुंजर सिंह घोड़ा बाँधकर स्वयं घर के एक कोने में अकेला जा बसा।

**कुंजर सिंह का चरवाहे लड़के से वार्तालाप।**

बिरवाई से लगे तीन-चार महुए के पेड़ थे। महुओं के पीछे से एक चक्करदार नाला निकला था। दूसरी ओर वह पहाड़ी थी, जो मुसावली पाठा कहलाती है। एक ओर बीहड़ जंगल। कुंजर सिंह महुओं के नीचे गया। अहीर की कुछ भैंसें नाले के पास चर रही थीं, कुछ महुए के नीचे ऊँघ रही थीं। एक लड़का कुछ धूप कुछ छाया में सोता हुआ जानवरों की देखभाल कर रहा था। सूर्य की किरणों में कुछ तेजी और हवा में थोड़ी उष्णता आ गई थी। कुंजर सिंह अपने घोड़े के सामने घास डालकर महुए के नीचे आया। जो भैंसें दूर पर बैठी ऊँघ रही थीं, यकायक उठ खड़ी हुईं। चरवाहे की आँख खुल गई। पास में कुंजर सिंह को देख कर लड़के ने उठाई हुई लाठी को नीचा कर लिया। बोला, 'दाऊजू, सीताराम।' प्रणाम का उत्तर देकर कुंजर सिंह पेड़ की जड़ से टिक कर बैठ गया। लड़का बिना किसी संकोच के एकटक कुंजर सिंह की ओर देखने लगा। उस चरवाहे के शरीर पर फटी हुई अँगरखी थी। आँखों में एक निर्मल, निर्भय द ढ़ता थी।

**शब्दार्थ :**
**आकीर्ण** – व्याप्त, फैला हुआ
**भग्नावस्था** – टूटी-फूटी हालत
**बिरवाई** – बिरवे, पौधे

टिप्पणी

कुछ देर टकटकी लगाने के बाद बोला, 'दाऊजू, अबै दर्शन नई भए का?'

लड़के की सहज, सरल निर्भयता और प्रश्न की विचित्रता से ज़रा आकृष्ट होकर कुंजर सिंह ने प्रश्न किया, 'किसके दर्शन भाई?'

'एल्लो! हमई से टिटकरी करन आए! दर्शन खों नई आए, इतै तो कायके लानै आए इत्ती दूर सें? संसार-भर के राजाराव नित्त आउत रहत।'

**चित्र : कुंजर सिंह की चरवाहे से बातचीत**

कुंजर सिंह चौंक पड़ा। पालर से आना तो उसने ही चरवाहे के पिता को बतलाया था, परंतु आने का प्रयोजन उसने कुछ और ही जाहिर किया था। कुंजर सिंह को अनुमान करने में विलंब नहीं हुआ कि किसके दर्शन की ओर लड़के का भोला संकेत था। उससे कहा, 'तुम्हारे साथ चलेंगे, कब जाओगे?'

लड़के ने उत्तर दिया, 'जब चाए, तब। कौन दूर है? तुम जो कछू माँगो सो तुमें सोऊं मिल जैहे।'

कुंजर सिंह के हृदय में गुदगुदी पैदा हुई। उसने कल्पना की कि पूजा और वरदान का स्थान एक कोस पर विराटा ही है। पूरा पता लगाने के प्रयोजन से पूछा, 'रास्ता क्या बहुत बीहड़ में होकर है? यहाँ से तो मंदिर दिखाई नहीं देता।'

'पाठ पै होके सब दिखात है।' लड़का बोला, 'विराटा की गढ़ी दिखात और देवी कौ मंदिर दिखात। ठीक नदी के बीच में विराजमान हैं। ए दाऊजू, हमने जब पैलउंपैल देखाँ तब आँखें मिच गई हतीं। उनके नेत्रन में से झार सी निकर रई हती।'

कुंजर सिंह को विश्वास हो गया कि यह वर्णन कुमुद का ही है। तो भी और अच्छी जानकारी पाने की गरज से कहा, 'कब से आइ हैं यह देवी?'

'सदा से।' लड़के ने चकित होकर जवाब दिया, 'उनकी कछू आद अंत थोरक सौ है।'

इसके बाद उस सीधे लड़के ने देवी की करामातों की गिनती का ताँता बाँध दिया। सूर्यास्त के पहले दूर के खेत से ग हस्वामी जब आया, तब कुंजर सिंह ने अवसर प्राप्त होते ही उससे कहा, 'देवी के दर्शन करके मैं यहाँ से दो-चार दिन में चला जाऊँगा।'

कृषक बोला, 'सो काए? ऐसी का जल्दी परी, दाऊजू? हमसे ऐसी का बिगरी कि अबई जावौ हो जै है?'

कृषक के इस सरल और सच्चे आतिथ्य-हठ से कुंजर सिंह का जी भर आया।

## खंड-तेंतीस

छोटी रानी की वाग्मिता बड़ी रानी को अधिक आकृष्ट करने लगी और दोनों एक-दूसरे से बहुधा मिलने-जुलने लगीं। थोड़े ही दिनों में दोनों के बीच का बहुत दिनों से चला आनेवाला अंतर कम हो गया। राजा को इस मेल-जोल पर संतोष हुआ, परंतु जनार्दन

**शब्दार्थ :**
**अबै** – अभी
**नई** – नहीं
**एल्लो** – यह लो
**हमई से** – हम से ही
**टिटकरी** – मजाक, हँसी
**करन** – करते
**खों** – के लिए
**इतै** – फिर
**कायके** – किस
**लानै** – लिए
**आउत रहत** – आते रहते हैं
**सोऊं** – वही
**बीहड़** – बियाबान
**पाठ** – ऊँचाई
**पैलउपैल** – पहले–पहल

टिप्पणी

को इसमें श्रद्धा के योग्य कुछ न दिखाई दिया।

एक दिन बहुत लगन के साथ छोटी रानी बड़ी रानी से बातें कर रही थीं। बातचीत के सिलसिले में छोटी रानी ने कहा, 'जब तक हम लोग इस बंदीग ह में बैठी-बैठी दूसरों का मुँह ताकती रहेंगी, तब तक कोई सरदार मैदान में नहीं आवेगा। बाहर निकलते ही बहुत से सरदार साथ हो जाएँगे।'

**छोटी और बड़ी रानी का परस्पर मेलमिलाप तथा छोटी रानी द्वारा राजा के चंगुल से भाग जाने का षड्यंत्र।**

बड़ी रानी ने कहा, 'इसमें कोई संदेह नहीं कि इस राज्य के असली अधिकारी कैद में हैं और जिसे कैद में होना चाहिए, वह राज-दंड हाथ में लिए हैं।'

'परंतु उसके छीनने की शक्ति अब भी हमारे हाथ में है।' छोटी रानी ने उत्तर दिया।

'मैं भी मानती हूँ और यदि काफ़ी तादाद में सरदार लोग सहायता के लिए आ गए, तो सब काम बन जाएगा। परंतु यदि ऐसा न हुआ तो प्रलय की आशंका है।'

छोटी रानी अधिक निश्चयपूर्ण स्वर में बोलीं, 'बिल्कुल सोच-समझ लिया है। रामदयाल अपने पक्ष के सरदारों से मिल चुका है। वे लोग नए राजा से असंतुष्ट हैं, परंतु जब तक हम लोग महलों में बंद हैं, तब तक वे लोग अपनी निजी प्रेरणा से कुछ नहीं कर सकते।'

'यहाँ से चलकर ठहरोगी कहाँ?' बड़ी रानी ने ज़रा संकोच के साथ पूछा।

'कहीं भी, दलीप नगर के बाहर कहीं भी सिंह की गुफा में, नदी की तली में, पहाड़ के शिखर पर, कहीं भी।' छोटी रानी ने उत्तेजित होकर उत्तर दिया, 'हमारे स्वामिधर्मी सरदार कहीं भी हमारी सहायता के लिए आ सकते हैं।'

बड़ी रानी ने प्रतिवाद करते हुए, कुछ रुखाई के साथ कहा, 'मैं इस तरह की यात्रा के प्रस्ताव से सहमत नहीं हो सकती। व्यर्थ मारे-मारे फिरने से यहीं अच्छे।'

छोटी रानी तुरंत रुख बदल कर बोलीं, 'रामनगर के राव के यहाँ ठिकाना रहेगा। वहाँ से अलीमर्दान की भी सहायता सहज हो जाएगी। सिंहगढ़ पर चढ़ाई उसी ओर से अच्छी तरह हो सकती है।'

छोटी रानी के ढले हुए स्वर ने बड़ी रानी को नरम कर दिया। कहा, 'रामनगर के राव के पास बड़ा बल तो नहीं, परंतु स्थान रक्षा के विचार से अच्छा है। अलीमर्दान की सहायता के बिना काम न चलेगा?'

**जनार्दन द्वारा रानियों को फुसलाने का प्रयास विफल।**

'वह हमारा राखीबंद भाई है।' छोटी रानी ने उत्तर दिया, 'उसकी ओर से जी में कोई खटका मत कीजिए। किसी भी मंदिर के विध्वंस करने की कोई इच्छा उसके मन में नहीं है।'

इसी समय एक दासी ने बड़ी रानी को खबर दी कि दीवान जनार्दन आशीर्वाद लेने के लिए आना चाहते हैं। थोड़ी देर में जनार्दन आ गया। आशीर्वाद और कुशल-मंगल पूछने के पश्चात् उस दासी द्वारा जनार्दन और बड़ी रानी का वार्तालाप होने लगा।

जनार्दन ने पूछा, 'छोटी महारानी न मालूम मुझसे क्यों रुष्ट हैं? महाराज इस बात को जानते हैं कि मैं उनका कोई अहित-चिंतन नहीं करता।'

बड़ी रानी ने जवाब दिलवाया, 'इस बात से मेरा कोई संबंध नहीं। आप इस विषय पर इन्हीं से कहें-सुनें।'

'मैं आपकी सहायता चाहता हूँ। उन्हें इस राज्य में जो स्थान पसंद हो, उसमें आनंदपूर्वक रहें, जिससे इस लांछन से बचूँ कि दलीप नगर में मैंने इन्हें बरबस रोक रखा है।'

**शब्दार्थ :**
**झार** – प्रकाश की तेज किरणें
**आद** – शुरूआत
**थोरक** – थोड़े
**वाग्मिता** – बोलने का गुण, वाक्चातुय
**स्वामिधर्मी** – अपने स्वामी की रक्षा करने वाले
**लांछन** – आरोप

टिप्पणी

'इसे तो वह अवश्य पसंद करेंगी।' और जवाब देनेवाली ने रानी की ओर से कहा, 'बड़ी महारानी भी कुछ दिनों के लिए बाहर यात्रा कर आवेंगी।'

जनार्दन को यह प्रस्ताव पसंद न आया। बोला, 'आजकल अवस्था ज़रा खराब हो रही है और वैसे भी यह स्थान तो आपको बहुत प्यारा रहा है। आपने कभी शिकायत नहीं की कि....

बीच में टोक दिया गया। बड़ी रानी की तरफ से कहा गया, 'जरूर जाऊँगी। कैदी नहीं हैं, जो उन्हें तो जाने दिया जाए और इन्हें रोक रखा जाए।'

जनार्दन बोला, 'मैं महाराज से अनुमति के लिए कहूँगा। परंतु जिस काम से मैं आया था, वह यदि वहाँ नहीं हो सकता, तो छोटी रानी के ही पास जाकर अपने अपराधों की क्षमा माँगूँगा।'

'वहाँ आने की कोई आवश्यकता नहीं।' छोटी रानी ने दासी का आश्रय लिए बिना ही परदे के भीतर से कहा, 'हम दोनों अत्याचार-पीड़ित स्त्रियाँ एक स्थान में शांति के साथ रहना चाहती हैं, वह भी तुम्हें सहन नहीं। हमारा राज-पाट ले लिया। दोनों को एक-दूसरे से अलग करके क्या किसी एकांत गढ़ी में हमारा सिर कटवाओगे?'

जनार्दन चौंका नहीं। थोड़ी देर तक स्तब्ध, निश्चय बना रहा। कुछ ही क्षण पश्चात् बोला, 'मैंने तो ऐसी कोई बात नहीं कही, जिससे आपके निष्कर्ष की पुष्टि होती हो। आपसे क्षमा-प्रार्थना करने की ही बात कह रहा था। वह न रुची, जाता हूँ।'

जनार्दन दोनों रानियों को एक-दूसरे से अलहदा करना चाहता था। इसी प्रयोजन से वहाँ गया भी था, परंतु सावधानी से काम न करने के कारण और छोटी रानी के ताड़ लेने से उसका मनोरथ निष्फल हो गया। छोटी रानी के कुवाक्य का उसे बहुत थोड़ी देर ध्यान रहा होगा। उसके मन में बहुत ग्लानि थी कि चतुराई के साथ बातचीत नहीं की।

राजा के पास गया। चतुर मंत्री के लिए समय से बढ़कर मूल्यवान और कोई चीज़ नहीं हो सकती। इसलिए उसने राजा से तुरंत भेंट की। दोनों रानियों की परस्पर बढ़ती हुई घनिष्ठता में किसी भयंकर विपदा की विभीषिका, किसी विकट षड्यंत्र की जननशक्ति की आशंका का चित्र जनार्दन ने खींचा।

राजा ने ज़रा खीझ कर कहा, 'तब क्या करूँ? जब तक कोई बड़ा अपराध सिद्ध न हो जाए, दंड दिया नहीं जा सकता।'

**जनार्दन द्वारा दोनों रानियों को परस्पर अलग रखने की कोशिश।**

राजा की खिझलाहट से ज़रा भी न घबरा कर जनार्दन बोला, 'न तो किसी अपराध को सिद्ध करने की जरूरत है और न किसी दंड के विधान की। इन्हें तो अन्नदाता दो अलग-अलग स्थानों में सम्मानपूर्वक रख दें।'

'इससे वैमनस्य और बढ़ेगा। जो सरदार अभी पीछे-पीछे और शायद दबी-जबान यह कहते हैं कि इन लोगों ने रानियों को महल में कैद कर रखा है, वे भड़ककर खुल्लमखुल्ला बुराई करेंगे। रानियों को यहाँ से हटाकर मैं अपने लिए व्यर्थ का विरोध नहीं खड़ा करना चाहता।'

'अन्नदाता, वे यहाँ बैठी-बैठी सम्मिलित शक्ति से राज्य को उलटने-पलटने की तरकीबें सोचा करती हैं, सरदारों को अराजकता के लिए उभाड़ा करती हैं। एक-दूसरे से दूर रहने पर दोनों निर्बल हो जाएँगी।'

**शब्दार्थ :**
**अलहदा** – अलग
**विभीषिका** – त्रास, भयानक रूप
**जननशक्ति** – पैदा करने की शक्ति
**खिझलाहट** – खीझ, गुस्सा

टिप्पणी

'मैं इस बात को नहीं मानता।'

जैसी महाराज की मर्जी हो, परंतु छोटी रानी की हरकतों के मारे मेरी तो नाक में दम आ गया है। यह तो अन्नदाता को मालूम ही है कि मेरा सिर काटने या कटा लेने का रानी ने प्रण ठान रखा है.....।'

राजा ने हँसकर जनार्दन की बात काट दी। कहा, 'डरो मत। तुम्हारी उम्र अभी बहुत है। चाहे ज्योतिषियों से पूछ लेना।' फिर एक क्षण बाद गंभीर होकर बोले, 'शर्माजी, तुम्हें तलवार चलाना सीखना चाहिए था। राजनीति के गणित लगाते-लगाते बहुत से व्यर्थ भय के भूत तुम्हें सताने लगे हैं। स्त्रियाँ बात काटतीं हैं, सिर नहीं काटतीं। अपना काम-काज देखो। राज्य की बहुत-सी समस्याएँ तुम्हें उलझाने के लिए यों ही काफ़ी हैं। इधर का ख़्याल ज़रा कम कर दो। कुछ मेरा भी भरोसा करो।'

## खंड-चौंतीस

**अलीमर्दान द्वारा पालर तथा विराटा की देवी में समानता तलाशने का प्रयास।**

अलीमर्दान अपनी फ़ौज लिए भांडेर में पड़ा था। दलीप नगर के दमन की प्रबल आकांक्षा उसके मन में थी। परंतु दिल्ली की अस्थिर अवस्था और इलाहाबाद के सैयद भाइयों की प्रबल हलचल उसे उग्र रूप धारण करने से वर्जित कर रही थी। काले खाँ पालर की पुजारिन की बीच-बीच में याद दिला देता था। उस विषय के लिए भी अलीमर्दान के हृदय में एक बड़ा-सा लालसायुक्त स्थान था। परंतु इस स्थान में भी उसकी इच्छाओं का एक बड़ा बंधन कसा हुआ था। वह यह था कि अलीमर्दान और उस सरीखे अन्य मनचले सूबेदार, जो सिर से दिल्ली का बोझ हल्का होते ही स्वतंत्र हो जाने के मनोहर स्वप्नों में डूबे रहते थे, अपने सूबे की और पड़ोस की हिंदू जनता पर साधनों और सैनिकों के लिए बहुत निर्भर रहते थे, इसलिए यथासंभव उसे व्यर्थ नहीं चिढ़ाते-छेड़ते थे।

धीरे-धीरे भांडेर में भी यह खबर पहुँच गई कि विराटा में एक देहधारिणी देवी है, जो अपने वरदानों से निस्सहायों को समर्थ कर देती है। यदि अलीमर्दान चढ़ाई के साथ अनुसंधान करता, तो पालर और विराटा की देवी की समानता उसे कदाचित् मालूम हो जाती। उसने इस विषय को किसी अनुकूल समय की आशा से प्रेरित होकर स्थगित कर दिया और केवल ऐसी साधारण ढूँढ़-खोज को, जो आसानी से दूसरों पर प्रकट न हो पाए, जारी रखी।

रामनगर का राव पतराखन इस बीच में कई बार भांडेर गया-आया। वह यह जानना चाहता था कि अलीमर्दान क्यों यहाँ पड़ा हुआ है और कब तक इस तरह पड़ा रहेगा। साथ ही वह अलीमर्दान को मौका मिलने पर यह विश्वास दिलाना चाहता था कि भांडेर में और अधिक ठहरना बेकार है।

एक दिन अलीमर्दान से अकेले में बातचीत हुई। अलीमर्दान ने पूछा, 'सुना है रावसाहब, आपके पड़ोस में देवी का कोई अवतार हुआ है।'

'जी हाँ। कोई बात नहीं है, हमारे धर्म में ऐसा होता रहता है।'

'कब हुआ था?'

'बरसों हो गए हैं। हमेशा से उसकी बावत सुनता आया हूँ।'

'हाँ साहब, अपने-अपने मजहब की बात है। मुझे उसमें दखल देने की कोई जरूरत नहीं है। वैसे ही पूछा है।'

**शब्दार्थ :**
**नाक में दम आ जाना (मुहावरा)** – परेशान हो जाना

टिप्पणी

परंतु रामनगर लौट आने के कई रोज पीछे भी पतराखन ने सुना कि अलीमर्दान भांडेर में ही है।

## खंड-पैंतीस

संध्या हो चुकी थी। रामनगर की गढ़ी के फाटक बंद होने में अधिक विलंब न था। पहरेवालों ने फाटकों को अधमुँदा रख छोड़ा था। उनका कोई साथी गाँव में तंबाकू लेने गया था। इतने में गढ़ी के नीचे, जो बेतवा-किनारे एक ऊँची टोरिया पर बनी थी, दस-बारह घुड़सवार आकर रुक गए। और सवार तो वहीं रहे, एक उनमें से फाटक पर आया। पहरे वाले ने फाटक को ज़रा और खोलकर पूछा, ''आप कौन हैं?'

'दलीप नगर से आ रहा हूँ। महारानी और कुछ सरदार नीचे खड़े हैं, बहुत शीघ्र और आवश्यक काम से मिलना है।' आंगतुक ने उत्तर दिया।

पहरे वाले ने नम्रतापूर्वक कहा, 'आपका नाम?'

'रावसाहब को मेरा नाम रामदयाल बतला देना।' उत्तर मिला।

पहरे वाला भीतर गया। राव पतराखन आ गया। अँधेरा था, नहीं तो रामदयाल ने देख लिया होता कि पतराखन के चेहरे पर प्रसन्नता के कोई चिह्न न थे। पतराखन मीठे स्वर में बोला, 'महारानी को ऐसे समय यहाँ आने की क्या आवश्यकता पड़ी?'

रामदयाल ने कहा, 'कालपी के नवाब अलीमर्दान को कर्त्तव्य-पथ पर सजग करने के लिए आई हैं।'

पतराखन ने पूछा, 'महारानी कहाँ हैं?'

रामदयाल ने इशारे से बतला दिया।

**महारानी का चुपके से दलीप नगर से राम नगर पहुँचना तथा पतराखन से मिलना।**

कुछ सोचता-विचारता पतराखन गढ़ी से उतरा और नीचे से दलीप नगर के सवारों को गढ़ी पर लिवा लाया।

पतराखन ने कहा, 'अबकी बार बड़ी रानी ने भी छोटी रानी का साथ दे दिया।'

रामदयाल ने जवाब दिया, 'साथ तो वह सदा से हैं परंतु कुछ लोगों ने बीच में मनमुटाव खड़ा कर दिया था।'

'परंतु बड़ी रानी के साथ हो जाने पर भी फ़ौज़-भीड़ तो कुछ भी नहीं दिखाई पड़ती। इतने आदमियों से देवी सिंह का क्या बिगड़ेगा?'

'ये सब सरदार हैं। इनके साथ की सेना पीछे है और फिर नवाब साहब की मदद होगी। आप भी सहायता करेंगे?'

'इसमें संदेह ही क्या है? यदि नवाब साहब ने सहायता कर दी, तो बहुत काम बनने की आशा है। मैं भी जो कुछ सहायता बनेगी, करूँगा ही। विराटा का दाँगी भी अपने भाई-बंदों को लाएगा। आजकल उसे ज़रा घमंड हो गया है।'

'किस बात का?'

'अपनी संख्या का। इसके गाँव में देवी का अवतार हुआ है। उसका भी उसे बहुत भरोसा है।'

'देवी का अवतार? हाँ, हो सकता है। होता ही रहता है। पालर में हुआ था, परंतु'

टिप्पणी

'कुमुद के पालर से भागकर विराटा पहुँचने पर अलीमर्दान को शक।

'परंतु क्या? सुनते हैं, वही यहाँ चली आई है। एक दिन अलीमर्दान ने मुझसे पूछा था। लोग कहते थे, उनके कारण ही देवी को पालर से भागना पड़ा। यह सब गलत है। नवाब कहता था कि अवतार सब कौमों में होते हैं और उसे किसी धर्म में दखल देने की ज़रूरत नहीं है और मैं इन विषयों पर बहुत कम बहस करता हूँ।'

'नवाब साहब कहते थे!' रामदयाल ने प्रकट होते हुए आश्चर्य को रोक कर कहा, 'जरूर कहते होंगे। वह तो बड़े उदार पुरुष हैं। उन्होंने पालर में जाकर देवी की पूजा की थी। मूर्तियों को छुआ तक नहीं, तोड़ने की तो बात क्या।'

किसी कल्पना से विकल पतराखन बोला, 'हमारी गढ़ी की बहुत दिनों से मरम्मत नहीं हुई है। दीवारें गोलाबारी नहीं सह सकतीं। फाटक भी नए चढ़वाने हैं, गोला-बारूद की भी कमी है। इस गढ़ी में होकर युद्ध करना बिलकुल व्यर्थ होगा। वैसे मैं और मेरे सिपाही सेवा के लिए तैयार हैं।'

रामदयाल समझ गया। बोला, 'यहाँ से युद्ध कदापि न होगा। आप गढ़ी की मरम्मत चाहे कल करा लें, चाहे दस वर्ष बाद। यह स्थान छिपा हुआ है और सुरक्षित है, इसलिए महारानी को पसंद आया।'

पतराखन ने रोक कर कहा, 'सो तो उनका घर है, चंपतराय कई बार ठहरे हैं। परंतु ठहरे वह थोड़े-थोड़े दिन ही हैं। खैर उसकी कोई बात नहीं है। विराटा की गढ़ी देखी है?'

'नहीं तो।'

'बहुत सुरक्षित है। दाँगी को उसी का तो बड़ा गर्व है।'

'मैं कल ही जाकर देखूँगा।'

'परंतु मेरी ओर से वहाँ कुछ मत कहना।'

पतराखन के साथ बड़ी रानी की बातचीत तथा सहायता की मांग।

'नहीं, मैं तो किला देखने और देवी के दर्शनों को जाऊँगा, किसी से वहाँ बातचीत करने का क्या काम? इसके पश्चात् परसों नवाब साहब के पास जाऊँगा। देवी सिंह से जो लड़ाई होगी, उसमें महारानी आपसे बहुत आशा करती हैं और आपको पुरस्कार भी बहुत देंगी।'

पतराखन ने उत्तर दिया, 'वैसे तो मैं किसी का दबा हुआ नहीं हूँ दलीप नगर के राजा से कोई संबंध नहीं। कालपी के नवाब और दिल्ली के बादशाह से हमारा ताल्लुक है, इसलिए जिस पक्ष में नवाब होंगे, उसी का समर्थन मैं भी करूँगा।'

पतराखन को रामदयाल रानियों के डेरे पर ले गया। दोनों आड़-ओट से वार्तालाप करने लगीं।

छोटी रानी ने कहा, 'बड़ी महारानी ने भी अब की बार हम लोगों का साथ दिया है। चोर-डाकू एक अधर्मी ब्राह्मण की सहायता से हमारे पुरखों के सिंहासन पर जा बैठा है। कुछ दिनों तो वह बड़ी महारानी और क्षेत्रीय सरदारों को भुलावे में डाले रहा, परंतु अंत में भंडाभोड़ हो गया। अब की बार बहुत से सामंत हमारे साथ हैं। आशा है, विजय प्राप्त होगी। आपको हम धन-धान्य और जागीर से संतुष्ट करेंगे। टेढ़े समय में जो हमारी सहायता करेगा, उसे सीधे समय में हम कभी नहीं भूल सकेंगे।'

पतराखन ने बड़ी रानी के सिसकने का शब्द सुना।

**शब्दार्थ :**
**ताल्लुक** – संबंध
**अदृष्ट** – भाग्य, नियति

टिप्पणी

बोला, 'मुझसे शक्ति-भर जितनी सहायता बनेगी, करूँगा। यह टूटी-फूटी-सी गढ़ी आप अपनी समझें।'

बड़ी रानी के करुण कंठ से कहा, 'राव साहब, हम आपको इसका पुरस्कार देंगे।'

राव पतराखन ने अद ष्ट को, अनिवार्य को सिरे-माथे ले कर सोचा, यदि इन दो निस्सहाय स्त्रियों की रक्षा में इस गढ़ी को धूल में मिलाना पड़ा, तो कुछ हर्ज नहीं। कोई और गढ़ी ढूँढ लेगा।

## खंड-छत्तीस

**कुंजर सिंह का चोरी छिपे विराटा की देवी के दर्शनों का प्रयास**

कुंजर सिंह मुसावली वाले कृषक और चरवाहे के साथ विराटा की ओर पैदल गया। वह अपने को प्रकट नहीं करना चाहता था। मार्ग के भरकों और व क्षों के समूहों में होकर जाते हुए उसने सोचा, यदि वही हैं, तो शायद पहचान लें। न पहचानें, तो बुराई ही क्या? जिसे संसार ने करीब-करीब त्याग दिया है, उसे देवता क्यों तिरस्कृत करने चला? न पहचाने जाने में एक सुख भी है। खोद-खोदकर लोग कुशल-वार्ता न पूछेंगे और उन्हें व्यथा न होगी। शांतिपूर्वक उनके दर्शन कर लूँगा। परंतु यदि उन्होंने पहचान भी लिया, तो उन्हें व्यथा क्यों होने लगी? मैं उनका कौन हूँ। केवल भक्त, और फिर थोड़े से पलों का परिचय।

थोड़ी देर में नदी पार करके टापू के सिरे पर स्थित मंदिर में पहुँच गए। वह देवी के दर्शनों का खास समय न था। कृषक और उसके साथी को घर लौटना था, परंतु कुंजर सिंह ने कहा, 'क्यों जल्दी करते हो? यदि किसी ने मना कर दिया, तो अपना-सा मुँह लेकर रह जाएँगे और ठहराना तो पड़ेगा ही।'

कृषक ने गोमती से विनय के साथ कहा, 'पालर सैं जे कोऊ ठाकुर आए हैं, दर्शन करन चाऊत है। का अबै दर्शन न हुईएँ? कोऊ बहुत बड़े आदमी हैं।'

गोमती पालर का नाम सुनकर ज़रा पास आई। कुंजर सिंह को पहचानने की चेष्टा की, न पहचान पाई।

इस चर्चा ने कुमुद को भी आकृष्ट कर लिया। एक ओर से अपने आंगतुकों को बारी-बारी से देखा। कुंजर सिंह को उसने कई बार बारीकी से देखा। वहाँ से हटकर चली गई। नरपति सिंह को भीतर से भेजा।

**कुंजर सिंह का नरपति सिंह से परिचय होने के बाद देवी के दर्शनों के लिए प्रस्ताव।**

नरपति ने आते ही पूछा, 'आपको पालर में तो मैंने कभी नहीं देखा। आप वहाँ के रहने वाले नहीं हैं।'

कुंजर सिंह, 'रहने वाला तो वहाँ का नहीं हूँ, परंतु उस समय अर्थात् कुछ दिन हुए, तब आया वहीं से था।'

नरपति ने पास आकर कुंजर सिंह को घूरा। कुछ सोच कर बोला, 'आपको कभी कहीं देखा अवश्य है, परंतु याद नहीं पड़ता। पालर के ऊपर कालपी के नवाब के आक्रमण के समय आप दलीप नगर की सेना में या ऐसे ही किसी मेले में उससे पहले कभी आए हैं।'

'आप ठीक कहते हैं।' कुंजर सिंह ने ज़रा सँभलकर कहा, 'मैं मेले में पालर गया था।'

कुमुद ने भी वार्तालाप सुना। गोमती ज़रा उत्सुकता के साथ बोली, 'आप दलीप नगर के रहने वाले होंगे।'

**शब्दार्थ :**

**भरका** – बुँदेलखंड में नदियों के किनारे की बंजर और ऊँची–नीची भूमि
**जे कोऊ** – ये कोई
**करन** – करना
**चाहत** – चाहते
**का** – क्या
**अबै** – अभी
**हुईएँ** – होंगे

टिप्पणी

कुंजर द्वारा कुमुद के दर्शन।

'हाँ।' कह कर कुंजर ने सोचा, प्रश्नों की समाप्ति हो जाएगी और हाथ-पाँव धोने के लिए नदी की ओर टौरिया से नीचे उतर गया।

थोड़े समय के पीछे हाथ-पाँव धोकर कुंजर सिंह नदी से आ गया। उसने नरपति सिंह से दर्शनों की इच्छा प्रकट की।

देवी की मूर्ति के पास एक किनारे पर कुमुद बैठी थी। वही मुख, वही रूप। पर आज कुछ अधिक आतंकमय दिखलाई पड़ा। भौंहों के बीच में सिंदूर और भस्म का टीका अधिक गहरा था। कुंजर ने पुजारिन को एक बार चंचल द ष्टि से देखा। फिर देवी को साष्टांग प्रणाम करके मन-ही-मन कुछ कहता रहा। जब विभूति-प्रसाद की बारी आई, तब फिर कुमुद की ओर देखा। वह पीली पड़ गई थी।

काँपते हुए हाथ से कुमुद ने फूल और भस्म कुंजर सिंह को दी। वह अँगूठी उसकी उँगली में अब भी थी। कुंजर ने नीची द ष्टि किए हुए ही काँपते कंठ से कहा, 'वरदान मिले। बहुत दुर्गति हो चुकी है।'

कुमुद देवी की ओर देखने लगी, कुछ न बोली।

कुंजर ने फिर कहा, 'देवी के वरदान के बिना मेरा जीवन असंभव है।' कुंजर का गला और अधिक काँपा।

'देवी जो कुछ करेंगी, सब शुभ करेंगी।' कुमुद ने कुंजर की ओर द ष्टिपात करने का प्रयत्न करते हुए उत्तर दिया।

इतने में नरपति बोला। 'आप पालर क्या अभी चले जाएँगे?'

कुंजर के मन में कोई जल्दी न थी। बोला, 'अभी तो न जाऊँगा। और कुछ ठीक नहीं, कहाँ जाऊँ।'

'तो क्या आप दलीप नगर जाएँगे?' नरपति ने पूछा।

'वहाँ का भी कुछ ठीक नहीं।' कुंजर ने संयत निःश्वास के साथ उत्तर दिया।

कुमुद अपने सहज-स्वाभाविक धैर्य को पुनः प्राप्त-सा करके भर्राए कंठ से बोली, 'इनके भोजन का प्रबंध कर दीजिए।'

## खंड-सैंतीस

कुमुद के घर पर कुंजर सिंह का ठहरना।

नरपति ने अपनी कोठरी में कुंजर सिंह को स्थान दिया। भोजन के उपरांत नरपति कुंजर के पास बैठ गया। दोनों एक दूसरे के साथ बातचीत करने के इच्छुक थे, परंतु यह निश्चय नहीं कर रहे थे कि चर्चा का आरंभ किया किस तरह जाए।

नरपति ने पूछा, 'आप दलीप नगर के रहने वाले हैं?'

'जी हाँ।'

'वहाँ का राजा कौन है?' सुनते हैं, 'कोई देवी सिंह राज्य करते हैं।'

'आपको मालूम तो है।'

'कैसे राजा हैं?'

कुंजर चुप रहा।

नरपति ने ज़िद करके पूछा, 'कैसा राजा है? प्रजा को कोई कष्ट तो नहीं देता?'

'अभी तो सिंहासन को अपने पैरों के नीचे बनाए रखने के लिए खून-खराबी करता है।'

शब्दार्थः
**विभूति** – भस्म

टिप्पणी

'यह राज्य तो उन्हें महाराज नायक सिंह ने दिया था?'

'बिल्कुल झूठ बात है।'

नरपति सिंह ने पांडित्य प्रदर्शित करते हुए कहा, 'हमें भी ख़्याल होता है कि महाराज ने राज्य न दिया होगा, क्योंकि उनके एक कुमार थे। उनका क्या हुआ? अब क्या वह राजकुमार नहीं हैं? सच-सच बतलाइए।'

कुंजर सिंह ने एक क्षण सोचकर कहा, 'नहीं, परंतु जो राजकुमार है, वह किसी समय प्रकट अवश्य होगा।'

**नरपति सिंह द्वारा दलीप नगर के राजा तथा उत्तराधिकारी राजकुमार के बारे में कुंजर सिंह से बातचीत।**

नरपति सिंह बोला, 'राजकुमार बड़ा सुशील और होनहार था। मैंने उसके लिए देवी से प्रार्थना की थी। उस बेचारे को राज्य तब नहीं मिला, तो कभी-न-कभी मिलेगा।'

'स्वार्थियों की नीचता के कारण।' कुंजर ने उत्तर दिया, 'दलीप नगर में जनार्दन शर्मा एक पापी है। उसके षड्यंत्रों से देवी सिंह राजा बन बैठा है। वास्तविक राजकुमार वंचित हो गया है और रानियों की मूर्खता के कारण भी उसे नुकसान पहुँचा है—'

नरपति ने टोक कर कहा, 'देवी की कृपा हुई, तो असली हक़दार को फिर राज्य मिलेगा और नीच, स्वार्थी, पापी लोग अपने किए का फल पावेंगे।'

गोमती को दूसरी कोठरी में बड़ी ज़ोर से खाँसी आई।

कुंजर ने पूछा, 'विराटा के राजा के पास फ़ौज-फाँटा कैसा है?'

'अच्छा है।' नरपति ने उत्तर दिया, 'रामनगर के राव साहब की अपेक्षा यह बहुत जन और धन-संपन्न हैं। वह अपने को छिपाते बहुत हैं, नहीं तो उनमें इतनी शक्ति है कि किसी राजा या नवाब का मुकाबला कर सकते हैं। हमारी जाति के वह गौरव हैं।'

**कुंजर सिंह द्वारा विराटा के राजा से सहायता के लिए प्रस्ताव रखना।**

कुंजर ने पूछा 'यदि किसी समय दलीपनगर के राजकुमार उनसे मिलने आवें तो अच्छी तरह मिलेंगे या नहीं?'

'अवश्य।' नरपति ने उत्तर दिया, 'राजा राजाओं के साथ बराबरी का ही बरताव करते हैं। आपसे उस राजकुमार से कोई संबंध है?'

'जी हाँ'

'क्या ?'

'मैं उनकी सेना का सेनापति हूँ।'

'वही तो, वही तो।' नरपति ने दंभ के साथ कहा, 'मेरी स्मरणशक्ति ने धोखा नहीं खाया था। मुझे देखते ही विश्वास हो गया था कि आप राजकुमार या राजकुमार के साथी या दलीप नगर के कोई व्यक्ति अवश्य हैं।'

कुंजर सिंह को मन में हँसी आ गई। बोला, 'राजकुमार आपके राजा से पीछे मिलेंगे, मैं उनसे पहले मिल लूँगा। आप कुछ सहायता करेंगे?'

नरपति ने पूछा, 'उस दंगे के दिन राजकुमार के साथ आप किस समय आए थे या शुरू से ही साथ थे?'

कुंजर ने उत्तर दिया, 'मैं शुरू से ही साथ था।' उसने अपने पहले प्रश्न को फिर दुहराया, 'आप राजकुमार की कुछ सहायता कर सकेंगे?'

नरपति बोला, 'अवश्य। मैं आपके कुमार के लिए देवी से प्रार्थना करूँगा और राजा

टिप्पणी

सबदल सिंह से भी कहूँगा। अपने साथ आपको ले चलूँगा।'

सवेरे कुंजरसिंह नरपति के साथ विराटा के राजा सबदल सिंह के पास गया। राजा ने स्पष्ट इंकार तो नहीं किया, परंतु नरपति के बहुत हठ करने पर कहा, 'देवीजी की कृपा से काम बनने की आशा करनी चाहिए, परंतु भरोसा पक्का उस समय दिला सकूँगा, जब यह निश्चय हो जाए कि कालपी के नवाब की सहायता के बिना आपके कुमार दलीप नगर के राजा की शक्ति का सफलतापूर्वक सामना कर सकते हैं। यदि दिल्ली का पाया लौट गया और कालपी की नवाबी खत्म हो गई, तो मुझे आपके राजा का साथ देने में बिलकुल संकोच न होगा। अथवा यदि आप लोग किसी तरह कालपी के नवाब को अपने पक्ष में कर लें, तो कदाचित् मुझे अपना सिर खपाने में ऊँच-नीच का विचार न करना पड़ेगा।'

कुंजर सिंह बोला, 'कालपी का नवाब दलीप नगर पर धावा अवश्य करेगा। परंतु वह अपने स्वार्थ के लिए करेगा।'

**विराटा के राजा द्वारा सहायता का आश्वासन तथा कुंजर को अपने यहाँ ठहरने का प्रस्ताव।**

'तब ऐसी दशा में आपको कुछ दिन बल-एकत्र करने और चुपचाप परिस्थिति का अध्ययन करने में बिताना पड़ेगा। अनुकूल स्थिति होने पर हम और आप 'दोनों मिल-जुल कर काम कर सकते हैं।'

सबदल ने पूछा, 'आपका नाम?'

बिना किसी हिचकिचाहट के कुंजर ने उत्तर दिया, 'अतबल सिंह।'

सबदल ने कहा, 'आप यहाँ ठहर सकते हैं, यदि आपकी इच्छा हो तो। परंतु आपको रहना इस तरह पड़ेगा कि आपका पता किसी को न लगे, अर्थात् जब तक आपको अभिप्राय सिद्ध न हो जाए।'

कुंजर बोला, 'यह ज़रा मुश्किल है। ऐसा स्थान कहाँ है, जहाँ मैं बिना टोका-टोकी के बना रहूँ, स्वेच्छापूर्वक जब चाहे, जहाँ आ-जा सकूँ।'

**चित्र : कुंजर सिंह की नरपति सिंह के साथ विराटा के राजा सबदल सिंह से भेंट**

'ऐसा स्थान है।' नरपति ने बात काटकर कहा, 'ऐसा स्थान देवी का मंदिर है। एक तरफ कहीं, जब तक चाहो तब तक पड़े रहो। तैरना जानते हो?'

'हाँ' कुंजर ने उत्तर दिया।

तब नरपति बोला, 'डोंगी की सहायता बिना भी स्वेच्छापूर्वक चाहे जहाँ आ-जा सकते हो।'

एक धीमी, अस्पष्ट आह भरकर कुंजर बोला, 'देखें कब तक वहाँ इस तरह टिका रहना पड़ेगा।' फिर तुरंत भाव बदलकर उसने कहा, 'सैन्य-संग्रह शीघ्र हो जाएगा और देवीजी की कृपा होगी, तो बहुत शीघ्र सफलता भी प्राप्त हो जाएगी।'

**शब्दार्थः**
**अभिप्राय**– उद्देश्य

टिप्पणी

## खंड-अड़तीस

गोमती को मालूम हो गया कि दाँगी राजा ने अपने को कुंजर सिंह का सेनापति बताने वाले व्यक्ति को सहायता प्रदान का पक्का वचन न भी दे कर आश्रय-दान दिया है। गोमती को अखरा। यद्यपि वह स्वयं दूसरों के आश्रित थी, परंतु अपने को धीरे-धीरे दलीप नगर की रानी समझने लगी थी और राजा देवी सिंह के सब प्रकार के शत्रुओं के प्रति उसके जी में घ णा उत्पन्न हो गई थी।

सबदल सिंह के यहाँ से लौट आने पर गोमती की इच्छा कुंजर को दो खोटी बातें सुनाने की हुई, परंतु नरपति साफ़ तौर पर उसे देवी सिंह के द्रोही का पक्षपाती जान पड़ता था। कुमुद देवी का अवतार या देवी की अद्वितीय पुजारिन होने पर भी लड़की तो नरपति की थी। गोमती को रोष हुआ, कष्ट हुआ। भीतर ही भीतर असंतोष और ग्लानि बढ़ने लगी।

इसी समय उस मंदिर में एक व्यक्ति और आया। गोमती को उसके पुष्ट, भरे हुए चेहरे पर सतर्कता के चिह्न मालूम हुए, परंतु इससे अधिक वह उस समय और कुछ न देख सकी। वह व्यक्ति रामदयाल था।

रामदयाल ने बहुत थोड़ी देर के लिए कुमुद को पालर में देखा था। गोमती को उसने देखा न था। इसलिए पहले उसकी धारणा हुई कि यही पुजारिन कुमुद है। गोमती भी सौंदर्यपूर्ण युवती थी। रामदयाल को उसके नेत्र अवश्य बहुत मादक जान पड़े। ज़रा सिर झुका कर गोमती से बोला, 'दूर से दर्शन करने आया हूँ।'

'कहाँ से?' गोमती ने बिना सोचे-समझे पूछा।

**देवी के दर्शनों के लिए रामदयाल का आना तथा कुंजर सिंह से उसका सामना होना।**

रामदयाल ने कुमुद को देखा था। गोमती को हाथ के संकेत से रोकता हुआ-सा बोला, 'मैं दूर से दर्शन करने आया हूँ, क्या इस समय दर्शन हो जाएँगे?'

'मैं पूछ कर बतलाती हूँ।' गोमती ने उत्तर दिया।

रामदयाल ने प्रश्न किया, 'किससे?'

गोमती बोली, 'यदि तुम्हें इस समय दर्शन न हों, तो सवेरे तो हो ही जाएँगे।'

रामदयाल ने विनयपूर्वक कहा, 'दूर से आया हूँ। क्या इस समय दर्शन हो जाएँगे? यदि न हो सकें तो सवेरे तक के लिए ठहर जाऊँगा और फिर कदाचित् एक अनुष्ठान के लिए यहाँ कई रोज ठहरना पड़ेगा।'

कुमुद बोली, 'दर्शन इस समय भी हो सकते हैं, परंतु यदि तुम सवेरे तक के लिए ठहर सकते हो, तो प्रातःकाल का समय सबसे अच्छा है।'

उस मंदिर में नरपति सिंह नहीं था। परंतु कुंजर सिंह अपनी कोठरी में था। उसने रामदयाल के कंठ को पहचान लिया। सन्नाटे में आकर अपनी कोठरी में ही बैठा रहा। थोड़ी देर में अपने को सँभाल कर बाहर निकला। उस समय रामदयाल दालान के उस कोने में अपना डेरा लगा रहा था। पहचान लिया। रामदयाल नहीं देख पाया। कुंजर अपनी कोठरी में लौट आया।

दूसरे दिन सवेरे रामदयाल दर्शनों के लिए मूर्ति के सामने पहुँचा। कुमुद मूर्ति के पास बैठी हुई थी और नरपति उससे ज़रा हट कर। रामदयाल ने बड़ी श्रद्धा दिखलाते हुए मूर्ति पर जल चढ़ाया और बेले के फूल अर्पण किए। उसने कपड़े की ओर कुछ

**शब्दार्थ**
**डोंगी** – छोटी नाव

टिप्पणी

निकालने के लिए हाथ बढ़ाया। नरपति ने एक बार उस ओर देखकर दूसरी ओर मुँह कर दिया। इतने में कुंजर सिंह भी आ गया। कुमुद की आँखें मूर्ति की ओर देखने लगीं। रामदयाल ने बगल से कुंजर सिंह को देखा, फिर मुड़ कर। पहचानने में संदेह न रहा। एक क्षण के लिए सकपका-सा गया। कपड़ों में से सोने का बहुमूल्य गहना निकाल कर मूर्ति के चरणों में चढ़ा दिया।

गहना हाथ में उठा कर नरपति ने कहा, 'आप कहाँ से, कौन हैं?'

'मैं दलीप नगर का हूँ।' रामदयाल ने उत्तर दिया, 'इससे अधिक कुछ और बतलाना मेरे लिए इस समय असंभव है। आफ़त में हूँ। दुर्गा के दर्शनों से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आया हूँ। मेरी प्रार्थना है कि मेरे स्वामी का भला हो।'

गोमती ने उसी समय आँखें मूँदकर रामदयाल की प्रार्थना स्वीकार की जाने के लिए देवी से प्रार्थना की और बड़े अनुनय की द ष्टि से कुमुद की ओर देखा।

नरपति बोला, 'आपके स्वामी का कल्याण होगा।'

गोमती किसी उमड़े हुए भाव के वेग को सहन न कर सकने के कारण बोली, 'जीजी के मुख से यह आशीर्वाद और अच्छा मालूम होगा।'

कुमुद कुछ नहीं बोली।

नरपति ने तुरंत कहा, 'दुर्गा का प्रसाद इन्हें दिया जाए-फल और भस्म।'

कुमुद ने भस्म उठाकर रामदयाल को दे दी। पुष्प नहीं दिया।

गोमती के ह्रदय को बड़ी पीड़ा हुई। नरपति बोला, 'यदि समझा जाए, तो पुष्प भी दे दिया जाए। यह दुर्गा के अच्छे सेवक जान पड़ते हैं।'

कुमुद मूर्ति को प्रणाम करके वहाँ से मंदिर के दूसरे भाग में धीरे से चली गई। गोमती ने कुमुद के नेत्रों में इतनी अवज्ञा पहले कभी नहीं देखी थी।

बड़ी कठिनाई से गोमती ने नरपति से कहा, 'इन्होंने क्या कोई अपराध किया है?'

उदास स्वर में नरपति बोला, 'कोई अपराध नहीं किया और न देवी इनसे रुष्ट हैं। रुष्ट होतीं, तो भस्म का प्रसाद क्यों देतीं? जान पड़ता है, अभी इनके कार्य में कुछ विलंब है, इसलिए पुष्प-प्रसाद नहीं मिला।'

रामदयाल कुंजर सिंह को देख कर सकपकाया था, परंतु इस घटना से विचलित नहीं जान पड़ा। मुस्करा कर बोला, 'एक दिन उसकी कृपा अवश्य होगी और मेरा तथा मेरे स्वामी का अवश्य कल्याण होगा।'

'अवश्य।' नरपति बोला।

रामदयाल वहाँ से उठकर मंदिर के बाहर गया। कुंजर सिंह उसके पीछे-पीछे।

जब दोनों अकेले रह गए, कुंजर सिंह ने धीमे स्वर में, परंतु तीखेपन के साथ कहा, 'यहाँ किसलिए आए हो?'

'दर्शनों के लिए।'

'तुम्हें ये लोग जानते नहीं हैं?'

'जानते हैं।'

'ये लोग यह जानते हैं कि तुम्हारा नाम रामदयाल है और किस तरह के मनुष्य हो?'

**शब्दार्थः**
**अनुनय** – प्रार्थना, विनय
**अवज्ञा** – उपेक्षा, अनादर

टिप्पणी

'मैंने उन्हें स्वयं बतला दिया है।'

'तुम यहाँ से चले जाओ।'

क्रोध के मारे कुंजर सिंह काँपने लगा।

रामदयाल ठंडक के साथ बोला, 'राजा, गुस्से से काम न चलेगा। मैंने अपना परिचय इन लोगों को दे दिया है, परंतु आप यहाँ नाम और काम दोनों की द ष्टि से छिपे हुए हैं। आपका भेद खुलने से मेरी कोई हानि न होगी। राजा देवी सिंह के आदमी आपके लिए घूम रहे हैं। कालपी का नवाब, जो भांडेर में यहाँ से पास ही ठहरा हुआ है, आपसे शायद बहुत संतुष्ट नहीं है। रानियों की आपसे पटती नहीं। रियासत के सरदार आप लोगों के झगड़ों से अपने को बचाए हुए हैं। लोचन सिंह अभी जीवित है और मैंने कभी आपका कोई बिगाड़ नहीं किया, फिर न जाने राजा मुझसे क्यों रुष्ट हैं।'

कुंजर सिंह जिस बात का संदेह रामदयाल पर कर रहा था, उसे प्रकट करना उसने उचित नहीं समझा।

रामदयाल ने कहा, 'इस बार दोनों रानियाँ देवी सिंह के विरुद्ध हैं। दोनों दलीप नगर छोड़ कर चली आई हैं। आप उनके साथ अपनी शक्ति सम्मिलित कर दें और कालपी के नवाब के साथ घ णा न करें तो दलीपनगर का सिंहासन आपके पाँव-तले शीघ्र आ जाएगा।'

'मैं सदा, रानियों के सम्मान का ध्यान रखता आया हूँ परंतु अनुचित कार्यों का सहायक नहीं हो सकता। कालपी के नवाब के ऊपर भी कोई है, जानते हो?'

'हाँ, राजा। दिल्ली है। परंतु वहाँ किसी की कोई कुछ भी सुनने वाला नहीं मालूम पड़ता, ऐसा मैं आप ही लोगों से सुना करता हूँ।'

'खैर, देखा जाएगा, परंतु मैं एक बात से तुम्हें सावधान करना चाहता हूँ।'

'वह क्या, राजा?'

'तुमने जिसके प्रति अपना अशुद्ध प्रयत्न पालर में किया था, उनसे दूर रहना-बहुत दूर। नहीं तो मैं सिंहासन प्राप्ति की अभिलाषा को एक ओर रख दूँगा और तुम्हें पछताने का भी समय न मिलने दूँगा।'

रामदयाल बोला, 'राजा, यदि मैंने कुछ किया था, तो अपने मालिक की आज्ञा से। जो कुछ करूँगा, अब अपने स्वामी की भलाई के लिए। परंतु मैं वचन देता हूँ कि आपका मार्ग लाँघने की चेष्टा न करूँगा। यदि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करें, तो यही विनती करूँगा कि यहाँ न पड़े रह कर आप राज्य-प्राप्ति का भी उपाय करें।

'मैं पूछता हूँ, तुम उस लड़की से कल शाम को क्या घुल-घुल कर बातें कर रहे थे?' कुंजर ने एकाएक पूछा।

प्रश्न के आकस्मिक वेग से बिल्कुल विचलित न होकर रामदयाल ने उत्तर दिया, 'पुजारिन से तो मेरी कोई बातचीत नहीं हुई।'

'वह नहीं।' कुंजर जी कड़ा करके बोला, 'तुम उस दूसरी लड़की से घुल-घुल कर क्या बातें करते थे?'

'वह कौन है, आप जानते हैं?' रामदयाल ने द ढ़तापूर्वक पूछा।

कुंजर सिंह ने अवहेलना की द ष्टि से उसकी ओर देखा।

टिप्पणी

रामदयाल ने कहा, 'वह राजा देवी सिंह की रानी है।'

कुंजर सिंह सन्नाटे में आ गया। एक कदम पीछे हट गया, बोला, 'झूठ, असंभव!'

कोई उत्तर न दे कर रामदयाल फिर मंदिर में चला गया।

मंदिर में घुसते हुए रामदयाल को नरपति मिला। वह कहीं बाहर जा रहा था। कानाफूसी-सी करते हुए नरपति बोला, 'यहाँ के राजा से कुछ काम हो, तो मेरे साथ चलो।'

रामदयाल बोला, 'अभी तो नहीं, किसी और समय चलूँगा। एकाध दिन यहाँ रह कर मैं काम से बाहर जाऊँगा। लौट कर फिर विनती करूँगा।'

नरपति चला गया।

**रामदयाल द्वारा गोमती को कुंजर सिंह के बारे में सब कुछ बता देना।**

गोमती को एकांत में देखकर रामदयाल ने एक ओर बुलाने का सम्मानपूर्वक संकेत किया। वह आ गई।

रामदयाल ने कहा, 'जिसे आपने कुंजर सिंह का सेनापति समझ रखा था, वह सेनापति नहीं है।'

'तब कौन है?' गोमती ने ज़रा चिंतित होकर पूछा।

'स्वयं कुंजर सिंह।'

गोमती चौंकी। रामदयाल ने निवारण करते हुए कहा, 'आप आश्चर्य न करें, वह महाराज को हानि पहुँचाने के लिए तरह-तरह के उपायों की रचना में सदा व्यस्त रहते हैं। परंतु मैं इसका उपाय करूँगा, आप चिंतित न हों?'

'आप इस भेद को कदापि किसी के सामने प्रकट न करें। मेरी अनुपस्थिति में यहाँ जो कुछ हो, उस पर अपनी द ष्टि रखें और मेरे ऊपर विश्वास। मैं एक-आध रोज के लिए बाहर जाऊँगा। वहाँ से लौट कर अपनी और योजनाएँ बतलाऊँगा। उसके अनुसार फिर काम करें।'

गोमती ने प्रसन्न हो कर कहा, 'तुम बड़े चतुर मनुष्य जान पड़ते हो, रामदयाल। धन्य हैं महाराज, जिनका ऐसा दक्ष और पुरुषार्थी सेवक हो। तुम कब तक यहाँ रहोगे?'

रामदयाल ने उत्तर दिया, 'एक-आध दिन और हूँ। ज़रा यहाँ के राजा को कुंजर के पक्ष से विमुख कर लूँ, या कम-से-कम उत्साहरहित कर दूँ, तब दूसरा काम देखूँ।'

यह कह कर रामदयाल एकटक गोमती की ओर देखने लगा मानो कुछ कहना चाहता हो।

गोमती बोली, 'क्या कहते हो, कहो।'

'आपका इन पुजारिन के विषय में क्या विश्वास है?' उसने पूछा।

गोमती ने उत्तर दिया, 'बहुत शुद्ध हैं। दुर्गा से उनका संपर्क है। लोग उन्हें देवी का अवतार समझते हैं।'

'यह सब ठीक है।' रामदयाल आँखें नीची करके बोला, 'परंतु मेरी यह प्रार्थना है कि आप ज़रा यह अच्छी तरह से देखती रहें कि कुंजर सिंह का वह कितना पक्ष करती हैं और क्यों करती हैं? आपको स्मरण होगा कि उन्होंने मुझे स्वामी की सफलता के लिए पूरा आशीर्वाद नहीं दिया।'

कुछ सोच कर गोमती ने कहा, 'मुझे खूब याद है। उन्होंने एक बार आशीर्वाद दे दिया है। दूसरी बार आशीर्वाद फिर भी दे देंगी।'

टिप्पणी

## खंड-उनतालीस

कुंजर सिंह को जितनी बेचैनी उस दिन हुई, उतनी लोचन सिंह के मुकाबले में सिंहगढ़ छोड़ने के लिए विवश होने पर भी नहीं हुई थी। उसे भय हुआ कि रामदयाल कुमुद को किसी षड्यंत्र में फँसाने और स्वयं उसे किसी विपद् में डालने की चिंता में है। उसने कुमुद से उसी दिन अकेले में कुछ कहने का निश्चय किया।

अंत में कुंजर सिंह को दोपहर के लगभग एक अवसर तथा लगा। गोमती रसोई बनाने के लिए एक कोठरी में चली गई। दूसरी में नरपति को कुमुद भोजन कराने लगी। रामदयाल मंदिर के एक कोने में मुँह पर चादर ढाँपे पड़ा था। कुंजर सिंह मंदिर के आँगन में जाकर ऐसी जगह खड़ा हो गया, जहाँ नरपति उसे नहीं देख सकता था, केवल कुमुद देख सकती थी, परंतु कुमुद ने उसकी ओर देखा नहीं। जब धूप में खड़े-खड़े कुमुद की ओर टकटकी लगाए कुंजर को कई पल बीत गए, तब उसने धीरे-धीरे से पैर की आहट की।

**कुंजर सिंह द्वारा कुमुद को सारी स्थिति बताने के लिए योजना बनाना।**

कुंजर ने कुमुद को हाथ जोड़ कर सिर से बुलाने का संकेत किया। देख कर भी वह कुछ समय तक वहीं बैठी रही।

यथेष्ट से कुछ अधिक भोजन-सामग्री नरपति के सामने रख कर कुमुद ने पिता से कहा, 'मैं अभी आती हूँ।'

आँगन में प्रवेश करते ही कुमुद ने चारों ओर आँख डाली। गोमती वहाँ न थी, मंदिर की बगल वाली छोटी-सी दलान में रामदयाल चादर से मुँह ढके पड़ा था। वहाँ और कोई न था।

कुंजर सिंह ने मंदिर के बाहर चलने का इशारा करते हुए दरवाजे की ओर कदम बढ़ाया। कुमुद भीतर जा कर देवालय की चौखट पर जा बैठी। कुंजर लौटकर वहीं जा पहुँचा। नीचे बैठ गया। कुमुद भी चौखट से उतर कर नीचे बैठने को ज़रा हिली, परंतु फिर जहाँ की तहाँ बैठी रही। उस स्थान से जहाँ रामदयाल लेटा था, ओट थी।

'यहाँ कोई संकट उपस्थित होने वाला है।' कुंजर सिंह बोला, 'षड्यंत्र रचे जा रहे हैं। यह जो पुरुष कल यहाँ आया है, बड़ा भयंकर और नीच है। उस लड़की के साथ कुछ सलाह कर रहा था। आपकी रक्षा का कुछ उपाय होना चाहिए।'

नेत्र स्थिर करके कुमुद ने कहा, 'मेरे लिए किसी बात की चिंता न करनी चाहिए। दुर्गाजी की कृपा से मेरे ऊपर कोई संकट कभी नहीं आ सकता। यह लड़की मेरे गाँव की है। उस दिन पालर में युद्ध हुआ, इस लड़की का विवाह उस पुरुष के साथ होने जा रहा था, जो अब दलीप नगर का राजा है। वह अपने पति के लिए चिंतित रहा

**चित्र : देवालय में कुमुद और कुंजर सिंह बातचीत करते हुए**

टिप्पणी

करती है, और कोई बात नहीं है।'

आग्रह के स्वर में बोला, 'मैंने दलीप नगर के सिंहासन की रक्षा में प्राणों के अतिरिक्त लगभग सभी कुछ त्यागा है। आशीर्वाद दिया जाए कि इन चरणों की रक्षा में उनका भी उत्सर्ग कर दूँ।'

किसी अन्य को दूसरे समय दिए गए वरदान का स्मरण करके कुमुद ने कहा, 'आपको ऐसी कोई चिंता न करनी चाहिए।' कुमुद ने विश्वासपूर्ण स्वर में बात कही, परंतु उसमें किसी तरह की अवहेलना न थी।

**कुंजर सिंह द्वारा कुमुद के समक्ष संकट की स्थिति का बयान तथा परोक्ष रूप से अपने मनोभवों का प्रकटीकरण।**

कुंजर सिंह ने हाथ जोड़ कर कहा, 'आशीर्वाद दीजिए कि इन चरणों के लिए ही जीवन धारण करूँ।'

कुमुद के मुख पर लालिमा छा गई। नेत्रों में निस्संकोचता का वह भाव न रहा। एक ओर आँखें करके बोली, 'आपकी बात मुझे विचित्र-सी जान पड़ती है। किसी तरह के कष्ट की कोई आशंका मुझे नहीं है। यदि कोई होगी, तो मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि रक्षा का उचित उपाय किया जाएगा।'

उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही कुमुद वहाँ से चली गई। जब तक वह रसोईघर में नहीं पहुँच गई, कुंजर सिंह सोने को लजाने वाले उसके पैरों को देखता रहा। उसे ऐसा जान पड़ा, जैसे उसकी नाड़ी में बिजली कौंध गई हो। जब वहाँ से चला, तब उसकी आँखों में तारे-से छिटक रहे थे। उस समय उसने यह नहीं देखा कि दालान में रामदयाल अपने स्थान पर न था।

## खंड-चालीस

**रानियों के विद्रोह से विचलित हो कर देवी सिंह का जनार्दन के साथ उनके दमन हेतु मंत्रणा करना।**

रानियों के विद्रोह का पता राजा देवी सिंह को शीघ्र लग गया। जनार्दन को बहुत खेद और क्षोभ हुआ। खोज लगाने पर उसे मालूम हो गया कि रानियाँ रामनगर की गढ़ी में पहुँच गई हैं। रामनगर का पतराखन दलीप नगर का जागीरदार न था और अपेक्षाकृत भांडेर के अधिक निकट होने के कारण उसके ऊपर कुछ ज़ोर नहीं चल सकता था। एक निश्चय करके जनार्दन राजा के पास गया।

राजा ने कहा, 'तुम्हारा कहना न माना, इसलिए यह एक नई समस्या और कष्ट देने खड़ी हो गई।'

जनार्दन बोला, 'अब जैसे बनेगा, वैसे इस समस्या को भी देखना है। एक उपाय सोचा है।'

'वह क्या?' राजा ने सतर्क होकर पूछा।

मंत्री ने उत्तर दिया, 'मैं एक विश्वस्त दूत दिल्ली को रवाना करता हूँ। वह सैयदों की चिट्ठी कालपी के नवाब के नाम लाएगा।'

राजा बोले, 'उस चिट्ठी का असर एक वर्ष पीछे दिखलाई पड़ेगा। कौन पूछता है, अँधेरे गड्ढे में कि उस चिट्ठी का क्या होना चाहिए।'

'वह ऐसी चिट्ठी न होगी।' जनार्दन ने कहा, 'कालपी के नवाब की सेना के लिए उस चिट्ठी का काफ़ी महत्त्व होगा अर्थात् नवाब अलीमर्दान को दिल्ली से बुलावा आवेगा।'

'दूत कौन है आपका?' राजा ने पूछा।

'हकीमजी।' मंत्री ने उत्तर दिया, 'वह स्वयं सैयद हैं और राजनीति में भी निपुण हैं।'

टिप्पणी

'और वह हमारे राज्य से कुछ विरक्त-से भी रहते हैं।' राजा ने कहा।

'नहीं महाराज।' जनार्दन बोला, 'आपके उदार और विश्वासपूर्ण बरताव के कारण वह बहुत संतुष्ट हैं। मुझसे भी मित्रता का कुछ नाता मानते हैं। उनके बाल-बच्चे यहीं हैं और वह कृतज्ञ-हृदय पुरुष हैं। दलीप नगर दिल्ली के मुगल सम्राटों का सहायक रहता चला आया है। हकीमजी की बात मानी जाएगी और अलीमर्दान को अपना हठ छोड़ना पड़ेगा। वह इधर-उधर कहीं थोड़े दिन के लिए चला जाए, फिर रानियों के विद्रोह का दमन बहुत सहज हो जाएगा।'

राजा ने कहा, 'मुठभेड़ टल जाए, तो अच्छा है। नहीं तो हमें एक ज़ोर का हमला कालपी के नवाब पर भांडेर में शायद करना पड़ेगा। विलंब होने से रानियाँ बाहर कुछ सरदारों को अपनी ओर कर लेंगी और हमारे यहाँ के भी कुछ मनमुटाव रखने वाले जागीरदार उभड़ पडेंगे।'

'उधर कुंजर सिंह भी अभी बने हुए हैं।' जनार्दन बोला, 'वैसे उनकी ओर से बहुत कम खटका है। किसी बात पर बहुत दिन जमे रहना उनके स्वभाव में नहीं है। आजकल वह विराटा की ओर हैं। यदि उन्होंने अलीमर्दान के साथ संधि कर ली, तब अवश्य अवस्था कुछ कष्टसाध्य हो जाएगी। उनका छोटी रानी के साथ मेल शायद हो जाए, परंतु अलीमर्दान के साथ न होगा। मैंने उनकी गति की परख के लिए जासूस छोड़ रखे हैं। ठीक बात मालूम होने पर निवेदन करूँगा। तब तक मैं हकीमजी को दिल्ली भेज कर अलीमर्दान का प्रबंध करता हूँ।'

जनार्दन के इस निर्णय के अनुसार हकीम को दिल्ली भेजा गया।

## खंड-इकतालीस

भांडेर का पुराना नाम लोग भद्रावती बतलाते हैं। यह पहूज नदी के पश्चिमी किनारे पर बसा हुआ है। खंडहरों पर खंडहर हो गए हैं। किसी समय बड़ा भारी नगर रहा होगा। अब मसजिदों और सोन तलैया के मंदिर के सिवा और खास इमारत नहीं बची है। पहूज के पूर्वी किनारे पर जंगल से दबा और भरकों से कटा हुआ एक विशाल प्राचीन नगर है। नदी के दोनों ओर भरकों, मैदानों, टीलों, और पहाड़ियों के विश्रंखल क्रम हैं। पहूज छोटी-सी, परंतु पानी वाली नदी है और बड़ी सुहावनी है। भांडेर से दो-ढाई कोस दक्षिण-पूर्व की ओर जहाँ से कुछ अंतर पर लहराती हुई पहूज नदी उत्तर-पश्चिम की ओर आई है, सालोन भरौली की पहाड़ियाँ हैं। इनके बीच में पत्थर का एक विशाल तथा बहुत प्राचीन मंदिर है। मंदिर में महादेवजी की मूर्ति प्रतिष्ठित है। यहाँ से विराटा पश्चिम की ओर करीब छह कोस है। यहीं अलीमर्दान अपनी सेना के लिए पड़ा था।

एक दिन रामदयाल अँधेरे में अलीमर्दान की छावनी में आया। ज़रा दिक्कत के बाद अलीमर्दान के डेरे पर पहुँचा। काले खाँ उसके पास मौजूद था।

रामदयाल को अलीमर्दान ने पहचान लिया। पूछा, 'तुम यहाँ कैसे आ गए? सुना था, कैद में हो।'

'कैद में अवश्य था, परंतु छूटकर आ गया हूँ। महारानी भी कैद कर ली गई थीं, परंतु वह भी स्वतंत्र हो गई हैं।'

**शब्दार्थः**
**विश्रंखल** – क्रमहीन, बिखरे हुए

टिप्पणी

'अब वह कहाँ हैं?'

'रामनगर में राव पतराखन की गढ़ी में।'

अलीमर्दान ने आश्चर्य प्रकट किया, 'उन जैसी वीर स्त्री शायद ही कहीं हो। कैसी जवाँमर्द और दिलेर हैं! मुझे उनके राखीबंद भाई होने का अभिमान है।'

रामदयाल बोला, 'प्रण निभाने का ठीक समय आ गया है। दलीप नगर पर चढ़ाई करने के लिए प्रार्थना करने को यहाँ भेजा गया हूँ।'

अलीमर्दान ने कहा, 'मैं दिल्ली के समाचारों के लिए ठहरा हुआ हूँ। इस लड़ाई में उलझ जाने के बाद यदि दिल्ली का ऐसा समाचार मिला, जिससे दूसरी जगह जाने का निश्चय करना पड़ा तो बुरा होगा।'

'परंतु,' रामदयाल ने विनती की, 'आप हम लोगों को मझधार में नहीं छोड़ सकते। महारानी आपके भरोसे कैदे से स्वतंत्र हुई हैं। बड़ी रानी ने भी अबकी बार उनका साथ दिया है।'

'अब तो राज्य के कुछ अधिक सरदार उनके साथ होंगे।' अलीमर्दान ने सम्मति प्रकट की 'सरदार महारानी के साथ हैं या उन्होंने साथ देने का वचन दिया है?'

रामदयाल ने उत्तर दिया, 'वचन दिया है। अवसर आते ही रण-स्थल पहुँच जाएँगे।'

'कुंजर सिंह कहाँ है?'

'उनके विषय में भी निवेदन करने के लिए आया हूँ।'

एक बार काले खाँ और फिर अलीमर्दान की ओर देख कर रामदयाल बोला, 'मैं आपको अच्छी तरह जानता हूँ आप कुंजर सिंह से भली भाँति परिचित हैं। वह इस समय विराटा की गढ़ी में हैं। राजा देवी सिंह से शायद अकेले ही लड़ने की चिंता कर रहे हैं।'

अलीमर्दान ने कहा, 'विराटा का सबदल सिंह क्या कुंजर सिंह का तरफ़दार है?'

'नहीं सरकार, उन्होंने कोई वचन नहीं दिया है।' विराटा के राजा को अभी पता भी नहीं कि कुंजर सिंह गढ़ी में हैं।'

'यह कैसे?' अलीमर्दान ने अचंभा किया।

रामदयाल बोला, 'गढ़ी में देवी का मंदिर है। पालर की वही पुजारिन लड़की उस मंदिर में छुपी हुई है और वहीं पर कुंजर सिंह हैं।'

'ऐं!' काले खाँ ने कहा।

'हैं!' अलीमर्दान को ताज्जुब हुआ।

'हाँ सरकार।' रामदयाल बोला, 'मैं अपनी आँखों से देख आया हूँ।'

अलीमर्दान ने कुछ सोच कर कहा, 'मैं कुछ दिनों से पता लगा रहा था, परंतु मुझे सफलता नहीं मिली।'

काले खाँ बोला, 'अब तो हुजूर को पक्का पता लग गया। कोई शक नहीं रहा।'

'यह सब ठीक है।' अलीमर्दान ने कहा, 'परंतु मैं मंदिर की पुजारिन के साथ कोई ज़्यादती नहीं करना चाहता।'

काले खाँ ने आग्रह किया, 'मंदिर या मूर्ति के साथ ज़्यादती करने का हुजूर ने कभी इरादा जाहिर नहीं किया, परंतु मेरी विनती है कि वह पुजारिन देवी या मंदिर तो है

टिप्पणी

नहीं।'

'नहीं काले खाँ।' अलीमर्दान ने द ढ़ता के साथ कहा, 'हिंदू लोग उस पर विश्वास करते हैं। वह अवतार हो या न हो, मैं हिंदुओं के जी दुखाने वाले किसी काम को न करूँगा।'

रामदयाल हाथ जोड़ कर बोला, 'दीनबंधु, वह न तो अवतार है और न कुछ और। मैं अपनी आँखों से सब बातें देख आया हूँ। उसका बाप हद दर्जे का लालची है और वह स्वयं कुंजरसिंह के पंजे में शीघ्र आने वाली है।'

'क्या?' अलीमर्दान ने आश्चर्यसूचक प्रश्न किया।

'हुजूर को रामदयाल की साख का यकीन करना पड़ेगा।' काले खाँ ने कहा। अलीमर्दान थोड़ी देर तक चुप रहा। सन्नाटा छाया रहा।

रामदयाल ने स्तब्धता भंग की। बोला, 'सरकार मेरे साथ वेश बदल कर चलें तो अपनी आँखों से सब देख लें।'

अलीमर्दान ने काले खाँ की ओर गुप्त रीति से देखा। एक क्षण बाद बोला, 'मुझे महारानी साहब से बातचीत करने के लिए एक दिन जाना है। वेश बदल कर विराटा भी हो आऊँगा। परंतु मैं चाहता हूँ कि महारानी के पास का जाना अभी किसी को मालूम न हो। मैं काले खाँ को भी साथ ले चलूँगा।'

**रामदयाल द्वारा अलीमर्दान को देवी का झूठा अवतार बताकर उसके कुंजर सिंह के हाथों में चली जाने की आशंका प्रकट करना।**

## खंड-बयालीस

कुंजर सिंह को दलीप नगर का मुकुट प्राप्त करने की पूरी आशा थी। देवी सिंह बिना अधिकार के सत्ता धारण किए हुए है, इसलिए जी में कड़ी ठेस-सी लगी रहती थी। इसके सिवा देवी सिंह से पराजय का जब वह कारण ढूँढ़ता था, तब उसका मन यही उत्तर देता था कि यदि रानी ने गड़बड़ न की होती तो पराजय न होती।

कुंजर सिंह के पास न सेना थी, न सरदार थे और न था उसके पास धन, परंतु उसके पास निराशाओं की आशा थी। देवी सिंह और जनार्दन के प्रति हृदय में थी कुढ़न और रक्त में शूरता, जो असंभव की प्राप्ति के लिए भी उद्योग करने की कभी-कभी प्रेरणा देती थी।

**कुंजर सिंह द्वारा अपने अन्य साथियों की तलाश में विराटा से प्रस्थान।**

उसने विराटा का पड़ोस स्वच्छंद गढ़पतियों को एकत्र करने के लिए ढूँढ़ा था। परंतु विराटा में आने पर उसने अपने मन को टटोला तो देखा कि वहाँ अब अपने प्रयोजन पर आरूढ़ करने वाली वह लगन नहीं है जो पहले कभी थी। रामदयाल के चले जाने पर उसे कुमुद से फिर एक बार बातचीत करने की अभिलाषा हुई। कोई विशेष विषय न था, कोई अर्थमूलक प्रश्न भी न था, परंतु बातचीत करने की लालसा प्रबल थी। कुमुद नहीं मिली। प्रयत्न करने पर भी वह उससे न मिल पाया।

तब कुंजर अपने दूसरे ध्येय की प्राप्ति या खोज में विराटा से निकल पड़ा मुसावली से अपना घोड़ा ले कर और शीघ्र लौटने का वचन दे कर वह अपने मित्रों की टोह में चल दिया।

उधर रामदयाल अलीमर्दान और कालेखाँ को छद्मवेष में विराटा लिवा लाया। पर वहाँ से अलीमर्दान को शीघ्र जाना पड़ा। जीवन में पहले कभी उसने हिंदुओं के रीति-रिवाज का अभ्यास न किया था, इसलिए बदली हुई वेश-भूषा का निर्वाह करना

**शब्दार्थ :**
**साख** – प्रतिष्ठा, मर्यादा
**स्तब्धता** – चुप्पी

टिप्पणी

उसे लगभग असंभव प्रतीत हुआ। अलीमर्दान इसलिए इच्छा न होते हुए भी शीघ्र लौटा और रामदयाल के साथ रामनगर चला गया।

राव पतराखन ने गढ़ी में प्रवेश के पश्चात् उन दोनों के विषय में रामदयाल से पूछा। उसने उत्तर दिया, 'महारानी के सरदार हैं। वेश बदले हुए हैं। कुछ सलाह करके अभी भांडेर की ओर कालपी के नवाब से बात करने के लिए लौट जाएँगे। मैं नवाब साहब के पास हो आया हूँ। सहायता का वचन पक्का हो गया है।'

रामदयाल रानियों के पास चला गया। वह अलीमर्दान और काले खाँ को पहले ही एक ओर बिठा आया था।

छोटी रानी से बोला, 'नवाब साहब आए हैं।'

छोटी रानी ने पूछा, 'सेना ले कर या अकेले ही?'

रामदयाल ने जवाब दिया, 'अपने सेनापति के साथ, अकेले आए हैं। आपका आशीर्वाद ले कर इसी समय भांडेर चले जाएँगे।'

छोटी रानी ने कहा, 'विराटा के राजा से बातचीत हुई या नहीं?'

'अवसर नहीं मिला, महाराज।' रामदयाल ने उत्तर दिया, 'नवाब साहब को भांडेर लौटने की जल्दी पड़ रही है। यदि विराटा का राजा हमारा साथ देने से नाहीं भी करेगा, तो इसमें हमारी कुछ हानि नहीं हो सकती। अपना बल बहुत अधिक है। नवाब की पूरी सेना देखकर चकित हो गया हूँ।'

छोटी रानी ने कहा, 'नवाब को बुला ला। जल्दी बातचीत करके लौट जाएँ और तुरंत कार्यक्रम का निर्णय करके दलीप नगर से उस डाकू को भगा दें।'

रामदयाल परदे का प्रबंध करके अलीमर्दान और काले खाँ को लिवा लाया। दोनों रानियों ने ओट से उन दोनों को देखा।

रामदयाल के मार्फत बातचीत होने लगी।

**अलीमर्दान का छोटी रानी के साथ मिलकर दलीप नगर सिंहगढ़ पर आक्रमण की योजना बनाना।**

छोटी रानी, 'अब क्या किया जाए? आप ही के भरोसे इतनी हिम्मत करके और कष्ट उठा कर दलीप नगर छोड़ा।'

अलीमर्दान, 'मैं तुरंत हमला करने के लिए तैयार हूँ। दिल्ली से एक संदेशा आने वाला है। उसी की बाट देख रहा हूँ। केवल आठ-दस दिन का विलंब है। तब तक आप अपने सरदार भी इकट्ठे कर लें।'

'यह हो रहा है। विराटा का राजा किस ओर रहेगा?'

'वह यदि आपके पक्ष में न होगा, तो मैंने उसे चकनाचूर करने की ठान ली है।'

'आप पहले दलीप नगर या सिंहगढ़ पर आक्रमण करेंगे?'

'दोनों ठिकानों पर एक साथ धावा बोला जाएगा। आप क्या पसंद

**चित्र : छोटी रानी की पर्दे के पीछे से रामदयाल और अलीमर्दान से आक्रमण की योजना पर चर्चा**

टिप्पणी

करती हैं?'

मैं स्वयं दलीप नगर पर चढ़ाई करूँगी। आप हमारी सेना के साथ रहें। अपने सेनापति को सिंहगढ़ की ओर भेजें।'

'यही मैंने सोचा है। यदि कार्य-विधि में कोई तबदीली हुई, तो आपको मालूम हो जाएगा।'

'अब की बार तोपों की संख्या बढ़ा दी गई या नहीं?'

'पहले से कहीं अधिक, कई गुनी।'

'और सैनिक?'

'सैनिक भी बढ़ा दिए गए हैं।'

बड़ी रानी ने धीरे से छोटी रानी के कान में कहा, 'बदले में नवाब क्या लेंगे?'

'कुछ नहीं।' छोटी रानी ने कान ही में उत्तर दिया, 'वह मेरे राखीबंद भाई हैं।'

बड़ी रानी ने कहा, 'पहले तय कर लेना चाहिए। पीछे पैर फैलावेंगे, तो बहुत गड़बड़ होगी।'

'क्या गड़बड़ होगी?' छोटी रानी ने पूछा।

बड़ी रानी ने उत्तर दिया, 'दलीप नगर को अपने अधिकार में कर लेंगे।'

'कर लें।' छोटी रानी ने तीव्रता के साथ, परंतु बहुत धीरे से कहा, 'देवीसिंह डाकू से तो दलीप नगर का छुटकारा हो जाएगा। चाहे प्रलय हो जाए, परंतु देवी सिंह को दलीप नगर से निकालना और जनार्दन को प्राणदंड देना है।'

## खंड-तैंतालीस

**काले खाँ द्वारा विराटा के राजा सबदल सिंह के साथ वार्तालाप तथा सबदल सिंह का अलीमर्दान की सहायता का आश्वासन।**

रामनगर से लौट कर एक दिन काले खाँ विराटा में सबदल सिंह के पास आया। राजा ने उसका आगत-स्वागत किया। जितनी देर वह ठहरा, राजा देवी सिंह के विरुद्ध बातें करता रहा, परंतु जाते समय तक अपने आने का तात्पर्य नहीं बताया। सबदल सिंह ने सोचा कि युद्धों का समय है, कुंजर सिंह की सहायता का वचन नहीं तो भरोसा दे ही दिया है, नवाब भी शायद उसका पक्षपाती हो, कालपी के साथ विराटा का करीब-करीब मातहती का संबंध था, इसलिए स्पष्ट कथन की जरूरत सबदल सिंह ने नहीं समझी। काले खाँ से, जाने के पहले, वह बोला, 'हमारे पास आदमी रामनगर के रावसाहब से अधिक नहीं हैं, परंतु हृदय हमारा वैसा लोभी नहीं है। नवाब साहब के लिए हम लोग अपना सिर देने के लिए तैयार हैं।'

'यह तो उम्मीद ही है।' काले खाँ ने कहा, 'जिस समय जरूरत पड़ेगी, आपसे देवी सिंह को ललकारने के लिए कहा जाएगा।'

सबदल सिंह ने नम्र हो कर पूछा, 'मेरे लायक और कुछ आज्ञा हो, कहिए।'

काले खाँ ने एक-एक शब्द तौल कर कहा, 'आपके यहाँ देवीजी के मंदिर में पालर से एक लड़की भाग कर आई है....।'

काले खाँ रुक गया। सबदल सिंह ने भयभीत हो कर प्रश्न किया, 'क्या उस बेचारी से कोई अपराध हो गया है? देखने में तो बड़ी भोली-भाली दीन कन्या है।'

काले खाँ ने नम्रता का आवरण दूर फेंक कर कहा, 'उसके सौभाग्य में रानी बनना

टिप्पणी

**काले खाँ द्वारा सबदल सिंह के समक्ष कुमुद के साथ अलीमर्दान के विवाह का प्रस्ताव रखना।**

लिखा है, नवाब साहब को उसके सौंदर्य  के मारे खाना-पीना हराम है।'

सबदल सिंह का कलेजा धुक-धुक् करने लगा। कोई शब्द मुँह से न निकला।

काले खाँ ने उसी स्वर में कहा, 'आपके लिए कोई संकट की समस्या नहीं है। आपके धर्म पर कोई हस्तक्षेप नहीं किया जा रहा है। नवाब साहब आप लोगों के मूर्ति-पूजन और लाखों देवी-देवताओं के पूजन में कभी खलल नहीं डालते। वह लड़की आपके गाँव की भी नहीं है। आपको कुछ करना नहीं होगा। हम सब ठीक-ठाक कर लेंगे। यह हम कुरान शरीफ की कसम पर आपको यकीन दिलाते हैं कि आपके मंदिर या देवता का किसी तरह का अपमान न किया जाएगा और वह लड़की नवाब साहब के महल में रहते हुए भी शौक से अपनी पूजा-पत्री करती रह सकती है।'

सबदल सिंह बोला, 'मैं इसमें अपने लिए बड़ी भारी आफ़त देख रहा हूँ। उस लड़की को लोग देवी का अवतार मानते हैं। और वह मेरी जाति की है। क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आता।'

काले खाँ ने कहा, 'आपको कुछ करने की ज़रूरत नहीं। आप चुपचाप अपने घर में बैठे रहिए। हम दोनों आदमी यानि मैं और नवाब साहब उसे एक दिन चुपके से आकर लिवा जाएँगे। वह हँसती-खेलती यहाँ से चली जाएगी। ऐसा हो जाने देने में आपका फायदा है। लड़ाई में आपको आदमी या रुपया-पैसा न देना पड़ेगा और मौका आने पर आपके पुराने दुश्मन रामनगर के राव को नष्ट करके वह गढ़ी भी आपको दिला दी जाएगी।'

सबदल सिंह ने कहा, 'हमें थोड़ा-सा समय दीजिए। भाई-बंदों से बात करके बहुत शीघ्र कहला भेजूँगा।'

'यदि उस लड़की को आपने कहीं छिपा दिया या भाग जाने दिया तो अंत में जो कुछ होगा उसका दोष मेरे मत्थे न दीजिएगा।'

काले खाँ यह धमकी दे कर चला गया। सबदल सिंह बहुत खिन्नमन हो कर एक कोने में बैठ कर सोच-विचार में डूबता-उतराता रहा।

उसने उसी दिन लोगों के साथ बातचीत की। नरपति सिंह बहुत उत्तेजित और भयभीत था। आशा, विश्वास और सौगंध दिला कर उसे कुछ शांत किया। परंतु इन दाँगियों के निश्चय का किसी को पता न लगा। केवल यह देखा गया कि गढ़ी की मरम्मत शीघ्रता के साथ हो रही है और तोपें मौके के स्थानों पर लगाई जा रही हैं।

## खंड-चवालीस

जनार्दन के प्रयत्न से हकीम आगा हैदर को दिल्ली की दूरी बहुत कम अखरी। वह खुशी-खुशी जल्दी लौट भी आया। उसे अपनी सफलता पर गर्व था। उसने जनार्दन को दिल्ली के प्रधानमंत्री की चिट्ठी दी जिस में लिखा था कि आप और कालपी का नवाब अलीमर्दान बादशाह की दो आँखें हैं। किसी को भी कष्ट होने से उन्हें दुख होगा; अलबत्ता इस समय नवाब अलीमर्दान की दिल्ली में बहुत जरूरत है, इसलिए वह फौरन दिल्ली बुलाए जाने वाले हैं।

जनार्दन ने बड़े हर्ष के साथ यह चिट्ठी राजा देवी सिंह को सुनवाई। पर उन्हें कोई हर्ष नहीं हुआ। बोले, 'यह सब पाखंड मुझे धोखे में नहीं डाल सकता। पहले मारे सो ठाकुर, पीछे मारे सो फिसड्डी, मैं तो यह जानता हूँ। बहुत होगा, तो दिल्ली वाले अपने नवाब

**शब्दार्थ :**
**खलल** – बाधा
**यकीन** – विश्वास

की मदद कर देंगे, बस। परंतु मैं बुंदेलखंड में वह आग सुलगाऊँगा, जो चंपत महाराज ने भी न सुलगाई होगी और फिर बहुत गिरती हालत में मराठों को तो बुलाया ही जा सकता है।'

'मैं नाहक युद्ध करने के पक्ष में नही हूँ।' जनार्दन बोला, 'मराठे सेंत-मेंत सहायता किसी की नहीं करते। उन्हें बुलाइएगा तो वे यहाँ से कुछ-न-कुछ ले कर ही जाएँगे।'

'पंडितजी।' देवी सिंह ने उत्तेजित हो कर कहा, 'मराठे अगर कुछ लेंगे, तो मैं उन्हें दे दूँगा, परंतु जीते-जी नवाबों और सूबेदारों को सिर नहीं झुकाऊँगा। क्या भूल गए कि अलीमर्दान विराटा के मंदिर को नष्ट करने वाला है?'

'नहीं महराज, मैं नहीं भूला हूँ।' जनार्दन बोला, 'परंतु मेरा एक निवेदन है।'

'कहिए।' राजा ने कहा।

जनार्दन बोला, 'थोड़े दिन युद्ध स्थगित रखिए। यदि नवाब दिल्ली चला गया, तो ठीक है और यदि न गया, तो रणभेरी बजवा दीजिए।'

राजा बोले, 'मैं ठहरा हूँ; युद्ध न करूँगा, परंतु तैयारी में कोई कसर नहीं लगाऊँगा। मेरी इच्छा है कि बैरी के घर धावा करूँ। उसे यहाँ आने देना और पीछे सँभाल करना बुरी नीति होगी। मैं लोचन सिंह दाऊजू को सिंहगढ़ से बुला कर ऐसे स्थान पर भेजना चाहता हूँ, जहाँ से बैरी के घर में घुस कर छापा डाल सकें।'

जनार्दन ने प्रतिवाद नहीं किया। केवल यह कहा, 'सिंहगढ़ बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है, वहाँ किसे भेजिएगा?'

और सरदार हैं, जो अपना जौहर दिखलाने की आकांक्षा रखते हैं।' राजा बोला, 'अब की बार आपकी रण-कुशलता की परीक्षा ली जाएगी।'

जनार्दन ने सच्चे हर्ष के साथ कहा, 'मैं लड़ना तो नहीं जानता, परंतु लड़ाई से भागना भी नहीं जानता।'

राजा बोला, 'आप दलीप नगर को अपने किसी विश्वसनीय सेवक या मित्र की निगरानी में छोड़ देना। अब की बार हम लोग अपने समग्र बल से इस धर्मद्रोही को ठीक कर दें।'

कृतज्ञतासूचक स्वर में जनार्दन बोला, 'मेरा शरीर यदि अन्नदाता की सेवा में काम आए, तो इससे बढ़ कर और किसी बात में मुझे सुख नहीं होगा। यदि आज्ञा हो, तो मैं स्वयं विराटा की वास्तविक स्थिति की खोज कर आऊँ? जासूस लोग बात का बिल्कुल ठीक-ठाक पता नहीं लगा पा रहे हैं।'

## खंड-पैंतालीस

जिस दिन से काले खाँ विराटा से गया, वहाँ के वातावरण में सन्नाटा-सा छा गया। एक भ्रांति-सी फैली हुई थी, जिसके विषय में खुल कर चर्चा करने में भी लोगों का मन नहीं जमता था। आने वाले संकट का साफ रूप बहुत कम लोगों की समझ में आ रहा था, परंतु यह स्पष्ट था कि विराटा निरापद स्थान नहीं है। खतरे के समय विराटा-निवासियों का ग्राम त्याग कर उस पार जंगल और भरकों में महीनों छिपे रहना कोई असाधारण स्थिति न थी। परंतु इस समय तक विपद के ठीक-ठीक रूप की कल्पना का आभास न मिला था, इसलिए घबराहट थी।

टिप्पणी

**विराटा पर अलीमर्दान के आक्रमण की आशंका से चिंतित विराटावासी**

नरपति को उसका यथासंभव यथावत् रूप बतलाया गया था। उसे देवी का भरोसा था, परंतु वह बाहर के भी किसी आश्रय के लिए उद्योग करने की जी में ठान चुका था।

कुमुद से उसने कहा, 'दुर्गा ने ही पालर की रक्षा की थी। यहाँ पर भी वह रक्षा करेंगी। मैं एक दिन के लिए दलीप नगर जाऊँगा।' कुमुद से और कुछ न कह कर वह मूर्ति के सामने प्रार्थना करने लगा।

स्पष्ट तौर पर बतलाए बिना भी कुमुद ने बात समझ ली।

गोमती ने मंदिर के अन्य आने-जाने वालों से, जो विराटा में रहते थे, पूछा।

एक बोला, 'राजा देवी सिंह यहाँ आ कर युद्ध करने वाले हैं, उधर अलीमर्दान की तोपें हमारी गढ़ी पर गोले बरसाएँगी।'

सबदल सिंह ने अपने चुने हुए भाई-बंदों को छोड़ कर ठीक बात किसी को नहीं बताई थी। इस कारण गोलमाल फैला हुआ था। इस विषय को ले कर गोमती और कुमुद में बातचीत होने लगी। कुमुद ने कहा, 'विपद् में धीरज रखना चाहिए। दुर्गाजी का भरोसा सबसे बड़ा बल है। दूसरे आश्रय छूँछे हैं।'

गोमती ने पूछा, 'अलमर्दान यहीं से क्यों युद्ध करेगा?'

'उसकी मति फिर गई है, वह बावला है। वह मंदिर के ऊपर उत्पात करना चाहता है।'

'तभी दलीप नगर के महाराज यहीं आ कर युद्ध करना चाहते हैं।'

'तुम्हें कैसे मालूम?'

'मैंने एक गाँव वाले से सुना है।'

'यह गलत है।'

'मेरी प्रार्थना स्वीकार कीजिए, ठीक बात क्या है, मैं जानना चाहती हूँ। जो कुछ मुझसे बनेगा, मैं भी करूँगी।'

कुमुद ने आकाश की ओर नेत्र करके उत्तर दिया, 'एक बादल उठने वाला है। मंदिर के ऊपर उत्पल वर्षा होगी।'

इतने में नरपति प्रार्थना करके उन के पास आ पहुँचा। बोला, 'इस समय देवी के भक्तों से सबसे अधिक प्रबल राजा देवी सिंह जान पड़ते हैं। उन्हें दुर्गा का आदेश सुनाने के लिए जा रहा हूँ। अब की बार उन्हें सर्वस्व का बलिदान करके दुष्टों का दमन करना होगा।'

'यह आपसे किसने कहा कि आप राजा देवी सिंह के पास इस याचना के लिए जाएँ?' कुमुद ने सिर ऊँचा करके प्रश्न किया।

नरपति सिंह के उत्तर देने से पूर्व ही गोमती बोली, 'न तो इसमें किसी से कहने-सुनने की कोई बात है और न यह याचना है। यह दुर्गा की आज्ञा है।'

'नहीं है।' कुमुद ने गंभीर हो कर कहा, 'देवी की यह आज्ञा नहीं है। देवी सिंह इसके अधिकारी नहीं हैं। वह यदि रक्षा करने आएगा, तो निश्चय जानो हानि होगी, लाभ न होगा।'

गोमती द ढ़ता के साथ बोली, 'इसमें देवी का अनिष्ट नहीं हो सकता। राजा का अमंगल हो, तो हो। परंतु क्षत्रिय को अपने कर्त्तव्यपालन में मंगल-अमंगल का विचार नहीं करना

टिप्पणी

पड़ता। उसे प्रयत्न करने-भर से सरोकार है। आप काकाजू, राजा के पास अवश्य जाएँ, उन्हें लिवा लाएँ और उनसे कहें कि. . . .'

यहाँ गोमती अपने आवेश के द्रुतवेग के कारण स्वयं रुक गई। कुमुद की क्षणिक उत्तेजना शांत हो गई थी। बहुत मीठे स्वर में बोली, 'गोमती, तुम्हें व्यर्थ ही कष्ट झेलना पड़ रहा है। मैं नवाब की आँखों में मार डालने योग्य भले ही समझी जाऊँ, क्योंकि दुर्गा की पूजा करती हूँ, परंतु तुमने किसी का क्या बिगाड़ा है? तुम क्यों यहाँ वन के क्लेशों को नाहक भुगत रही हो? मेरी एक सम्मति है।'

'क्या आदेश है?' गोमती ने भोलेपन के साथ परंतु काँपते हुए स्वर में पूछा।

'तुम दलीप नगर के राजा के पास चली जाओ।'

'क्यों?' क्षीण स्वर में गोमती ने प्रश्न किया।

कुमुद ने उत्तर दिया, 'तुम रानी हो। वह राजा हैं। तुम्हारे हाथ में उस रात का कंकण अब भी बँधा है। भाँवर पड़ना-भर रह गया था। वह दलीप नगर में हो जाएगा। मुझे ऐसा जान पड़ता है कि अगामी युद्ध, जो राजा और नवाब के बीच यहाँ होने वाला है, कुशलपूर्वक समाप्त होगा। इसलिए मैं चाहती हूँ कि गोमती, तुम दलीप नगर चली जाओ। देवी सर्वव्यापिनी है। हम लोग किसी जंगल में भजन करेंगे।'

## खंड-छियालीस

कुमुद की इच्छा न थी कि नरपति दलीप नगर के राजा को आमंत्रित करने जाए, परंतु वह उसे द ढ़ता और स्पष्टता के साथ न रोक सकी। भीतरी इच्छा के इस तरह अवरुद्ध रह जाने के कारण उसका मन चंचल हो उठा। किसी से बातचीत करने की इच्छा न हुई। मन में आया कि इस स्थान को छोड़ कर कहीं दूर चली जाए। यह असंभव था। वह उस स्थान को छोड़ कर अपनी कोठरी में चली गई। और भीतर से किवाड़ बंद कर लिए। गोमती ने समझ लिया कि उसके लिए भीतर जाने के विषय में निमंत्रण नहीं है।

गोमती अकेली मंदिर की ड्योढ़ी में बैठ गई। दलीप नगर और उसके राजा से घनिष्ठ संबंध रखने वाली घटनाओं की कल्पनाएँ मन में उठने लगीं। उन सब कल्पनाओं के ऊपर रह-रह कर उठने वाली अभिलाषा यह थी कि नरपति राजा से यह न कहें कि गोमती विराटा के बीहड़ में अकेली पड़ी है, उसे लिवा लाओ। इसी समय रामदयाल मंदिर में आया।

उसे देख कर गोमती को हर्ष हुआ।

बोली, 'नरपति काका महाराज के पास दलीप नगर अभी-अभी गए हैं। कालपी का नवाब इस नगर और मंदिर को विध्वंस करना चाहता है। उसके दमन के लिए रण-निमंत्रण देने के लिए वह गए हैं। तुम्हें महाराज कब से नहीं मिले?'

'मुझे तो हाल ही में दर्शन हुए थे।'

'कुछ कहते थे?'

'बहुत कुछ। यहाँ कोई पास में नहीं है?'

'बाहर चट्टान पर चलो। वहाँ बिलकुल एकांत हैं।'

दोनों मंदिर के बाहर एक चट्टान पर चले गए। एक बड़े ढोंके पर गोमती बैठ गई।

**शब्दार्थ:**
**बावला** – उन्मादी
**उत्पल** – ओला, पत्थर
**बीहड़** – ऊबड़–खाबड़, बियाबान भूखंड
**विध्वंस** – विनाश
**दमन** – कठोरता पूर्वक दबाना

टिप्पणी

पेड़ की छाया थी। वहाँ रामदयाल खड़े-खड़े बातचीत करने लगा। बोला 'रण की बड़ी भयंकर तैयारी हो रही है। नवाब और उसके मित्रों से वह लोहा बजेगा, जैसा बहुत दिनों से न बजा होगा। विराटा बहुत शीघ्र बड़ी प्रचंड आँधी में पड़ने वाला है और कारण बड़ा साधारण-सा है।'

'साधारण-सा?' गोमती ने आश्चर्य प्रकट किया, 'तुम्हारा क्या अभिप्राय है?'

रामदयाल आवाज को धीमा करके बोला, 'अलीमर्दान मंदिर विध्वंस नहीं करना चाहता, कुंजर सिंह की सहायता करना चाहता है और महाराज यहीं आकर कुंजर सिंह को धर दबाना चाहते हैं।'

'कुंजर सिंह की सहायता? यदि ऐसा है, तो मंदिर को अपवित्र करने का संकल्प उसने क्यों किया है?'

'मैंने दलीप नगर में बड़े विश्वस्त सूत्र से सुना है कि वह कुमुद के विषय में कुछ विशेष दुष्प्रव त्ति रखता है। और उसे कुछ प्रयोजन नहीं। यदि वह मंदिर-भंजक होता, तो पालर का मंदिर कदापि न छोड़ता।'

'यह काम कम निंदनीय है? मैं तो कुमुद की रक्षा के लिए तलवार हाथ में ले कर अलीमर्दान से लड़ सकती हूँ। क्या महाराज इसे छोटा कारण समझते हैं? क्या वह नहीं जानते कि कुमुद लोकपूज्य है और देवी का अवतार है।'

रामदयाल ने अदम्य द ढ़ता के साथ कहा, 'लोकपूज्य तो वह जान पड़ती है। मैंने भी अपने स्वामी की हित-कामना से उस दिन श्रद्धांजलि चढ़ा दी थी। परंतु इसमें कोई संदेह नहीं कि महाराज उसे देवी का अवतार नहीं मानते। वह उसकी रक्षा एक हिंदू स्त्री के नाते करना चाहते हैं और उनका अभिप्राय कुंजर सिंह को सदा के लिए ठीक कर देना है। वह यहाँ आया करते हैं, ठहरते हैं, आश्रय पाते हैं और न जाने क्या-क्या नहीं होता है! परंतु आपको सब हाल मालूम नहीं है।'

गोमती उत्तर न देते हुए बोली, 'आज जब नरपति काकाजू ने महाराज को यहाँ बुलाने की बात कही, तो उन्होंने विरोध किया। कम-से-कम वह यह नहीं चाहती थीं कि महाराज यहाँ आवें।'

'मेरी एक प्रार्थना है।' रामदयाल ने हाथ जोड़ कर बहुत अनुनय के साथ कहा।

गोमती बोली, 'क्या है, रामदयाल? तुम इतने विह्वल क्यों हो रहे हो?'

रामदयाल ने काँपते हुए स्वर में उत्तर दिया, 'सरकार अब यहाँ न रहें।'

'क्यों?' गोमती ने पूछा।

रामदयाल ने कहा, 'कुंजर सिंह यहाँ आ कर अड्डा बनावेंगे। वह नवाब को न्योता देकर आग बरसावेंगे। महाराज का आना अवश्य होगा। कुंजर सिंह और नवाब से उनकी लड़ाई होगी। आपका यहाँ क्या होगा?'

'परंतु मैं दलीप नगर नहीं जा सकती।'

## खंड-सैंतालीस

नरपति सिंह यथासमय दलीप नगर पहुँच गया। विराटा के राजा की चिट्ठी जनार्दन शर्मा के हाथ में रख दी गई। नवाब के पड़ोस में ही दलीप नगर के राजा की सहायता चाहने वाले व्यक्ति के पत्र पर उसे उत्साह मिला। उसने सोचा, यदि सबदल सिंह

**शब्दार्थ :**
**भंजक** – तोड़ने वाला
**श्रद्धांजलि** – श्रद्धांपूर्वक की गयी पूजा
**विह्वल** – अशान्त व्याकुलता

टिप्पणी

**जनार्दन की नरपति को धमकी, तथा युद्ध का भय दिखाना।**

साधारण सा ही सरदार है, तो भी अपना कुछ नहीं बिगड़ता, लाभ है।

नरपति सिंह से उसने पूछा, 'आपकी बेटी आनंदपूर्वक है?'

उत्तर मिला, 'दुर्गा से सब आनंद-ही-आनंद है। यह जो विघ्न का बादल उठ रहा है, उसे टाल कर आप विराटा को बिल्कुल निरापद कर दें।'

जनार्दन ने कहा, 'सो तो होगा ही, परंतु मैं कहता हूँ कि आप लोग पालर ही में क्यों नहीं आ जाते? पालर ओरछा राज्य में है और हमारे बाहु के पास है।'

'यह समय बड़ा संकटमय है।' नरपति बोला, 'केवल बीहड़ स्थान कुछ सुरक्षित समझा जा सकता है। जब युद्ध समाप्त हो जाएगा, तब निस्संदेह हम लोग पालर लौटने के विषय में सोच सकते हैं।'

जनार्दन ने पूछा, 'कुंजर सिंह विराटा कब से नहीं आए?'

'कुंजर सिंह?' नरपति ने आश्चर्य प्रकट किया, 'कुंजर सिंह यहाँ आ कर क्या करेंगे? अन्य लोग आए-गए हैं। कुंजर सिंह को मैंने वहाँ कभी नहीं देखा।'

'और कौन लोग आए-गए हैं?' जनार्दन ने प्रश्न किया।

उसने उत्तर दिया, 'बहुत लोग आए-गए हैं, किस-किसका नाम गिनाऊँ।'

जनार्दन ने कहा, 'उदाहरण के लिए कुंजर सिंह का सेनापति तथा रामदयाल इत्यादि।'

नरपति चौंका, बोला 'आपको कैसे मालूम?'

जनार्दन ने अभिमान के साथ कहा, 'यह मत पूछो। महाराज देवी सिंह आँखें मूँद कर राज्य नहीं करते।'

'यह ठीक है।' नरपति बोला, 'परंतु देवी के मंदिर में किसी के आने की रोक-टोक नहीं है। यदि किसी ने आपको कुछ और बना कर बतलाया है तो झूठ है।'

जनार्दन ने कहा, 'आपकी चिट्ठी महाराज की सेवा में थोड़ी देर में पेश कर दी जाएगी। पालर की घटना के कारण ही हम लोग कालपी के नवाब के विरुद्ध हैं और वह विराटा के मंदिर को विध्वंस करने के लिए कुछ प्रयत्न करने वाला है। परंतु हमारे लक्ष्य कुंजर सिंह अधिक हैं। उन्होंने तमाम बखेड़ा खड़ा कर रखा है। रानियाँ भी तो उनका साथ देंगी? आजकल रामनगर में हैं न?'

नरपति को यह बात न मालूम थी। आश्चर्य के साथ बोला, 'यह सब हम क्या जानें।'

जनार्दन ने एक क्षण विचार करके कहा, 'हमारी सेना आप लोगों की सहायता के लिए जाएगी, आप अपने राजा को आश्वासन दे दें। हम महाराज की मुहर-लगी चिट्ठी आपको देंगे। कब तक हमारी सेना आपके यहाँ पहुँचेगी, यह कुछ समय पश्चात् मालूम हो जाएगा।'

जनार्दन की इच्छा न थी कि नरपति उसे अपनी पूरी बात सुनाए बिना राजा से मिल ले। परंतु नरपति के हठ के सामने जनार्दन की न चली। राजा से साक्षात्कार हुआ। राजा को आश्चर्य था कि मेरे निज के सुख से संबंध रखने वाली ऐसी कौन-सी कथा कहेगा।

नरपति ने कहा, 'उस दिन पालर में प्रलय हो गया होता, यदि महाराज ने रक्षा न की होती।'

टिप्पणी

**नरपति का राजा देवी सिंह से मिलकर गोमती से विवाह का प्रस्ताव**

'किस दिन?' राजा ने विशेष रुचि प्रकट न करते हुए पूछा।

नरपति बोला, 'उस दिन, जब पालर की लहरों पर देवी की मौज लहरा रही थी और मुसलमान लोग उन लहरों को छोड़ना चाहते थे।'

राजा ने ज़रा अरुचि के साथ कहा, 'आप जो बात कहना चाहते हों, स्पष्ट कहिए।'

नरपति ने हाथ बाँध कर कहा, 'उस दिन, जिस दिन पालर में बारात आई थी उस दिन, जिस दिन स्वर्गवासी महाराज को देवी की रक्षा के लिए अपनी रोग-शय्या छोड़नी पड़ी थी उस दिन, जब बड़े गाँव से आकर श्रीमान् ने हम सब लोगों को सनाथ किया था।'

राजा मुस्कराए। बोले, 'मुझे याद है वह दिन। मैं आपकी बस्ती में घायल हो कर मार्ग में अचेत गिर पड़ा था। बहुत समय पश्चात् होश आया था।'

राजा यह कहकर नरपति के मन की बात जानने के लिए उसकी आँखों में अपनी द ष्टि गड़ाने लगे। नरपति उत्साहित होकर बोला, 'यदि महाराज उस दिन घायल न हुए होते, तो उसी दिन एक क्षत्रिय के द्वार के बंदनवारों पर केशर छिटक गई होती और वह क्षत्रिय-कन्या आज दलीप नगर की महारानी हुई होती।'

राजा को याद आ गई। परंतु आश्चर्य प्रकट करके बोले, 'वह तो एक छोटी-सी घटना थी, कुछ ऐसी साधारण-सी रही होगी कि अच्छी तरह याद नहीं आती। बहुत दिन हो गए हैं। तुम्हारा प्रयोजन इन सब बातों के कहने का क्या है, वह स्पष्ट प्रकार से कह क्यों नहीं डालते?'

नरपति ने गोमती के पिता का नाम लेते हुए कहा, 'उनके घर महाराज की बारात आई थी। इस कन्या के हाथ पीले होने में कोई विलंब नहीं दिखलाई पड़ता था। ठीक उस घर के सामने महाराज अचेत हो गए थे। हम लोग औषधोपचार की चिंता में थे और चाहते थे कि स्वस्थ हो जाने पर पाणिग्रहण हो जाए। परंतु सवारी स्वर्गवासी महाराज के साथ दलीप नगर चली गई। उसके उपरांत घटनाओं के संयोग से फिर इस चर्चा का समय ही न आया। वह क्षत्रिय-कन्या इस समय विराटा के दुर्गा के मंदिर में हम लोगों के साथ है। महाराज शीघ्र चल कर उसे महलों में लिवा लाएँ और विवाह की रीति भी पूरी कर लें।'

राजा ने धीमे स्वर में कहा 'आपको किसने भेजा है?'

'विराटा के राजा ने।' नरपति ने नम्रता के भीतर छिपे हुए अभिमान के साथ कहा।

'वाग्दान किसने किया था?' राजा ने पूछा।

नरपति बिना संकोच के बोला, 'यह तो महाराज जानें, परंतु इतना मैं जानता हूँ कि वह महाराज की रानी है। केवल भाँवर की कसर है। यदि उस दिन युद्ध न हुआ होता, तो विवाह को कोई रोक नहीं सकता था और आज वह महलों में होती।'

राजा ने कहा, 'मुझे याद पड़ता है कि एक ठाकुर उस नाम के पालर में रहते थे। उनकी कन्या का संबंध मेरे साथ स्थिर हुआ था, 'परंतु इसका क्या प्रमाण है कि यह वही कन्या है?'

नरपति के सिर से एक बोझ-सा हट गया। प्रमाण प्रस्तुत करने के उत्साह और आग्रह से बोला, 'मैं सौगंध के साथ कह सकता हूँ, मेरे सामने वह उत्पन्न हुई थी। अठारह वर्ष से उसे खाते-खेलते देखा है। ऐसी रूपमती कन्या बहुत कम देखी-सुनी गई है। महाराज

**शब्दार्थ :**
**औषधोपचार-दवा**– दारू, चिकित्सा
**पाणिग्रहण**– विवाह,
**वाग्दान** – विवाह के लिए वचन देना

टिप्पणी

ने भी तो विवाह संबंध कुछ देख कर ही किया होगा।'

राजा मानो लाज में डूब गया। परंतु एक क्षण में सँभल कर द ढ़ता के साथ बोला, 'मैं भोग-विलास के पक्ष में नहीं हूँ। यह समय दलीप नगर के लिए बड़ा कठिन जान पड़ता है। इस समय निरंतर युद्ध करने की इच्छा मन में है, उसी में हम सबका त्राण है। जब अवकाश का समय आवेगा, तब इन बातों की ओर ध्यान दूँगा।'

राजा ने अंत में नवाब के खिलाफ विराटा को सहायता देने और सेना ले कर आने का वचन दे कर नरपति को बिदा किया।

## खंड-अड़तालीस

नरपति दलीप नगर से लौट आया। विराटा के राजा को उसने यह संतोषजनक समाचार सुनाया कि बहुत शीघ्र राजा देवी सिंह की सेना सहायता के लिए आएगी।

परंतु जिस समय नरपति अपने घर-विराटा के द्वीप वाले मंदिर में आया, चेहरे पर उदासी थी।

रामदयाल उस समय वहाँ न था। कुमुद और गोमती थीं।

मंदिर के दालान में बैठ कर नरपति ने कुमुद से कहा, 'मंदिर की रक्षा तो हो जाएगी।'

कुमुद ने लापरवाही के साथ कहा, 'इसमें मुझे कभी संदेह नहीं रहा है। दुर्गा रक्षा करेंगी।'

'राजा देवी सिंह ने भी वचन दिया है।' प्रतिवाद न करते हुए नरपति बोला।

गोमती आँख के एक कोने से देखने लगी। कुमुद ने कहा, 'राजा ने गोमती के विषय में कुछ पूछा था? या राजा होते ही वह भूल गए कि उस दिन पालर में उनकी बारात हुई थी वंदनवार सजाए गए थे, स्त्रियों ने कलश रखे थे, मंडप बनाया गया था और गोमती के शरीर पर तेल चढ़ाया गया था? आपने क्या उन्हें स्मरण दिलाया?'

'मैंने इन सब बातों की याद दिलाई थी।' नरपति ने जवाब दिया, 'परंतु उन्होंने कोई ऐसी बात नहीं की, जिससे मन में उमंग उत्पन्न होती। वह तो सब कुछ भूल-से गए हैं।'

गोमती पसीने में तर हो गई। सिर में चक्कर-सा आने लगा।

'उन्होंने क्या कहा था?' कुमुद ने पूछा।

नरपति ने उत्तर दिया, 'राज-काज की उलझनों में स्मरण नहीं रह सकता। यदि वह आना चाहे और वही हो जिसके साथ पालर में संबंध होने वाला था, तो कोई रोक-टोक न की जाएगी। मैं स्वयं न आ सकूँगा। सेना ले कर जब विराटा की रक्षा के लिए आऊँगा, तब जैसा कुछ उचित समझा जाएगा, करूँगा।'

गोमती चीख उठी। नरपति ने देखा, पसीने में डूब-सी गई और शायद अचेत हो गई है। पंखा ढूँढ़ने के लिए अपनी कोठरी में चला गया।

कुमुद ने गोमती को धीरे से अपनी गोद की ओर खींचा। वह अचेत न थी, परंतु उसके मन और शरीर को भारी कष्ट हो रहा था।

कुमुद का जी पिघल उठा। बोली, 'गोमती, इतनी-सी बात से ऐसी घबरा गई! इतनी अधीर मत होओ। न मालूम महाराज ने क्या कहा है और काकाजू ने क्या समझा है।

**शब्दार्थ :**
**ससैन्य** – सेना के साथ
**प्रतिवाद** – विरोध

टिप्पणी

वह सेना ले कर थोड़े दिनों में यहाँ आ ही रहे हैं। यहाँ सब बात यथावत् प्रकट हो जाएगी। मुझे आशा है, राजा तुम्हें अपनाएँगे।'

गोमती चुप रही।

कुमुद एक क्षण सोच कर बोली, 'यदि हम लोगों को यहाँ से किसी दूसरे स्थान पर जाना पड़ा, तो तुम अवश्य हमारे साथ रहना। हमें आशा है, राजा ससैन्य, आएँगें, परंतु यह आशा बिल्कुल नहीं है कि उनके आने तक हम लोग यहाँ ठहरे रहेंगे। उनके आने की खबर मिलने के पहले नवाब अपनी सेना इस स्थान पर भेजने की चेष्टा करेगा। हम लोगों को शायद बहुत शीघ्र ही यह स्थान छोड़ना पड़ेगा।'

गोमती ने साथ ही रहने का द ढ़ निश्चय प्रकट किया।

## खंड-उनचास

दलीप नगर का राज्य उन दिनों भँवर में फँसा-सा जान पड़ता था। राजा देवी सिंह का अधिकार अवश्य हो गया था, परंतु उसकी सत्ता सभी ने नहीं मानी थी। कोई-कोई खुल्लम-खुल्ला विरोध कर देते थे। बहुतों के भीतर-भीतर प्रतिकूलता की लहरें उठ रही थीं। जनार्दन शर्मा, हकीमजी और लोचन सिंह-सद श लोग गए राजा के द ढ़ पक्षपाती थे, परंतु अनेक प्रमुख लोग विपरीत भाव का प्रदर्शन न करते हुए भी कोई ऐसा काम नहीं कर रहे थे, जिससे स्पष्ट तौर पर यह विश्वास होता कि वे देवी सिंह के सहायक हैं। माल विभाग और सेना को देवी सिंह बहुत ध्यान के साथ सुधार रहे थे, परंतु वर्षों की बिगड़ी हुई संस्थाओं का ठिकाना लगाना कुछ विलंब का काम होता है।

उधर कुंजर सिंह बिगड़े-दिल सरदारों को अपनी ओर जुटाने में दत्तचित्त था। रानियों की ओर से भी परिश्रम जारी था। जो लोग देवी सिंह के विरुद्ध थे, वे यह जानते थे कि रानियों को कालपी के फ़ौजदार की सहायता मिल रही है। उन्हें यह भी मालूम था कि यह सहायता कुंजर सिंह के लिए अप्राप्य है, परंतु वे लोग यह विश्वास करते थे कि नवाब, कुंजर सिंह के साथ पुरुष होने के कारण मैत्री की संधि ज़्यादा जल्दी करेगा। इसलिए उन्होंने सहायता का वचन तो रानियों को दे दिया, परंतु मन के भीतर कुंजर सिंह के लिए फाटक बिल्कुल बंद नहीं किए। यह कहा कि नवाब को आपके साथ होते देखकर हम लोग साथ हो जाएँगे। नहीं नहीं की। वचन भी नहीं दिया।

**देवी सिंह के खिलाफ सेना तथा अन्य प्रांतों के राजाओं को संगठित करने के बाद कुंजर सिंह पुनः विराटा के मंदिर में कुमुद के पास वापस आ गया।**

कुंजर सिंह पर इसका बहुत कष्टदायक प्रभाव पड़ा। वह कुछ दिन आशा और निराशा के बीच में भटकता हुआ अंत में बहुत थोड़ी-सी आशा मन में लिए हुए विराटा लौट आया। उस समय नरपति को दलीप नगर से लौटे हुए दो-एक दिन को चुके थे।

संध्या के पूर्व ही कुंजर सिंह मंदिर में आ गया। उसे देखते ही गोमती अपनी कोठरी में चली गई। कुमुद ने देखा, कुंजर का चेहरा बहुत उतरा हुआ है।

धीरे-धीरे पास जा कर ज़रा गंभीर भाव से कुमुद ने कहा, 'आप थके-माँदे मालूम होते हैं। क्या दूर से आ रहे हैं?'

'हाँ, दूर से आ रहा हूँ।' कुंजर सिंह ने थके हुए स्वर में जवाब दिया, 'आशा नहीं कि अब की बार विराटा छोड़ने पर फिर कभी लौट कर आऊँगा।'

कुमुद ने सहज कोमल स्वर में कहा, 'जब तक आप यहाँ हैं इस दालान में डेरा डालें।'

दालान में अपना सामान रख कर कुंजर सिंह बोला, 'सुनता हूँ कुछ दिनों में विराटा का

**शब्दार्थः**
**शिविर** – खेमा

टिप्पणी

यह गढ़ और मंदिर दलीप नगर के राजा देवी सिंह के शिविर बन जाएँगे।'

'उस दिन के लिए हम लोग कदाचित् यहाँ नहीं बने रहेंगे।' कुमुद ने धीरे से कहा।

कुंजर को नरपति सिंह का ख्याल आया पूछा, 'काकाजू कहाँ हैं?'

'किसी काम से उस पार गए हैं। आते ही होंगे। आपको नहीं मिले? आप तो गाँव में ही हो कर आए हैं? कुमुद ने उत्तर दिया।

कुंजर सिंह ने ज़रा उत्तेजित स्वर में कहा, 'अब यह गाँव देवी सिंह को अपने यहाँ बुला रहा है। मैं और देवी सिंह एक स्थान पर नहीं रह सकते। इसलिए अलग होकर आया हूँ। यदि गाँव में ही किसी से बतबढ़ाव हो पड़ता, तो यहाँ तक दर्शनों के निमित्त न आ पाता।'

कुमुद ने पूछा, 'राजा देवी सिंह कालपी के नवाब का दमन करने के लिए इस ओर आवेंगे, इसमें आपको क्या आक्षेप है?'

कुंजर सिंह ने उत्साह के साथ उत्तर दिया, 'यह मेरे बड़े सौभाग्य की बात है कि कम-से-कम आपके हृदय में तो मेरे लिए थोड़ी-सी सहानुभूति है। वैसे इस अपार संसार में मेरे कितने हितू हैं?'

**चित्र : कुंजर सिंह की कुमुद से देवी सिंह के बारे में चर्चा**

कुमुद ने द्वार की ओर देख कर कहा, 'अब तक काकाजू नहीं आए। न जाने कहाँ देर लगा दी है।'

कुंजर ने इस मंतव्य के विषय में कुछ न कह कर अपनी ही चर्चा जारी रखी, 'कालपी का नवाब मेरा शत्रु है। मैं उसके विरुद्ध सदा खड्ग उठाए रहने को तैयार हूँ। परंतु मैं यह कैसे भूल सकता हूँ कि देवी सिंह अनधिकार चेष्टा से, अन्याय से; छल-कपट से मेरी गद्दी पर जा बैठा है? देवी सिंह का प्रतिकार मेरे लिए उतना ही आवश्यक है, जितना कालपी के नवाब का।'

बात काट कर कुमुद बोली, 'मैं ज़रा बाहर से देखती हूँ कि पिताजी आ रहे हैं या नहीं और उन्हें कितनी देर है। अभी सूर्यास्त नहीं हुआ है, दूर तक का आदमी दिखलाई पड़ सकता है।'

बाहर जा कर कुमुद ने देखा कि नरपति के लौट आने का कोई लक्षण नहीं। बाहर ही ठिठक गई। पूर्व की ओर के वन की रेखा को परखने लगी। इतने में कुंजर सिंह वहाँ आ गया। हाथ जोड़ कर बोला, 'मैं देवी सिंह का विरोधी हूँ, इसमें यदि आपको कोई बात खटकती हो, तो आज से संपूर्ण विरुद्ध भाव को हृदय के भीतर से धो कर बहा सकता हूँ। परंतु यदि मैं आपको यह विश्वास दिला दूँ कि कपट और अन्याय से देवी सिंह मेरे राज्य का अधिकारी हुआ है तब भी आप क्या उसका साथ देने की आज्ञा देंगी? यदि ऐसी अवस्था में भी अपना हक छोड़ देने का आदेश हो, तो वह आज्ञा भी शिरोधार्य होगी।'

**शब्दार्थ:**
हितू – **भलाई चाहने वाले**

टिप्पणी

कुमुद ने आग्रह के साथ कहा, 'हाथ मत जोड़िए। यह अच्छा नहीं मालूम होता। आप राजकुमार हैं।'

कुंजर अधिकतम आग्रह के साथ बोला, 'राजकुमार नहीं हूँ। कम-से-कम आपके समक्ष मैं कुछ भी नहीं हूँ, केवल सेवक हूँ, भक्त हूँ।'

कुमुद ने कहा, 'तब तक काकाजू नहीं आते, चलिए, उस चट्टान पर बैठ कर आपसे लड़ाइयों की कुछ चर्चा सुनूँ। हम लोगों को यहाँ संसार का कोई व त्तांत सुनने को नहीं मिलता। काकाजू हाल में दलीप नगर गए थे।'

परंतु अंतिम बात के मुँह से निकलते ही कुमुद ने अपना होठ काट लिया। वह इस बात को कहना नहीं चाहती थी, न मालूम कैसे निकल पड़ी।

जिस चट्टान पर बैठने की कुमुद ने इच्छा प्रकट की थी, वह पास ही थी। कुंजर उसके नीचे की ओर वाली ढाल पर जा बैठा और कुमुद उसकी टेक पर। दोनों की पीठ मंदिर के द्वार की ओर थी।

कुंजर ने पूछा, 'काकाजू दलीप नगर किसलिए गए थे?'

'आपको जो मालूम ही होगा।' कुमुद ने उत्तर दिया, 'मेरी इच्छा न थी कि वह जाते, परंतु यहाँ के राजा ने उन्हें हठ करके भेजा। इस समय विराटा को सहायता की बड़ी आवश्यकता है।'

'इसमें हर्ज ही क्या हुआ?' कुंजर ने कहा, 'विराटा इस समय संकट में है। मुझ सरीखे लोग यदि उसकी सहायता नहीं कर सकते, तो जो उसकी सहायता कर सकते हैं, उनके पास तो निमंत्रण जाएगा ही। परंतु यदि आपकी कृपा हुई, तो देवी सिंह के बिना मैं अकेला ही बहुत कुछ करके दिखलाऊँगा।'

कुमुद ने कोई उत्तर नहीं दिया।

कुंजर बोला, 'आगामी युद्ध में, ऐसा जान पड़ता है, विराटा का राजा, देवी सिंह का साथ देगा। ऐसी अवस्था में मेरा यहाँ आना अब असंभव होगा। क्या विराटा का राजा किसी प्रकार मेरी ओर हो सकता है?'

कुमुद ने कहा, 'हम लोगों का कुछ ठीक नहीं, कब तक यहाँ रहें, कब यहाँ से चले जाएँ और कहाँ जा रुकें।'

'इसमें मेरे लिए कोई बाधा नहीं। 'कुंजर सिंह उमंग के साथ बोला, 'आप यहाँ न रहें, यह मेरी पहली प्रार्थना है। दूसरी प्रार्थना यह है कि आप जहाँ भी जाएँ, मुझे साथ रहने की अनुमति दें। बुरा समय आ रहा है यदि साथ में एक सैनिक रहेगा, तो हानि न होगी।'

कुमुद चुप रही।

**कुंजर द्वारा कुमुद के समक्ष प्रणय निवेदन।**

कुंजर सिंह किसी भाव के प्रवाह में बहता हुआ-सा बोला, 'यदि आपने निषेध किया, तो मैं आज्ञा का उल्लंघन करूँगा, यदि आपने अनुमति न दी तो मैं अपने हठ पर अटल रहूँगा। मैं छाया की तरह फिरूँगा। पक्षियों की तरह मँडराऊँगा। चट्टानों की तली में, पेड़ों के नीचे, खोहों में, पानी पर, किसी-न-किसी प्रकार बना रहूँगा। आपको भ कुटी-भंग का अवसर न दूँगा, परंतु निकट बना रहूँगा। साथ रखूँगा केवल अपना खड्ग। समय आने पर दुर्गा के चरणों में अपना मस्तक अर्पण कर दूँगा।'

'राजकुमार!' काँपते हुए गले से कुमुद ने कहा।

टिप्पणी

'आज्ञा?' पुलकित हो कर कुंजर बोला।

कुमुद ने उसी स्वर में कहा, 'आपको इतना बड़ा त्याग नहीं करना चाहिए।'

'कितना बड़ा? कौन-सा?' कुंजर धारा-प्रवाह कहता चला गया, 'नवाब से लड़ना धर्म है। धर्म की रक्षा करना कर्त्तव्य है। कर्त्तव्यपालन करना धर्म है। आपकी आज्ञा का पालन करना ही धर्म, कर्त्तव्य और सर्वस्व है। यदि इन चरणों की कृपा बनी रहे, तो मैं संसार-भर की एकत्र सामर्थ्य को तुच्छ त ण के समान समझूँ, मुझे कुछ न मिले, संसार-भर मुझे तिरस्कृत, बहिष्कृत कर दे, परंतु यदि चरणों की कृपा बनी रहे, तो मैं समझूँ कि देवी सिंह मेरा चाकर है, नवाब मेरा गुलाम है और संसार-भर मेरी प्रजा है।'

कुमुद बोली, 'आप यदि देवी सिंह से लड़ेंगे, तो कालपी के नवाब का पक्ष सबल हो जाएगा।'

'मैं देवी सिंह ने नहीं लडूँगा।'

'क्यों?'

'आपकी इच्छा नहीं जान पड़ती, मैं देवी सिंह से संधि कर लूँगा। अपना सारा हक त्याग दूँगा।' 'मैं यह नहीं चाहती, और न यह कहती ही हूँ।

इसके बाद कुछ पल तक सन्नाटा रहा। कुंजर ने कहा, 'वास्तव में अब मेरे जी में कोई बड़ी महत्त्वाकांक्षा शेष नहीं है। यदि कोई परम अभिलाषा है, तो चरणों की सेवा की है।' यह कह कर कुंजर सिंह ने कुमुद के पैरों को छू लिया। कुमुद ने पीछे पैर हटाने चाहे, परंतु न हटा सकी बोली, 'आपने क्या किया?'

कुंजर सिंह ने कहा, 'आप मेरी पूज्य हैं। मेरी संपूर्ण श्रद्धा की केंद्र हैं। मैंने कोई अनोखा कार्य नहीं किया।'

कुमुद काँपती हुई आवाज में बोली, 'आप ऐसा फिर कभी न करना। मैं कोई अवतार नहीं हूँ। साधारण स्त्री हूँ। हाँ, दुर्गा माता की सच्चे जी से पूजा किया करती हूँ। आप मुझे अवतार न समझें।'

'और आप मुझे', कुंजर ने कहा, 'नीच व्यक्ति न समझें।'

तुरंत कुमुद बोली, 'आप क्यों यह बार-बार कहते हैं? मैं सब बातें सुन-समझ कर ही आपको राजकुमार कहकर संबोधित करती हूँ और करती रहूँगी।'

बड़ी द ढ़ता के साथ कुंजर ने कहा, 'मैंने आज से देवी सिंह का विरोध छोड़ा। चरणों में ही सदा रहने का निश्चय किया।'

'न-न' कुमुद जल्दी से बोली, 'इस तरह का प्रण मत करिए। आप देवी सिंह का सामना अवश्य करें। अपने हक़ के लिए लड़ें, परंतु कालपी के नवाब से जब वह निबट लें।'

कुमुद चट्टान की टेक पर खड़ी हो गई। ऐसा जान पड़ा, मानो कमलों का समूह उपस्थित हो गया हो, जैसे प्रकाश-पुंज खड़ा कर दिया गया हो। पैरों के पैंजनी पर सूर्य की स्वर्ण-रेखाएँ फिसल रही थीं। पीली धोती मंद पवन में धीमे झकोरे से दुर्गा की पताका की तरह धीरे-धीरे लहरा रही थी। उन्नत भाल मोतियों की तरह भासमान था। बड़े-बड़े काले नेत्रों की बरौनियाँ भौंहों के पास पहुँच गई थीं। आँखों से झरती हुई प्रभा ललाट पर से चढ़ती हुई उस निर्जन स्थान को आलोकित-सा करने लगी। आधे खुले हुए सिर पर से स्वर्ण को लजाने वाली बालों की एक लट गरदन के पास

**शब्दार्थ:**

**पैंजनी** – पैरों में पहने जाने वाला आभूषण

**पताका** – झंडा

टिप्पणी

ज़रा चंचल हो रही थी। उस विस्त त विशाल वन और नदी की उस ऊँची चट्टान से सिरे पर खड़ी हुई कुमुद को देख कर कुंजर का रोम-रोम कुछ कहने के लिए उत्सुक हुआ।

कुंजर को अपनी ओर आँख गड़ा कर ताकते हुए देखकर कुमुद के चहेरे पर और गहरी लाली छा गई। उस समय सूर्य की कुछ किरणें ही बाकी रह गई थीं। वे उस लालिमा को और भी उद्दीप्त कर गईं।

कुंजर को ऐसा आभास हुआ, मानो संपूर्ण विश्व के पुष्पों ने अपनी ताजगी उस लालिमा को दे दी हो। हृदय उमड़ पड़ा। विश्व-भर को अपने में भर लेने के लिए लालायित हो उठा और किसी अपरिचित, किसी निस्सीम, किसी अनिश्चित बलिदान के लिए द ढ़ता अनुभव करने लगा।

कुंजर उन्मत्त-सा हो कर बोला, 'एक बार, केवल एक बार चरणों को अपने मस्तक से छुआ लेने दीजिए और हृदय से'

कुमुद के मुखमंडल पर फिर गहरी लाली दौड़ आई। बोली, 'यदि आपने यह प्रयास किया तो मैं इसी टोर से कूद पड़ूँगी, फिर चाहे चोट भले ही लग जाए।'

'नहीं, मैंने इस संकल्प का त्याग कर दिया। आप इसी ओर से उतर आवें।'

कुमुद बिना कोई शब्द किए धीरे से उतर आई।

## खंड-पचास

**रामदयाल का विराटा आकर दलीप नगर की सैनिक तैयारियों की सूचना देना।**

एक दिन रामदयाल सवेरे ही आया। कुंजर सिंह विराटा के टापू में था। उस समय मंदिर में केवल नरपति मिला, और कोई वहाँ न था। रामदयाल को नरपति, देवी सिंह का आदमी समझता था, इसलिए उसने आने पर हर्ष प्रकट किया। बोला, 'कहो भाई, क्या समाचार है?'

'समाचार साधारण है। दलीप नगर में ज़ोरों के साथ तैयारियाँ हो रही हैं।'

'यह समाचार साधारण नहीं, बहुत आशापूर्ण है'

'यहाँ आज सन्नाटा कैसा छाया हुआ है?'

'स्नान-ध्यान हो रहे हैं।'

'और लोग भी तो होंगे?'

'रहने दो। तुम्हें उनसे क्या? मंदिर में तो सभी प्रकार के लोग आया-जाया करते हैं।'

रामदयाल ने बात बदल कर कहा, 'आप इस बीच में दलीप नगर भी हो आए और मुझे कुछ न मालूम पड़ा। यदि पहले से मालूम होता, तो कदाचित् मैं किसी सेवा में पड़ जाता।'

नरपति प्रसन्न हो कर बोला, 'जल्दी में गया और जल्दी में ही आया। दलीप नगर में ज्यादा देर ठहरने की नौबत ही नहीं आई, कार्य बन गया। मैं लौट पड़ा।'

'हमारे राजा', रामदयाल ने कहा, 'टाला-टूली नहीं करते। जिसके लिए जो कुछ करना होता है, शीघ्र कर देते हैं। आपको तो पक्का वचन दे दिया है।'

'वह बड़े ज़ोर से अपनी सेना की तैयारी इसलिए तो कर रहे हैं। बड़े पुरुषार्थी हैं, बड़े ब्रह्मचारी हैं। सूरमाओं की धुन के सिवा और कोई ध्यान ही नहीं। वह लड़की जिसे

**शब्दार्थ:**
**बरौनी** – पलकें

टिप्पणी

आपने यहाँ देखा होगा, उनकी रानी होने की अधिकारिणी है। केवल भाँवर नहीं पड़ पाई है।' नरपति ने मंतव्य प्रकट किया। इस सिलसिले में दिमाग दूसरी तरफ घूमा। नरपति कहता गया, 'उस दिन जब पालर में लड़ाई हुई थी, ज़रा-सी ही देर हो गई, नहीं तो दांपत्य संबंध पक्का हो जाता। रह गया, सो रह गया। अब तो उस लड़की को वह पहचानते ही नहीं। कहते थे, कौन? कहाँ की! इत्यादि-इत्यादि।'

रामदयाल चौंका। उसने पूछा, 'इसका भी जिक्र आया था?'

नरपति ने उत्तर दिया, 'खूब, मैंने कहा था। गोमती ने तो मना कर दिया था, परंतु मेरा जी नहीं माना।'

रामदयाल ने अपने आश्चर्य को दबा दिया। बोला, 'इसका कारण है। मैं जानता हूँ परंतु मुझे आपसे कहने की जरूरत नहीं है।'

रामदयाल को गोमती के ढूँढ़ने में विलंब नहीं हुआ। वार्तालाप के लिए उपयुक्त समय और स्थान के लिए भी विशेष प्रयास नहीं करना पड़ा।

गोमती की आकृति गंभीर थी। रामदयाल के मुख पर किसी भय या चिंता की छाप लग रही थी।

कुशल-मंगल के बाद दोनों कुछ क्षण चुपचाप रहे।

अंत में गोमती ने बारीक, पैने और कुछ काटते हुए से स्वर में पूछा, 'तुम्हारे महाराज तो आजकल सैन्य-संग्रह और चढ़ाई की तैयारी के सिवा और सोचते ही क्या होंगे?'

रामदयाल ने नीचा सिर किए हुए घायल आदमी की तरह उत्तर दिया, 'उस धुन के सिवा और धुन ही नहीं है। आजकल तो और किसी बात के लिए ज़रा भी अवकाश नहीं मिलता परंतु...'

'परंतु क्या रामदयाल?' गोमती ने धड़कते हुए कलेजे से, परंतु उपेक्षा की मुद्रा धारण करके कहा, 'तुमने तो नहीं मेरी ओर से कुछ कहा था?'

'आपकी ओर से तो नहीं, 'रामदयाल ने उत्तर दिया, 'अपनी ही ओर से कहा था। बोले, इस समय राजनीति और रणनीति के अतिरिक्त और कोई चर्चा न करो।'

ज़रा चिढ़ कर गोमती बोली, 'तुमने नाहक मेरी बात छेड़ी रामदयाल।'

'क्या करूँ, मन नहीं माना।' गद्गद-सा हो कर रामदयाल ने कहा, 'आपको दुखी देख कर छाती फटती है। आपको सुखी देख कर यदि तुरंत मर जाऊँ तो मेरे बराबर पुण्य वाला किसी को न समझा जाए।

**रामदयाल ने गोमती को बताया कि देवी सिंह अब उसके बारे में बात करना भी पसंद नहीं करता।**

गोमती को उस गद्गद कंठ ने तुरंत आकृष्ट किया। स्त्री की सहज साधारण

सावधानी को गोमती दूर रख कर बोली, 'मैं राज-पाट की भिखारिन नहीं हूँ। महाराज सुख के साथ संसार में रहें, मेरे लिए इतना ही बहुत है।'

रामदयाल ने कहा, 'परंतु मेरे संतोष के लिए इतना कम-से-कम आवश्यक है कि आप आनंदपूर्वक रहें। मैं साधारण मनुष्य हूँ, परंतु मेरे हृदय को यह कहने का अधिकार है।'

गोमती ने उत्सुकता की अधीरता के वश होकर कहा, 'यह निश्चय जानो रामदयाल, मैं स्वयं दलीप नगर नहीं जाऊँगी। निरादर के सिंहासन से इस जंगल का जीवन सहस्र गुना अच्छा। यहाँ मेरे लिए सब कुछ है। उन्हीं के संग रह जाऊँगी।'

टिप्पणी

## खंड-इक्यावन

राजा देवी सिंह ने अलीमर्दान के ऊपर तीन ओर से आक्रमण करने का निश्चय किया। सिंहगढ़ से लोचन सिंह, दलीप नगर से पालर होते हुए स्वयं, और बड़गाँव से जनार्दन शर्मा दस्ते ले चलें। यह निश्चय किया गया था कि लोचन सिंह नवाब को भांडेर में कुछ समय तक अटकाए रखे, तब तक राजा पालर से आ कर रानियों को परास्त कर देंगे और भांडेर पहुँच कर लोचन सिंह की सहायता करके नवाब का अड्डा समाप्त कर देंगे तथा जनार्दन का दस्ता जरूरत पड़ने पर कुमुक पहुँचाने के लिए बड़गाँव से भांडेर की ओर राजा के पीछे-पीछे बढ़ेगा।

रामनगर में रानियों को पालर वाली सेना के आने की सूचना मिली। उनके पास भी कुछ सरदार और सैनिक इकट्ठे हो गए थे। रामनगर गढ़ हाथ में था, परंतु पड़ोस में विराटा का कंटक भी था। रामनगर के राव पतराखन को विराटा के सबदल सिंह के प्रति सहृद भाव बनाए रखने के लिए विशेष कारण न था। इस समय यह काफ़ी तौर पर प्रकट हो गया था कि सबदल सिंह ने नवाब के मुकाबले के लिए राजा देवी सिंह को निमंत्रित किया है। पतराखन को मालूम था कि रानियों के पक्ष में नवाब है, परंतु नवाब ने विराटा पर चढ़ाई करने का अभी तक कोई लक्षण नहीं दिखलाया था। रामनगर में रानियों और पतराखन की स्थिति तभी तक सुरक्षित समझी जा सकती थी, जब तक विराटा और पालर की ओर से आई हुई सेनाओं का सहयोग नहीं हुआ था। पतराखन को अपनी गढ़ी का इतना मोह न था, जितना उसमें रखी हुई संचित संपत्ति और गाढ़े समय में काम आने वाले अपने थोड़े से, परंतु निर्भीक योद्धाओं का। उसने रामदयाल को बुलाया। वह उसी दिन विराटा से लौट कर आया था। उसने रानियों से सलाह करने के लिए मिलने की इच्छा प्रकट की। रामदयाल उसे रनिवास में ले गया। परदे में हो कर रानियों से प्रत्यक्ष बातचीत होने लगी। किसी बीच वाले की जरूरत नहीं पड़ी।

छोटी रानी ने कहा, 'परदे से काम नहीं चल सकता, रावसाहब। अटक पड़ने पर तो मुझे तलवार हाथ में ले कर रणक्षेत्र में आना पड़ेगा।'

पतराखन के जी में लड़ने के लिए बहुत उत्साह न था, तो भी तेजी दिखलाते हुए उसने कहा, 'ठीक है महाराज! और वह दिन शीघ्र आने वाला है। देवी सिंह अपनी सेना ले कर आ रहे हैं। बहुत संभव है, कल तक हम लोग यहीं घिर जाएँ या विराटा की गढ़ी से तोप हमारे ऊपर गोले उगलने लगे।'

छोटी रानी ने कहा, 'तब हमें तुरंत अपनी सेना पहले से ही भेज कर कहीं पालर के पास ही लड़ाई करनी चाहिए और जैसे बने, विराटा की गढ़ी अपने हाथ में कर लेनी चाहिए।'

पतराखन बोला, 'मुझे दोनों प्रस्ताव पसंद हैं, परंतु आदमी मेरे पास इतने नहीं कि इन प्रस्तावों में से एक को भी सफलतापूर्वक कार्य में परिणित कर सकूँ। बिना नवाब की सहायता के कुछ न होगा। मालूम नहीं, उन्होंने अभी तक विराटा को क्यों अपने अधिकार में नहीं लिया।'

बड़ी रानी ने कहा, 'विराटा को हमें स्वयं अधिकार में कर लेना चाहिए, नहीं तो नवाब कदाचित् वहाँ के मंदिर को तुड़वा डालेगा।'

छोटी रानी ने कहा, 'यह असंभव है।'

**शब्दार्थ:**
**कुमुक** – सैनिक सहायता
**गाढ़े समय में** – संकट के समय

टिप्पणी

पतराखन ने कहा, 'असंभव तो कुछ भी नहीं है, परंतु वह ऐसा करेगा नहीं। सबदल ने उनके साथ जैसा बरताव किया है, उससे यह प्रकट होता है कि नवाब मंदिर को छोड़ कर गाँव-भर को तो अवश्य ही तहस-नहस कर देगा।'

रामदयाल बोला, 'गाँव को खाक करने से क्या मतलब? नवाब तो उस दाँगी की छोकरी का डोला चाहते हैं, जिसे मूर्खों ने अवतार मान रखा है।'

बड़ी रानी ने पूछा, 'कौन को?'

रामदयाल ने उत्तर दिया, 'स्वयं उसे देख आया हूँ। वह नित्य देवी से कुंजर सिंह की सफलता के लिए प्रार्थना किया करती है और कुंजर सिंह नित्य यह सोचा करते हैं कि अन्नदाता और देवी सिंह को परास्त करके दलीप नगर के राजसिंहासन पर बैठ जाऊँ और कुमुद को अपनी रानी बना लूँ। महाराज, अपनी आँखों सब हाल देख आया हूँ। मैंने अपने को वहाँ राजा देवी सिंह का नौकर प्रसिद्ध कर रखा है।'

'राजा देवी सिंह!' छोटी रानी ने अत्यंत घ णा के साथ कहा, 'चाहे कुछ हो जाए, देवी सिंह राजा न रहने पावेगा।'

पतराखन अधैर्य के साथ बोला, 'जो कुछ करना हो, जल्दी करिए। मेरी राय है कि रामदयाल को नवाब के जताने के लिए तुरंत भेजिए, अपने सरदारों और सैनिकों को दो भागों में बाँट कर एक को देवी सिंह से लड़ने के लिए पहुँचाइए और दूसरे को विराटा के ऊपर धावा करने के लिए भेजिए। एक ओर से आपकी टुकड़ी विराटा पर धावा करे और दूसरी ओर से मेरी टुकड़ी। मैं उस पार जा कर उधर से धावा करूँगा और विराटा वालों को निकल भागने का अवसर न दूँगा।'

बड़ी रानी ने कहा, 'विराटा की उस कन्या का क्या होगा? क्या उसे मुसलमानों द्वारा मर्दित होते हुए देखा जाएगा?'

रामदयाल ने तुरंत उत्तर दिया, 'उसी लोभ के वश असल में नवाब हमारा साथ देने यहाँ आवेगा। दलीप नगर का एक-चौथाई राज्य भी उसे चाहिए, परंतु उस लड़की के बिना वह तीन-चौथाई हिस्से पर भी लड़ने को राजी न होगा। फिर भी मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने ऐसा प्रबंध किया है कि उस लोभ से नवाब हमारी सहायता के लिए आवे और यथासंभव उसे पावे नहीं।'

बड़ी रानी ने पूछा, 'यह कैसे होगा?'

उसने उत्तर दिया, 'यह ऐसे कि विराटा में कुंजर सिंह विद्यमान हैं। वह उस लड़की को बिना अपनी रानी बनाए दम नहीं लेंगे, चाहे दलीप नगर का या दलीप नगर की एक हाथ भूमि का भी राज्य मिले या न मिले। विराटा के अधिकृत होने के पहले ही मुझे पूर्ण आशा है वह लड़की कुंजर सिंह के साथ सुरक्षित स्थान में भाग जाएगी।'

बड़ी रानी इस उत्तर से संतुष्ट नहीं हुई। कुछ पूछना चाहती थीं कि छोटी रानी बीच में पड़ गई। बोलीं, 'ऐसी छोटी-छोटी बातों पर इस समय ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। रामदयाल जो कह रहा है, वह ठीक है। तुरंत नवाब को ससैन्य बुलाना चाहिए। रामदयाल, तुम इसी समय घोड़े पर सवार हो कर सरपट जाओ। मैं चाहती हूँ कि सवेरा होने के पहले ही हमारी और नवाब की सेनाएँ देवी सिंह को कुचलने और विराटा को ढाह देने के काम में नियुक्त हो जाएँ।'

**अलीमर्दान द्वारा काले खाँ को सेना की एक टुकड़ी के साथ दिल्ली भेजकर स्वयं दलीप नगर के राजा के साथ संधि-प्रस्ताव की चाल चलकर विराटा पर आक्रमण की तैयारी।**

**शब्दार्थ :**
**ढाह देने** – गिरा देने।
**फरमान** – आदेश पत्र

टिप्पणी

रामदयाल ने स्वीकार किया।

रामदयाल भांडेर की ओर गया और पतराखन गढ़ी को अपने सिपाहियों और संपत्ति से खाली करके उस पार सुरक्षित जंगल में चला गया।

## खंड-बावन

रामदयाल बहुत तेजी के साथ भांडेर गया और दिन-ही-दिन में नवाब के सामने जा पहुँचा। दिल्ली से एक बहुत जरूरी फरमान आया था कि तुरंत संपूर्ण सेना ले कर दिल्ली आ जाओ। इस फरमान को आए हुए कई दिन हो गए थे। अलीमर्दान को राजा देवी सिंह की तैयारियों की खबर लग चुकी थी, इसलिए और शायद किसी और कारणवश भी अलीमर्दान स्वयं तो दिल्ली की ओर रवाना नहीं हुआ, परंतु अपनी सेना के एक बड़े भाग के साथ काले खाँ को दिल्ली की ओर भेज दिया। वह भांडेर में ही बना रहा। राजा देवी सिंह को कुछ समय तक रोके रहने के लिए उसने एक चाल चली। दलीप नगर को संधि का प्रस्ताव भेजा। कहलवाया कि दो निकटवर्ती राज्यों में मेल रहना चाहिए। लड़ाई की तैयारी बंद कर दो, नहीं तो अनिवार्य संकट में पड़ जाओगे। राजा इसका उत्तर नहीं देना चाहता था, परंतु जनार्दन नहीं माना। उसने एक बड़ी मीठी चिट्ठी लिखवाई, जिसका सार यह था कि यहाँ भी तुरंत लड़ डालने की किसी की अभिलाषा नहीं है। संधि-प्रस्ताव और उसकी अर्द्ध-स्वीकृति पर दोनों को संदेह था।

देवी सिंह रानियों से लड़ने जा रहा था। जानता था कि अलीमर्दान उत्तर से सहायता के लिए आएगा, तब इस संधि की रद्दी के टुकड़े से बढ़ कर प्रतिष्ठा न होगी। अलीमर्दान को विश्वास था दलीप नगर मेरे चकमे में आ गया है।

रामदयाल को ऐसी हड़बड़ी में आता देख कर अलीमर्दान को आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि वह समय ऐसा था कि अचेती और अनजानी उलझनें अकस्मात् उपस्थित हो जाया करती थीं।

एकांत पाने पर रामदयाल ने कहा, 'हजूर, मामला बहुत टेढ़ा है। राजा देवी सिंह की सेना रामनगर पर चढ़ी चली आ रही है।'

'कब?' अलीमर्दान ने पूछा।

'आज पालर के करीब थी।' उसने उत्तर दिया, 'कल संध्या तक रामनगर और विराटा पर दखल हो जाने का भय है।'

'मेरी आधी सेना तो काले खाँ के साथ दिल्ली चली गई है।'

'परंतु जो कुछ सरकार के पास है, वह सरकार के शत्रुओं के दाँत खट्टे करने के लिए बहुत है।'

'तुम लोगों के पास कितनी सेना है?'

रामदयाल ने अपनी सेना का कूता अलीमर्दान को बतलाया।

अलीमर्दान ने कहा, 'तब तक इतनी सेना से लड़ो। काफ़ी है। कुछ समय बाद हमारी कुमुक पहुँच जाएगी।'

रामदयाल घबरा कर बोला, 'तब तक हम लोग शायद बिल्कुल पिस-कुट जाएँ। विराटा से सबदल और कुंजर सिंह हम लोगों को संतप्त करेंगे, उधर से देवी सिंह हमें भून डालेंगे, रामनगर के रावसाहब अपनी सेना ले कर उस पार जगलों में चले गए हैं। यदि

**शब्दार्थ :**
**कूता** – अनुमानित आकार

टिप्पणी

उन्होंने विराटा पर आक्रमण न किया, तो हम लोग ऐसे गए, जैसे पिंजड़े में बंद चिड़ियों को बिल्ली मरोड़ देती है।'

'बेतवा-किनारे के किलेदारों को,' अलीमर्दान ने कहा, 'मैं खूब जानता हूँ। ऐसे बदमाश और दगाबाज हैं कि कुछ ठिकाना नहीं। कई बार सोचा, मगर मौका नहीं मिला। अब की बार मौका मिलते ही पहले इन वनबिलाबों को मटियामेट करूँगा।'

कुछ उत्साहित हो कर रामदयाल बोला, 'वह मौका हुजूर न जाने कब आने देंगे। सरकार सोचें, कैसी विकट समस्या हम सब लोगों के लिए है। हमें मिटाने के बाद निश्चय ही देवी सिंह आपको छेड़ेगा। फिर क्यों उसे इस समय छोड़ा जाए?'

अलीमर्दान ने सोच कर कहा, 'विराटा में है कुंजर सिंह?'

'हाँ, सरकार।' रामदयाल ने उत्तर दिया, 'और कमर कस कर हुजूर से लड़ने के लिए तैयार है। सबदल सिंह बागी हो गया। लड़ेगा। उसने देवी सिंह को इस ओर आपसे और रानी साहब से लड़ने के लिए बुलाया है।'

स्वप्न-सा देखते हुए अलीमर्दान ने कहा, 'बागी तो कुल बेतवा का किनारा ही है, अकेला सबदल क्या। पर अब की बार उसके किले को ज़मीन में मिला देना है।'

फिर मुस्कराकर बोला, 'केवल तुम्हारे मंदिर को छोड़ दूँगा। तुम जानते हो कि मंदिरों से मुझे दुश्मनी नहीं है।'

जिस बात के कहने के लिए रामदयाल उकता-सा रहा था, अवसर मिलने पर प्रकट किया, 'मंदिरों को तो हुजूर ने कभी छुआ नहीं है। उसी मंदिर में पालर वाली वह दाँगी की जवान लड़की भी है। वह पद्मिनी जाति की स्त्री है।'

नवाब ने मुसकराहट के साथ पूछा, 'अभी तक वहाँ से भागी नहीं? मैं समझता था, चली गई होगी। दिक्कत तो यह है कि बहुत से हिंदू उसे देवी का अवतार मानते हैं। क्या हिंदुओं का यह सिर्फ ढकोसला ही है?'

रामदयाल ने जवाब दिया, 'बिल्कुल। मैंने अपनी आँखों से उन लोगों को देखा है और कान से उनका प्रेम-संभाषण सुना है।'

अलामर्दान थोड़ी देर तक कुछ सोचता रहा। कुछ देर में बोला, 'तुम्हारी यह इच्छा है कि मैं विराटा की तरफ़ तुरंत कूच करूँ?'

**अलीमर्दान का अपनी सेना के साथ विराटा पर आक्रमण के लिए कूच।**

हाथ जोड़ कर रामदयाल ने उत्तर दिया, 'हुजूर, मेरी क्या, आपकी राखीबंद बहिन रानी साहब की भी यही प्रार्थना है।'

अलीमर्दान ने कहा, 'अभी तैयारी होती है तुम चलो। आता हूँ। कुंजर सिंह को भी सजा देनी है और उस अहमक सबदल को भी सबक सिखलाना है। दो-तीन दिन में ही यह सब काम निबट जाएगा। मैं पहले विराटा को देखूँगा।'

अलीमर्दान ने अपने सब सरदारों को इकट्ठा करके संपूर्ण सेना को जल्दी-से-जल्दी तैयार किया। भांडेर में थोड़ी-सी सेना छोड़ कर बाकी सेना लेकर वह पहर रात गए चल पड़ा। सालौन भर्रोली में, जो भांडेर से करीब चार-पाँच मील पर है, सेना को थोड़ा-सा विश्राम करने के लिए रोक लिया। प्रातः काल होने के पहले विराटा पर आक्रमण करने का निश्चय कर लिया गया था।

**शब्दार्थ :**
**पद्मिनी - सुंदरियों का एक प्रकार, जो स्त्री चंपा के समान गोरी, सुगंधमय और कमल के समान कोमल हो।**

टिप्पणी

## पाठगत प्रश्न 32.3

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अंत में दी गई उत्तर माला से सही उत्तर का मिलान कीजिएः

1. बड़ी रानी ने छोटी रानी के विद्रोह में शामिल होने का निश्चय किया, क्योंकि
   (क) वह छोटी रानी की बातों में आ गयी
   (ख) वह स्वयं राजगद्दी पर बैठना चाहती थी
   (ग) वह देवी सिंह को दंड देना चाहती थी
   (घ) वह सती होना नहीं चाहती थी
2. सबदल सिंह कुंजर सिंह को आश्रय देने में हिचकता है, क्योंकि
   (क) वह कायर है
   (ख) उसे कुंजर सिंह की सैनिक सफलता में संदेह है
   (ग) वह दलीप सिंह का आश्रित है
   (घ) वह अलीमर्दान से मिला हुआ है
3. जनार्दन हकीम जी को दिल्ली इसलिए भेजता है, क्योंकि
   (क) वह दिल्ली के बादशाह से अलीमर्दान की शिकायत करे
   (ख) वह वहाँ से राजा के लिए कोई दवा लाए
   (ग) उसकी अनुपस्थिति में राजा के विरुद्ध षड्यंत्र कर सके
   (घ) वह दिल्ली प्रशासन से अलीमर्दान के लिए कोई ऐसा फरमान भिजवाए कि उसे तुरंत वहाँ के लिए प्रस्थान करना पड़े
4. अलीमर्दान विराटा पर आक्रमण करने का निश्चय करता है, क्योंकि
   (क) वह दुर्गा का मंदिर तोड़ना चाहता है।
   (ख) विराटा गढ़ को अपने राज्य में मिलाना चाहता है।
   (ग) कुमुद को अपनी रानी बनाना चाहता है।
   (घ) कुंजर सिंह को दंड देना चाहता है।
5. सिंहगढ़ की लड़ाई में हारने के बाद कुंजर सिंह पहले कहाँ गया ?
6. छोटी रानी ने बड़ी रानी को अपने षड्यंत्र में कैसे शामिल किया ?
7. छोटी रानी और बड़ी रानी दलीप नगर से भाग कर कहाँ पहुँची ?
8. कुंजर सिंह की कुमुद से भेंट कहाँ हुई ?
9. कुंजर सिंह को विराटा की गढ़ी में किस प्रकार आश्रय मिला ?
10. रानियों के विद्रोह का पता लगने पर जनार्दन ने कौन-सी राजनीतिक चाल चली ?

टिप्पणी

## चतुर्थ अंश

### खंड-तिरपन

जिस रात अलीमर्दान की सेना ने सालौन भर्रोली में डेरा डाला, उस रात विराटा के राजा ने अपने भाईबंदों को इकट्ठा करके लड़ाई की तैयारी की। बाहर निकल कर नवाब की सेना से सफलतापूर्वक लड़ना विराटा की सेना के लिए बहुत कठिन था, परंतु उसे अपने जंगलों, पहाड़ों और 'माई बेतवा' की धार का बड़ा भरोसा था और फिर यह कोई पहली ही लड़ाई नहीं थी।

**अलीमर्दान द्वारा आक्रमण की खबर पाकर विराटा के राजा द्वारा चढ़ाई की तैयारी तथा देवी सिंह की सहायता की उम्मीद**

मुख्य-मुख्य लोगों की बैठक हुई। सबको विश्वास था कि देवी सिंह समय पर सहायता देंगे। सब जानते थे कि देवी सिंह पालर की ओर से आ रहे हैं, परंतु सबकी शंका थी कि यदि नवाब की सेना बीच में आ पड़ी, तो राजा की सेना का इस ओर आना बहुत कठिन हो जाएगा और यदि नवाब ने एक दस्ता विराटा को नष्ट करने के लिए भेज दिया और उसी समय रामनगर से आक्रमण हो गया तो भयंकर समस्या उपस्थित हो जाएगी।

इन सब बातों पर विचार हुआ। अधिकांश लोगों में लड़ाई का उत्साह था। सबदल सिंह संयत भाषा में बोल रहा था, परंतु द ढ़तापूर्ण निश्चय से भरा हुआ था।

अंत में कुमुद के विराटा में बने रहने के विषय में प्रश्न उपस्थित हुआ। अधिकांश लोगों की धारणा हुई कि कुमुद को किसी दूसरे स्थान पर भेज देना चाहिए। सबदल सिंह अपने निश्चय से न डिगा। उसने कहा, 'मैं फिर यही कहूँगा कि उनके यहाँ बने रहने में ही हम लोगों की कुशल है। उन्हें वहाँ से हटाओ, तो मूर्ति को हटाओ, मंदिर को हटाओ।'

**सबदल सिंह द्वारा कुंजर सिंह को अपने महल में आश्रय**

कुंजर सिंह वहीं था—सभा में नहीं, सभा से दूर मंदिर में। परंतु उसका विराटा में होना सबदल सिंह को मालूम हो गया था और लोगों ने इच्छा प्रकट की कि कुंजर सिंह को हटा दिया जाए।

नरपति बोला, 'परंतु वह कहते हैं कि हम दुर्गा की रक्षा करते-करते अपना प्राण देंगे, हमें किसी के राजपाट से कुछ सरोकार नहीं। उन्होंने शपथपूर्वक कहा है कि देवी सिंह के साथ नहीं लड़ेंगे।'

सबदल ने कहा, 'यह तो ठीक है, परंतु जब देवी सिंह को मालूम होगा कि कुंजर सिंह हमारे यहाँ आश्रय पाए हुए हैं, तब हमारी बात पर से उनका विश्वास उठ जाएगा और वह अपना हाथ हमसे खींच लेंगे।'

नरपति बोला, 'तब जैसा आप चाहें, करें, परंतु वह अपनी शरण में हैं और यह स्मरण रखना चाहिए कि राजकुमार हैं। किसी के भी सब दिन एक-से नहीं रहते। उन्होंने शपथ ली है कि हमें किसी के राजपाट से कोई सरोकार नहीं।'

सबदल ने अपनी सम्मति बदलते हुए कहा, 'वह हमारे और देवी सिंह राजा, दोनों के समान शत्रु से लड़ने में सहायक होंगे। सुना है, तोप अच्छी चलाते हैं। मंदिर में बना रहने देंगे। वहाँ से वह तोप चलावेंगे। कोई हर्ज नहीं।'

टिप्पणी

नरपति सोच में पड़ गया। कुछ क्षण बाद बोला, 'कुमुद देवी विश्वास दिलाती हैं कि कुंजर सिंह कभी दगा न करेंगे। छल उन्हें छू नहीं गया है। वह तोप चलाने का काम बहुत अच्छा जानते हैं।'

## खंड-चौवन

अलीमर्दान की सेना ने विराटा को और दलीप नगर की सेना ने रामनगर को अपना लक्ष्य बनाया। लोचन सिंह भांडेर पर धावा करना चाहता था, परंतु देवी सिंह की स्पष्ट आज्ञा थी कि भांडेर पर आक्रमण करके कठिनाइयों को न बढ़ाया जाए। यह प्रपंच लोचन सिंह की समझ में अच्छी तरह न आता था कि भांडेर की सेना हमारे ऊपर तो आक्रमण करे और हम शत्रु के राज्य के बाहर से उसका विरोध करें, परंतु उसके घर में घुस कर मार न करें। इसका समाधान लोचन सिंह को इस प्रकार मिला कि दिल्ली का बादशाह इस भाँति की लड़ाई को आत्म-रक्षा समझ कर तरह दे देगा, परंतु शाही सूबे में घुस कर मार-काट करने को चुनौती का रूप दे डालेगा।

उधर अलीमर्दान ने सालौन भर्रोली से शीघ्र कूच कर दी। तोपें वह बहुत कम साथ ला सका था। विराटा में प्रवेश करने की पूरी चेष्टा की, परंतु मुसावली के पास दलीप नगर के कई दस्तों के साथ मुठभेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में दोनों दलों को अनचाहे स्थानों पर मोर्चाबंदी करनी पड़ी। अलीमर्दान की सेना धनुष के आकार में नदी किनारे-किनारे रामनगर के नीचे तक भरकों में फैल गई। दलीप नगर की सेना रामनगर और विराटा को हस्तगत करने के प्रयत्न में इस मोर्चेबंदी का प्रतिकार करने में प्रथम से ही विवश हुई। न तो अलीमर्दान रामनगर की टुकड़ी से मिल पाता था और न दलीप नगर की सेना विराटा में पहुँच पाती थी। रामनगर के गढ़ से विराटा और देवी सिंह के मोर्चों पर गोली-बारी की जा रही थी, परंतु इतनी शिथिलता और अनजानपने के साथ कि वह बहुत कम हानि पहुँचा रही थी। उधर विराटा की सेना को अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण अधिक सुभीता था, परंतु अलीमर्दान की रोकथाम के सिवा वहाँ के भी गोलंदाज और अधिक कुछ नहीं कर पा रहे थे। दलीप नगर की तोपें रामनगर की गढ़ी को ढीला कर देने में कोई कसर नहीं लगा रही थीं।

इस तरह लड़ते-लड़ते कई दिन हो गए। देवी सिंह को चिंता हुई। मंत्रणा के लिए एक दिन राजा, जनार्दन, लोचन सिंह और कुछ और सरदार बैठे।

जनार्दन ने कहा, 'यदि अलीमर्दान के पास और कुमुक आ गई या बादशाह ने हम लोगों को बागी समझ कर दिल्ली से कोई बड़ा दस्ता भेज दिया तो बड़ी कठिनाई होगी। युद्ध खिंच गया है, कौन जाने क्या होगा।'

लोचन सिंह बोला, 'होगा क्या, आप अपने घर में बैठ कर जप-तप करना, हम अपनी निबट लेंगे।'

'इन बातों से काम न चलेगा, लोचन सिंह।' राजा ने कहा, 'इस समय हम यह निश्चय कर रहे हैं कि शीघ्र क्या करना चाहिए।'

लोचन सिंह ने उत्तर दिया, 'मेरी समझ में तो यह आता है कि इधर-उधर की हाथापाई छोड़ कर भांडेर पर ज़ोर हल्ला बोल दिया जाए, तो अलीमर्दान को लेने के देने पड़ जाएँगे।'

**शब्दार्थ :**
**विशारद** – पंडित

टिप्पणी

'यह तो नहीं हो सकता।' जनार्दन ने कहा।

'राजनीति इस समय ऐसा करने से रोकती है।' देवी सिंह बोला।

लोचन सिंह तुरंत बोला, 'मुझे महाराज जो आज्ञा दें, उसके लिए तैयार हूँ, परंतु केवल राजनीति-विशारदों से लड़ाई के दाँव-पेंच सीखने का उत्साह मेरे भीतर नहीं है। उस सेना का भार, जिसका संचालन शर्माजी कर रहे हैं, किसी और को दीजिए तब....

राजा देवी सिंह ने स्नेह और द ढ़ता के ढंग से कहा, 'चामुंडराय, कल तुम्हारी शूरता और विलक्षण स्फूर्ति की फिर परीक्षा है।'

लोचन सिंह बोला, 'क्या आज्ञा है?'

**देवी सिंह को रामनगर पर धावा बोलने की योजना।**

'कल रामनगर की गढ़ी में हम लोग प्रवेश कर लें।' राजा ने कहा। शब्दों की झंकार सब लोगों के कानों में समा गई। लोचन सिंह की आँखों से चिनगारी-सी छूटी, बोला, 'आज्ञा का पालन होगा, परंतु दो शर्तें हैं।'

राजा ने कहा, 'तुमने चामुंडराय कभी आज तक वीरता-प्रदर्शन में शर्तें नहीं लगाई। आज नई बात कैसी?'

'पहली तो यह', लोचन सिंह ने उत्तर दिया, 'सैन्य-संचालन का काम आपके हाथ में न रहे, और दूसरी यह कि मैं यदि मारा जाऊँ, तो मेरी लाश की मिट्टी बिगड़ने न पावे, उसकी खोज करके शास्त्र के अनुसार दाह किया जाए। नदी में न फेंका जाए और न किसी गड्ढे में डाला जाए।'

'स्वीकृत है।' राजा ने प्रसन्न होकर कहा, 'जनार्दन मेरे साथ रहेंगे। मैं अब इनके दस्ते का संचालन करूँगा।

## खंड-पचपन

**विराटा में युद्ध।**

विराटा की रक्षा द ढ़ता के साथ हो रही थी। दाँगियों ने अपने स्थान को बचाने के लिए प्राणों की होड़ लगा रखी थी। गढ़ी के भीतर आदमी बहुत अधिक न थे। तोपें भी थोड़ी ही थीं। तोपों के चलाने वाले भी चतुर न थे। परंतु उन लोगों में मर-मिटने की लगन थी और विश्वास था कि देवी उनकी सहायता पर हैं।

नदी के पश्चिम तटवर्ती भरकों से अलीमर्दान की सेना विराटा की गढ़ी पर आक्रमण करती थी, परंतु बेतवा की धार उसे विफल-मनोरथ कर देती थी। देवी सिंह की सेना की चपेट के कारण अलीमर्दान को विराटा को पीस डालने का अवकाश न मिल पाता था, नहीं तो विराटा के थोड़े से बहादुर दाँगी बहुत देर तक नहीं टिक सकते थे।

विराटा-युद्ध में कुंजर सिंह को कोई स्थान न मिल सका था। सबदल सिंह की यह धारणा थी कि कुंजर सिंह को हरावल में या कहीं पर भी कोई मुख्य पद देने से देवी सिंह का विमुख हो जाना संभव है। ऐसी दशा में उसे मंदिर की रक्षा के काम पर नियुक्त कर दिया। कुंजर सिंह का विराटा से निकल भागना असंभव था। सबदल सिंह को विश्वास था कि उसे वहाँ केवल बने रहने देने में देवी सिंह अप्रसन्न न होंगे।

एक दिन कुंजर सिंह ने रामदयाल को मंदिर के पास अचानक देखा। चकित हो गया। खासा कड़ा पहरा देते हुए भी कैसे प्रवेश पा गया? उसकी पहली इच्छा यही हुई कि तलवार के वार से समाप्त कर दे, परंतु रामदयाल मुस्कराता हुआ उसी की ओर बढ़ा। कुंजर सिंह अपनी इच्छा पूरी करने में हिचक गया।

**शब्दार्थ :**
**किंकर्तव्यविमूढ़** – असंमजस में पड़ना

टिप्पणी

**रामदयाल का सबदल सिंह के पास देवी सिंह का संदेश लेकर जाना तथा रास्ते में कुंजर से टकरा जाना।**

रामदयाल ने कहा, 'राजा मुझे शायद अपना शत्रु समझते हैं। संभव है, राजा की कल्पना सही हो।'

कुंजर सिंह इस बेधड़क मंतव्य पर क्षुब्ध हो गया और किंकर्तव्यविमूढ़।

रामदयाल ने और पास आकर कहा, 'परंतु आप और मैं समान भाव से इस गढ़ी की रक्षा के आकांक्षी हैं। मैं अब महारानी की सेवा में नहीं हूँ। राजा देवी सिंह का संदेशा लाया हूँ।'

'रानी को किस दलदल में फँसा कर चले आए हो?' कुंजर सिंह ने कठोरता के साथ प्रश्न किया।

'मैंने किसी को दलदल में नहीं फँसाया है।' रामदयाल ने ठंडक के साथ उत्तर दिया, 'मैं खुद उनके पीछे बहुत बरबाद हूँ। बहुत मारा-मारा फिरा हूँ। उनका मुझ पर भी विश्वास नहीं रहा, तब निकाल दिया। मैं राजा देवी सिंह की शरण में गया। उन्होंने क्षमा प्रदान करके अपना लिया है और यहाँ भेजा है। राजा देवी सिंह के नाते से आप भले ही मुझे अपना बैरी समझें, परंतु मैं आपके बैर के योग्य नहीं हूँ।'

कुंजरसिंह ने एक क्षण सोचा। रामदयाल की बात पर उसे ज़रा भी विश्वास न हुआ। पूछा, 'क्या संदेशा लाए हो?'

'यदि क्षमा किया जाऊँ, तो कहना चाहता हूँ कि मेरा संदेशा यहाँ के राजा सबदल सिंह के लिए ही है।'

कुंजर सिंह का जी जल गया। बोला, 'तब चलो उनके पास। मैं साथ चलता हूँ।'

'किसी को भेज कर उन्हें यहीं बुलवा लीजिए। सबके सामने जाने से संदेश के खुल कर फैल जाने का भय है।' रामदयाल ने कहा।

पास ही एक तोप लगी हुई थी। गोलंदाज और सैनिक वहाँ नियुक्त थे। कुंजर सिंह ने एक सैनिक को बुला कर कहा, 'यह मनुष्य शत्रु या मित्र पक्ष का है। अभी निश्चय नहीं हो सकता कि किस श्रेणी में इसे समझा जाए। राजा से कुछ बात करना चाहता है। उन्हें तुरंत यहाँ भेज दो। मैं इस पर तब तक पहरा लगाए हूँ।'

थोड़ी देर में वह सैनिक सबदल सिंह को लेकर आ गया। राजा ने उतावली में पूछा, 'क्या बात है?'

वह बोला, 'क्या मैं राजा कुंजर सिंह के सामने कह सकता हूँ? राजा देवी सिंह का संदेशा है।'

कुंजर सिंह ने झुँझला कर, 'मैं अब विराटा का शुभाकांक्षी हूँ। अब जो विराटा के मित्र हैं, वे मेरे मित्र हैं और जो उसके शत्रु हैं, वे मेरे शत्रु।'

सबदल सिंह बोला, 'तुम अपना संवाद सुनाओ।'

रामदयाल ने कहा, 'कल बड़े ज़ोर का आक्रमण आपकी गढ़ी पर होगा-अलीमर्दान की सेना का। उसका ध्यान बँटाने के लिए हमारे महाराज रामनगर पर बड़े ज़ोर का हल्ला बोलेंगे। आप तोपों की बाढ़ का पक्का बंदोबस्त रखें।'

## खंड-छप्पन

रात का समय था। काली रात। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। पवन ने पेड़ों को चूम कर सुला-सा दिया था। बेतवा अचेत पत्थरों से निरंतर टकरा कर अनंत कल-कल शब्द

टिप्पणी

रच-रचकर रह-रह जाती थी।

कुंजर सिंह मंदिर की दीवार के पास, एक टोर की आड़ में, जहाँ से नदी की धार रामनगर की ओर से बह कर आई है, कंधे से बंदूक लगाए अकेला बैठा था। उत्साह था, हृदय में अपूर्व बल प्रतीत होता था-मंदिर की रक्षा के लिए, मंदिर की विभूति के लिए। दिन को गोलियाँ पास से निकल जाती थीं, गोले धम से आ कर धूल और कंकड़ों को बिखेर देते थे। एक छोटी-सी जगह उस युद्ध में सबदल सिंह ने दे रखी थी, उसको उस राजकुमार ने बहुत समझा। मुस्तैदी से अपने स्थान पर डटा रहता था। केवल प्रातः काल मंदिर में दर्शन के लिए जाता था और एक-आध बार दिन में भी नरपति की कुशल-क्षेम पूछने को गुफ़ा पर पहुँच जाता था। यह टोर, जहाँ एक कंबल और लोटा ले कर कुंजर सिंह सशस्त्र डटा रहता था, उसके लिए तीर्थस्थान-सी हो उठी थी।

परंतु उस रात मन बेचैन था। रामदयाल पिशाच है। उसकी पैशाचिकता को सबदल सिंह नहीं समझता। गोमती उसे बिल्कुल नहीं पहचानतीं। वह क्यों आया है? अवश्य अलीमर्दान का भेदी है। निस्संदेह कुछ उत्पात खड़ा करेगा, शायद विराटा को ध्वस्त करने की चिंता में हो। कुमुद इस युद्ध का लक्ष्य है। देवी सिंह बचाने के लिए आ रहा है। यदि इस समय मैं दलीप नगर का राजा होता, तो देवी सिंह की अपेक्षा कहीं अधिक प्रबलता और चतुरता के साथ युद्ध करता। राजा नायक सिंह के वीर्य से उत्पन्न, एक हाथ भूमि के लिए जंगलों में मारा-मारा भटके और देवी सिंह दलीप नगर की सेनाओं का संचालन करे।

**रामदयाल के विराटा आने पर कुंजर के मन में आशंका का सूत्रपात।**

रामदयाल क्यों आया? वह रामदयाल जो राजा नायक सिंह की वासनाओं की त प्ति के लिए खुल्लमखुल्ला साधन जुटाया करता था, वही जो देवी सिंह का शत्रु है और साथ ही विराटा के सब लोगों का और अवश्य ही विराटा-निवासिनी कुमुद का भी।

उसने मन ही मन सोचा-'मैं इसके कुचक्रों का निवारण कर सकता हूँ। करूँगा।' फिर अपनी तोपों की ओर ध्यान गया जिस प्रयोजन से वे वहाँ स्थित थीं और वह स्वयं उस स्थान पर जिस धारणा को लेकर गड़ा-सा था, उस ओर भी ध्यान गया।

कुंजर सिंह दबे पाँव गुफ़ा की ओर गया।

गुफ़ा में निविड़ अंधकार था। पत्थर से सट कर कुंजर सिंह ने कान लगाया। उस तमोराशि में केवल कुछ साँसों का शब्द सुनाई पड़ता था।

इस गुफा में वह देवी है। कुंजर सिंह ने सोचा, 'कल्याण और रूप, स्निग्धता और लावण्य, वरदान और प्रेरणा की वह निधि उस कठोर गुफ़ा के भीतर!' कुंजर सिंह और अधिक नहीं ठहरा। उसका कर्तव्य इस निधि की रक्षा के साथ संबद्ध था। लौट आया। मन में कहा—देवी को किसी का कोई स्वप्न भी कभी आता होगा?'

## खंड-सतावन

दलीप नगर और भांडेर की सेनाएँ एक-दूसरे पर बिना बड़ा जनसंहार किए हुए तोपें और बंदूकें दाग रही थीं। इक्के-दुक्के सैनिक लड़-भिड़ जाते थे, कभी-कभी, छोटी-छोटी टोलियों की मुठभेड़ भी हो जाती थी। परंतु सौ-पचास हाथ भूमि इधर या उधर, इससे अधिक जय या पराजय किसी पक्ष को भी प्राप्त न हो पाती थी।

**शब्दार्थ :**
**स्निग्धता** – कोमलता
**लावण्य** – सौंदर्य
**निधि** – खजाना

टिप्पणी

**लोचन सिंह द्वारा देवी सिंह को तत्काल अलीमर्दान की सेना पर ध ावा बोलने की सलाह।**

अकस्मात् राजा, जनार्दन शर्मा, लोचन सिंह इत्यादि मुसावली के निकटवर्ती नाले में इकट्ठे हो गए।

आगे क्या करना चाहिए, इस पर सलाह होने लगी।

लोचन सिंह ने कहा, 'यहीं गड़े-गड़े मरना तो अब बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। हथियार बिना चलाए ही कदाचित् किसी दिन टें हो जाना पड़े।'

'तब क्या किया जाए?' जनार्दन ने धीरे से पूछा।

'अलीमर्दान की सेना पर तीर की तरह टूट पड़ना चाहिए।' लोचन सिंह ने उत्तर दिया।

'और तीर की तरह छूट निकल कर कमान को खाली कर देना चाहिए।' राजा देवी सिंह ने व्यंग्य किया।

'जैसी मरजी हो।' लोचन सिंह ने कुढ़कर कहा, 'लड़ाई के बहाने भड़भड़ करते रहिए, जब अलीमर्दान की सेना दुगुनी-चौगुनी हो जाए, तब घर चले चलिए।'

देवीसिंह का थका हुआ चेहरा लाल हो गया। सोचने लगे। एक पल बाद बोले, 'आज रात तक रामनगर पर अपना झंडा फहरा सकोगे?'

लोचनसिंह उत्तर देने में ज़रा-सा हिचका।

देवी सिंह, 'मौत के बदले रामनगर मिलेगा, लोचन सिंह!'

'मैं तैयार हूँ।' लोचनसिंह ने द ढ़ता से कहा।

जनार्दन ज़रा कसे स्वर में बोला, 'और आपके सरदार?'

लोचन सिंह ने कहा, 'मेरे साथी सरदार कुछ करने या मरने के लिए बहुत उतावले हो रहे हैं, परंतु....'

जनार्दन उत्तेजित हो कर कुछ कहना ही चाहता था कि देवी सिंह ने कहा, 'मेरा एक मंतव्य है।' लोचन सिंह, 'क्या मरजी है?'

देवी सिंह, 'रामनगर पर शीघ्र अधिकार कर लेने के लिए बढ़ना यमराज को न्योतने के बराबर है, परंतु अलीमर्दान पर धावा बोलने की अपेक्षा यह भी कहीं ज्यादा अच्छा है। रामनगर का गढ़ और तोपें हाथ में कर लेने के उपरांत अलीमर्दान से खुली मुठभेड़ करना सरल हो जाएगा।'

'हम जितने आदमी रामनगर की ओर आज बढ़ेंगे, सब अपने-अपने सिर पर कफन बाँधेंगे। वाह! क्या वेश रहेगा। कोई देखेगा तो कहेगा कि मौत से लड़ने के लिए यमदूत जा रहे हैं।'

## खंड-अठावन

दूसरे दिन संध्या के पूर्व नित्य-जैसी लड़ाई होती रही। लोचन सिंह जितने सैनिक रामनगर पर आक्रमण करने के लिए चाहता था, उतने उसे मिल गए। उनके चेहरे पर उत्साह था या नहीं, यह अँधेरे में नहीं दिखाई पड़ रहा था। बिल्कुल पास से देखने वाला जान सकता था कि वे लोचन सिंह के साथ होने पर भी फुसफुसाहट में ठिठोली कर रहे थे और मुस्कराते भी थे।

नदी के किनारे-किनारे बिना पहचाने जाना असंभव था। इसलिए अपने भरके की सीध से कभी तैर कर और कभी भूमि पर रामनगर तक चुपचाप जाना लोचन सिंह ने

**शब्दार्थ :**
**मंतव्य** – सलाह, विचार

तय किया। रामनगर के नीचे पहुँच कर फिर आक्रमण करना था या मौत के मुँह में धँसना था।

लोचन सिंह ने नदी में उतरने के लिए कपड़े कसे। पानी में जाने से पहले कुछ सोचने लगा। पास खड़ा एक सैनिक बोला, 'दाऊजू, देखते क्या हो, कूद पड़ो।'

लोचनसिंह ने कहा, 'जो कुछ देखना' है, रामनगर में देखूँगा। यहाँ देखने को रखा ही क्या है। नदी का तैरना शूरता का काम नहीं, केवल बल का काम है।'

नदी के बहाव के विपरीत अँधेरी रात में तैरना वीरता का भी काम था, और खास तौर से उस समय, जब किनारों पर शत्रु बंदूकें भरे धाँय-धाँय कर रहे थे।

घोर परिश्रम के पश्चात् रामनगर से कुछ दूरी पर सब-के-सब पहुँच गए। वहाँ पानी चट्टानों से हो कर आया है। धार तेज बहती है। विजय प्राप्ति के लिए सुरक्षित स्थान पर इकट्ठा होना आवश्यक था। परंतु इस स्थान पर प्रकृति को पराजित करना सहज न था। टुकड़ी तितर-बितर हो कर, इधर-उधर चट्टानों पर बैठ कर दम लेने लगी। थोड़े समय पश्चात् किसी पूर्वनिर्णय के अनुसार दलीपनगर की सेना की ओर से रामनगर के ऊपर असाधारण रीति से गोलीबारी शुरू हो गई। लोचन सिंह को अपने निकट एक ऊँची चट्टान दिखाई दी, जो चढ़ाव खाती हुई रामनगर के किले की दीवार के नीचे तक चली गई थी। परंतु बीच में तेज धार वाला पानी पड़ता था और साथी इधर-उधर बिखरे हुए थे। एक नाव दिखाई दी।

लोचन सिंह ने आवाज दबा कर कहा, 'पीछे-पीछे आओ।'

'धायँ-धायँ की आवाजें आगे-पीछे जल्दी-जल्दी हुईं। तेज बहती हुई धार पर गोलियाँ धर्र हो गईं। लोचन सिंह पानी में कूद पड़ा। परंतु नाव के पास पहुँचने में धार बार-बार विघ्न उपस्थित करने लगी। लोचन सिंह को आभास हुआ कि अब की बार बचना असंभव होगा। वह धार के खिलाफ बहुत बल लगाने लगा और धार भी उसे ज़ोर से झटके देने लगी। हाँफता हुआ लोचन सिंह धीरे से चिल्लाया, 'क्या सब मर गए?'

पास की चट्टान से टकराते हुए पानी को चीरते हुए आकर एक व्यक्ति ने स्पष्ट कहा, 'अभी तो सिर का कफन गीला भी नहीं हुआ है।'

'शाबाश! लोचन सिंह बोला, 'कौन?'

उत्तर मिला, 'बुंदेला।'

वह सिपाही किसी द ढ़ता में इतराता हुआ-सा, उस धार को पार करके नाव के पास जा पहुँचा। लोचन सिंह ने भी दुगुना बल लगा दिया। वह भी नाव के नीचे जा लगा। पीछे से और सिपाहियों के आने की आवाज मालूम हुई। जो सिपाही पहले आया था, उसने नाव पर चढ़ने की चेष्टा की। नाव के भीतर से किसी ने बंदूक की नाल से उसे ढकेल दिया। वह नीचे गिर गया और थोड़ा-सा बह गया। तब तक लोचन सिंह आ धमका। उसके साथ भी वही क्रिया की गई। लोचन सिंह भी नीचे से धसक गया। इतने में वह सैनिक आ गया और नाव पर चढ़ गया। लोचन सिंह और कुछ अन्य सिपाही भी नाव में जा घुसे। नाव में रामनगर के छह-सात सैनिक थे, परंतु दो के सिवा और सब सो रहे थे। दूर की तोपों और पास की बंदूकों से वे थके-थकाए जाग न सके थे परंतु नवागंतुकों के धँस पड़ने से रस्सों से बँधी हुई नाव डगमगा उठी। दो सिपाही

टिप्पणी

जो बंदूकें लिए तैयार थे, चला न पाए। लोचन सिंह ने उन्हें तलवार से असमर्थ कर दिया। लोचन सिंह और उसके सिपाहियों को नाव में जितनी बंदूकें मिलीं, ले लीं और अपने पास की पिस्तौलें पौंछ-पौंछकर भर लीं। बोंडे सुलगाकर और उन्हें भलीभाँति छिपाकर किले की ओर आड़ें लेती हुई यह टुकड़ी बढ़ी। ऊपर से तोपें आग उगल कर दलीप नगर की सेना को जवाब देने लगी थीं। कभी-कभी आग की चादर-सी तन जाती थी।

आगे चल कर उस बातूनी सैनिक ने लोचन सिंह से कहा, 'अब क्या करोगे, दाऊजू?'

'फाटक पर गोलियों की बाढ़ दागो।' लोचन सिंह ने आज्ञा के स्वर में उत्तर दिया। वह सैनिक बिना किसी झिझक के बोला, 'फाटक पर बाढ़ दागने की अपेक्षा उस पर ज़ोर का हल्ला बोलना अच्छा होगा।'

लोचन सिंह ने कड़वे कंठ से कहा, 'यह गलत कार्यवाही होगी। जो कहता हूँ, सो करो। तुम अकेले फाटक पर जा कर चिल्लाओ।'

वह सैनिक बिना कुछ कहे-सुने तुरंत फाटक की ओर दीवार के किनारे-किनारे बढ़ गया।

**लोचन सिंह का अपने सिपाहियों के साथ राम नगर के फाटक में प्रवेश।**

दूसरे सैनिकों ने कहा, 'हमें भी वहीं जा कर मरने की आज्ञा हो?'

लोचन सिंह ज़रा सहमा। मौत की छाती पर सवार सैनिकों की इस बात के भीतर किसी उलाहने की छाया देख कर वह ज़रा-सा लज्जित भी हुआ। बोला, 'हम सब वहीं चल रहे हैं।'

इतने में वह वाचाल सैनिक फाटक के पास पहुँच गया। तोपों की उस धूमधाम में आवाज खूब ऊँची करके चिल्लाया, 'खोलो, हम आ गए।'

फाटक पर रामनगर की सेना के योद्धा थे, वे घबराए। इधर-उधर बंदूकें दाग हड़बड़ाहट में पड़ गए। उसी समय लोचन सिंह और उसके साथियों ने फाटक के पास आकर ज़ोर का शोर-गुल किया। कुछ बंदूकें भी दागीं।

भीतर के सिपाही फाटक छोड़ कर भीतर की ओर हटे। लोचन सिंह और उनके साथी कमंद की सीढ़ी लगा कर दीवार पर चढ़ गए।

**छोटी रानी का युद्ध में कूद पड़ना**

भीतर घमासान युद्ध होने लगा। बंदूकें-तमंचे कड़कने और तलवारें खनकने लगीं। रामनगर वालों को अँधेरे में यह जान न पड़ा कि दूसरी ओर से कितने सैनिक घुस आए हैं। फाटक खुल गया और रामनगर की सेना में भगदड़ मच गई। छोटी रानी लड़ती हुई फाटक से निकल गई।

दलीप नगर की सेना ने जोश के साथ जय जयकार किया।

रामनगर में बहुत कम लड़ाके भागने से बचे। जो नहीं भागे थे, उन्होंने हथियार डाल दिए। लोचन सिंह की सेना के भी कई आदमी मारे गए और अधिकांश घायल हो गए।

परंतु अपने अदम्य उत्साह और विजय के हर्ष में घावों की पीड़ा बहुत कम जान पड़ी। बातूनी सिपाही ने लोचन सिंह से कहा, 'दाऊजू, फाटक बंद कर लीजिए, अपनी सेना को जय-जयकार सुना कर बुलाइए, नहीं तो यह विजय अकारथ जाएगी।'

लोचन सिंह ने पूछा, 'तुम्हारा नाम?'

'कफन सिंह बुंदेला।'

**शब्दार्थ :**

**बोंडा** – बारूद में आग देने का पतीला

**हल्ला बोलना**– आक्रमण करना

**वाचाल** – बातूनी

**कमंद** – फंदा लगी रस्सी जिसे दीवार पर फेंककर फँसा दिया जाता है।

**तमंचा** – पिस्तौल बंदूक

टिप्पणी

लोचन सिंह ने कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया। फाटक बंद करवा कर देवी सिंह का जय जयकार करता रहा। दलीप नगर की सेना का घेरा रामनगर की बाहरी वाली सेना और अलीमर्दान वाले दस्ते ने छोड़ दिया और टुकड़ियाँ दूर हट गईं। दलीप नगर की सेना ने रामनगर के गढ़ पर अधिकार कर लिया। उस अँधेरी रात में यह किसी को न मालूम होने पाया कि देवी सिंह ने कब और कहाँ से गढ़ में प्रवेश किया।

देवी सिंह के आ जाने पर गढ़ की ढूँढ़-खोज की गई। छोटी रानी तो निकल गई थीं, पर बड़ी रानी मिल गईं। उन्हें कैद कर लिया गया।

**देवी सिंह का भी गढ़ में प्रवेश**

रामनगर के पतन के बाद पतराखन ने राजा देवी सिंह का अधिकार स्वीकृत कर लिया, परंतु राजा ने उसे रामनगर में ससैन्य रहने का अवसर नहीं दिया। बेतवा के पूर्वी किनारे पर ही पूर्ववत् रहने को कहा, जिससे आवश्यकता पड़ने पर उसकी सेना का उपयोग किया जा सके।

बड़ी रानी को अपनी मूर्खता पर बड़ा पछतावा था, राजा ने क्षमा दे दी। द ष्टि ज़रूर उन पर काफ़ी रखी। रानी ने इस नजरबंदी को ही बहुत गनीमत समझा।

विजय की रात्रि के बाद जो सवेरे रामनगर में राजा के सरदारों की बैठक हुई, उसमें सभी लोग राजा की इस उदारता पर मन में रुष्ट थे। छोटी रानी का जिक्र आने पर लोचन सिंह ने कहा, 'महाराज यदि अपराधियों को दंड न देंगे तो विजय पर विजय बेकार होती चली जाएगी।'

जनार्दन अवसर पाकर मुस्कराया। बोला, 'दाऊजू, यह प्रश्न सेनापति नहीं राजनीतिज्ञ ही सुलझा सकते हैं।'

लोचन सिंह को किसी बहस का स्मरण हो आया। राजा से बोला, 'रामनगर की जागीर कब और किसे दी जाएगी?'

जनार्दन बोला, 'चामुंडराय लोचन सिंह के सिवा उसे कौन पाएगा?' महाराज ने उसी समय तय कर दिया था। कुछ और निर्णय उसके विषय में नहीं करना है। मुझे तो चिंता छोटी रानी की है। उन्हें तुरंत कैद करने की आवश्यकता है। उनके स्वतंत्र रहने से बहुत सरदार चल-विचल हो जाते हैं और अलीमर्दान को उनकी ओट में अपना काम बनाने का सुभीता भी रहता है।'

राजा ने कहा, 'छोटी रानी को जो कोई कैद कर लावेगा, उसे सहस्र मुहरें इनाम में दी जाएँगी।'

जनार्दन खुशी के मारे उछल पड़ा। बोला, 'सौ मुहरें महाराज के दीन ब्राह्मण जनार्दन की ओर से भी दी जाएँगी।'

राजा हँस पड़ा। एक क्षण बाद बोला, 'रामनगर की जागीर का सिरोपाव चामुंडराय लोचन सिंह को इसी समय दे दिया जाए, शर्माजी।'

लोचन सिंह ने बारीक आह ले कर कहा, 'यदि मुझे मिल सकती होती, तो पहले ही कह चुका हूँ कि मैं महाराज को लौटा देता, परंतु वह मुझे नहीं मिलना चाहिए।'

'क्यों?' राजा ने ज़रा विस्मय के साथ पूछा।

उत्तर मिला, 'इसलिए कि मैंने रामनगर नहीं जीता।'

'तब किसने जीता?' जनार्दन ने प्रश्न किया।

**शब्दार्थ :**

**सहस्र** – हजार

**सिरोपाव** – जिम्मेदारी

टिप्पणी

लोचन सिंह ने कहा, 'उसका संपूर्ण श्रेय मेरे एक सैनिक को है, रात के कारण उसका नाम नहीं पूछ पाया। वह जीवित अवश्य है, परंतु अँधेरे में न मालूम कहाँ चला गया। उसकी खोज करवाई जानी चाहिएः मर गया हो, तो उसके घर में जो कोई हो, उसे यह जागीर दे दी जाए।'

राजा ने सहज रीति से सम्मति प्रकट की, 'यदि सबकी सम्मति हो तो मैं यह चाहता हूँ कि रामनगर का कुछ भाग पतराखन के पास रहने दिया जाए। अब यह शरणागत हुआ है, इसलिए बिल्कुल बेदखल न किया जाए।'

लोचन सिंह ने निरपेक्ष भाव से कहा, 'हमारे उस सैनिक का पता महाराज पहले लगवाएँ, तब रामनगर का कोई एक टुकड़ा पतराखन को या और किसी को दें।'

राजा बिना उत्तेजना के बोला, 'लोचन सिंह, तुम्हें उस सिपाही ने कुछ तो अपना नाम बताया होगा?'

'बतलाया था, महाराज।' लोचन सिंह ने उत्तर दिया, 'परंतु वह नाम बनावटी जान पड़ता है। कहता था, मेरा नाम कफन सिंह बुंदेला है....'

'विचित्र नाम है!' राजा ने मुस्करा कर ज़रा आश्चर्य के साथ कहा, 'तुम्हारी सेना में क्या सब योद्धा इसी तरह के बेतुके नाम रखते हैं?'

लोचन सिंह गंभीर स्वर में बोला, 'यदि मेरी सेना में सब सैनिक उस कफन सिंह सरीखे हों, तो आपको घर-घर चामुंडराई की उपाधि न बाँटनी पड़े।'

राजा ने पूछा, 'क्या तुम उसका स्वर पहचान सकते हो?'

राजा ने तुरंत स्वर बदल कर कहा, 'कफन सिंह बुंदेला।'

लोचन सिंह का क्रोध घोर विस्मय में परिवर्तित हो गया। क्षीण स्वर में बोला, 'यही स्वर सुना था।'

'महाराज का!' जनार्दन ने आश्चर्य के साथ कहा।

देवी सिंह खूब हँस कर बोला, 'महाराज का नहीं, कफन सिंह बुंदेला का।'

लोचन सिंह सँभल गया। गंभीर होकर बोला, 'तब आप जागीर चाहे जिसे दे सकते हैं।'

'तीन-चौथाई लोचन सिंह को और एक-चौथाई पतराखन को, यदि वह स्वामिभक्त बना रहा तो।'

## खंड-उनसठ

अपनी सेना के प्रधान भाग से देवी सिंह का संबंध रामनगर में स्थापित हो गया था, परंतु विराटा की इससे मुक्ति नहीं हुई। अलीमर्दान की सेना की कमान रामनगर के पास से खिंच कर विराटा की ओर और अधिक सिमट आई। अपनी ओर अलीमर्दान की सेना को और अधिक सिमटा हुआ देख कर राजा सबदल सिंह ने समझा, दलीप नगर की सेना पीछे हट गई है। सेना छोटी थी। मुट्ठी-भर दाँगी इतनी बड़ी फ़ौज का सामना कर रहे थे-अपनी बान पर न्योछावर होने के लिए। तोपें थोड़ी थीं, साहस बहुत।

कुंजर सिंह तोप के काम में बहुत कुशल था। यद्यपि सबदल सिंह ने राजा देवी सिंह के भय के कारण कुंजर सिंह को छोटा-सा पद ही दे रखा था, तथापि अपनी दिलेरी और चतुरता के कारण बहुत थोड़े समय में उसे तोपची से सभी तोपों के नायक का पद मिल गया। उसे सेना की विश्वासपात्रता सहज ही प्राप्त हो गई। वह विराटा के कागजों

में सेनापति नहीं था, परंतु वास्तव में था और सैनिकों के हृदय में उसके शौर्य ने स्थान कर लिया था।

रामनगर-विजय के दूसरे दिन संध्या समय राजा देवी सिंह ने नाव द्वारा विराटा जाने का निश्चय किया। अलीमर्दान से आँख बचाने के लिए एक छोटी-सी नाव में थोड़े से आदमी ले लिए और लोचन सिंह, जनार्दन इत्यादि से जाते समय कह गए कि आधी रात के पहले लौट आएँगे।

बेतवा का पूर्वी तट पतराखन के शरणागत हो जाने के कारण निस्संकट हो गया था, इसलिए उसी ओर से, अँधेरे में, देवी सिंह अपनी नाव विराटा ले गया मंदिर के पीछे और नाव लगा दी। अपने सिपाहियों में से दो को साथ लेकर वह अनुमान से मंदिर की ओर बढ़ा।

वहीं एक तोप लगी हुई थी। कुंजर सिंह पास खड़ा, परंतु राजा असाधारण मार्ग से होकर आया था, इसलिए जब तक बिल्कुल पास आ न गया, कुंजर सिंह को मालूम न हुआ।

जब देवी सिंह पास आ गया, कुंजर ने ललकारा और तलवार खींच कर दौड़ा।

देवी सिंह ने शांत, परंतु गंभीर स्वर में कहा, 'मैं हूँ दलीप नगर का राजा देवी सिंह। कुंजर सिंह ने वार नहीं किया, परंतु पास के सैनिकों को सावधान करके देवी सिंह के पास आगे बढ़ गया।

कंपित स्वर में बोला, 'इस अँधेरे में आपके यहाँ आने की क्या ज़रूरत थी?'

'मैं हूँ कुंजर सिंह। महाराज नायक सिंह का कुमार।'

'आप! तुम यहाँ कैसे?'

इस संबोधन की अवज्ञा कुंजर सिंह के हृदय में चुभ गई। देवी सिंह से कहा, 'क्षत्रिय अपनी तलवार की नोंक से अपने लिए संसार में कहीं भी ठौर बना लेता है।'

'आपको विराटा का शत्रु समझा जाए या मित्र?'

'जैसी आपकी इच्छा हो।'

'सबदल सिंह कहाँ है?'

'गढ़ी की रक्षा कर रहे हैं।'

'मैं उनसे मिलना चाहता हूँ?'

'किसलिए?'

'रामनगर हमारे हाथ में आ गया है। विराटा के उद्धार के लिए सुभीता होते ही हम शीघ्र आते हैं, तब तक अलीमर्दान का निरोध द ढ़ता के साथ करते रहें, इस बात को बतलाने के लिए।'

'यह संदेश उनके पास यथावत् पहुँचा दिया जाएगा।'

देवी सिंह ने क्षुब्ध होकर कहा, 'आप इस गढ़ी में मित्र के रूप में न होते, तो आप जिस पद के वास्तव में अधिकारी हैं, वह आपको तुरंत दे दिया जाता।'

कुंजर सिंह ने पहले अपनी तोप और सुलगते हुए बोंडे की ओर, फिर रामनगर की ओर देखा। एक बार मन में आया कि सैनिकों को आज्ञा देकर आगंतुक को कैद कर लूँ

टिप्पणी

और तोपों के मुँह से रामनगर पर गोले उगलवा दूँ, परंतु कुछ सोच कर रह गया। बोला, 'इसका ठीक-ठीक कभी उत्तर दूँगा अवश्य।'

देवी सिंह ने कहा, 'मुझे इस समय इस व्यर्थ विवाद के लिए अवकाश नहीं। यदि आप सबदल सिंह को स्वयं बुला सकते हों, तो बुला लाइए, नहीं तो इन सैनिकों में से कोई उनके पास चला जाए और कह दे कि दलीप नगर के महाराज बड़ी देर से खड़े बाट जोह रहे हैं।'

कुंजर सिंह ने दाँत पीसे, परंतु बड़े संयम के साथ अपने सैनिकों से कहा, 'एक आदमी राजा के पास जाओ। जो कुछ इन्होंने कहा है, उन्हें सुना देना। इनसे मुलाकात मंदिर में होगी। चार आदमी इन्हें लेकर मंदिर में बिठलाओ।'

इस पर एक सैनिक सबदल सिंह के पास गया और चार देवी सिंह और उनके साथियों को मंदिर में ले गए। उस समय कुंजर सिंह ने बड़े क्षोभ और क्रोध की द ष्टि से उन लोगों की ओर देखा। मन में बोला– इस भुक्खड़ भिखारी के दिमाग में इतना घमंड! दलीप नगर के महाराज! महाराज नायक सिंह के दलीप नगर का अधिकारी यह चोर! चाहे जो हो, यदि इसके टुकड़े-टुकड़े न किए तो मनुष्य नहीं।

एक सैनिक ने कुंजर सिंह से सावधानी जताने के लिए कहा, 'यह शायद देवी सिंह न हों। नवाब के आदमी हों, वेश बदल कर आए हों।'

कुंजर सिंह बोला, 'हूँ?'

सिपाही कहता गया, 'मंदिर को कहीं ये लोग अपवित्र न कर दें, देवी की पुजारिन...'

कुंजर सिंह ने जाग्रत-सा हो कर कहा, 'तुमने कैसे अनुमान किया?'

'मैं खूब जानता हूँ।' वह बोला, 'ये लोग मूर्तियाँ तोड़ डालते हैं, स्त्रियों को ज़बरदस्ती पकड़ ले जाते हैं। उसके साथ दो आदमी भी हैं। नाव में बैठ कर आए होंगे। पठारी के नीचे नाव लगी होगी। उसमें और आदमी भी होंगे।'

तमक कर कुंजर सिंह ने कहा, 'और हमारे सिपाही क्या उन लोगों के गुलाम हैं जो उन्हें उत्पात करने देंगे?' वह सैनिक ज़रा सहम गया परंतु ढिठाई के साथ बोला, 'हम लोग तो अपने प्राणों की होड़ लगा ही रहे हैं, परंतु कोई अनहोनी न हो जाए, इसलिए कहा। शायद उसके पास और आदमी किसी दूसरी ओर से भी आ जाएँ।'

कुंजर सिंह ने सोचा-कहीं देवी सिंह नरपति सिंह इत्यादि को रामनगर न लिवा ले जाएँ। शायद गोमती को लिवाने आया हो और उसके साथ उन लोगों से भी चलने के लिए कहे। उसने और अधिक नहीं सोचा। सैनिक से कहा, 'तुम तोप पर डटे खड़े रहो। मैं देखता हूँ, वहाँ क्या होता है। राजा सबदल सिंह मंदिर में थोड़ी देर में आते होंगे। वहाँ मेरी उपस्थिति आवश्यक होगी।

थोड़ी देर में वह मंदिर के द्वार पर पहुँच गया। वहाँ पहरे पर सिपाही थे। जो आदमी कुंजर सिंह ने देवी सिंह के साथ किए थे, वे भी पहरे वाले सिपाहियों के साथ रह गए।

भीतर कुछ बातचीत हो रही थी। कुंजर सिंह ने सोचा, वहीं चल कर सुनूँ। पहरे वाले सिपाही से पूछा, 'सबदल सिंह आ गए या नहीं? मालूम हुआ, अभी नहीं आए हैं। कुंजर सिंह और आगे बढ़ा। अभी कुमुद इत्यादि मंदिर छोड़कर अपनी खोह में नहीं गई थीं, परंतु आँगन में अंधकार छाया हुआ था। केवल मूर्ति के पास घी का एक छोटा-सा दीपक

**शब्दार्थ :**
**निरोध** – रोक
**सरीखा** – जैसा

टिप्पणी

टिमटिमा रहा था। उसी जगह बातचीत हो रही थी।

कुंजर सिंह पहले तो ठिठका, फिर सोचा, सबदल सिंह के आने तक बातचीत के लिए आगे न बढ़ूँ। परंतु उसने यह विचार शीघ्र बदल दिया। मन में कहा—देवी सिंह सरीखा आदमी इन लोगों से क्या बातचीत करता है, उसे छिप कर सुनने में कोई दोष नहीं। ज़रा आगे बढ़ कर एक कोने में छिपे-छिपे कुंजर सिंह वहाँ की बातचीत सुनने लगा।

## खंड-साठ

देवी सिंह अपने दोनों सैनिकों को लिए हुए, मंदिर में चला गया। मूर्ति के पास दीपक टिमटिमाता हुआ देखकर आगे बढ़ा। सबसे पहले नरपति सिंह मिला। उसने अचकचा कर पूछा, 'आप लोग कौन हैं?'

देवी सिंह ने उत्तर दिया, 'आप लोगों के मित्र।'

देवी सिंह बैठने के लिए उपयुक्त स्थान देखने लगा।

नरपति एक क्षण चुप रह कर ज़रा ज़ोर से बोला, 'आपका नाम?'

'थोड़ी देर में अपने आप प्रकट हो जाएगा।' देवी सिंह ने ज़रा बेतकल्लुफी के साथ कहा।

इतने में रामदयाल आ गया।

पहले उसे संदेह हुआ। फिर सोचा, असंभव है। विश्वास को द ढ़ करने के लिए ज़रा और आगे बढ़ा।

पहचानने में विलंब नहीं हुआ।

तुरंत पीछे हटने की ठानी, परंतु देवी सिंह ने पहचान लिया। बोले, 'रामदयाल!'

'महाराज!' अनायास रामदयाल के मुँह से निकल पड़ा।

देवी सिंह ने कहा, 'बड़ा आश्चर्य है तू यहाँ कैसे आया और कौन तेरे साथ है?' राजा ने बहुत संयत भाव से प्रश्न किया था, परंतु आत्मगौरव से प्रेरित प्रश्न का स्वर काफ़ी ऊँचा हो कर रहा। ज़रा प्रखर स्वर में पूछा, 'जानता है रामदयाल, यह मंदिर है और मैं.....

'महाराज, महाराज, मैं निरपराध हूँ। मैंने क्या किया है?'

'तुने जो कुछ किया है, उसका भरपूर पुरस्कार मिलेगा। तेरे सरीखे नराधम की अपवित्र देह कम-से-कम इस देवालय में नहीं आनी चाहिए थी।' फिर देवी सिंह ने स्वर की कर्कशता को कम करके पूछा, 'मंदिर की अधिष्ठात्री कहाँ हैं?'

रामदयाल सँभल कर बोला, 'जिस मंदिर की रक्षा के लिए हिंदू प्राण हथेली पर रखे फिर रहे हैं, उसी की रक्षा के लिए हम लोग भी यहाँ जमा हैं।

'हम लोग।' देवी सिंह आपे से बाहर हो कर बोले, 'बदमाश! नीच! यहाँ से हटना मत।'

'मैं स्वामिभक्त हूँ।' भर्राए हुए गले से रामदयाल बोला, 'मैं स्वामिधर्मी हूँ। मुझे केवल मंदिर की अधिष्ठात्री की ही रक्षा अभीष्ट नहीं है, किंतु जिनके एक संकेत मात्र से मैं अपना सिर घूरे पर काट कर फेंक सकता हूँ उनकी भी रक्षा वांछनीय है और यही कुछ दिनों से मेरा अपराध आपकी द ष्टि में रहा है।'

कोई उत्तर न देकर देवी सिंह ने दूसरा प्रश्न किया, 'राजा सबदल सिंह का

**शब्दार्थ :**
**अनायास** – सहज ही
**नराधम** – नीच आदमी
**देवालय** – मंदिर
**अधिष्ठात्री** – देवी

टिप्पणी

निवास-स्थान क्या यहाँ से बहुत दूर है?'

रामदयाल ने उत्तर दिया, 'ज़रा दूर है। मैं बुला लाऊँ? जाता हूँ?

'नहीं, कदापि नहीं। 'देवी सिंह ने कड़क कर कहा, 'यहीं खड़ा रह।'

रामदयाल हट नहीं पाया। आधे क्षण उपरांत देवी सिंह ने उसी वेग से फिर पूछा, 'वह स्त्री कहाँ है?'

रामदयाल एक दीर्घ निःश्वास परित्याग कर बोला, 'वह बेचारी आफ़त की मारी, पदवंचित और कहाँ होगी?'

'क्या ? कहाँ छिपाया है?'

**गोमती का देवी सिंह के समक्ष उपस्थित होकर वार्तालाप करना।**

'यहाँ। और जो कुछ मन में हो, सो कर डालिए। चूकिए नहीं।' गोमती ने पीछे से आ कर कहा। अंचल के सामने के नीचे छोर पर दोनों हाथ बाँधे गोमती बेधड़क राजा के सामने आकर खड़ी हो गई। देवी सिंह ने गोमती को पहले कभी नहीं देखा था। घटना की आकस्मिकता से वह चकित हो गया। रामदयाल पर आँख अपने आप जा पड़ी। वह शायद पहले से तैयार था। बोला, 'महाराज ने शायद न पहचान पाया हो परंतु मैं विश्वास दिलाता हूँ कि बहुत दिन कष्ट में बीते हैं। महारानी ने कष्ट में जीवन बिताना अच्छा समझा, परंतु स्वाभिमान के विरुद्ध अपने आप आपके पास जाना उचित नहीं समझा।'

गोमती क्रुद्ध हो कर बोली, 'रामदयाल, तुम मेरे लिए कुछ भी मत कहो। वह धर्मशास्त्र को बहुत अच्छी तरह जानते हैं। सामंत-धर्म का वीरों की तरह निर्वाह करते हैं। जो कुछ शेष रह गया हो, उसे भी कर डालने दो। मेरे बीच में मत पड़ो।'

रामदयाल, देवी सिंह से बोला, 'महाराज को याद होगा कि उस दिन, अभी बहुत समय नहीं हुआ, पालर में किसी के हाथ पीले करने के लिए बारात सजा कर लाए थे। लड़ाई हो पड़ी, घायल हो गए, फिर वे हाथ पीले न हो पाए। अब तक वे ज्यों-के-त्यों हैं और ये हैं। खैर, अब मुझे मार डालिए।'

देवी सिंह का हाथ खड्ग पर नहीं गया। छाती पर हाथ बाँधे हुए बोले, 'झूठी बात बनाने में इस धरती पर तेरी बराबरी का शायद और कोई न मिलेगा। सच-सच बतला, छोटी रानी को कहाँ छिपाया है? मेरे सामने पहेलियों में बात मत करना, नहीं तो मैं इस स्थान की भी मर्यादा भूल जाऊँगा।'

फिर नरपति की ओर देखते हुए राजा ने कहा, 'मैंने आपको अब पहचाना। कुछ समय हुआ, आप मेरे पास गए थे।'

नरपति कुछ देर से कुछ कहने के लिए उतावला-सा हो रहा था। बोला, 'बहुत दिनों से आपकी इस थाती को हम लोग टिकाए हुए थे। अब आप स्वयं गोमती को लिवाने आ गए हैं, लेते जाइए। सयानी लड़की को अपने घर ही पर रहना अच्छा होता है। इस समय जो कुछ थोड़ी-सी कड़ुआहट पैदा हो गई, उसे बिसार दीजिएगा।'

'किसे लिवा लेता जाऊँ?' देवी सिंह ने कहा।

'किसे लिवा ले जाएँगे?' गोमती ने तमककर पूछा। बोली, 'क्या मैं कोई ढोर-गाय हूँ?'

देवी सिंह ने नरपति से कहा, 'मैंने इन्हें आज के पहले कभी नहीं देखा। संभव है, वह पालर की रहने वाली है। आपने मुझसे दलीप नगर में कहा था। परंतु मैं इस समय इन्हें

टिप्पणी

कहीं भी लिवा ले जाने में असमर्थ हूँ।

लड़ाई हो रही है। तोपें गोले उगल रही हैं। मार-काट मची हुई है। अब शांति स्थापित हो जाए, तब इस प्रश्न पर विचार हो सकता है। मैं इस समय यह जानना चाहता हूँ कि छोटी रानी कहाँ है? यहाँ हैं या नहीं?'

कुमुद बोली, 'इस नाम की यहाँ कोई नहीं हैं। मैं दूसरा ही प्रश्न करना चाहती हूँ। क्या आप समझते हैं कि स्त्रियों में निजत्व की कोई लाज नहीं होती?'

देवी सिंह ने नरम स्वर में उत्तर दिया, 'आप सब लोग मेरे साथ रक्षा के स्थान में चलना चाहें तो अभी ले चलने को तैयार हूँ, परंतु दूसरे प्रसंग वर्तमान अवस्था के अनुकूल नहीं हैं।'

'मैं नहीं जाऊँगी।' क्षीण स्वर में गोमती ने कहा। फिर क्षीणतर स्वर में बोली, 'दुर्गा मेरी रक्षा करेंगी।' तुरंत धड़ाम से प थ्वी पर गिर कर अचेत हो गई। कुमुद उसे सँभालने के लिए उससे लिपट-सी गई।

राजा देवी सिंह यथार्थ दशा समझने के लिए उसकी ओर झुके। ज़रा दूर से ही कुंजर सिंह सब सुन रहा था, परंतु इस समय दीपक के टिमटिमाते प्रकाश में उसे वास्तविक वस्तु-परिचय न हुआ। इतना ज़रूर भान हुआ कि देवी सिंह किसी भीषण दुर्घटना के जिम्मेदार हो रहे हैं।

इतने में रामदयाल चिल्लाया, 'सर्वनाश होता है।'

**देवी सिंह तथा कुंजर के बीच विवाद का बढ़ना तथा तलवारें खींच लेना।**

कुंजर सिंह ने तलवार खींच ली। ज़ोर से बोला, 'न होने पाएगा।' और लपक कर देवी सिंह के पास जा पहुँचा।

देवी सिंह ने भी तलवार खींच ली। उनके साथियों के भी खड्ग बाहर निकल आए। पहरेवालों ने भी समझा कि गोलमाल है। वे हथियार ले कर भीतर घुस आए।

कुंजर सिंह से देवी सिंह बोला, 'दुष्ट, छली, सँभल!'

कुमुद गोमती को छोड़ कर खड़ी हो गई! परंतु विचलित नहीं हुई। कोमल किंतु द ढ़ स्वर में बोली, 'देवी के मंदिर में रक्त न बहाया जाए।'

देवी सिंह रुके। कुंजर सिंह ने भी वार नहीं किया।

कुमुद ने फिर कहा, 'राजा, आपको यह शोभा नहीं देता।'

'मेरा इसमें कोई अपराध नहीं।' 'देवी सिंह बोला, 'यह मनुष्य नाहक बीच में आ कूदा।'

'देवी सिंह' कुंजर सिंह ने दाँत पीस कर कहा, 'ना मालूम यहाँ ऐसी कौन-सी शक्ति है, जो मुझे अपनी तलवार तुम्हारी छाती में ठूँसने से रोक रही है। तुम तुरंत यहाँ से चले जाओ। बाहर जाओ।'

'जाइए।' कुमुद भी बिना किसी क्षोभ के बोली।

देवी सिंह की आँखों में खून-सा आ गया। तो भी स्वर को यथासंभव संयत करके बोले, कुंजर सिंह, मैं आज ही तुम्हारा सिर धड़ से अलग करना चाहता था। परंतु यहाँ न कर सका, इसका उस समय तक खेद रहेगा जब तक तुम्हारा सिर धड़ पर मौजूद है।'

उस अँधेरे में तारों के प्रकाश में मार्ग टटोलता हुआ देवी सिंह पत्थरों और पठारियों की ऊबड़-खाबड़ भूमि लाँघता हुआ नदी की ओर उतर गया।

टिप्पणी

थोड़ी देर में सबदल सिंह मंदिर के पास आया। चिल्ला कर बोला, 'कुंजर सिंह' यह क्या है, कहाँ हो?'

चिल्लाहट के पैने किंतु बारीक स्वर में किसी ने मंदिर से कहा 'शत्रुता का निवारण कर रहे हैं।'

यह स्वर कुमुद का था। सबदल सिंह पहचान नहीं पाया, परंतु समझ गया कि दो में से किसी स्त्री का स्वर है और अवस्था संकटमय है। तोपों की ओर जल्दी-जल्दी डग बढ़ा कर उसने फिर कुंजर सिंह को पुकारा।

कुंजर सिंह के पास पहुँच कर सबदल सिंह ने पूछा, 'क्या था कुमार? क्या राजा देवी सिंह आए थे?'

कुंजर सिंह उत्तर नहीं दे पाया। उसके उसी सैनिक ने, जिसने देवी सिंह पर विराटा गढ़ी के पास आने के समय ही संदेह किया था, कहा, 'देवी सिंह कैसे हो सकते थे? मुसलमान लोग हिंदुस्तानी वेश रख कर घुस आए थे। मैंने उसी समय कह दिया था, परंतु कुँवर को विश्वास था कि दलीप नगर के राजा ही हैं। इनके साथ कुछ बातचीत भी हो पड़ी थी। न मालूम क्यों उसी समय काट कर नहीं डाल दिया?'

'मुसलमान थे?' सबदल सिंह ने आश्चर्य से कहा, 'पठारी का पहरा कमज़ोर हो गया था?'

'न' वह सिपाही तुरंत बोला, 'कुँवर तलवार खींच कर तुरंत दौड़ पड़े थे और हम लोग तैयार थे, परंतु उसके वेश और देवी सिंह की नकल के धोखे में आ गये।'

उस सिपाही को अपने मन में इस अन्वेषण पर बड़ा हर्ष हो रहा था।

'क्या बात थी?' सबदल सिंह ने कुंजर सिंह से पूछा, 'आप चुप क्यों हैं?'

कुंजर सिंह ने उत्तर दिया, 'यह सिपाही ठीक कह रहा है। हम लोग धोखे में आ गए थे।'

'तब रामनगर–पतन की बात निरी गप थी?' सबदल सिंह ने रामनगर गढ़ी की ओर देखते हुए प्रश्न किया, 'न मालूम कब विपद् से छुटकारा मिलेगा?'

कुंजर सिंह ने बेतवा की दूर बहती हुई धार की ओर देखते हुए उत्तर दिया, 'अभी तक हम थोड़े से आदमियों ने जैसी और जिस तरह से लड़ाई लड़ी है, वह आपसे छिपी नहीं है। अब और घोर, घोरतर युद्ध होगा, आप विश्वास रखें। हमारे गोलंदाज आज रात में रामनगर को चकनाचूर कर डालेंगे।

सबदल सिंह क्षमा-प्रार्थना के स्वर में बोला, 'आपके कौशल से ही अब तक हम इने-गिने मनुष्य अपने पैरों पर खड़े हुए हैं।'

थोड़ी देर में रामदयाल कुंजर सिंह के पास आया। हाथ जोड़ कर बोला, 'क्या मेरा अपराध क्षमा किया जाएगा?'

कुंजर सिंह ने थोड़ी देर पहले रामदयाल को शत्रु रूप में देखा था। उसके जी में रामदयाल के लिए इस समय बहुत घ णा न थी। उसने उत्तर दिया, 'और बातें पीछे देखी जाएँगी। हम इस समय यह चाहते हैं कि देवी सिंह के इस तरह यहाँ घुस आने का समाचार इधर-उधर न फैलने पावे।'

रामदयाल ने इस प्रस्ताव को समझ लिया। कहा, 'उसमें मेरा लाभ ही क्या है? उलटे

टिप्पणी

मुसीबत में पड़ने का डर है।'

'मंदिर में कुशल है?' कुंजर सिंह ने पूछा।

'मेरे इस समय यहाँ आने का कारण वही बात है।' रामदयाल ने उत्तर दिया, 'गोमती की हालत खराब मालूम होती है। आप एक क्षण के लिए चलिए।'

गोलंदाजों को रामनगर पर अनवरत गोले बरसाने का हुक्म देकर कुंजर सिंह रामदयाल के साथ चला गया।

## खंड-इकसठ

कुमुद गोमती का सिर अपनी गोद में रखे टकटकी बाँधे कुँजर सिंह की ओर देख रही थी-मानो काफ़ी समय से उसकी प्रतीक्षा कर रही हो।'

**गोमती का अचेत होना तथा कुंजर सिंह का कुमुद और गोमती को किसी दूसरे सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने का प्रस्ताव।**

कुंजर सिंह ने बड़ी उत्कंठा के साथ कुमुद से पूछा, 'अवस्था बहुत बुरी तो नहीं है?'

कोमलतापूर्ण कंठ से कुमुद बोली, 'बहुत बुरी तो नहीं जान पड़ती, परंतु कुछ उपचार आवश्यक है।'

'बहुत संयत स्वर में कुंजर सिंह ने कहा, 'आज्ञा हो।'

गोमती की ओर देख कर कुमुद बोली, 'यह दुखिनी है और कोमल। हम लोगों का कुछ ठीक नहीं, यहाँ क्या हो। शीघ्र अच्छी हो जाएगी। परंतु अच्छे होते ही इसे किसी सुरक्षित स्थान में पहुँचा देना चाहिए।'

'पहुँचा दिया जाएगा।' कुंजर सिंह ने उत्तर दिया।

कुंजर सिंह कुछ और कहता, परंतु कुमुद ने रोक कर पूछा, 'वह यहाँ तक कैसे आए? चारों ओर मुसलमानों और उनके सहायकों की सेनाएँ रुकी हुई हैं।'

कुमुद के साथ वह छल नहीं कर सकता था। बहुत बारीक आह को दबाकर उसने उत्तर दिया, 'रामनगर पर उसका अधिकार हो गया है। कम-से-कम वह कहता यही था। इसीलिए शायद यहाँ तक चला आया।'

कुमुद ने कहा, 'आपकी तोपें किस ओर गोले फेंक रही हैं?'

'रामनगर पर।' कुंजर सिंह का सहज उत्तर था।

कुमुद ने अपने आँचल से गोमती पर हवा करते हुए कहा, 'मैं भी यही सोच रही थी।'

'क्यों?' कुंजर सिंह ने ज़रा डरते हुए प्रश्न किया।

कुमुद बोली, 'आपको कभी-न-कभी देवी सिंह से लड़ना ही पड़ेगा; परंतु अवस्था कुछ भयानक हो जाएगी।'

'मैंने एक उपाय सोचा है।' कुंजर सिंह ने कहा, 'मुझे एक चिंता सदा लगी रहती है।'

आँखें नीचे किए हुए ही कुमुद ने पूछा, 'क्या?'

'यह खोह सुरक्षित नहीं है। किसी दूसरे स्थान में आपको पहुँचा कर फिर निश्चितता के साथ यहाँ लड़ता रहूँगा।'

'मैं नहीं जाऊँगी।' कुमुद ने धीरे से कहा।

'मैं नहीं जाऊँगी।' क्षीण स्वर में अचेत गोमती बोली।

कुमुद चौंक पड़ी। गोमती अचेत थी।

टिप्पणी

कुमुद बोली, 'आपके लिए यदि यह स्थान सुरक्षित है, तो मेरे लिए भी।' फिर मुस्करा कर कहा, 'मुझे आपकी तोपों पर विश्वास है।'

कुंजर सिंह की देह-भर में रोमांच हो आया। उसे ऐसा जान पड़ा मानो आकाश के नक्षत्र तोड़ लाने की सामर्थ्य रखता हो। कुछ कहना चाहता था। अवाक् रह गया। उसी समय नरपति और रामदयाल के आने की आहट मालूम हुई।

कुमुद ने जल्दी से कहा, 'यदि रामदयाल अविश्वसनीय हो तो उसके सहारे गोमती को नहीं छोड़ना चाहिए।'

औषधोपचार के बाद गोमती को चेत आने लगा। अर्द्ध-चेतनावस्था में बोली, 'वह कहाँ है?'

जब गोमती को बिल्कुल चेत आ गया, वह अपने सिर को कुमुद की गोद से उठाने लगी। कुमुद ने रोक लिया। बोली, 'लेटी रहो।'

कुंजर सिंह ने कहा, 'रात बहुत हो रही है। अब आप लोग अपनी खोह में चले जाएँ।'

कुमुद इत्यादि वहाँ से चली गईं।

उस रात कुंजर सिंह कदाचित् इच्छा होने पर भी खोह के पास न जा सका। रात-भर बेतरह रामनगर पर गोले ढाए। उधर से भी तोपें गोला उगलती रहीं। परंतु एक बात का आश्चर्य कुंजर सिंह को हो रहा था। अलीमर्दान की ओर से विराटा पर एक तोप ने भी वार नहीं किया। कुंजर सिंह ने भी शायद यह समझ कर कि पहले एक शत्रु से सुलझ लें, फिर दूसरे को देख लेंगे, अलीमर्दान को नहीं छेड़ा।

## खंड-बासठ

सवेरे सबदल सिंह कुंजर सिंह के पास आया। उदास था। बिना किसी भूमिका के बोला 'रामनगर पर देवी सिंह का अधिकार हो गया है। आपने रामनगर पर गोले क्यों बरसाए?'

कुंजर सिंह ने उत्तर दिया, 'पहले मेरे मन में भी कुछ इसी तरह की कल्पना जगी थी, परंतु पीछे विश्वास हो गया कि रामनगर पर अभी देवी सिंह का दखल नहीं हुआ है।'

'परंतु नरपति सिंह दूसरी ही बात कहते हैं।'

'वह धोखे में आ गए हैं।'

'और गोमती?'

'वह भी; और रामदयाल भी। वह छद्मवेश में था।'

'रामदयाल कहता था कि धोखा-सा था। मान लीजिए, देवी सिंह नहीं थे, तो वह इस तरफ क्यों और कैसे आए?'

'कैसे आए वे लोग, सो तो आपको मालूम ही हो चुका है; परंतु उस व्यक्ति के देवी सिंह होने में बिल्कुल संदेह है।'

'खैर, दो-एक दिन में मालूम हो जाएगा, परंतु यदि वास्तव में रामनगर देवी सिंह के अधिकार में है, तो उस ओर गोलाबारी करना आत्मघात के समान होगा।'

'और यदि रामनगर अलीमर्दान या रानियों के हाथ में है, तो उस गढ़ पर गोले न चलाना आत्मघात से भी बुरा सिद्ध होगा।'

कुंजर सिंह ने अपनी बात की पुष्टि का प्रण कर लिया था। बोला, 'यदि आपकी इच्छा

**शब्दार्थ :**
**बेतरह** – बुरी तरह
**आत्मघात** – आत्महत्या
**मुरकना** – मोड़ना

हो, तो मैं तोपों का मुँह मुरका दूँ?'

सबदल तोपों का कुल भार कुंजर सिंह को सौंप चुका था। वह सहमत न हुआ। कहा, 'तोपों के संचालन का संपूर्ण कार्य आपके हाथ में है। मैं हस्तक्षेप नहीं करना चहता। असली बात एक-आध दिन में ही मालूम हो जाएगी। यदि वास्तव में रामनगर देवी सिंह के अधीन हो गया है, तो कुछ-न-कुछ समाचार किसी-न-किसी प्रकार हमारे पास बिना आए न रहेगा, तब तक आपको जैसा उचित जान पड़े, करिए।'

आँख से ओझल होते हुए सबदल को कुंजर सिंह ने देखा। सरल, द ढ़ व्यक्ति। कुंजर को झूठ बोलने के कारण अपने ऊपर बड़ी ग्लानि हुई। तुरंत ही उसने मन में कहा—इसने जितना विश्वास मेरा कर रखा है, उससे कहीं अधिक मूल्य इसे दूँगा। इस गढ़ी की रक्षा में अंतिम श्वास की होड़ लगाऊँगा। इसे भ्रम में डालने के सिवा मुझे कोई और उपाय न सूझा। क्या करूँ, देवी सिंह ने झूठ बोलने के लिए विवश किया।

## खंड-तिरेसठ

रामदयाल भी छोटी रानी के डेरे पर पहुँचा। कालपी की सेना की छावनी के एक सुरक्षित कोने में एक छोटा-सा तंबू खड़ा था। उसी में छोटी रानी अपने कुछ आदमियों के साथ थीं। भाग कर जब रामनगर में रानी आई थीं तब से अब उनके गौरव में और भी कमी हो गई थी।

रामदयाल को देख कर रानी ने कहा, 'इन दिनों कहाँ छिपा था?'

रामदयाल ने कुछ डरते हुए हाथ जोड़ कर उत्तर दिया, 'मैं विराटा में जासूसी के काम पर नियुक्त था।'

'वहाँ क्या जासूसी की?'

'देवी सिंह का सेवक बन कर कुछ समय तक रहा। कुंजर सिंह ने कल पहचान लिया। लगभग उसी समय देवी सिंह भी वहाँ आ गए। उन्होंने भी पहचान लिया। दोनों को लड़ा-भिड़ाकर यहाँ चला आया हूँ। देवी सिंह रामनगर चले आए हैं और अब कुंजर सिंह रामनगर पर गोले बरसा रहे हैं।'

अपनी दशा की याद करके रानी ने कहा, 'अब और किसी के हाथ से कुछ होता नहीं दिखाई देता। यदि दिलेर आदमियों की एक छोटी-सी सेना मुझे मिल जाए, तो मैं कुछ करके दिखला दूँ। क्या कुंजर सिंह अपना पुराना पागलपन छोड़ कर हमारा साथ देने को तैयार हो जाएगा?'

रामदयाल ने उत्तर दिया, 'कुंजर सिंह का पागलपन अब और बढ़ गया है। जिसे विराटा में देवी का अवतार या देवी की पुजारिन बतलाया जाता है, वह उनके कुल कर्त्तव्य की लक्ष्य है। नवाब की एक बड़ी सेना शीघ्र ही यहाँ आने वाली है।'

धीरे स्वर में छोटी रानी बोलीं, 'अब वही एक आधार है। मुझे चाहे राज्य न मिले, कुंजर सिंह राजा हो जाए या कोई और, परंतु देवी सिंह और वह पिशाच जनार्दन धूल में मिल जाएँ। रामदयाल, मेरा प्रण न पूरा हो पाया! यदि मेरे मरने के पहले कम-से-कम जनार्दन का सिर काट लाता, तो मुँहमाँगा इनाम देती, परंतु तेरे किए कुछ न हुआ।'

रामदयाल ने उत्साहित हो कर कहा, 'नहीं महारानी, जनार्दन का सिर अवश्य किसी दिन काट कर आपके सामने पेश करूँगा।'

टिप्पणी

## खंड-चौंसठ

विराटा की गढ़ी पर गोला-बारी बढ़ गई। कुंजर सिंह की तोपें उत्तर देने लगीं। परंतु कुंजर सिंह ने एक घंटे के भीतर ही देख लिया कि समस्या अत्यंत विकट हो गई है और अधिक समय तक विराटा की गढ़ी को सुरक्षित रखना संभव न होगा।

तोपों के ऊपर अपने चुस्त तोपचियों को छोड़ कर वह कुमुद के पास गया। खोह में इस समय नरपति न था।

'कुंजर सिंह ने धीमे स्वर में कहा, 'विदा माँगने आया हूँ।'

कुमुद उसके असाधारण तने हुए नेत्र देख कर चकित हो गई। कोमल स्वर में पूछा, 'क्यों? क्या...'

'अंतिम विदाई के लिए आया हूँ। आज की संध्या देखने का अवसर मुझे न मिलेगा। चार-छह घंटे में यह गढ़ ध्वस्त हो जाएगा और रामनगर की सेनाएँ प्रवेश करेंगी। कुछ डर मत करना, खोह में ही बनी रहना। कोई सेना आपका अपमान नहीं कर सकेगी।'

कुमुद कुछ चुप रही। स्वर को संयत करके बोली, 'दुर्गा कल्याण करेंगी, विश्वास रखिए।'

'दुर्गा और आपका विश्वास ही तो मुझसे काम करवा रहा है।' कुंजर सिंह ने कहा, 'इसीलिए आपसे इसी समय बिदा माँगने आया हूँ। दुर्गा से मरते समय बिदा मागूँगा।'

कुमुद की आँखें तरल हो गईं। ऐसी शायद ही कभी पहले हुई हों; जैसे गुलाब की पंखुड़ी पर बड़े-बड़े ओस कण ढलक आए हों। उन्हें किसी तरह छिपा कर कुमुद ने कंपित स्वर में कहा, 'मैं आपके साथ चलूँगी।'

**युद्ध में जाने से पूर्व कुंजर का कुमुद से विदा लेना।**

'मेरे साथ!' सिपाही कुंजर बोला, 'नहीं कुमुद, यह न होगा। गोलों की वर्षा हो रही है। उस संकट में आपको नहीं जाने दूँगा।'

'मैं चलूँगी।'

कुमुद की आँखों में अब आँसू न थे। कुंजर ने द ढ़ता के साथ कहा, 'देवी सिंह की महत्त्वाकांक्षा पर मुझे बलिदान होना है, आपको नहीं। आप इसी खोह में रहें।'

'अभी मत जाओ।' क्षीण स्वर में कुमुद ने कहा, 'ज़रा ठहर जाओ। गोलाबारी थोड़ी कम हो जाने दो।' और बड़े स्नेह की द ष्टि से कुमुद ने कुंजर के प्रति देखा।

कुंजर सिंह उत्साहपूर्ण स्वर में बोला, 'मैं अभी थोड़ी देर और नहीं मरूँगा। देवी सिंह के सिर पर तलवार बजा कर फिर मरूँगा।'

कुमुद चुप रही। जल्दी-जल्दी उसकी साँस चल रही थी। आँखें नीची किए खड़ी थी। कुंजर सिंह भी चुप था। तोपों की धूम-धड़ाम आवाजें आ रही थीं।

कुछ क्षण बाद कुंजर ने कहा, 'तुम मेरे ह्रदय की अधिष्ठात्री हो, मालूम है?'

कुमुद का सिर न मालूम ज़रा-सा कैसे हिल गया। आँखें फिर तरल हो गईं।

'तुम मेरी हो?' आवेशयुक्त स्वर में कुंजर ने प्रश्न किया।

कुमुद ने कुछ उत्तर नहीं दिया।

कुंजर सिंह ने उसी स्वर में फिर प्रश्न किया, 'मैं तुम्हारा हूँ?'

कुमुद नीचा सिर किए खड़ी रही।

**शब्दार्थ :**
**तरल** – नम, गीली
**पंखुड़ी** – फूल का दल

टिप्पणी

कुंजर सिंह ने बड़े कोमल स्वर में प्रस्ताव किया, 'कुमुद, एक बार कह दो कि तुम मेरी हो और मैं तुम्हारा हूँ, संपूर्ण विश्व मानो मेरा हो जाएगा और देखना, कितने हर्ष के साथ मैं प्राण विसर्जन करता हूँ।'

कुमुद ने सिर नीचा किए ही कहा, 'आप अपनी तोपों को जा कर सँभालिए। मैं दुर्गाजी से आपकी रक्षा और विजय के लिए प्रार्थना करती हूँ।'

कुंजर सिंह ने हँस कर कहा, 'उसके विषय में तो दुर्गा ने पहले ही कुछ और तय कर दिया है।'

किसी पूर्व-स्म ति ने कुमुद के हृदय पर एकाएक चोट की। 'दुर्गा ने पहले ही कुछ और तय कर दिया है।' इस वाक्य ने कुमुद के कलेजे में बरछी-सी छेद दी। वह विस्फारित लोचनों से कुंजर की ओर देखने लगी। चेहरा एकाएक कुम्हला गया। होंठ काँपने लगे। उसे ऐसा जान पड़ा, जैसे लड़खड़ा कर गिरना चाहती हो। सहारा लेकर बैठ गई। दोनों हाथों से सिर पकड़ लिया।

कुंजर सिंह ने पास आ कर उसके सिर पर हाथ रखा, 'क्या हो गया है कुमुद? घबराओ मत। तुम दूसरों को धैर्य बँधाती हो। स्वयं अपना धैर्य स्थिर करो। संभव है, मैं आज की लड़ाई में बच जाऊँ।'

कुमुद फिर स्थिर हो गई। बोली, 'मैं आज लड़ाई में तुम्हारे साथ ही रहूँगी। मानो।'

कुंजर सिंह कुछ क्षण कोई उत्तर न दे पाया। कुमुद ने फिर कहा, 'वहाँ पास रहने से आपके कर्त्तव्यपालन में विघ्न न होगा और मैं दुर्गा की प्रार्थना भी कर सकूँगी।'

कुंजर बोला, 'केवल एक बात मुँह से सुनना चाहता हूँ।'

बहुत मधुर स्वर में कुमुद ने पूछा 'क्या?'

'तुम मुझे भूल जाना!'

नीचा सिर किए हुए ही कुमुद ने कुंजर की ओर देखा। थोड़ी देर देखती रही। आँखों से आँसुओं की धार बह चली।

कंपित स्वर में कुंजर सिंह ने पूछा, 'भुला सकोगी?'

कुमुद के होंठ कुछ कहने के लिए हिले, परंतु खुल न सके। आँखों से और भी अधिक वेग से प्रवाह उमड़ा।

कुंजर सिंह की आँखें भी छलक आईं! बड़ी कठिनाई से कुंजर सिंह के मुँह से ये शब्द निकले, 'प्राणप्यारी कुमुद, सुखी रहना। एक बार मेरी तलवार की मूठ छू दो।' तुरंत कुमुद उसके सन्निकट आ कर खड़ी हो गई। उसका एक कोमल कर कुंजर सिंह की कमर में लटकती हुई तलवार की मूठ पर जा पहुँचा और दूसरा उसके उन्नत भाल को छूता हुआ

**चित्र : कुमुद को गले लगाते हुए कुंजर सिंह**

**शब्दार्थ :**
**विस्फारित** – फैले हुए

टिप्पणी

उसके कंधे पर जा पड़ा।

ऊपर गोले साँय-साँय कर रहे थे। तोपचियों ने कुंजर सिंह को पुकारा। कुंजर ने अपना एक हाथ कुमुद की पीठ पर धीरे से रखा और फिर ज़ोर से उसे हृदय से लगा लिया। कुमुद ने अपना सिर कुंजर के कंधे पर रख दिया।

तोपचियों ने कुंजर सिंह को फिर पुकारा।

कुंजर सिंह कुमुद से धीरे से अलग हुआ। बोला, 'यहीं रहना बाहर मत आना। सुखी रहना।'

कुमुद कुछ न बोल सकी।

खोह से बाहर जाते हुए पीछे एक बार मुड़ कर कुंजर ने फिर कहा, 'अगले जन्म में फिर मिलेंगे अवश्य मिलेंगे।'

## खंड-पैंसठ

अलीमर्दान शीघ्र युद्ध समाप्त करना चाहता था। दीर्घकाल तक लगातार लड़ते रहना किसी पक्ष के भी मन में न था। छोटी रानी को कुछ समय पहले वह सहायक समझता था, परंतु अब उसके लिए भार सी होती जा रही थीं। विराटा की पद्मिनी के लिए उसका जी उत्सुकता से भरा हुआ था। देवी सिंह को यदि वह चार-छह कोस ही पीछे हटा सकता और थोड़ा-सा अवकाश पा कर कुमुद को विराटा से अपने साथ ले जाता, तो भी वह अपने को विजयी मान लेता। विराटा और रामनगर के छोट-छोटे से राज्य उसकी महत्त्वाकांक्षा के क्षितिज नहीं थे। उसकी राजनीतिक कल्पनाओं के केंद्र दिल्ली और कालपी थे।

अपनी ही उमंग और सनक से उत्तेजित हो कर उसने अपने एक सरदार को बुलाया। कहा, 'देवी सिंह पर ज़ोर का हमला करके उसे पीछे हटाना बहुत जरूरी है। विराटा को भी आँख से ओझल नहीं होने देना चाहिए। यदि विराटा वालों के ध्यान में पूर्व दिशा की ओर भाग खड़े होने की बात समा गई, तो फिर कुछ हाथ नहीं लगेगा। सारी मेहनत बेकार हो जाएगी।'

'जब तक कुंजर सिंह विराटा में है' उसने मंतव्य प्रकट किया, 'तब तक वहाँ की चिंता नहीं है। वह बराबर देवी सिंह की सेना पर गोलाबारी करता रहेगा।'

अलीमर्दान उत्तेजित स्वर में बोला, 'मैं चाहता हूँ अपने सिपाही बढ़ कर हाथ करें।

देवी सिंह पीछे हटाया जाए। तुम रानी को साथ ले कर पहल करो। मैं एक दस्ता ले कर विराटा पर धावा करता हूँ। आगे तकदीर।'

अलीमर्दान और सरदार इस अभीष्ट से अपने स्थान से बाहर जाने को ही थे कि एक हरकारा सामने आया।

'हुजूर!' हाँफता हुआ बोला, 'दिल्ली से खानदौरान का पत्र आया है।' हरकारे ने अलीमर्दान के हाथ में चिट्ठी दी। दिल्ली का सिंहासन संकट में था। दिल्ली में ही दिल्ली का एक सरदार विमुख हो गया था। और सरदार पर इतना भरोसा न था जितना अलीमर्दान पर। अलीमर्दान को तुरंत सेना समेत दिल्ली आने के लिए पत्र में लिखा था। पत्र पर बादशाह की मुहर थी। खानदौरान ने उसे भेजा था। खानदौरान के बनने-बिगड़ने पर अलीमर्दान का, इस तरह के अनेक सरदारों की भाँति, भविष्य निर्भर था। इसलिए

**शब्दार्थ :**
**हरकारा** – पत्रवाहक
**कसदार** – जोरदार

टिप्पणी

वह पत्र फरमान के रूप में था और अनिवार्य था।

अलीमर्दान ने सरदार को पत्र या फरमान दे दिया। उसने पढ़ कर मुस्करा कर कहा, 'हुजूर को शायद पहले से कुछ मालूम हो गया था। कल के लिए लड़ाई का जो कुछ ढंग तय किया गया है, वह इस फरमान की एक लकीर के खिलाफ नहीं जा रहा है।'

अलीमर्दान भी उत्साहित हो कर बोला, 'इसमें संदेह नहीं कि इस परवाने से कल की लड़ाई को दोहरा ज़ोर मिलना चाहिए। भाई खाँ, अगर लड़ाई चींटी की रफ़्तार से चली, तो कल ही या ज्यादा-से-ज्यादा दो दिन बाद हमें देवी सिंह से सुलह करनी पड़ेगी और जीते-जिताए मैदान को छोड़कर चला जाना पड़ेगा। अंत में कुंजर सिंह और उनके देवी-देवता कहीं कूच कर देंगे और फिर हजार लड़ाइयों का भी वह फल न होगा, जो कल की एक कसदार लड़ाई का होना चाहिए। क्या कहते हो?'

सरदार ने उत्तर दिया, 'इंशाअल्लाह! कल ही सवेरे लीजिए, चाहे हमारी आधी सेना कट जाए।'

## खंड-छियासठ

संध्या होने के उपरांत राजा देवी सिंह ने भी दूसरे दिन की समर-योजना के सब छोटे-बड़े अंगों पर विचार करने के बाद यह तय किया कि प्रातः काल के लिए न ठहर कर आधी रात के बाद ही लड़ाई आरंभ कर दी जानी चाहिए। लोचन सिंह संतुष्ट था।

देवी सिंह ने इस योजना में विराटा को भी स्थान दिया। विराटा व्यर्थ ही हमारे कार्य में बाधा डालता है। प्रातः काल होने के पूर्व ही उस पर अधिकार कर लेना चाहिए। फिर दिन में रामनगर और विराटा दोनों गढ़ों की तोपों के गोले अलीमर्दान की सेना पर फेंके जाएँ। इधर लोचन सिंह और जनार्दन खुले में उसकी सेना के पैर उखाड़ दें।

दलीप नगर की सेना खुली लड़ाई की आशा की उमंग में तीन दलों में विभक्त हो कर सावधानी के साथ आधी रात के बाद आगे बढ़ी। एक दल उत्तर की ओर नदी के किनारे-किनारे विराटा की ओर चला। इसका नायक देवी सिंह था। दूसरा दल जनार्दन के सेनापतित्व में नदी के भरकों और किनारों को देवी सिंह के दल की ओट बनाता हुआ उसी दिशा में बढ़ा। लोचन सिंह का दल पश्चिम और उत्तर की ओर से चक्कर काट कर अलीमर्दान की सेना को आगे से युद्ध में अटका लेने और पीछे से घेर कर दबा लाने की इच्छा से उमड़ा। विराटा की गढ़ी से रामनगर पर उस रात कभी थोड़े और कभी बहुत अंतर पर गोले चलते रहे, परंतु देवी सिंह के पूर्वनिर्णय के अनुसार रामनगर से उन तोपों का जवाब नहीं दिया जा रहा था। रामनगर के तोपचियों को आदेश दिया जा चुका था कि जब एक बँधा हुआ संकेत उन्हें अपनी क्षेत्रवर्ती सेना से मिले, तब वे तोपों में बत्ती दें।

लोचन सिंह ने उस रात देवी सिंह के आदेश के अनुसार बहुत सावधानी के साथ कूच किया। उसने अपने सैनिकों से कहा था, 'बिल्ली की तरह दबे हुए चलो और समय आने पर बिल्ली की तरह की झपाटा मारो।' थोड़ी देर तक लोचन सिंह और उसके सैनिकों ने इस सतर्क-व त्ति का पूरी तरह पालन किया, परंतु पग-पग पर लोचन सिंह को उसका अधिक समय तक पालन कर पाना दुष्कर और दुस्सह जान पड़ने लगा।

**शब्दार्थ :**
**दुरूह** – कठिन, दुष्कर
**हताहत** – म त और घायल

टिप्पणी

मार्ग बहुत बीहड़ और ऊँचा-नीचा था। सावधानी के साथ उस पर चलना संभव न था, किंतु अनिवार्य था। परंतु जहाँ मार्ग सुथरा और विस्त त मैदान पर होकर गया था, वहाँ सावधानी का व्रत बनाए रखना स्थिति की व्यग्रता और लोचन सिंह की प्रकृति के विरुद्ध था। इसलिए लोचन सिंह अपने दल के आगे विशुद्ध उमंग से प्रेरित होता हुआ सपाटे के साथ बढ़ने लगा। निकट भविष्य में किसी तुरंत होने वाले भयंकर विस्फोट की कल्पना से उन पके-पकाए सैनिकों का कलेजा धक्-धक् नहीं कर रहा था, परंतु पैर के पास ही किसी छोटी-सी असाधारण आकस्मिक ध्वनि के होते ही सैनिक चौकन्ने हो जाते थे, कभी-कभी थर्रा भी जाते थे और आधे क्षण में उनका धैर्य फिर उनके साथ हो जाता था।

इस तरह से वे लोग करीब आधे कोस बढ़े होंगे कि लोचन सिंह यकायक रुक गया और ज़मीन से घुटनों और छाती के बल सट गया। उसके पीछे आने वाले सैनिक यकायक खड़े हो गए। उनके चलते रहने से जो शब्द हो रहा था, वह मानो सिमट कर केंद्रित हो गया और एक बड़ी गूँज-सी उस जंगल में उठ कर फैल गई।

आकाश में चंद्रमा न था। बड़े-बड़े और छोटे-छोटे तारे प्रभा में डूबते-उतराते से मालूम पड़ते थे। छोटे तारे टिमटिमा रहे थे। तारिकाएँ अपनी रेखामयी आभा आकाश पर खींच रही थीं। पक्षी भरभरा कर व क्षों से उड़-उड़ जाते थे। आकाश के तारों की टिमटिमाहट की तरह झींगुरों की झंकार अनवरत थी। लोचन सिंह ने अपने पास खड़े हुए सैनिक का पैर दबाया। लोचन सिंह के इस असाधारण ढंग से उस सैनिक को तुरंत यह धारणा हुई कि कोई बड़ा और विकट संकट सामने है। वह भी घुटनों और छाती के बल प थ्वी से सट गया। लोचन सिंह के पास अपना कान ले जा कर धीरे से बोला, 'दाऊजू, क्या बात है?'

'सामने और दाएँ-बाएँ से कोई आ रहा है। शायद अलीमर्दान की सेना बढ़ी चली आ रही है– बड़ी सावधानी के साथ।'

कुछ ही क्षण बाद लोचन सिंह को सामने आनेवाला शब्द यकायक बंद होता हुआ जान पड़ा और उसकी दाहिनी ओर नदी की दिशा में बंदूक की आवाज सुनाई पड़ी, लोचनसिंह ने अपने पासवाले सैनिकों से धीरे से कहा, 'अभी हिलना-डुलना मत।'

**लोचन सिंह के नेत त्व में पश्चिम की ओर से अलीमर्दान की सेना से मुकाबला**

जिस दिशा में बंदूक चली थी, उस दिशा में शोर हुआ। एक ओर से कालपी और दूसरी ओर से दलीप नगर की जय का शब्द परस्पर गुँथ गया। तब भी लोचन सिंह का हाथ बंदूक या तलवार पर नहीं गया।

पास खड़े हुए सैनिक ने लोचन सिंह से पूछा, 'दाऊजू, क्या आज्ञा है?'

लोचन सिंह ने कडुवाहट के साथ उत्तर दिया, 'चुप रहो। जब तक मैं कुछ न कहूँ, तब तक चुप रहो।'

जिस दिशा में जय की गूँज उठी थी, उस दिशा में बंदूकों की नाल से निकलने वाली लौ प्रति क्षण बढ़ने लगी और वह नदी की ओर अग्रसर होने लगी।

लोचन सिंह ने धीरे से अपने पास के सैनिक से कहा, 'जान पड़ता है, अलीमर्दान की सेना सब ओर से बढ़ती आ रही है। इस समय जनार्दन की टुकड़ी के साथ मुठभेड़ हो गई है। होने दो। बोलो मत। उसका करतब थोड़ी देर देख लिया जाए।'

पास के सैनिक ने कोई उत्तर नहीं दिया। परंतु पीछे के सैनिकों में से कुछ चिल्ला उठे,

टिप्पणी

'दाऊजू, क्या आज्ञा है?'

इस प्रकार की आवाज उठते ही सामने से कुछ बंदूकों ने आग उगली। लोचन सिंह के पीछे वाले सैनिकों ने उत्तर दिया, परंतु आगे की कतार, जो प थ्वी से सटी हुई थी, उसने कुछ नहीं किया। लोचन सिंह के उन साथियों की बंदूकों की गोलियाँ वायु में फुफकार मारती हुई कहीं चल दीं, किसी के बाल को भी उन्होंने न छुआ होगा, परंतु अलीमर्दान की सेना के उस दल की बाढ़ ने लोचन सिंह के कई सैनिकों को हताहत कर दिया। इसका पता लोचन सिंह को उनके कराहने से तुरंत लग गया।

बहुत शीघ्र लोचन सिंह की दाहिनी ओर लड़ाई ने गहरा रंग पकड़ा। उसकी टुकड़ी का एक भाग और जनार्दन की सेना का बड़ा खंड उसी केंद्र पर सिमट पड़े। देवी सिंह नदी किनारे पर अपने दल को लिए स्थिर हो गया।

लोचन सिंह के निकटवर्ती सैनिक सोचने लगे कि वह कहीं मारा तो नहीं गया, नहीं तो ऐसा किंकर्तव्यविमूढ़ क्यों हो जाता? अलीमर्दान की सेना के उस भाग ने, जो लोचन सिंह के सामने था, सोचा कि इस ओर क्षेत्र रीता है। वह बढ़ा। जब वह लोचन सिंह के बहुत पास आ गया, तब तारों के प्रकाश में लोचन सिंह को एक बढ़ता हुआ झुरमुट-सा जान पड़ा।

लोचन सिंह ने कड़क कर कहा, 'दागो।'

प थ्वी से सटे हुए उसके सैनिकों ने बंदूकों की बाढ़ एक साथ दागी। पीछे के सैनिकों ने भी गोली चलाई। इस बाढ़ से कालपी की सेना का वह भाग बिछ-सा गया। थोड़ी देर में बंदूकों को फिर भर कर लोचन सिंह अपने उस दल को ले कर बढ़ा। कालपी की सेना के योद्धा भी इस मुठभेड़ के लिए सन्नद्ध थे। एक क्षण में ही बंदूकों ने आग और लोहा उगला। फिर धीरे-धीरे बंदूकों की ध्वनि कम और तलवारों की झनझनाहट अधिक बढ़ने लगी। लोचन सिंह पल-पल पर अपने दल के साथ एक भाग के साथ आगे बढ़ रहा था। परंतु वह नदी से बराबर दूर होता चला जा रहा था। उसके दल का दूसरा भाग नदी की ओर कट कर आगे-पीछे होता जाता था। उसी ओर से जनार्दन का दल खूब घमासान करने में लग पड़ा था। कालपी की सेना का भी अधिकांश भाग इसी ओर पिल पड़ा।

कुछ घड़ियों पीछे अलीमर्दान के सरदार को मालूम हुआ कि दलीप नगर की एक सेना का भाग उसके पीछे घूम कर युद्ध करता हुआ बढ़ रहा है। वह धीरे-धीरे पीछे हटने लगा। परंतु लोचन सिंह के बढ़ते हुए दबाव का विरोध करने के लिए उसे रुक जाना पड़ा। युद्ध कभी थम कर और कभी बढ़-घट कर होने लगा। अँधेरे में मित्र-शत्रु की पहचान लगभग असंभव हो गई। सैनिक केवल एक धुन में मस्त थे—'जब तक बाँह में बल है, अपने पास वाले को तलवार के घाट उतारो।'

## खंड-सड़सठ

मुसलमान नायक छोटी रानी और रामदयाल को जिस प्रकार घुमाना चाहता था, वे नहीं घूम पाते थे। इसलिए उसकी प्रगति को बाधा पहुँच रही थी। तो भी वह धैर्य और चतुरता के साथ सैन्य-संचालन कर रहा था। जिस स्थान पर लोचन सिंह के दल के साथ उसकी टुकड़ी की मुठभेड़ हो गई थी, वहाँ पर वह न था। वह जनार्दन के मुकाबले में था।

**शब्दार्थ:**
**किंकर्त्तव्यविमूढ़** – क्या करें क्या न करें इसका निश्चय न कर पाने वाला।
**सन्नद्ध** – तत्पर, तैयार, उद्यत
**अनवरत** – लगातार
**उत्तरोत्तर** – अधिकाधिक
**अक्षुण्ण** – अखंडित
**अनवरत** – लगातार

टिप्पणी

वह सँभल कर, डट कर लड़ना चाहता था। परंतु अँधेरी रात में अपनी इच्छा के ठीक अनुकूल सारी सेना का संचालन करना असंभव था। इधर-उधर सारी सेना गुँथ गई, कोई नियम या संयम नहीं रहा।

रामनगर से विराटा पर तोपें नहीं चल रही थीं। विराटा से इसी कारण उत्तरोत्तर तोपों की बाढ़ बढ़ने लगी। कोई निशाना चूकता था और कोई लगता था। रामनगर की अस्त-व्यस्त दीवारें और द ढ़ बुर्ज धीरे-धीरे भरभरा कर टूट रहे थे। गढ़वर्ती सैनिकों की चिंता पल-पल पर बढ़ती जा रही थी, परंतु देवी सिंह का बँधा हुआ संकेत अभी तक नहीं मिला था।

देवी सिंह ठीक नदी किनारे था। दोनों किनारों के भीतर तोपों और बंदूकों की आवाज दुगुनी-चौगुनी हो कर गर्जन कर रही थी। घायलों का चीत्कार धूम-धड़ाके से मथे हुए सन्नाटे को बीच-बीच में चीर-चीर-सा देता था।

बेतवा अपने अक्षुण्ण कलरव के साथ बहती चली जा रही थी। तारों का न त्य बेतवा की जलराशि पर अनवरत रूप से होता जा रहा था।

देवी सिंह ने अपने पास खड़े हुए एक सरदार से कहा, 'यदि कुंजर सिंह थोड़े समय के लिए भी अपनी मूर्खता के साथ संधि कर ले, तो आज का युद्ध अलीमर्दान के लिए अंतिम हो जाए।' एक क्षण बाद बोला, 'आज रात शायद रामनगर से तोप चलाने का अवसर ही न आवे।'

सरदार ने कोई मंतव्य प्रकट नहीं किया, परंतु प्रश्नसूचक द ष्टि से उसकी ओर देखा।

'इसलिए कि,' 'देवी सिंह ने उत्तर दिया, 'रामनगर से तोप चलाते ही विराटा का नदी-कूल भी बिल्कुल सतर्क हो जाएगा और हम लोग आसानी से विराटा की गढ़ी में प्रवेश न करने पाएँगे।'

इसके बाद देवी सिंह अपने दल को ले कर बहुत धीरे-धीरे और सावधानी के साथ विराटा की ओर बढ़ा।

## खंड-अड़सठ

**अलीमर्दान और देवी सिंह की सेनाओं का सामना। किसी एक प्रहरी का विराटा पर आक्रमण की सूचना देना।**

रात को इस उथल-पुथल ने विराटा को और भी सचेत कर दिया। विराटा में थोड़े से सैनिक थे। साधारण बने रहने में ही उसकी रक्षा थी। उस रात के भयानक हल्ले, असाधारण आक्रमण ने विराटा के प्रत्येक शस्त्रधारी को किसी अनहोनी के लिए बिल्कुल तैयार कर दिया। उस रात, जब तक देवी सिंह की अलीमर्दान के दलों से टक्कर नहीं हुई थी, तब तक कुंजर सिंह की तोपें केवल इस बात का प्रमाण देती रहीं कि उनके तोपची सोए नहीं हैं, परंतु जब बंदूकों की बाढ़ें उन दोनों दलों की भभकीं तब किसी संकट के तुरंत सिर पर आ पड़ने की आशंका ने कुंजर सिंह को बहुत सक्रिय कर दिया।

आक्रमण होने के कुछ घड़ी पीछे ही अलीमर्दान अपने दल के साथ विराटा के नीचे, नदी के किनारे आ गया। उसके बिल्कुल पास ही देवी सिंह का दल भी आकर ठिठक गया था। परंतु दोनों इतनी सावधानी से चले थे कि एक दूसरे की गति को नहीं समझ पाए थे। तो भी विराटा के सतर्क योद्धा की द ष्टि से उन दोनों की गतिविधि न बच पाई। उसने तुरंत अपने गढ़ में इसकी सूचना दी। अभी तक देवी सिंह और अलीमर्दान की

टिप्पणी

सेनाएँ एक-दूसरे के सम्मुख मोर्चा लिए हुए डट रही थीं, इसलिए भी विराटा के थोड़े से मनुष्यों की कुशल-क्षेम बनी रही। परंतु उस प्रहरी को मालूम हो गया कि उनमें से एक का, कदाचित् दोनों का, लक्ष्य विराटा है। यही समाचार तुरंत विराटा के भीतर पहुँचाया गया।

प्रहरी से समाचार पाते ही, सबदल सिंह और उनकी सेना, विश्राम और थकावट से उचट कर सजग हो गई और एक मार्के के ठौर पर इकट्ठी हो गई। सबदल सिंह थोड़ा ही सो पाया था। धँसी हुई आँखों को पोंछता-पोंछता आ गया। कुंजर सिंह भी अपने तोपचियों को कुछ सलाह दे कर उसी समय आया। एक बड़े पीपल के पेड़ के नीचे सब इकट्ठे हो गए। कुंजर सिंह ने कहा, 'आज हम लोगों की विजय-रात्रि है।'

'कदाचित् अंतिम भी' सबदल सिंह बोला।

'रामनगर की गढ़ी मेरी तोपों ने ध्वस्त कर दी। अलीमर्दान और देवी सिंह की सेनाएँ सवेरा होते-होते आपस में लड़-कट कर समाप्त हुई जाती हैं। तब कल विजय अवश्यंभावी है।'

सबदल सिंह ने क्षीण मुस्कराहट के साथ उत्तर दिया, 'हमें जो समाचार अभी मिला है, वह किसी दूसरे भविष्य की ही सूचना देता है। अलीमर्दान की सेना का एक बड़ा भाग किनारे पर आ पहुँचा है। दूसरी ओर से देवीसिंह का एक दल भी निकट आ गया है। रामनगर पर गोले चलाने में कोई बुद्धिमानी नहीं जान पड़ती।'

कुंजर सिंह ने कहा, 'तब किस बात में बुद्धिमानी है?'

'मरने में।' तीक्ष्णता के साथ सबदल सिंह बोला, 'मरने में। देवी सिंह से कोई सहायता प्राप्त नहीं हो सकती। उस ओर से हम बिल्कुल निराश हो चुके हैं। एक-एक पल हमारे लिए बहुमूल्य है। मालूम नहीं, कब अलीमर्दान की सेना यहाँ घुस पड़े और हमारी मर्यादा पर आ बने।'

सबदल सिंह ने धीरे, परंतु द ढ़ता के साथ कहा, 'हम लोगों ने संधि के धर्मसम्मत सब उपाय कर छोड़े। अलीमर्दान हमारी मर्यादा चाहता है। वह हम उसे नहीं देंगे। बाहर से अब किसी सहायता की कोई आशा नहीं है, इसलिए मेरी समझ में केवल एक उपाय आता है।'

उपस्थित लोगों की द ष्टियाँ तारों के क्षीण प्रकाश में उस उपाय को सुनने के लिए सबदल सिंह की ओर घिर गई।

सबदल सिंह ने उसी द ढ़ स्वर में कहा, 'हम सब गढ़ी से निकल कर शत्रुओं से लड़ते-लड़ते मरें। किसी को इंकार हो, तो कह डालने में संकोच न करें।'

कोई न बोला।

सबदल सिंह कहता गया, 'परंतु हम अपने पीछे बाल-बच्चों को अनाथ नहीं छोड़ सकते। अपनी बहू-बेटियों को मुसलमानों के घरों में भेजने से जो कालिख हमारे नाम पर लगेगी, उसे सहस्र गंगा नदियाँ नहीं धो सकेंगी। इसलिए ग्वालियर, चित्तौड़ और चंदेरी में जो कुछ हुआ था, वही विराटा में भी हो।'

'वह क्या?' व्याकुलता के साथ कुंजर सिंह ने प्रश्न किया।

'जौहर।' धीरज के साथ सबदल सिंह ने उत्तर दिया, 'हमारी स्त्रियाँ और बच्चे हम

टिप्पणी

सबको मरा हुआ समझ कर चेतन चिता पर चढ़ जाएँगे और हम सब थोड़े समय बाद ही अपनी तलवारों के विमान पर बैठ कर उनसे स्वर्ग में जा मिलेंगे।'

कुंजर सिंह को यह काव्यात्मक कल्पना कुछ कम पसंद आई। बोला, 'मुझे यह बहुत अनुचित जान पड़ता है। जिन बालकों को गोद में खिलाया है, जिन स्त्रियों के कोमल कंठों के आशीर्वाद से बाँहों ने बल पाया है, उन्हें अपनी आँखों जीते-जी खाक होते हुए कभी नहीं देखा जा सकता। जब लोग सुनेंगे कि हमने अपने हाथों से निर्दोष बालकों को जला मारा, तब क्या कहेंगे?'

सबदल सिंह ने कहा, 'क्या कहेंगे? कहें। हमारे मर जाने के पीछे लोग हमारे लिए क्या कहते हैं, उसे हम नहीं सुनेंगे और फिर ऐसी अवस्था में हमारे बड़ों ने भी तो जगह-जगह यही किया है।'

'यहाँ कदापि न हो।' कुंजर सिंह बोला, 'जीते-जी ऐसा काम क्यों किया जाए कि मरने के समय जिसके लिए पछताना हो और आसानी के साथ मरने में बाधा पहुँचे?'

सबदल सिंह ने क्षीण स्वर में कहा, 'हम लोग कई दिन से यही बात सोच रहे हैं। मरने से यहाँ कोई नहीं डरता। परंतु हमारे पीछे जो विधवाएँ और अनाथ होंगे, उनकी कल्पना कलेजे को तड़पा देती हैं।'

'क्या पहले कभी विधवा या अनाथ नहीं हुए हैं?' अपने मन को आश्वासन देने के लिए अधिक और अपने श्रोताओं को अपेक्षाकृत कम, कुंजर सिंह ने कहा, 'यदि हमारा यही सिद्धांत है, तो हमें कभी न मरने का ही उपाय सोचना चाहिए और जब हमारे सामने हमारे सब प्रियजन समाप्त हो जाएँ, तब हमें मरना चाहिए। जब रणक्षेत्र में सैनिक जाता है, तब क्या वह यह सब सोच-विचार ले कर जाता है? चलो, हम सब मरने के लिए बढ़ें। एक-एक प्राण का मूल्य सौ-सौ प्राण लें और अपने बाल-बच्चों को परमात्मा के भरोसे छोड़ें। उनके लिए हमें इसलिए भी नहीं डरना चाहिए कि हमारे विरोधियों में अनेक हिंदू भी हैं।'

**सबदल सिंह द्वारा रण क्षेत्र में जान की बाजी लगा देने का प्रस्ताव।**

सबदल सिंह के साथियों ने इस बात को मान लिया। वे सब मरने से नहीं हिचकते थे, परंतु अपने नन्हे बच्चों को अपने हाथ से नष्ट नहीं कर सकते थे।

'परंतु।' उनमें से एक असाधारण उत्साह के साथ बोला, 'केसरिया बाना हम अवश्य पहनेंगे। मौत के साथ हमारा ब्याह होना है, हम सादा कपड़ा पहन कर दूल्हा नहीं बनेंगे।'

घोर विपत्ति में भी मनुष्य का साथ हँसी नहीं छोड़ती। वे सब इस बात पर थोड़े हँसे और सभी ने इस बात को पसंद किया।

सबदल सिंह बोला, 'परंतु केशर शायद ही विराटा-भर में किसी के घर मिले।' उन सैनिकों में से जिसने दूल्हा बनाने का प्रस्ताव किया था, कहा, 'मैं अभी ढूँढ़ कर लाता हूँ। केशर न मिलेगी, तो हल्दी तो मिलेगी। मौत के हाथ भी तो उसी से पीले होंगे।' और तुरंत वहाँ से अद श्य हो गया।

सबदल सिंह ने कुंजर से कहा, 'अब अपनी तोपों से और अधिक आग उगलाओ।'

कुंजर सिंह बोला, 'परंतु जान पड़ता है, अँधेरी रात के युद्ध में दोनों दल गुँथ गए होंगे।'

'तब जहाँ इच्छा हो, गोले बरसाओ।' सबदल सिंह ने कहा, 'परंतु शत्रु के हाथ गोला-बारूद न पड़ने पावे।'

टिप्पणी

कुंजर सिंह अपने तोपचियों के पास गया। तोपों के मुँह मुस्कराए। बहुत देर लग गई। लक्ष्य बाँधने में कम समय नहीं लगा। जब इस लक्ष्य पर गोलाबारी आरंभ करा दी, तब सबदल सिंह के पास लौटा।

इस बीच में सबदल सिंह के उन सब सैनिकों ने अपने फटे कपड़े हल्दी से रंग लिए थे। थोड़ी-सी केशर भी एक जगह मिल गई थी। सबदल सिंह ने उसका टीका सबके भाल पर लगाया। कुंजर सिंह ने भी अपने वस्त्र हल्दी में रँगे। सबदल सिंह ने केशर का टीका उसके भाल पर लगाते हुए कहा, 'आज दाँगियों की लाज ईश्वर और तुम्हारी तोपों के हाथ है।'

'राजा !' कुंजर सिंह ने कहा, 'निराश नहीं होना चाहिए। शायद ईश्वर कोई ऐसा ढंग निकाल दे कि बात रह जाए और सब बच जाएँ।'

'और कुछ रहने की जरूरत नहीं, रहे या न रहे।' एक अधेड़ सैनिक बोला, 'हम लोग केसरिया बाना पहन चुके हैं। यह बिना ब्याह के नहीं उतारा जा सकता। सगाई पक्की करके अब विवाह से भागना कैसा? बचने-बचाने के सब विचार ध्यान से हटाओ। यदि यही बात मन में थी, तो भाल पर केशर का तिलक किस बिरते पर लगाया? अब ब्रह्म के सिवा उसे कौन पोंछ सकता है? और इतने दिनों धीरे-धीरे बहुत लड़े, अब जी खोलकर हाथ करेंगे और स्वर्ग में विश्राम लेंगे। सच मानिए, देह भार-सी जान पड़ने लगी है।'

**केसरिया बाना पहन कर विराटा के सैनिकों के साथ कुंजर सिंह तथा सबदल सिंह का युद्ध में कूद पड़ना।**

सबदल सिंह चिल्लाकर बोला, 'मूठ पर हाथ रख कर राम-दुहाई करो कि सब-के-सब मरने का प्रयत्न करेंगे।'

सबने तलवार की मूठों पर हाथ रख कर ज़ोर से कहा, 'राम दुहाई, राम दुहाई।' ये शब्द कई बार और देर तक दुहराए गए। उत्तरोत्तर उस ध्वनि में प्रचंडता आती गई। वे लोग इधर-उधर घूम कर दुहाई देने लगे। इन लोगों के बढ़ते हुए शोर को अलीमर्दान ने भी सुना। उसने सोचा, खेल बिगड़ गया, अब चुपचाप काम नहीं बन सकता। यही विचार उसके सरदारों और सैनिकों के भीतर उठा। किसी एक ही भाव से प्रेरित हो कर वे लोग, थोड़े-से और कुछ पल उपरांत ही बहुत से, गला खोल कर बोले, 'अल्ला हो अकबर।'

**देवी सिंह द्वारा मुसलमानों की नीति समझने के बाद अपनी योजना में परिवर्तन ।**

'राम दुहाई' पुकार इस प्रखर और प्रबल स्वर की गूँज में पतली और फीकी-सी पड़ गई। एक बार विराटा के सिपाहियों का कलेजा धसक-सा गया। परंतु 'अल्ला हो अकबर' की प्रबल गूँज के ऊपर कुंजर की तोपों की प्रबलता धायँ-धायँ हो रही थी, इसलिए सबदल सिंह के सैनिकों के हृदय में मरने-मारने की धुन ने, पुनः साहस का संचार कर दिया। उन्हें आशा हो चली कि लड़ाई की लंबी घसीटी हुई थकावट से निस्तार पाने में विलंब नहीं है।

देवी सिंह ने भी 'राम दुहाई' और 'अल्ला हो अकबर' के जयकारे सुने और उसे भी अपनी योजना को बदलना पड़ा। उसने सोचा, अलीमर्दान विराटा पर आक्रमण करना ही चाहता है। अब किसी उपयुक्त अवसर की बाट जोहना बिल्कुल व्यर्थ है। विराटा पर जिसका अधिकार पहले होगा, वही इस युद्ध को जीतने की आशा करे। इन मूर्खों

**शब्दार्थ :**
**केसरिया बाना** – केसर के रंग में रँगा कपड़ा।
**बिरता** – बलबूता

टिप्पणी

की तोपें बिना किसी भेद के गोला बरसा रही हैं। यदि शीघ्र हमारे हाथ में आ गईं तो हम रामनगर और विराटा दोनों स्थानों से अलीमर्दान की सेना को कुचल सकेंगे। वह अपनी सेना लेकर ज़रा और आगे बढ़ा, सवेरा होने में दो-तीन घंटे की देर थी। वह थोड़ा-सा और ठहरना चाहता था, कम-से-कम उस समय तक, जब तक अपने दल को खुल कर लड़ने योग्य परिस्थिति में प्रस्तुत न देख ले।

## खंड-उनहत्तर

प्रभात-नक्षत्र क्षितिज के ऊपर उठ आया। दमक रहा था और मुस्करा-सा रहा था। वनराज और नीचे की पर्वत-श्रेणी पर उसका मंद म दुल प्रकाश झर-सा रहा था।

**देवी सिंह का अलीमर्दान की सेना से युद्ध करना।**

देवी सिंह ने देखा, प्रातःकाल होने में अब विलंब नहीं है। उसने रामनगर की ओर वह बँधा हुआ संकेत किया, जिसे पाकर उस गढ़ी की तोपों को विराटा पर गोले बरसाने थे। उस संकेत के पाने के आधी घड़ी बाद विराटा पर गोले आने लगे।

तब देवी सिंह ने सोचा, यह अच्छा नहीं किया। यदि हमारी तोपों ने इन पागल दाँगियों को पीस डाला, तो अलीमर्दान का विरोध करने के लिए केवल हम हैं। अब किसी तरह यहाँ से अलीमर्दान को हटाना चाहिए। दिन निकलने के पहले यदि हम विराटा पहुँच गए। तो कदाचित् हमारी ही तोपों से हमारा ही चकनाचूर हो जाए, इसलिए सूर्योदय तक केवल अलीमर्दान को खदेड़ने का उपाय करना ही ठीक जान पड़ता है।

देवी सिंह ने अपने दल को आक्रमण करने का आदेश दिया। 'अल्ला हो अकबर' के साथ 'दलीप नगर की जय, महाराज देवी सिंह की जय की पुकारें सम्मिलित हो गईं। अलीमर्दान को अनजानी दिशा के आकस्मिक आक्रमण के धक्के को झेलने में विचलित हो जाना पड़ा, परंतु उसके सैनिक दलीप नगर के सैनिकों की तरह ही युद्ध के लिए तैयार खड़े थे। मुठभेड़ के प्रथम धक्के से पहले ज़रा पीछे हट कर फिर आगे बढ़े। आज अलीमर्दान बेतरह सचेष्ट था। देवी सिंह भी कोई कसर नहीं छोड़ रहा था। दोनों ओर के सैनिक भी हाथ और हथियार दोनों पर प्राणों की होड़ लगा रहे थे। बराबरी का युद्ध हो रहा था। दोनों सयंत तेजस्विता के साथ लड़ रहे थे। ऐसा भासित होता था कि उस युद्ध का भाग्य-निर्णय एक बाल से टँगा हुआ है।

प्रातः काल का प्रकाश होने तक देवी सिंह ने जम कर लड़ना ही ज़्यादा अच्छा समझा। तितर-बितर होने में सारी योजना भ्रष्ट हो जाने का भय था। यही बात अलीमर्दान ने भी सोची।

उत्सुकता के साथ देवी सिंह ने जनार्दन शर्मा और लोचन सिंह के दलों को आँख से टटोला। जनार्दन की टुकड़ी तितर-बितर हो गई थी। कालपी के दल का एक भाग रामनगर की तलहटी में पहुँच गया था, दूसरा देवी सिंह की बगल में ही जनार्दन के एक भाग से उलझा हुआ था और जनार्दन थोड़े से सैनिकों के साथ कालपी की दूसरी टुकड़ी से घिरा हुआ था। लोचन सिंह का एक दस्ता कालपी के एक टुकड़े को अलीमर्दान की छावनी के पीछे निकाल चुका था। लोचन सिंह कालपी वाले दस्ते पर एक ओर और अलीमर्दान के तैयार योद्धाओं पर दूसरी ओर से प्रहार कर रहा था।

लोचन सिंह को अपने निकट देखकर देवी सिंह ने चिल्ला कर कहा, 'शाबाश चामुंडराय, बढ़े चले जाओ।'

टिप्पणी

'लोचन सिंह की टुकड़ी ने भी उत्तर दिया, 'आए, अभी आए।'

जनार्दन देवी सिंह के और भी पास था। देवी सिंह ने चिल्ला कर कहा, 'जनार्दन, घबराना नहीं। लोचन सिंह और हमारे बीच में शत्रु अभी दबोचा जाता है।' देवी सिंह इतने ज़ोर से चिल्लाया था कि उसका गला भर्रा गया और उसे उठी खाँसी ने उसके सिर को ज़रा नीचा कर दिया और तिरछा भी, इसलिए एक स्थान से आई हुई एक अचूक गोली उसके कान को लेती हुई चली गई, परंतु प्राण बच गए।

चिंता के साथ अलीमर्दान ने देखा। भयानक उत्तेजना के साथ उसकी सेना ने जनार्दन के खंड पर वार करने शुरू किए। जनार्दन के लिए पीछे हटने को न स्थान था, न अवसर। इसलिए वह देवी सिंह की ओर ढलने लगा। देवी सिंह के सैनिकों की मार के कारण कालपी के सैनिकों ने जनार्दन को स्थान दे दिया और वह अपने सैनिकों सहित देवी सिंह की टुकड़ी के साथ आ मिला।

'महाराज देवी सिंह की जय!' इस छोर से अतुल ध्वनि हुई।

'महाराज देवी सिंह की जय!' लोचन सिंह के दल से प्रचंड शब्द गूँज उठे।

रामनगर के गढ़ से विराटा की गढ़ी पर निशाना बाँध कर धाँय-धाँय गोले बरसने लगे और उसकी दीवारें एक-एक करके टूटने लगीं। एक गोला मंदिर पर गिरा। उसका एक भाग खंडित हुआ। दूसरा गिरा, दूसरा भाग खंडित हुआ। तीसरा गिरा, वह धुस्स होकर रह गया। इतनी धूल उड़ी कि चारों ओर छा गई। पत्थरों और ईटों के इतने टुकड़े टूट कर बेतवा की धार में गिरे की पानी छर्र-छर्र हो गया।

रामनगर की तोपों के मुँह बंद करने का कोई उपाय देवी सिंह के हाथ में न था। पहले रामनगर, फिर विराटा की ओर चिंतित द ष्टि से देवी सिंह ने देखा। आँखों में आँसू आ गए, वे कान की जड़ से बहने वाले खून में ढल कर जा मिले।

आह भर कर उसने कहा, 'मेरे हाथ से मंदिर टूटा। हे भगवान्, किसी तरह इस युद्ध को बंद करो—चाहे मेरे प्राण ले कर ही।'

परंतु न तो रामनगर की तोपों ने गोले बरसाने बंद किए और न देवी सिंह के प्राण ही उस समय ले पाए।

विराटा की टूटी हुई दीवारों से फटे चिथड़े पहने हुए सबदल सिंह के सैनिक दिखाई पड़ने लगे। उनके चिथड़े पीले रँगे हुए थे। सिर से फटे हुए साफों के चिथड़े लहरा रहे थे, मानो विजय पताकाएँ हों। रामनगर की तोपों से वे नहीं डर रहे थे। उनकी तोपें कभी अलीमर्दान और कभी जनार्दन की टुकड़ियों पर आग उगल रही थीं। परंतु एक गोले के बाद दूसरे के चलने में बराबर अंतर बढ़ता चला जाता था।

सूर्योदय हुआ—उसी सज-धज के साथ, जैसा असंख्य युगों से होता चला आया है। सूर्य की किरणों ने भी विराटा के दुर्बल, विवर्ण सैनिकों के पीले वस्त्र-खंडों की ओर झाँका और उनकी दमकती तलवारों को चमका दिया, मानो रश्मियों ने उन्हें अर्घ्य दिया हो।

विराटा के सैनिक उन टूटी-फूटी दीवारों के पीछे डटे हुए थे। बाहर निकल कर लड़ने को अब तक नहीं आए थे। देवी सिंह ने इन पीत-पट-धारियों की चुप्पी का अर्थ समझ लिया। आह भर कर मन में कहा, 'इसका पाप भी मेरे सिर आना है। किस कुघड़ी

**शब्दार्थः**
**भासित** – प्रतीत, लग रहा था
**विवर्ण** – कांतिहीन, मुरझाए
**रश्मि** – किरण
**अर्घ्य** – पूजन के लिए दूध और जल

टिप्पणी

में दलीप नगर का राजमुकुट मेरे माथे पर रखा गया था!' एक ही क्षण पीछे देवी सिंह ने दाँत पीस कर निश्चय किया– इन्हें अवश्य बचाऊँगा, चाहे होड़ में दलीप नगर नहीं, सारी प थ्वी और स्वर्ग को भी हार जाऊँ और चिल्ला कर बोला, 'बढ़ो-बढ़ो। क्या खड़े हो कर युद्ध कर रहे हो! आज ही माँ का ऋण चुकाना है। बढ़ो और मरो, इससे अच्छी म त्यु कभी नहीं मिलेगी।'

सैनिक बढ़े और उन सबके आगे उछलता हुआ देवी सिंह।

## खंड-सत्तर

परंतु अलीमर्दान वाले दस्ते ने इस भीषण आक्रमण को उसी तरह रोक लिया, जैसे ढाल तलवार का वार रोक लेती है। जिस ओर से लोचन सिंह आक्रमण कर रहा था, उस ओर कालपी की एक टुकड़ी ने भयंकर संग्राम आरंभ कर दिया परंतु वह दो तरफ से घिर गई।

अलीमर्दान, देवी सिंह के सैनिकों से लड़ता-भिड़ता, पंक्तियों को चीरता-फाड़ता नदी के किनारे आ गया, जहाँ रात के आरंभ से ही विराटा के कुछ सैनिक प्रहरी का काम कर रहे थे। उन्हें थोड़े-से क्षणों में समाप्त करके वह अपने कुछ सैनिकों सहित नाव पर चढ़ गया। उसके एक दस्ते ने तीरवर्ती गाँव पर अधिकार कर लिया। विराटा-गढ़ी की फूटी दीवारों में से बंदूकों की एक बाढ़ चली। अलीमर्दान के कुछ सैनिक हताहत हुए। उसके और सैनिक प्रचुर संख्या में पानी में कूद पड़े। वहाँ धार छोटी थी। वे लोग जल्दी ही ध्वस्त मंदिर के पीछे वाली पठारी पर आ गए। अलीमर्दान भी वहीं नाव द्वारा आ गया।

देवी सिंह प्रबल पराक्रम से ही अलीमर्दान के शेष सैनिकों को पानी में कूद पड़ने से न रोक सका। उसके दल ने उन लोगों को थोड़ा-सा पीछे हटाया। फिर देवी सिंह भी अपने कुछ सैनिकों के साथ पानी में कूद पड़ा।

अलीमर्दान और उसके सैनिक दौड़ते हुए ऊपर चढ़े।

विराटा के पीत-पट-धारी अपनी टूटी दीवारों के बाहर निकल पड़े। तलवारों से सिर और धड़ कटने लगे। अलीमर्दान के सैनिक कवच और झिलम पहने हुए थे, तो भी दाँगियों की तलवारों ने उन्हें चीर डाला।

सबदल सिंह ने अलीमर्दान को ललकारा, 'जब तक इस गढ़ी में दाँगी का जाया जीवित है, तेरी साध पूरी न हो पाएगी। ले।'

अलीमर्दान चतुर लड़ाका था। सबदल सिंह के वार को बचा गया और फिर उसने अपनी तलवार का ऐसा प्रहार किया कि उसका दायाँ हाथ कंधे से कट कर अलग जा गिरा। सबदल सिंह भूशायी हो गया। बेतवा की मंदगामिनी धारा पर रपट-रपट कर चमकने वाली किरणों की ओर उसकी द ष्टि थी।

फिर जो कुछ हुआ, वह थोड़े-से क्षणों का काम था। सबदल सिंह के योद्धा, अलीमर्दान के बचे हुए दस्ते की तलवारों की नोकों पर झूम-झूम कर आ टूटने लगे। अलीमर्दान के थोड़े से ही कवचधारी उन लोगों से बच पाए। परंतु दाँगी कोई न बचा। जगह-जगह कटे शरीरों के ढेर लग गए। केसरिया बानों से ढँकी हुई प थ्वी हल्दी से रँगी मालूम होती थी, मानो रणचंडी के लिए पावड़ा बिछाया गया हो।

**शब्दार्थ :**
**तीरवर्ती** – किनारे पर बसे
**झिलम** – लोहे का टोप
**प्रचुर** – बहुत सारे
**जाया** – बेटा, जन्मा
**भूशायी** – भूमि पर गिरा, म त

टिप्पणी

देवी सिंह अपने थोड़े से सैनिकों सहित गढ़ी के नीचे आ गया। विलंब हो गया था। अलीमर्दान गढ़ी में प्रवेश कर चुका था।

देवी सिंह ने अपने सैनिकों को, जो उस पार थे, नदी में कूद पड़ने के लिए हाथ झुकाया। इतने में कुंजर सिंह ने एक गोला दलीप नगर की इस टुकडी पर फेंका। इस कारण उन्हें ज़रा पीछे हटना पड़ा। परंतु दलीप नगर की सेना का एक बहुत बड़ा भाग नदी-किनारे के ज़रा ऊपरी भाग से पानी में कूद पड़ा और वेग तथा व्यग्रता के साथ देवी सिंह की ओर आने लगा। देवी सिंह धीरे-धीरे गढ़ी की टूटी दीवारों की ओर चढ़ने लगा। पीले कपड़ों से ढ़की हुई म त और अर्द्धम त देहों को देख कर उसका कलेजा धँसने लगा और पैर लड़खड़ाने लगे। वह गढ़ी के भीतर न जा सका। धार तैरकर आने वाले अपने सैनिकों के आने तक वहीं ठिठक गया। पीले वस्त्रों से ढके हुए लहूलुहान शवों की ओर फिर आँख गई। होंठ दबा कर मन में कहा-कुंजर सिंह की हिंसा ने इन्हें मुझसे न मिलने दिया।

## खंड-इकहत्तर

कुंजर सिंह की तोप का वह अंतिम गोला था। उसे दागकर कुंजर सिंह अपनी तोपों को नमस्कार कर खोह की ओर तेजी के साथ आया। खोह के बाहर उसे वीणा-विनिंदित स्वर में सुनाई पड़ा -

'मलिनिया, फुलवा ल्याओ नंदन वन के।
बीन-बीन फुलवा लगाई बड़ी रास;
उड़ गए फुलवा, रह गई बास।
मलिनिया, फुलवा ल्याओ नंदन वन के।

**कुमुद द्वारा जंगली फूलों की माला कुंजर के गले में डालकर पति रूप में वरण करना।**

'उठो चलो।' कुंजर सिंह ने खोह में धँस कर कुमुद से कहा,' 'मुसलमान घुस आए। हमारे सैनिकों ने जौहर कर लिया है।'

कुमुद खड़ी हो गई। मुस्कराई। परंतु आँखों में एक विलक्षण प्रचंडता थी। बोली, 'सबने जौहर कर लिया है! सबने? अच्छा किया। चलो, कहाँ चले?'

'नदी के उस पार गढ़ी के पूर्व की ओर से। अभी वहाँ कोई नहीं पहुँचा है। हम दोनों चलेंगे'।

'हाँ, दोनों चलेंगे उस पार; परंतु अकेले-अकेले।'

'मैं समझा नहीं।' कुंजर सिंह ने व्यग्रता के साथ कहा।

'मैं उस ओर से जाऊँगी, जहाँ मार्ग में कोई न मिलेगा।' कुमुद द ढ़ता के साथ बोली, 'आप उस ओर से आएँ, जहाँ जौहर हुआ है। हम लोग अंत में मिलेंगे।'

और उसने अपने आँचल के छोर से जंगली फूलों की गूँथी हुई एक माला निकाली और कुंजर के गले में डाल दी। उस माला में फूल अधखिले और सूखे थे।

कुंजर सिंह ने कुमुद को छाती से लगा लिया। कुमुद तुरंत उससे अलग हो कर बोली, 'यह मेरा अक्षय भंडार ले कर जाओ, अब मेरे पास और कुछ नहीं।' कुमुद के आँसू आ गए। उसने उन्हें निष्ठुरता के साथ पोंछ डाला। थोड़ी दूर पर लोगों की आहट सुन कर कुमुद ने आदेश के स्वर में कहा, 'जाओ। खड़े मत रहो। मुझे मार्ग मालूम

**शब्दार्थ :**
**विनिंदित** – वीणा–विनिन्दित वीणा को लजाने वाला
**नंदन वन** – इन्द्र का मंघ्न नामक वन
**रास** – ढेर, राशि
**निःशंक** – जिसमें कोई शंका न हो
**असंदिग्घ** – जिसमें कोई संदेह न हो।

टिप्पणी

है।' फिर जाते-जाते मुड़कर बोली, 'मेरा मार्ग निःशंक है ; तुम अपना असंदिग्ध करो।'

'मैं अभी आकर मिलता हूँ। तुम चलो।' कुंजर सिंह ने कहा। कुमुद तेजी के साथ एक ओर चली गई और दूसरी ओर तेजी के साथ कुंजर सिंह।

उन दोनों के चले जाने के थोड़ी देर बाद अलीमर्दान अपने लहूलुहान सैनिकों के साथ आ धमका। जब वहाँ कोई न मिला उसने अपने सैनिकों से कहा, 'यहीं कहीं इन चट्टानों में तलाश करो। मैं इधर देखता हूँ। कुछ लोग इधर से आने वालों को रोकने के लिए मुस्तैद रहना।'

अलीमर्दान और उसके कुछ सैनिक इधर-उधर ढूँढ़ने-खोजने लगे। जिस ओर कुंजर सिंह गया था, उसी ओर अलीमर्दान गया। एक ऊँची चट्टान पर खड़े हो कर अलीमर्दान ने धीरे से अपने निकटवर्ती एक सैनिक से कहा, 'वह देखो, धीरे-धीरे उस ढालू चट्टान की तरफ जा रही है। कमाल है, देखो।'

## खंड-बहत्तर

कुंजर सिंह और देवी सिंह के बीच युद्ध

कुंजर सिंह को मार्ग में देवी सिंह मिल गया।

'तुम कहाँ जा रहे हो?' देवी सिंह ने पूछा और जो बात वह कहना नहीं चाहता था, वह उसके मुँह से निकल गई, 'तुमने जौहर नहीं किया?'

कुंजर सिंह ने भी अपने कपड़े पीले किए थे, परंतु वह सार्वजनिक बलिदान में अपनी तोपों की धुन के कारण शामिल न हो पाया था। देवी सिंह की बात उसके कलेजे में काँटे की तरह चुभ गई।

बोला, 'जौहर ही के लिए आया हूँ। आज जीवन-भर की कसक मिटाऊँगा। तुमने मेरे स्वत्व का अपहरण किया। तुम्हें मारे बिना मुझे कभी चैन न मिलेगा। तुम्हारा सिर काटने से बढ़ कर मेरे लिए कुछ भी नहीं!' और देवी सिंह पर वार करने लगा। वार सँभालते हुए देवी सिंह ने कहा, 'स्वर्ग या नरक जो तुम्हारे भाग्य में होगा, वहीं अभी भेजता हूँ।'

लड़ाई के लिए स्थान उपयुक्त न था, इसलिए स्वभावतः दोनों लड़ते-लड़ते नदी की ढालू पठारी की ओर क्रमशः चले गए।

दलीप नगर की सेना ने अपने राजा को इस विपत्ति में ग्रस्त देखा। अलीमर्दान भी बहुत अधिक सैनिक लेकर विराटा की गढ़ी में नहीं गया था, इसलिए उसकी सेना भी अपने नायक की रक्षा के लिए उत्साहित हो उठी। दोनों दल नदी की ओर झुके और परस्पर लड़ते-भिड़ते पानी में कूद पड़े। लोचन सिंह पीछे से दबाता हुआ आ पहुँचा। जनार्दन भी दौड़ पड़ा। इसी भीड़ में एक ही स्थान पर रामदयाल, लोचन सिंह और छोटी रानी आ भिड़े।

रानी ने लोचन सिंह पर तलवार उठाई और कहा, 'ले बेईमान, मूर्ख!' लोचन सिंह के पैर को इस वार ने थोड़ा-सा घायल कर दिया। लोचन सिंह बोला, 'दलीप नगर की दुर्दशा के कारण को अभी मिटाता हूँ।' और आँधी की तरह तलवार घुमाकर लोचन सिंह ने छोटी रानी की भूलोक-यात्रा समाप्त कर दी।

रामदयाल खिसका। कहता गया, 'दाऊज, मैं लड़ाई में नहीं हूँ। मैं तो किसी को ढूँढ़ रहा हूँ।' 'जो जन्म-भर किया है, वही किया कर नीच!' लोचन सिंह ने लात मार कर कहा और वह तुरंत अपनी सेना के आगे पानी में कूद पड़ा। रामदयाल एक चट्टान पर

टिप्पणी

से भरभरा कर पत्थरों से टकराता हुआ पानी में जा गिरा और फिर कभी नहीं देखा गया।

नदी की वह छोटी धार उतराते हुए सिपाहियों से भर गई। कोई कूदते जा रहे थे, कोई तैरते और कोई गढ़ी के नीचे पहुँचते जा रहे थे।

उधर खुली और विस्त त जगह पाकर कुंजर सिंह, देवी सिंह पर वार पर वार करने लगा। दलीप नगर और कालपी के भी कुछ सैनिक लड़ते-लड़ते इसी ओर आ रहे थे। ढालू चट्टान के धारवर्ती छोर की ओर कुमुद सरकती जा रही थी और पीछे-पीछे अलीमर्दान। वह शीघ्र गति से और अलीमर्दान हथियारों के बोझ के मारे ज़रा धीरे-धीरे।

कुंजर सिंह ने देवी सिंह पर वार करते-करते उस ओर देखा। हाथ शिथिल हो गया। हाँफते-हाँफते बोला, 'प्रलय हुआ चाहती है।'

'अभी, एक क्षण की भी कसर नहीं।' देवी सिंह ने कहा और तलवार का भरपूर हाथ दिया। कुंजर सिंह का सिर धड़ से कटकर अलग जा पड़ा। गले की माला छिन्न हो गई। सूखे हुए फूल पर रक्त का छींटा पड़ा। सूर्य की किरण में वह चमक उठी मानो अनेक रश्मियों की ज्योति उसमें समा गई हो।

**देवी सिंह द्वारा कुंजर सिंह का सिर काट देना**

अलीमर्दान और कुमुद के बीच अभी कई डगों का अंतर था। देवी सिंह उसी ओर लपका।

कुमुद शांत गति से ढालू चट्टान के छोर पर पहुँच गई। अपने विशाल नेत्रों की पलकों को उसने ऊपर की ओर उठाया उँगली में पहनी हुई अँगूठी पर किरणें फिसल पड़ीं। दोनों हाथ जोड़कर उसने धीमे स्वर में गाया

मलिनिया, फुलवा ल्याओ नंदन वन के
बीन-बीन फुलवा लगाई बड़ी रास;
उड़ गए फुलवा, रह गई बास।'

उधर तान समाप्त हुई, इधर उस अथाह जल-राशि में पैंजनी का 'छम्म' से शब्द हुआ। धार ने अपने वक्ष को खोल दिया और तान समेत उस कोमल कंठ को सावधानी से अपने कोश में रख लिया।

ठीक उसी समय वहाँ अलीमर्दान भी आ गया। घुटना नवा कर उसने कुमुद के वस्त्र को पकड़ना चाहा, परंतु बेतवा की लहर ने मानो उसे फटकार दिया। मुट्ठी बाँधे खड़ा रह गया।

इतने में रक्त से रँगी तलवार लिए हुए देवी सिंह आ पहुँचा। अलीमर्दान ने तलवार समेत अपने दोनों हाथों को अपनी छाती पर कस कर कहा, 'आप–राजा देवी सिंह हैं?'

'हाँ सँभालो।' देवी सिंह ने उत्तर दिया।

'क्या झलक थी महाराज!' लड़ने का कोई भी लक्षण न दिखाते हुए अलीमर्दान बोला, 'बहुत हो चुकी। अब बंद करिए। आप दलीप नगर पर राज्य करिए। हम लोग लड़ना नहीं चाहते। भ्रम ने हमारे-आपके बीच में बैर खड़ा कर दिया था।'

दोनों पक्षों के सैनिक मतवाले से दौड़ते चले आ रहे थे। अलीमर्दान ने निवारण करने

टिप्पणी

के लिए ज़ोर से कहा, 'दूर रहो। चट्टान की उस छोटी-सी खोह पर जो मिट्टी है, उसके पास मत आना। उसमें पद्मिनी के पैर का और सरकने का चिह्न बना हुआ है। उससे दूर रहना।'

तलवार नीची करके देवी सिंह ने कहा, 'पद्मिनी का नाम आपके मुँह से अच्छा नहीं लगता नवाब साहब। आप ही ने उसके प्राण लिए हैं। आप यहाँ से जाइए। यह स्थान हमारी पूजा की चीज़ है।'

'अवश्य।' अलीमर्दान क्षीण हँसी हँस कर बोला, 'तभी आपकी तोपों ने उसकी एक-एक ईंट धूल में मिला दी है।'

सैनिकों की भीड़ बढ़ती चली जा रही थी, परंतु वे लड़ रहे थे। रण का उत्साह एक अनिश्चित उत्सुकता में परिवर्तित हो गया था। एक ओर से घायल लोचनसिंह और दूसरी ओर से लहूलुहान मुसलमान नायक वहाँ आए। नायक ने अपने नवाब से कहा, 'क्या चली गई? लड़ाई क्यों बंद कर दी गई?'

अलीमर्दान ने तलवार नहीं उठाई। अपने सैनिकों को रोकते हुए बोला, 'लड़ाई बंद करो। महाराज देवी सिंह के साथ हमारी संधि हो गई है।' फिर पास खड़े हुए देवी सिंह से कहा, 'रोकिए अपने सिपाहियों को। नाहक खूनखराबी को बचाइए।'

देवी सिंह ने कड़क कर लोचन सिंह से कहा, 'तुम्हारे जैसा मूर्ख पशु ढूँढ़ने पर नहीं मिलेगा। शांत हो जाओ, नहीं तो तुम्हारे ऊपर मुझे हथियार उठाना पड़ेगा।'

अलीमर्दान और देवी सिंह के बीच कुछ शर्तों के साथ संधि स्थापित हो गई। सब लोग लौटकर धीरे-धीरे चले। अभी ढालू चट्टान के सिरे पर पहुँच न पाए थे कि कुछ सिपाही अचेत, आहत गोमती को देवी सिंह के सामने ले आए।

'क्या महारानी?' देवी सिंह ने पूछा, 'पुरस्कार के लिए ले आए हो? मिलेगा, पर यहाँ से सबको ले जाओ।'

कुमुद का आत्मोत्सर्ग

'रानी नहीं हैं महाराज!' एक सैनिक ने उत्तर दिया, 'उनका रुंड तो उस पार पड़ा है। यह कोई और है। कहती थी, राजा के पास ले चलो, बदला लेना है। कहकर अचेत हो गई। इसके पास तमंचा था। वह हमने ले लिया है।'

देवी सिंह ने ज़रा बारीकी के साथ देखा। एक आह ली और कहा, 'मरणासन्न है।' सैनिकों ने अचेत गोमती को नीचे रखा। देवी सिंह ने उसके सिर पर हाथ फेरा। एक क्षण बाद गोमती ने आँखें खोलीं। भूली-भटकी हुई द ष्टि। फिर तुरंत बंद कर लीं।

अलीमर्दान अपनी सेना ले कर चला गया। देवी सिंह दाँगी वीरों के शवों के पास गया। सिर नवा कर उसने प्रणाम किया। उसके सैनिकों ने नतमस्तक हो कर नमस्कार किया।

देवी सिंह ने कहा, 'अपनी बान पर अटल थे ये। इन्हें मरने में जैसा सुख मिला होगा, हमें कदाचित् जीवन में भी न मिलेगा। बहुत समारोह के साथ इनकी दाह-क्रिया की जानी चाहिए।' देवी सिंह का गला भर आया।

फिर संयत हो कर थोड़ी देर में बोला, 'विराटा का गाँव किसी अन्य को जागीर में कभी नहीं दिया जाएगा। जब तक दाँगियों में कोई भी बचेगा, उसी के हाथ में यह गाँव रहेगा।'

फिर जनार्दन शर्मा और अपने सरदारों को वह उस स्थान पर ले गया जहाँ जाकर कुमुद

**शब्दार्थ :**
**रश्मियों** – किरणों
**पैंजनी** – पैर का एक आभूषण, पायल

टिप्पणी

ने आत्म-बलिदान किया था। वह स्थान मंदिर के सामने से ज़रा हट कर दक्षिण की ओर था। ढालू चट्टान पर बारीक मिट्टी का एक बहुत हल्का घर जमा था। उस पर कुमुद के पद और सरकने के चिह्न अंकित थे। दह की लहरें सजग और चपल थीं। देवी सिंह को रोमांच हो आया। उस ओर उँगली से संकेत करते हुए जनार्दन से कहा, 'देवी ये अंतिम चिह्न छोड़ गई हैं। लहरें कुछ कह-सी रही हैं। उनके नीचे से पैंजनी की ध्वनि अब भी आती जान पड़ती है।'

जनार्दन थके हुए स्वर में बोला, 'महाराज, हम लोगों के आने में बहुत विलंब हो गया।'

जनार्दन' राजा ने कहा, 'कुंजर सिंह की नादानी ने मेरी सारी योजना पर पानी फेर दिया।' दह की लहरों पर से आँख को हटा कर एक क्षण बाद बोला, 'इन चिह्नों को इस चट्टान पर ज्यों-का-त्यों अंकित करवा देना चाहिए। लोग पर्वों पर आकर इस पुण्य-स्म ति से अपने को पवित्र किया करेंगे।

'जो आज्ञा।' जनार्दन ने उत्तर दिया। देवी सिंह ने दह की ओर देखा।

अभी-अभी थोड़ी देर पहले किसी की उँगली की अँगूठी ने सूर्य की किरणों से होड़ लगाई थी। अभी-अभी थोड़ी ही देर पहले उस जलराशि पर 'छम्म' से कुछ हुआ। किसी अलौकिक सौंदर्य का उस शब्द के साथ संबंध था और लहरों पर पवन में वह गीत गूँज रहा था–

'उड़ गए फुलवा, रह गई बास।'

**शब्दार्थ :**
**बान** – प्रण
**दह** – नदी का गहरा भाग

## पाठगत प्रश्न 32.4

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. अलीमर्दान विराटा की तरफ तुरंत कूच करने का निश्चय करता है, क्योंकि
   (क) वह रामदयाल के बहकावे में आ गया है
   (ख) वह मंदिर को ध्वस्त करना चाहता है
   (ग) वह जल्द-से-जल्द कुमुद को अपने कब्जे में करना चाहता है
   (घ) वह सबदल सिंह को सबक सिखाना चाहता है
2. सबदल सिंह कुंजर सिंह को इसलिए शरण देता है कि
   (क) कुंजर सिंह राजकुमार है और शरणागत है।
   (ख) कुंजर सिंह उसका दूर का संबंधी है।
   (ग) कुंजर सिंह की सहायता से वह रामनगर को सबक सिखा सकता है।
   (घ) कुंजर सिंह तोप चलाने में निपुण है।
3. कुंजर सिंह रामदयाल को गढ़ में देखकर चकित होता है, क्योंकि
   (क) उसे अपने रहस्य का भंडाफोड़ होने की आशंका होती है।
   (ख) वह रामदयाल से डरता है।
   (ग) उसे किसी षड्यंत्र की आशंका होती है।
   (घ) वह उसे अलीमर्दान का जासूस समझता है।

टिप्पणी

4. कुमुद युद्ध में कुंजर सिंह के साथ चलने का प्रस्ताव करती है, क्योंकि
   (क) वह देवी सिंह की महत्त्वाकांक्षा पर अपना बलिदान करना चाहती है।
   (ख) अलीमर्दान से वह डर गई है।
   (ग) वह नरपति सिंह से अपना पीछा छुड़ाना चाहती है।
   (घ) वह कुंजर सिंह से प्रेम करती है।

5. कुमुद बेतवा में छलाँग लगा लेती है, क्योंकि
   (क) वह अपने जीवन से निराश हो गई है।
   (ख) कुंजर सिंह को पति रूप में पाना उसके लिए संभव नहीं है।
   (ग) अलीमर्दान के स्पर्श से अपने को अपवित्र नहीं करना चाहती।
   (घ) वह अपने को दुर्गा का अवतार नहीं मानती।

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए:

6. कुमुद की रक्षा के विषय में रामदयाल ने बड़ी रानी से क्या कहा ?
7. रामदयाल ने कुमुद के बारे में अलीमर्दान से क्या कहा ?
8. सबदल सिंह ने कुंजर सिंह को आश्रय देने के संबंध में क्या व्यवस्था की ?
9. कुंजर सिंह विराटा के दुर्गा मंदिर की रक्षा किस तरह करता है ?
10. देवी सिंह ने कफन सिंह बुंदेला के रूप में युद्ध में कैसी भूमिका निभाई ?
11. देवी सिंह ने गोमती को अपनाने के प्रस्ताव पर क्या उत्तर दिया ?

## 32.4 बोध प्रश्न

आप पूरा उपन्यास एक बार पढ़ चुके हैं। आशा है आपको पसंद आया होगा। अब पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. नायक सिंह ने देवी सिंह को क्या वचन दिया ?
2. जनार्दन ने हकीम आगा हैदर से राजा नायक सिंह संबंधी कौन–सा प्रस्ताव किया था ?
3. कालपी और दलीप नगर की सैनिक टुकड़ियों में झड़प के बाद कुमुद कहाँ गई ?
4. नायक सिंह की म त्यु के बाद राजगद्दी किसे मिली ?
5. कुंजर सिंह को अलीमर्दान की सहायता क्यों अच्छी नहीं लगी ?
6. लोचन सिंह देवी सिंह से क्यों नाराज़ हो कर चला गया ?
7. जनार्दन ने लोचन सिंह को कैसे मनाया ?
8. सिंहगढ़ पर विजय प्राप्त करने के बाद देवी सिंह ने छोटी रानी के साथ कैसा व्यवहार किया ?
9. रामदयाल द्वारा कुमुद का पता दिए जाने पर अलीमर्दान ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की ?

टिप्पणी

10. काले खाँ ने विराटा के राजा सबदल सिंह से क्या प्रस्ताव किया ?
11. नरपति सिंह विराटा के राजा की चिट्ठी ले कर दलीप नगर क्यों गया ?
12. विराटा में लौटने पर कुंजर सिंह ने कुमुद से क्या कहा ?
13. कुंजर सिंह ने सबदल सिंह के साथ कैसा छल किया ?
14. कुंजर सिंह ने कुमुद की रक्षा के लिए क्या प्रस्ताव किया और उसने क्या उत्तर दिया ?
15. विराटा के पतन की संभावना पर कुंजर सिंह ने कुमुद से क्या कहा ?
16. अलीमर्दान ने विराटा पर तेजी से आक्रमण करने का निश्चय क्यों किया ?
17. विराटा के पतन की संभावना देख कर वहाँ के राजा सबदल सिंह ने क्या निर्णय लिया ?
18. विराटा के पतन के बाद, अलीमर्दान द्वारा पीछा किए जाने पर कुमुद ने क्या किया?

## 32.5 कथा-सार

'कथा' क्या है, इसे हम प्रारंभ में ही जान चुके हैं; और आशा करते हैं कि आप उसे समझ गए होंगे, अब हम संक्षेप में 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास की कथा प्रस्तुत कर रहे हैं।

'विराटा की पद्मिनी' में बुंदेलखंड के कुछ छोटे-छोटे राज्यों के आपसी संघर्ष की कथा प्रस्तुत की गई है। ये राज्य थे : दलीप नगर, रामनगर, गढकुंडार, बड़ नगर आदि। कालपी मुगल साम्राज्य का एक सूबा था जिसका फ़ौजदार अलीमर्दान था। उस समय दिल्ली में फर्रुखसियर का (1713–1719) शासन था।

बड़ नगर के पालर नामक गाँव में दुर्गा का एक प्रसिद्ध मंदिर था। वहीं नरपति दाँगी के घर एक सुंदर कन्या का जन्म हुआ, जो किशोरावस्था में पहुँचने पर दुर्गा के अवतार के रूप में प्रसिद्ध हो गई। उसका नाम कुमुद था। वह पद्मिनी कन्या कहलाती थी क्योंकि वह चंपा के समान गोरी थी उसके शरीर से सुगंध निकलती थी और वह कमल के समान कोमल थी।

संयोगवश दलीप नगर का सनकी और अधपगला राजा नायक सिंह अपने दरबारियों के साथ पालर की झील में मकर संक्रांति का स्नान करने आया। राजकुमार कुंजर सिंह और सैनिक सरदार लोचन सिंह, देवी के दर्शन के लिए दुर्गा मंदिर गए। उसी समय कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान के दो मुसलमान सैनिक भी दर्शन के बहाने वहाँ आए। बातों-बातों में दलीप नगर और कालपी के सैनिकों में झड़प हो गई। फिर इस झड़प ने कालपी और दलीप नगर की सैनिक टुकड़ियों ने युद्ध का रूप ले लिया। मुसलमान सैनिक दुर्गा मंदिर को ध्वस्त कर दुर्गा की अवतार मानी जाने वाली दाँगी कन्या पद्मिनी का अपहरण करना चाहते थे। इधर दलीप नगर का राजा भी उसके सौंदर्य की कहानी सुन उसे अपने महल में रखना चाहता है। अपनी सनक में वह कालपी की सैनिक टुकड़ी पर आक्रमण कर बैठता है। मार-काट मच जाती है। तभी इस युद्ध में दलीप नगर के राजा की पराजय होने ही वाली थी कि एक बहादुर बुंदेला देवी सिंह जो पालर में बारात के साथ दूल्हा वेश में आया था, राजा नायक सिंह की

टिप्पणी

सहायता के लिए पहुँच गया और नायक सिंह की रक्षा हो गई। कालपी की सैनिक टुकड़ी भी पराजित होकर भाग गई।

पर युद्ध में राजा और बुंदेला युवक दोनों घायल हो गए। उपचार के बाद देवी सिंह स्वस्थ होकर राजा के साथ रहने लगा। वह राजा का अत्यंत प्रिय पात्र बन गया।

उधर दाँगी-कन्या कुमुद के प्रति श्रद्धा भाव होने पर भी राजकुमार कुंजर सिंह के मन में उसके प्रति अनुराग पैदा हो गया। कुमुद के मन में भी राजकुमार के प्रति वैसा ही अनुराग भाव जन्म लेता है। कुंजर सिंह कुमुद को दलीप नगर के राजा नायक सिंह और कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान दोनों से बचाने का संकल्प करता है।

इस बीच दलीप नगर का राजा नायक सिंह अपने बिगड़ते स्वास्थ्य के कारण मर जाता है और उसके स्थान पर उसका प्राण-रक्षक देवी सिंह दलीप नगर का राजा बन जाता है। कुंजर सिंह, जो नायक सिंह का दासी-पुत्र था, इस निर्णय का विरोध करता है। नायक सिंह की छोटी रानी भी विद्रोह कर देती है। वह स्वयं दलीप नगर की गद्दी पाना चाहती है। इसके लिए वह अलीमर्दान को अपना राखीबंद भाई बनाती है। उसके पति स्वर्गीय नायक सिंह का प्रिय पात्र किंतु धूर्त नौकर रामदयाल उसकी सहायता करता है। कुंजर सिंह नए राजा देवी सिंह का तो विरोध करता है, पर वह अलीमर्दान से सहायता लेना पसंद नहीं करता। इस कारण कुंजर सिंह छोटी रानी के क्रोध का भाजक बनता है। पर वह सिंहगढ़ के किले पर कब्जा करके वहीं रहने लगता है। छोटी रानी भी वहीं आ जाती है।

अलीमर्दान कुमुद को अपने हरम में शामिल करना चाहता है। उसके भय से नरपति सिंह कुमुद को पालर के दुर्गामंदिर से हटाकर विराटा के दुर्गामंदिर में ले जाता है। उधर कुछ दिनों तक सिंहगढ़ में रहने के बाद कुंजर सिंह को देवी सिंह से पराजित होकर सिंहगढ़ छोड़ना पड़ता है। वह भटकता हुआ विराटा के किले में पहुँचता है। वहाँ का राजा उसे दुर्गामंदिर की रक्षा का भार और तोपखाने का संचालन कार्य सौंपता है। छोटी रानी सिंहगढ़ के दुर्ग से निकल कर रामनगर राज्य की शरण लेती है। विराटा और रामनगर के राज्य एक-दूसरे के पुश्तैनी दुश्मन हैं।

अलीमर्दान विराटा पर आक्रमण करता है। उसका उद्देश्य कुमुद को प्राप्त करना है। देवी सिंह अलीमर्दान का सामना करता है पर न चाहते हुए भी वह विराटा पर आक्रमण करने को बाध्य होता है। वह कुंजर सिंह को उसके विद्रोह के लिए दंड देना चाहता है। इस बीच कुंजर सिंह और कुमुद का अनुराग गंभीर प्रेम में परिणत हो गया है। कुंजर सिंह अपने प्राण देकर भी कुमुद की रक्षा करने का संकल्प करता है।

विराटा की गढ़ी अलीमर्दान और देवी सिंह, दोनों की सेनाओं के बीच घिर जाती है। विराटा के राजा और सैनिक केसरिया वस्त्र धारण कर अलीमर्दान की सेना के साथ जौहर-युद्ध में कूद पड़ते हैं और म त्यु का आलिंगन करते हैं। कुंजर सिंह कुमुद को अलीमर्दान के हाथों से बचाने के लिए उसे लेकर मंदिर से बाहर निकलता है। कुमुद, कुंजर सिंह के गले में जंगली फूलों की एक माला डालती है, जो उसे स्वीकार है। वहाँ से दोनों अलग-अलग राहों से प्रस्थान करते हैं। कुंजर सिंह की भेंट देवी सिंह से हो जाती है, जहाँ युद्ध ज़ोरों पर है। कुंजर सिंह देवी सिंह के हाथों मारा जाता है। उधर अलीमर्दान कुमुद का पीछा करता है। पर वह उसके हाथ नहीं आती। वह बेतवा नदी में छलाँग लगाकर प्राण त्याग देती है। इस प्रकार कुमुद अपना नाम 'विराटा की पद्मिनी' सार्थक करती है।

## 32.6 कथा में इतिहास और लोक-कथा

वर्मा जी ने 'विराटा की पद्मिनी' में इतिहास को प्रमुखता न देकर मात्र उसका उल्लेख ही किया है। प्रस्तुत उपन्यास की प्रमुख कथा बुंदेलखंड के छोटे-छोटे हिंदू राज्यों–दलीप नगर, बड़ नगर, विराटा, रामनगर, भांडेर और कालपी से संबद्ध है। कालपी के अतिरिक्त शेष हिंदू राज्यों का तो विवरण भी इतिहास की पुस्तकों में नहीं मिलता पर इन राज्यों के गढ़ और किले आज भी भग्नावशेष रूप में बुंदेलखंड में विद्यमान हैं। इनके संबंध में बुंदेलखंड के लोगों में अनेक लोक-कथाएँ और किंवदंतियाँ भी प्रचलित हैं। पुराने दस्तावेजों में इनके कुछ विवरण भी मिल जाते हैं। इन्हीं में से एक लोक-कथा एक दाँगी-कन्या की है, जो पालर गाँव में पैदा हुई थी और पंद्रह-सोलह वर्ष की अवस्था तक पहुँचते-पहुँचते दुर्गा के अवतार के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थी। लोक-कथा के अनुसार वह अभूतपूर्व सुंदरी और तेजस्वी कन्या थी। विराटा के दुर्गामंदिर में वह दुर्गा के समान ही पूजी जाती थी। पर कालपी का शासक उसके सौंदर्य पर रीझ कर उसे अपनी रानी बनाना चाहता था। इस उद्देश्य से उसने विराटा के गढ़ पर आक्रमण किया। विराटा के वीरों ने जौहर व्रत धारण कर युद्ध किया और सभी वीरगति को प्राप्त हुए। पर कालपी का मुसलमान शासक 'पद्मिनी' को प्राप्त करने में असफल रहा, क्योंकि उसने बेतवा नदी में कूद कर अपने प्राणों का विसर्जन कर दिया।

इस लोक-कथा को आधार बना कर वर्मा जी ने अपने उपन्यास के कथा-संसार का निर्माण किया है। अपनी कल्पना से उन्होंने इस दाँगी कन्या के रूप, जनता की उसके प्रति असीम श्रद्धा, उसके प्रेम और बलिदान की मार्मिक कथा प्रस्तुत की है। इस कथा में उन्होंने दलीप नगर राज्य के आंतरिक षड्यंत्रों तथा छोटे-छोटे हिंदू राज्यों के आपसी वैमनस्य और कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान से उनके युद्ध का वर्णन करके कथा को और भी रोचक तथा सार्थक बना दिया है।

इससे स्पष्ट है कि 'विराटा की पद्मिनी' में इतिहास, लोक-कथा और कल्पना का अद्भुत मिश्रण है। वर्मा जी ने उस काल के ऐतिहासिक परिद श्य को प्रस्तुत किया है और लोक कथाओं, किंवदंतियों तथा कल्पना का भी सहारा लिया है।

## 32.7 विषयवस्तु और संदेश

आपके मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास की विषयवस्तु और उसका संदेश क्या है ? केवल कथा कहना और उसके द्वारा पाठकों का मनोरंजन करना वर्माजी का उद्देश्य नहीं है। वस्तुतः इस उपन्यास द्वारा लेखक विभिन्न चरित्रों के माध्यम से बुंदेलखंड के दिव्य प्रेम और अपूर्व बलिदान को दिखाना चाहता है। उपन्यास में कुमुद, कुंजर सिंह और गोमती जैसे साधारण प ष्ठभूमि के पात्र हैं जो देशभक्ति, वीरता, निर्भीकता जैसे असाधारण गुणों का परिचय देते हैं। अलीमर्दान, जनार्दन, नायक सिंह, रामदयाल जैसे पात्र सत्ता प्राप्ति के लिए षड्यंत्र, भोगविलास, स्वार्थ, धनलिप्सा आदि में लिप्त दिखाए गए हैं। वे अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए किसी भी सीमा तक जा सकते हैं।

कुंजर सिंह और कुमुद दोनों में ही स्वदेश-प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है और दोनों ही आत्मसम्मान और संस्कृति की रक्षा के लिए आत्मबलिदान करने का

टिप्पणी

अपना-अपना मार्ग चुनते हैं। कुमुद की बचपन की सहेली गोमती का चरित्र भी बलिदान और त्याग का अपूर्व उदाहरण प्रस्तुत करता है। वधू के रूप में सजी गोमती अपने दूल्हे देवी सिंह के राजा बन जाने पर अपने प्रेम को प्रकट तक नहीं होने देती।

उपन्यास में बुंदेलखंड के लोक जीवन और प्राकृतिक परिवेश का मोहक चित्रण है। विभिन्न पात्रों के परस्पर व्यवहार से मानवीय विशेषताओं और दुर्बलताओं को भी रेखांकित किया गया है। इस उपन्यास में देशभक्ति–देश की स्वाधीनता की रक्षा के लिए प्राण तक न्योछावर कर देने, किसी भी कीमत पर देश के शत्रुओं का साथ न देने तथा प्रेम की वेदी पर प्राणों को उत्सर्ग कर देने का संदेश दिया गया है।

## 32.8 प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

'विराटा की पद्मिनी' की केंद्रीय पात्र दाँगी कन्या कुमुद है। जिसे विराटा की पद्मिनी कहा गया है। इसके अतिरिक्त उसके प्रमुख पात्र, 'कुंजर सिंह', 'नायक सिंह', 'देवी सिंह', 'छोटी रानी', 'रामदयाल', 'अलीमर्दान', 'काले खाँ' आदि हैं।

### कुमुद : विराटा की पद्मिनी

दाँगी-कन्या कुमुद को 'विराटा की पद्मिनी' क्यों कहा गया है यह प्रश्न आपके मन में उठना स्वाभाविक है। आपने संभवतः 'चितौड़ की पद्मिनी' का नाम सुना होगा। उसकी कहानी भी सुनी होगी। कहा जाता है कि उसके सौंदर्य पर मुग्ध होकर अल्लाउद्दीन खिलजी ने उसे पाने के लिए चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण किया था। जब गढ़ के टूटने की नौबत आई तो पद्मिनी के साथ गढ़ की सारी स्त्रियाँ एक साथ, एक विशाल चिता की आग में कूद गई। पद्मिनी के पति रत्नसेन के साथ सभी वीर राजपूत केसरिया बाना धारण करके हाथों में तलवारें लेकर गढ़ के बाहर निकले। अल्लाउद्दीन की सेना के साथ लड़ते हुए वे वीर गति को प्राप्त हुए। इस प्रकार अल्लाद्दीन विजयी होकर भी पद्मिनी को न पा सका।

कुछ-कुछ ऐसी ही कहानी कुमुद की भी है। कुमुद एक साधारण दाँगी (बुंदेलखंड की एक जाति) किसान नरपति सिंह की पुत्री है। वह जन्म से ही अतीव सुंदर है। किशोरावस्था में पहुँचते-पहुँचते उसके सौंदर्य और तेज की ख्याति चारों ओर फैल जाती है। चंपा के समान गोरी, सुगंधमय तथा कमल के समान कोमल स्त्री को 'पद्मिनी' कहते हैं। कुमुद भी 'पद्मिनी' नाम से विख्यात हो जाती है। लोग उसे दुर्गा का अवतार मानने लगते हैं। कुमुद का पिता नरपति सिंह भी अपना लाभ देखकर कुमुद को दुर्गा के अवतार के रूप में प्रचारित करता है। कुमुद नित्य दुर्गा की पूजा करती है और दर्शनार्थियों को प्रसाद देती है। यह माना जाने लगा कि उसके आशीर्वाद से लोगों की मनोकामनाएँ फलीभूत होती हैं। दूर-दूर से लोग उसका आशीर्वाद और प्रसाद पाने के लिए आते हैं। इस प्रकार कुमुद पर देवत्व का आरोप हो जाता है, यद्यपि वह स्वयं को मानवी ही मानती और कहती है।

इसी क्रम में दलीप नगर का राजकुमार कुंजर सिंह उसके दर्शनों के लिए पालर के दुर्गामंदिर में आता है। कुमुद को देखकर कुंजर सिंह के मन में प्रेम का अंकुर जन्म लेता है, जिससे कुमुद भी अछूती नहीं रहती। पर यह प्रेमभाव वाणी द्वारा व्यक्त नहीं होता। दलीप नगर के विलासी राजा और अपने पिता नायक सिंह तथा कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान से कुमुद को बचाने के लिए कुंजर सिंह अपने प्राण तक न्योछावर कर देने

का संकल्प करता है। इससे कुमुद का कुंजर सिंह के प्रति प्रेम और भी प्रगाढ़ हो जाता है। नायक सिंह तो अपनी मौत मर जाता है, पर अलीमर्दान कुमुद को पाने के लिए विराटा के गढ़ पर आक्रमण करता है, जहाँ के दुर्गामंदिर में कुमुद रह रही है। गढ़ का पतन होने पर कुंजर सिंह और कुमुद मंदिर के बाहर निकलते हैं। पर कुंजर सिंह मारा जाता है। अलीमर्दान द्वारा पीछा की जाती हुई कुमुद बेतवा नदी में छलाँग लगाकर अपने प्राणों का विसर्जन करती है। इस प्रकार वह अपने 'विराटा की पद्मिनी' नाम को सार्थक करती है।

कुमुद का चरित्र दिव्य प्रेम और बलिदान की एक मधुरागिनी है। वह दुर्गा की अवतार न बन पाई हो, विराटा की पद्मिनी अवश्य बन जाती है जैसा कि उपन्यास के शीर्षक से स्पष्ट होता है।

## कुंजर सिंह

कुंजर सिंह दलीप नगर का राजकुमार है, पर दासी-पुत्र होने के कारण वह सिंहासन का उत्तराधिकारी नहीं है। जब देवी सिंह राजसिंहासन का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया जाता है तो कुंजर सिंह की राजगद्दी पाने की क्षीण आशा भी समाप्त हो जाती है। इस बीच कुमुद से उसका प्रेम हो गया है और वह अपने कामुक पिता तथा कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान से उसकी रक्षा करने का संकल्प कर चुका है। देवी सिंह के राजसिंहासन पर आसीन हो जाने पर वह विद्रोह कर देता है और सिंहगढ़ नामक दुर्ग पर कब्ज़ा करके वहाँ भावी युद्ध के लिए सैन्य संगठन करना आरंभ कर देता है। दलीप नगर की छोटी रानी भी भाग कर सिंहगढ़ के दुर्ग में आ जाती है, पर वह कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान की सहायता से स्वयं राजसिंहासन पर कब्ज़ा करना चाहती है। कुंजर सिंह इसे पसंद नहीं करता, क्योंकि वह देशभक्त है और अपने स्वार्थ के लिए विदेशियों की सहायता लेना उचित नहीं समझता।

किंतु कुंजर सिंह सिंहगढ़ को अधिक दिनों तक अपने कब्ज़े में नहीं रख पाता। देवी सिंह से युद्ध में उसकी हार होती है और उसे गढ़ छोड़ना पड़ता है। सिंहगढ़ से वह विराटा के गढ़ में पहुँचता है। कुमुद भी अपने पिता नरपति सिंह के साथ पालर के दुर्गा मंदिर को छोड़ कर विराटा के देवी मंदिर में चली आई है। इस बार कुंजर सिंह, कुमुद के प्रति अपने प्रेम को छिपाता नहीं और उसकी रक्षा के लिए अपने प्राण तक न्योछावर कर देने का आश्वासन देता है।

विराटा पर अलीमर्दान और देवी सिंह एक साथ आक्रमण करते हैं। कुंजर सिंह इस युद्ध में अद्भुत वीरता और रण-कौशल का परिचय देता है। पर वह विराटा गढ़ का पतन रोक नहीं पाता। गढ़ का राजा और अन्य सैनिकों के साथ कुंजर सिंह भी केसरिया बाना धारण करके जौहर-व्रत का संकल्प कर मंदिर से कुमुद को लेकर बाहर निकलता है। बाहर निकलते ही उसका देवी सिंह से सामना होता है, जिससे लड़ते हुए वह वीर गति को प्राप्त होता है।

उपन्यास में कुंजर सिंह प्रमुख रूप से एक वीर योद्धा, स्वाभिमानी, देशभक्त और सच्चे प्रेमी के रूप में सामने आता है। देश और प्रेम के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर देना, प्राणों की भी बलि चढ़ा देना उसके चरित्र की प्रमुख पहचान है। दासी पुत्र होने का कलंक उसके चरित्र की उदात्तता में चंद्रमा के कलंक के समान उपेक्षणीय बन जाता है।

## देवी सिंह

देवी सिंह एक वीर बुंदेला किसान है। इसका प्रमाण पाठक को उससे प्रथम परिचय में ही मिल जाता है। वह दूल्हे के वेश में बारात ले कर विवाह करने के लिए जा रहा है। अपनी भावी पत्नी के द्वार पर पहुँचते ही वह देखता है कि राजा नायक सिंह और मुसलमान सेना में युद्ध हो रहा है और राजा की जान खतरे में है। यह देख वह दूल्हे के वेश में ही मुसलमान सैनिकों पर टूट पड़ता है और राजा की प्राण-रक्षा में सफल हो जाता है। पर लड़ाई में वह घायल होकर बेहोश हो जाता है और सैनिक उसे उठा कर राजा के साथ ही दलीप नगर ले आते हैं। उपचार के बाद स्वस्थ होने पर वह राजा का अत्यंत प्रिय पात्र बन जाता है और राजा के विश्वासपात्र दरबारी जनार्दन शर्मा के प्रयत्न से उसे ही दलीप नगर के राज सिंहासन का उत्तराधिकारी बना दिया जाता है। राजा की म त्यु के बाद देवी सिंह दलीप नगर का राजा बनता है। इस पर नायक सिंह का दासी पुत्र कुंजर सिंह और छोटी रानी विद्रोह कर बैठते हैं।

राजा के रूप में देवी सिंह अपनी योग्यता का विश्वसनीय परिचय देता है। वह कुंजर सिंह और रानियों का सम्मान करता है और उन्हें अनावश्यक रूप से परेशान नहीं करता। दरबारियों और छोटे सामंतों को भी वह यथासंभव अनुकूल बनाए रखता है। किंतु जब कुंजर सिंह और छोटी रानी, विद्रोह कर सिंहगढ़ पर अधिकार कर लेते हैं तो देवी सिंह अपने कर्त्तव्य पालन में भी नहीं चूकता। वह सिंहगढ़ पर आक्रमण करता है और उस पर अधिकार कर लेता है। अलीमर्दान को भी इस युद्ध में मुँह की खानी पड़ती है और कुंजर सिंह को भी गढ़ छोड़ कर भागना पड़ता है। छोटी रानी कैद कर ली जाती है। पर देवी सिंह उसे क्षमा कर देता है।

देवी सिंह एक सच्चरित्र, धर्म-परायण और संवेदनशील राजा है। थोड़े ही दिनों में वह राजधर्म के सभी गुणों से संपन्न और राजनीति में माहिर हो जाता है। उसके युद्ध और शांति विषयक सारे निर्णय तर्क संगत तथा समयानुकूल होते हैं। उद्दंड सामंतों को काबू में रखना भी उसे आता है। वह एक तरफ़ अपने राज्य के आंतरिक विद्रोह को दबाने का यत्न करता है तो दूसरी तरफ़ धर्म रक्षा के लिए कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान से भी लोहा लेता है। अलीमर्दान कुमुद को अपनी रानी बनाना चाहता है और इस उद्देश्य से वह विराटा राज्य पर आक्रमण करता है, क्योंकि कुमुद वहीं के दुर्गा मंदिर में रह रही है। देवी सिंह अलीमर्दान के इस प्रयास को विफल करने का निश्चय करता है। यद्यपि अपने राज्य के विद्रोहियों, छोटी रानी और कुंजर सिंह का दमन करने के लिए उसे रामनगर और विराटा दोनों पर आक्रमण करना पड़ता है, पर उसका मुख्य लक्ष्य अलीमर्दान ही है। इस युद्ध में देवी सिंह अपनी वीरता और रण कौशल का परिचय देता है। यद्यपि विराटा का गढ़ और दुर्गा मंदिर इस युद्ध में ध्वस्त हो जाते हैं, पर अलीमर्दान अपने उद्देश्य में सफल नहीं होता। कुमुद बेतवा में छलाँग लगा कर अपने प्राण विसर्जन कर देती है और वह हाथ मलता रह जाता है। कुंजर सिंह भी देवी सिंह के हाथों मारा जाता है। पर देवी सिंह इस युद्ध से प्रसन्न नहीं है। विराटा के वीरों के जौहर व्रत से वह दुखी है और कुमुद का आत्मबलिदान तो उसके हृदय को गहरी करुणा और पश्चात्ताप से भर देता है। उसकी सहृदयता और धर्मपरायणता का पता इस बात से भी चलता है कि वह 'विराटा की पद्मिनी' के सम्मान में उसके बलिदान स्थल को स्मारक बनाने का आदेश देता है। इस प्रकार देवी सिंह का चरित्र एक वीर,

टिप्पणी

रणकुशल, धर्मपरायण, राजनीति में दक्ष, अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग और संवेदनशील तथा सहृदय राजा के रूप में सामने आता है।

## छोटी रानी

छोटी रानी नायक सिंह की दूसरी पत्नी है। वह अन्यंत महत्वाकांक्षिणी है। नायक सिंह के कोई वैध पुत्र नहीं है। उसका दासी-पुत्र कुंजर सिंह राज्याधिकार से वंचित है। अतः बीमार राजा की म त्यु के बाद वह स्वयं राजसिंहासन पर बैठना चाहती है परंतु राजा के दरबारी, उसके विरुद्ध हैं। छोटी रानी राजगद्दी पाने के लिए इतनी आतुर है कि वह पति की म त्यु की प्रतीक्षा कर रही है। जब जनार्दन शर्मा म त्युशैया पर पड़े राजा से देवी सिंह को राजगद्दी का उत्तराधिकारी घोषित कराने में सफल हो जाता है, तो छोटी रानी उसका प्रबल विरोध करती है। इसमें असफल होने पर वह षड्यंत्र रचती है तथा कुंजर सिंह और बड़ी रानी को अपने षड्यंत्र में शामिल कर लेती है। वह राजा के विश्वस्त सेवक रामदयाल को भी अपने शतरंज का मोहरा बनाती है और उसके द्वारा पत्र भेज कर अलीमर्दान को अपना राखीबंद भाई बनाती है। छोटी रानी स्वार्थ में इतनी अंधी है कि वह राजगद्दी के बदले में अलीमर्दान को राज्य का कोई भी हिस्सा या धन देने को तैयार है। उसे दुर्गा के अवतार के रूप में प्रतिष्ठित कुमुद को अलीमर्दान को सौंपने में भी कोई आपत्ति नहीं है।

छोटी रानी के चरित्र में एक गुण है, उसकी वीरता। वह अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए बड़े से बड़ा साहसिक कर्म कर सकती है, करती भी है। पर विराटा के पतन, कुमुद के बलिदान, कुंजर सिंह की हत्या और दलीप नगर राज्य की तबाही का एक मात्र कारण वही है। छोटी रानी देश विद्रोह का प्रतीक चरित्र है, जिसके उदाहरण इतिहास में भरे पड़े हैं।

## अलीमर्दान

अलीमर्दान कालपी का फ़ौजदार है, जो मुगल दरबार की राजनीति से भी जुड़ा हुआ है। वह कालपी के आसपास के हिंदू राज्यों पर नज़र रखता है और उन्हें डराता-धमकाता रहता है। उसके पास एक बड़ी सेना है और रणनीति का ज्ञान भी उसे अच्छा है। पालर में अपनी सैनिक टुकड़ी के दलीप नगर की सैनिक नगर की सैनिक टुकड़ी से पराजय के बाद वह दलीप नगर के राजा के पास एक पत्र भेजता है। पत्र में कई कड़ी शर्तों का पालन न करने पर युद्ध की धमकी दी गई है। राजा नायक सिंह की म त्यु के बाद जब छोटी रानी विद्रोह करती है तो वह उसके राखीबंद भाई होने के प्रस्ताव को स्वीकर कर लेता है। अपने दरबारियों तथा रामदयाल के उकसाने पर वह दुर्गा का अवतार समझी जाने वाली कुमुद को अपनी रानी बनाने का निश्चय भी करता है। वह दलीप नगर को तो दबा नहीं पाता पर विराटा के गढ़ को ध्वस्त कर डालता है। फिर भी कुमुद उसे प्राप्त नहीं होती। उसके बेतवा नदी में कूद कर प्राण विसर्जन कर देने पर वह हाथ मलता रह जाता है।

अलीमर्दान के चरित्र का सबसे उज्ज्वल पक्ष यह है कि वह हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं पर चोट नहीं पहुँचाता। वह दुर्गा का मंदिर ध्वस्त करने का प्रयास नहीं करता। वस्तुतः दुर्गामंदिर देवी सिंह की तोपों की मार से ध्वस्त होता है, अलीमर्दान की तोपों से नहीं। कुमुद को अपनी रानी बनाने का निश्चय भी वह तब करता है जब उसे यह समझाया जाता है कि वह दुर्गा की अवतार नहीं है। रामदयाल तो यह कह

टिप्पणी

कर भी उसके कान भरता है कि कुंजर सिंह कुमुद को अपने प्रेम-जाल में फँसा कर उसे अपनी पत्नी बना लेगा। जब कुमुद बेतवा नदी में छलाँग लगा कर प्राण विसर्जन कर देती है तो अलीमर्दान भी उसके प्रति श्रद्धा भाव से भर जाता है।

वर्मा जी ने अलीमर्दान को धार्मिक सहिष्णुता, मानवीय सहानुभूति, संवेदनशीलता आदि से संपन्न मुसलमान शासक के रूप में चित्रित किया है।

### नायक सिंह

नायक सिंह दलीप नगर का राजा है। वह एक बहुत ही अयोग्य, विलासी, सनकी, नीम पागल, असंयमी, अतिक्रोधी, विवेकहीन, डींग हाँकने वाला, अविचारी, अविश्वासी, कान का कच्चा और चरित्रहीन राजा है। वह उन सामंतों का प्रतीक है, जो अपने राज्य को मिट्टी में मिला देते हैं। उसके राज्य में प्रजा दुख भोगती है और दरबारी खुशामदी व त्ति अपना कर राज्य को दुर्बल और साधनहीन बनाते हैं। उसकी आँख के नीचे षड्यंत्र होते रहते हैं, और वह बेखबर रहता है।

### रामदयाल

रामदयाल राजा नायक सिंह का मुँह लगा और प्रिय पात्र नौकर है। वह अत्यंत स्वार्थी, झूठा, खुशामदी, आत्मसम्मान से शून्य, मक्कार, धर्मभाव से रहित, क्रूर, कायर और चरित्रहीन व्यक्ति है। राजा नायक सिंह की वासना पूर्ति के लिए वह युवतियों का अपहरण करता है, छोटी रानी के आदेश पर जनार्दन शर्मा का सिर काट कर लाने का वचन देता है, छोटी रानी की चिट्ठी लेकर अलीमर्दान के पास जाता है, एक-दूसरे के बारे में झूठी बातें गढ़ कर उनमें मनमुटाव पैदा करता है, दुख की मारी गोमती को अपने जाल में फँसाता है और छोटी रानी से मिल कर तरह-तरह के जाल रचता है। कुल मिला कर रामदयाल एक खल चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है।

## 32.9 परिवेश

'विराटा की पद्मिनी' में बुंदेलखंड का आंचलिक परिवेश पूरी सजीवता के साथ प्रस्तुत हुआ है। भौगोलिक द ष्टि से यह क्षेत्र यमुना, बेतवा, पहूज, सिंधु, चंबल, कुमारी आदि पर्वतीय नदियों, छोटी-छोटी पहाड़ियों, टीलों, घनघोर जंगलों, झीलों और भरकों से भरा हुआ है। इन नदियों, पहाड़ियों, जंगलों और भरकों के बीच बसे बुंदेलों और दाँगी सामंतों के गढ़ मानो प्रकृति की गोद में सुरक्षित शिशुओं की तरह हैं। 'विराटा की पद्मिनी' में बुंदेलखंड के प्राकृतिक सौंदर्य का अत्यंत यथार्थ और सजीव वर्णन मिलता है। इस सौंदर्य में कोमलता के साथ-साथ भयानकता का भी अद्भुत समावेश है।

*एक उदाहरण द्रष्टव्य है : ''पंचनद, जिसे पचनदा भी कहते हैं बुंदेलखंड का एक विशेष स्थान है। यमुना, चंबल, सिंधु, पहूज और कुमारी, ये पाँच नदियाँ उस जगह आकर मिली हैं। स्थान की विस्त त भयानकता उसकी विशाल सुंदरता से होड़ लगाती है। बालू, पानी और हरियाली का यह संगम वैभव, भय और सौंदर्य के विचित्र मिश्रण की रचना करता है।''*

*''विराटा का गढ़ बेतवा नदी के तट पर अवस्थित है, जो सघन वन के बीच दूर से दिखाई भी नहीं देता। वहाँ का दुर्गा मंदिर, जहाँ दुर्गा की अवतार मानी जाने वाली कुमुद रहती है, बेतवा नदी के मध्य एक टापू पर स्थित है। दलीप नगर, बड़नगर, रामनगर और*

टिप्पणी

*सिंहगढ़ भी बुंदेलखंड की प्राकृतिक सुषमा के बीच अवस्थित हैं।*

वर्मा जी ने बुंदेलखंड के प्राकृतिक परिवेश मात्र का अंकन करके संतोष नहीं कर लिया है। उन्होंने बुंदेलखंड की शौर्य-परंपरा, संस्कृति, धार्मिक विश्वास, रहन-सहन, रीति-रिवाज, लोक-गीत और कथा, आम आदमी की स्थिति तथा भाषा का विश्वसनीय और सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। बुंदेलखंड सदा से वीर भूमि के रूप में प्रसिद्ध रहा है। 'विराटा की पद्मिनी' में भी यहाँ के राजाओं की वीरता और बलिदान का चित्रण किया गया है। विराटा का दाँगी राजा सबदल सिंह अपने नायकों के साथ अलीमर्दान की सेना से लड़ते-लड़ते वीर गति को प्राप्त होता है। दलीप नगर का राजा देवी सिंह भी अलीमर्दान से वीरतापूर्वक युद्ध करता है और कभी झुकता नहीं। यहाँ तक कि दूल्हा वेश में विवाह के लिए जाता हुआ बुंदेला किसान भी अपने राजा को संकट में पड़ा देख कर उसकी रक्षा के लिए प्राणों की बाजी लगा देता है। स्त्रियाँ तक तलवार चलाना और घोड़े पर चढ़ना जानती हैं और अवसर आने पर युद्ध के मैदान में कूद पड़ती हैं।

धर्म के प्रति द ढ़ आस्था और देवी-देवता में विश्वास बुंदेलखंड की संस्कृति का प्रमुख अंग है, जो इस उपन्यास में कुमुद को दुर्गा का अवतार मानने के प्रसंग से प्रस्तुत किया गया है। यह विश्वास इतना द ढ़ है कि राजा से लेकर सामान्य जनता तक कुमुद को श्रद्धा की द ष्टि से देखते हैं तथा उससे प्रसाद और आशीर्वाद ग्रहण करते हैं। पर्व-त्यौहारों के अवसरों पर बुंदेलखंड के लोगों का उल्लास भी उनकी सांस्कृतिक विशेषता को प्रकट करता है।

वर्मा जी ने 'विराटा की पद्मिनी' में केवल सामंतों का ही चित्रण नहीं किया है, वरन् बुंदेलखंड के गाँवों में रहने वाले साधारण किसानों का भी अंकन किया है, जो जी-तोड़ परिश्रम करते हैं, सामंतों को लगान देते हैं। जहाँ तक लोक-कथा के उपयोग की बात है 'विराटा की पद्मिनी' का आधार ही लोक विश्वास और दुर्गा की अवतार मानी जाने वाली पद्मिनी के बलिदान की कथा है। उपन्यास के लगभग अंत में *'मलिनिया, फुलवा ल्याओ रे नंदन वन के'*, शीर्षक लोकगीत तो कुमुद के बलिदान को एक अद्भुत प्रभाव से भर देता है।

## 32.10 भाषा-शैली और संवाद योजना

वर्मा जी ने वैसे तो 'विराटा की पद्मिनी' में परिनिष्ठित हिंदी का ही प्रयोग किया है, पर उसके बीच बुंदेली के शब्दों का समावेश कर उसे सजीव बना दिया है। उपन्यास के किसान पात्र तो शुद्ध बुंदेली में ही बातचीत करते हैं। इसका बहुत सुंदर उदाहरण मुसावली के किसान और कुंजर सिंह के वार्तालाप में दिखाई पड़ता है।

बुंदेलखंड अंचल को उसकी समग्रता और सजीवता में प्रस्तुत करने के कारण 'विराटा की पद्मिनी' में आंचलिक उपन्यास की विशेषताएँ भी समाविष्ट हो गई हैं।

वर्मा जी ने 'विराटा की पद्मिनी' की रचना परिनिष्ठित हिंदी में की है। वर्मा जी ने ध्वनिमूलक, अर्थमूलक आदि शैलीय उपकरणों की सहायता से अपनी भाषा-शैली को व्यंजक और मधुर बनाने का भी सफल प्रयास किया है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, आदि साद श्य प्रधान अलंकारों तथा मौलिक उपमानों की सहायता से उन्होंने अपनी भाषा-शैली को नवीनता और व्यंजकता प्रदान की है। उदाहरण द्रष्टव्य है : *''झील में*

टिप्पणी

*लहरें उठ-उठ कर बैठ रही थीं और सूर्य की किरणों का एक अनंत भंडार-सा प्रतीत हो रहा था। जैसे स्वर्ण की खानें खुल पड़ी हों और चारों ओर से विशाल ढोंके और पर्वत अपनी निधि की रक्षा के लिए तुले खड़े हों।''*

अथवा

*''वह कन्या रूप राशि थी। उस पर देवत्व के आरोप होने में विलंब न हुआ। गाँव के मंदिर में दुर्गा की मूर्ति थी, शिल्प की कला उसे वह रूपरेखा नहीं दे पाई थी, जो इस बालिका में सहज ही भासित होती है।''*

वर्मा जी की भाषा-शैली की एक उल्लेखनीय विशेषता है, आंचलिक शब्दों का प्रयोग। परिनिष्ठित तत्सम-तद्भव शब्दों के बीच-बीच में उन्होंने बुंदेलखंडी शब्दों का ऐसा सुघड़ प्रयोग किया है जो भाषा में अद्भुत सहजता और सजीवता ला देते हैं। उदाहरण के लिए पाही, झाँगा, टीका, साँकल, गुहार, बोदापन, झाँझ, दह, टौरिया, भरका, घूमरी, जैसे शब्द और 'कच्चा गटक जाना' और 'राजा करे सो न्याय', 'फँसा पड़े सो दाँव' जैसे ठेठ मुहावरे और कहावतें भाषा की बोधगम्यता को कायम रखते हुए वर्मा जी की भाषा-शैली को ताजगी से भर देती हैं।

उपर्युक्त विवेचना से वर्मा जी की भाषा-शैली की शक्ति और सीमा दोनों उजागर होती हैं। वर्मा जी ने कही-कहीं असावधानी भी बरती है।

यद्यपि उपयुक्त शब्दों के चुनाव में असावधानी, वाक्यों की बनावट में अनावश्यक पद-बंधों के समावेश, वाक्यों में पद-बंधों के सही स्थान निर्धारण में भूल और संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि व्याकरणिक कोटियों तथा कारक चिह्नों की प्रयोग बहुलता के कारण वर्मा जी की भाषा यत्र-तत्र दुर्बोध भी हो गई है।

'विराटा की पद्मिनी' में पात्रों के संवाद भरे पड़े हैं। वस्तुतः जहाँ भी कथा प्रस्तुति की द श्यात्मक प्रविधि काम में लाई गई है, वहाँ पात्रों का वार्तालाप सहज रूप में आ गया है। उपन्यास का आरंभ ही एक द श्य योजना से होता है जिसमें दलीप नगर के अध-पागल राजा और उसके दरबारियों का वार्तालाप सामने आता है। यद्यपि इस वार्तालाप में सहजता और पैनापन अधिक नहीं है, पर इससे राजा के सनकीपन, दरबारियों की खुशामदी व त्ति, केवल मरने-मारने की भाषा बोलने वाले सेनानायक का अक्खड़पन और स्वामिभक्ति का भाव अच्छी तरह व्यक्त हो जाता है। पात्रों के मनोभावों को व्यक्त करने, कथा को आगे बढ़ाने और भावी घटनाओं के प्रति जिज्ञासा पैदा करने में उपन्यास के संवाद पर्याप्त सक्षम हैं। कुंजर सिंह और कुमुद के गूढ़ व्यंजना से भरे संवादों से उनका दिव्य प्रेम अपनी आध्यात्मिक ऊँचाई पर पहुँच जाता है। कुंजर सिंह और मुसावली के किसान बालक के बीच के संवाद की उल्लेखनीय विशेषता यह है कि कुंजर सिंह सरल परिनिष्ठित हिंदी बोलता है जबकि किसान बालक शुद्ध बुंदेलखंडी में बात करता है। इस वार्तालाप से किसान बालक की सरलता, भोले स्वभाव और अतिथि के प्रति उसके सहज प्रेम की प्रीतिकर झलक मिलती है।

उपन्यास में कुमुद और गोमती, कुंजर सिंह और अलीमर्दान, कुंजर सिंह और दलीप सिंह, देवी सिंह और छोटी रानी, राजा पतराखन और रामदयाल, कुंजर सिंह और नरपति सिंह आदि के दर्जनों संवाद हैं जो अपनी खूबियों और खामियों के साथ उपन्यास में विद्यमान हैं।

## 32.11 उपन्यास की प्रमुख विशेषताएँ

हमें विश्वास है कि अब आप स्वयं भी 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास की विशेषताएँ बता सकते हैं। चलिए, हम साथ-साथ इस काम को करें। 'विराटा की पद्मिनी' एक ऐतिहासिक उपन्यास है, यह तो आप जान ही चुके हैं। ऐतिहासिक उपन्यास के रूप में इसकी सफलता की चर्चा भी हम पहले कर चुके हैं। इसकी पहली विशेषता यह है कि इसमें इतिहास का उबाऊ वर्णन नहीं है। इसीलिए समकालीन इतिहास का वर्णन इसमें बहुत कम किया गया है। केवल ऐतिहासिक प ष्ठभूमि का निर्माण करने के लिए यत्र-तत्र ऐतिहासिक घटनाओं और विवरणों की सहायता ली गई है। दूसरी, उपन्यास के मुख्य कथा-संसार की रचना ऐतिहासिक किंवदंतियों, लोक-कथाओं और उपन्यासकार की कल्पनाशक्ति के द्वारा हुई है। अगली विशेषता है कि उपन्यास का मुख्य उद्देश्य बुंदेलखंड के चरित्र को प्रस्तुत करना है। बुंदेलखंड की वीरता, देशभक्ति, स्वाभिमान, सांस्कृतिक सम द्धि, प्राकृतिक सौंदर्य, आम किसानों की कष्टपूर्ण जिंदगी, सामंतों की विलासिता और राज्य प्राप्ति के लिए किए जाने वाले षड्यंत्र इसके मुख्य विषय हैं। पर साथ ही उपन्यासकार प्रेम की गहरी संवेदना का अंकन भी सहृदयता और गहन अनुभूति के साथ करता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने मार्मिक प्रसंगों की योजना को महाकाव्य का एक महत्त्वपूर्ण गुण बताया है। इस उपन्यास पर भी यह बात लागू होती है। मार्मिक प्रसंग उपन्यास के प्राण होते हैं। 'विराटा की पद्मिनी' इस द ष्टि से बहुत सफल उपन्यास तो नहीं कहा जा सकता, पर इसका अंतिम प्रसंग बहुत मार्मिक है। आपको स्मरण होगा ही, यह प्रसंग कुमुद के बलिदान का है। कुमुद को समाज ने दुर्गा का अवतार बना दिया है, पर वह है मानवी ही। दुर्गा की पुजारिन के रूप में अपना कर्त्तव्य निभाते हुए भी वह अपनी मानवीय भावनाओं को मार नहीं पाती। कुंजर सिंह से प्रथम साक्षात्कार के समय ही उसके प्रति उसका अनुराग पैदा हो जाता है। कुंजर सिंह भी उसके प्रति अनुरक्त है। पर दोनों ही, और विशेष रूप से कुमुद अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखती है और कहीं भी संयम का परित्याग नहीं करती, यद्यपि उनका प्रेम निरंतर द ढ़ होता जाता है। अंत में स्थिति यह उत्पन्न होती है कि विराटा का गढ़ एक साथ अलीमर्दान और देवी सिंह के आक्रमण का शिकार होता है। विराटा के वीर दाँगी तो जौहर करके वीर गति को प्राप्त होते हैं और कुमुद बलिदान का दूसरा मार्ग चुनती है। वह अपने प्रेमी कुंजर सिंह को जंगली फूलों की माला पहना कर शत्रु से जूझने के लिए भेज देती है और स्वयं बेतवा माता की गोद में शरण लेने का निश्चय करती है। अलीमर्दान उसे पकड़ना चाहता है, पर वह शीघ्रता से बेतवा नदी में छलाँग लगा देती है। दूर से *'मलिनिया फुलवा ल्याओ नंदन वन के' गीत की गूँजती हुई अंतिम कड़ी 'उड़ गए फुलवा, रह गई बास'* इस आत्मोत्सर्ग के प्रसंग को गहरी करुणा से भर देती है। इस बलिदान का प्रभाव क्रूर हृदयों पर भी पड़ता है। अलीमर्दान और देवी सिंह दोनों कुमुद के इस आत्मोत्सर्ग से विचलित होकर उसकी स्म ति में नतमस्तक होते हैं और परस्पर वैर भाव त्याग कर संधि कर लेते हैं।

'विराटा की पद्मिनी' का दूसरा मार्मिक प्रसंग है विराटा के राजा और उसके सेनानायकों तथा सैनिकों का जौहर व्रत। अलीमर्दान पद्मिनी को अपनी रानी बनाने

टिप्पणी

के लिए विराटा पर आक्रमण करता है, क्योंकि पद्मिनी विराटा के दुर्गामंदिर में वहाँ के राजा सबदल सिंह के संरक्षण में है। कुंजर सिंह विराटा के तोपखाने का संचालन कर रहा है। विराटा से दलीप सिंह को कोई शत्रुता नहीं है, पर सैनिक द ष्टि से उस पर कब्ज़ा करना देवी सिंह के लिए आवश्यक हो गया है। इस प्रकार विराटा अलीमर्दान और देवी सिंह दोनों की सेनाओं की चपेट में आ जाता है। उसका गढ़ ध्वस्त हो जाता है। राजा सबदल सिंह सब तरफ से निराश होकर गढ़ से बाहर निकल कर आमने-सामने युद्ध करने का निर्णय करता है। उसके सरदार भी इस निर्णय का समर्थन करते हैं। सबदल सिंह यह प्रस्ताव भी रखता है कि गढ़ में रहने वाली स्त्रियाँ और बच्चे जौहर करें अर्थात् सामूहिक चिता में जल कर अपने प्राण विसर्जन करें और सैनिक केसरिया बाना धारण कर शत्रु से लड़ते-लड़ते वीर गति को प्राप्त हों। कुंजर सिंह के सुझाव पर स्त्रियों और बच्चों के जौहर का निर्णय त्याग दिया जाता है, पर सैनिक युद्ध में म त्यु का वरण करने के लिए तैयार हो जाते हैं। विराटा में किसी के भी घर में केसरिया बाना तैयार करने के लिए केसर नहीं है। अंततः हल्दी से ही फटे-पुराने वस्त्र रंगे जाते हैं। थोड़ी-सी केशर से सबदल सिंह सैनिकों के माथे पर तिलक लगाता है। सभी तलवार की मूठों का स्पर्श कर म त्युपर्यंत युद्ध करने की शपथ लेते हैं। कथाकार के शब्दों में *''उनके चिथड़े पीले रंगे हुए थे। सिर से फटे हुए साफों के चिथड़े लहरा रहे थे, मानो विजय पताकाएँ हों।''* विराटा के ये वीर सैनिक गढ़ से बाहर निकल कर अलीमर्दान की सुसज्जित सेना के साथ युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त होते हैं। सबदल सिंह भी मारा जाता है। कोई भी दाँगी नहीं बचता। उपन्यासकार के शब्दों में, *''केसरिया बानों से ढकी हुई प थ्वी हल्दी से रंगी मालूम होती थी, मानो रणचंडी के लिए पाँवड़ा बिछाया गया हो।''*

इस प्रसंग की मार्मिकता भी निर्विवाद है। 'विराटा की पद्मिनी' में दर्जनों प्रसंग हैं, जैसे दलीप नगर के राजा का पालर झील में स्नान-उत्सव, पालर में नायक सिंह तथा अलीमर्दान की सैनिक टुकड़ियों में संघर्ष और दूल्हा वेश में देवी सिंह की सहायता से नायक सिंह की प्राण रक्षा, सिंहगढ़ का युद्ध, छोटी रानी का विद्रोह और अलीमर्दान को राखीबंद भाई बनाने का प्रकरण, रामनगर में छोटी रानी का शरण लेना आदि, पर ये प्रसंग अपेक्षित रूप से मार्मिक नहीं बन सके हैं।

किसी उपन्यास की श्रेष्ठता का निर्धारण पात्रों के कलात्मक चरित्र स जन से भी होता है। हम पहले ही 'विराटा की पद्मिनी' के प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डाल चुके हैं। 'विराटा की पद्मिनी के अधिकतर पात्र सपाट हैं क्योंकि उनमें कोई परिवर्तन या विकास नहीं दिखाई देता। वे शूरता, विलासिता, धार्मिकता, छल-प्रपंच, षड्यंत्र आदि के प्रतीक हैं। मनोवैज्ञानिक तनाव या मानसिक द्वंद्व का इनमें अभाव है। मानसिक द्वंद्व की झलक हमें केवल कुमुद और कुंजर सिंह के चरित्र में देखने को मिलती है। इसी कारण इनके चरित्र विकासमान और मार्मिक हो पाए हैं। कुमुद का चरित्र, प्रेम की गहरी संवेदना के कारण विशेष प्रभावशाली बन गया है।

'विराटा की पद्मिनी' का केंद्रीय पात्र एक नारी है। यद्यपि 'विराटा की पद्मिनी' में पुरुष पात्र ही अधिक संख्या में है। स्त्री पात्रों को उनकी संवेदना का जितना संस्पर्श मिला है, उतना पुरुष पात्रों को नहीं। कुमुद का चरित्र तो वर्मा जी की स जन क्षमता का नायाब फूल है ही, गोमती और छोटी रानी के चरित्र भी अपने भटकाव के बावजूद, अपनी

विशेषताओं से युक्त हैं।

जैसा हम पहले बता चुके हैं, 'विराटा की पद्मिनी' परिवेश-निर्माण, भाषा-शैली और संवाद-योजना की द ष्टि से भी पर्याप्त संतोषजनक उपन्यास है। जहाँ तक शिल्प का प्रश्न है वर्मा जी ने कथा-वर्णन और द श्य-निर्माण की प्रविधियों द्वारा ही अपने कथा-संसार की रचना की है। उपन्यास में कई कथाएँ साथ-साथ चलती हैं और कहीं-कहीं आपस में उलझ कर पाठक के लिए बोध की समस्या भी पैदा करती हैं। इसे आपने भी अनुभव किया होगा। पर यदि तनिक सावधानी के साथ उपन्यास पढ़ा जाए तो कथा का उलझाव दूर हो जाता है।

## 32.12 आपने क्या सीखा

उपन्यास और उसकी पाठ सामग्री पढ़ने के बाद आप जान गए हैं कि –

- 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास में इतिहास, कल्पना और लोकतत्त्व का अद्भुत समन्वय है।
- कथानक में एक ओर साधारण प ष्ठभूमि के पात्रों के अद्भुत शौर्य, देश-प्रेम, लगन और बलिदान जैसे गुणों का चित्रण है, वहीं सामंती परिवेश में होने वाले षड्यंत्रों, स्वार्थसिद्धि, छल, भोग-विलास, अत्याचार आदि को भी चित्रित किया गया है।
- 'विराटा की पद्मिनी' उदात्त प्रेम की कथा है, जिसका अंत आत्मोसर्ग में होता है।
- उपन्यास के पात्र मुख्यतः दो प्रकार के हैं– एक वे जो राज परिवारों से जुड़े हैं और दुर्गुणों के प्रतीक हैं। दूसरे वे जिनमें बुंदेलखंड की मिट्टी की महक है। वे सरलता, वीरता, त्याग, देशभक्ति और प्रेम के प्रतीक हैं।
- 'विराटा की पद्मिनी' में बुंदेलखंड की प्रकृति, लोक-जीवन, लोक-गीत, लोक-भाषा का समर्थ चित्रांकन हुआ है। इनसे उपन्यास की रोचकता बढ़ गई है।
- उपन्यास की भाषा परिनिष्ठित हिंदी है, उसमें लोक-भाषा का भी प्रयोग है। भाषा में कहीं-कहीं शिथिलता भी पाई जाती है और कहीं-कहीं भाषा जटिल और दुर्बोध हो गई है। उदाहरण के लिए *'एल्लो हमरे से टिटकरी करन आए। दर्शन खों नहीं आए नई आए, इतै को काम के लावें आए इत्ती दूर से?'*
- विराटा की पद्मिनी के संवाद बड़े सरस और रोचक हैं। उनमें पात्रानुकूलता और परिस्थिति की माँग झलकती है। दरबारियों के संवादों में चाटुकारिता, छल, कपट और मरने-मारने की शब्दावली है। कुंजर सिंह और कुमुद के संवादों से उनका दिव्यप्रेम झलकता है। पात्र अपने सामाजिक स्तर के अनुकूल भाषा का प्रयोग करते हैं।
- उपन्यास में कुछ विशेष मार्मिक स्थल हैं। कुमुद की नारी भावनाएँ सहज विकसित होकर उदात्त स्थिति तक पहुँचती हैं और अंततः आत्मोसर्ग से परिचित होती हैं। अलीमर्दान पद्मिनी को अपनी रानी बनाने के लिए आक्रमण करता है। सबदल सिंह के सुझाव पर सभी जौहर व्रत का निर्णय लेते हैं और वीरगति को प्राप्त होते हैं।

टिप्पणी

## 32.13 योग्यता विस्तार

### (क) लेखक परिचय

वृंदावन लाल वर्मा हिंदी के प्रथम ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं। उनका जन्म 1889 ई. में उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले में मऊरानीपुर गाँव में हुआ था। यों तो उनका लेखन कार्य लगभग 1904 ई. में ही आरंभ हो गया था, पर नियमित रूप से लिखना 1927 ई. में **'गढ़कुंडार'** नामक ऐतिहासिक उपन्यास से शुरू हुआ। **'विराटा की पद्मिनी'** की रचना 1933 ई. में और प्रथम प्रकाशन 1936 ई. में हुआ। इसके बाद वर्माजी के चौदह ऐतिहासिक उपन्यास प्रकाशित हुए जिनमें **'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई', 'कचनार', 'म गनयनी', 'टूटे काँटे', 'माधवजी सिंधिया', 'भुवन विक्रम'** आदि विशेष महत्त्व के हैं। ऐतिहासिक उपन्यासों के अतिरिक्त वर्मा जी ने सामाजिक उपन्यास, कहानियाँ, नाटक और अन्य प्रकार की पुस्तकें भी लिखीं पर उनकी ख्याति ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में ही है। वर्मा जी का निधन 1969 ई. में हुआ।

वर्मा जी का जीवन बहुत संघर्षपूर्ण रहा। जीविकोपार्जन के लिए प्रारंभ में उन्हें तरह-तरह के पापड़ बेलने पड़े और अनेक मुश्किलों के बीच उनका अध्ययन संपन्न हुआ। उनकी रुचियाँ भी बेहद रोचक थीं। मसलन वे पहलवानी के शौकीन थे, नियमित रूप से अखाड़े में जाते थे और रोज सैकड़ों दंड बैठक लगाया करते थे। खाने के भी बड़े शौकीन थे। पाँच किलो दूध और **आधा किलो** जलेबी खा जाना उनके लिए कोई बड़ी बात न थी। अब आप अनुमान कर सकते हैं उनके स्वास्थ्य के बारे में। जो आदमी सत्तर बाद की उम्र तक दंड पेलता रहे, बैठकें लगाता रहे और मुग्दर भाँजता रहे, वह स्वस्थ तो रहेगा ही।

वर्मा जी का दूसरा बड़ा शौक था शिकार और साथ-साथ घुमक्कड़ी की धुन। उन्होंने बुंदेलखंड की पहाड़ियों, नदियों, नालों और जंगलों का चप्पा-चप्पा छान मारा था। इसका प्रभाव उनके उपन्यासों पर साफ़-साफ़ दिखाई देता है।

वर्मा जी को बुंदेलखंड की धरती से गहरा लगाव था। बुंदेली भाषा, बुंदेली लोक-गीत, लोक-कथाएँ, स्थानीय मेले और उत्सव सबमें उनकी गहरी रुचि थी। इसकी अभिव्यक्ति उनके ऐतिहासिक उपन्यासों में सफलतापूर्वक हुई।

इतिहास के अध्ययन में भी वर्माजी की गहरी रुचि थी। पुरातत्त्व विषय की पुस्तकें, पुराने सरकारी अभिलेख, गजट आदि का अध्ययन वे बड़ी लगन के साथ करते थे और उसका उपयोग अपने उपन्यासों में करते थे और इसके साथ ही बुंदेलखंड की किंवदंतियों, लोक-कथाओं और लोक-गीतों का संग्रह भी उनकी रुचि का विषय था।

वर्मा जी को देशभक्ति का भाव विरासत में प्राप्त हुआ था। उनके पितामह आनंद राव ने 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में हिस्सा लिया था और शहीद हुए थे। अपनी माँ से अपने पूर्वजों की वीरता की गाथा सुन कर ही उनके मन में 'झाँसी की रानी' पर उपन्यास लिखने की प्रेरणा पैदा हुई थी। वर्मा जी का यह देश अथवा जाति-प्रेम उनके सभी उपन्यासों में दिखाई पड़ता है। बुंदेलखंड की अदम्य वीरता, सम द्ध संस्कृति और प्राकृतिक सुषमा का इतने मनोयोग के साथ उनकी रचनाओं में मिलना, उनके देश-प्रेम का ही परिचायक है।

टिप्पणी

## (ख) हिन्दी उपन्यास का विकास

हिंदी उपन्यास का जन्म उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण में हुआ। यों तो हिंदी की पहली मौलिक, कल्पनाप्रधान गद्यकथा इंशा अल्ला खाँ द्वारा रचित 'रानी केतकी की कहानी' (1803) है, पर यथार्थ से कटी और अलौकिक तत्त्वों से भरी होने के कारण उसे उपन्यास नहीं माना जा सकता। इसके बाद की दूसरी गद्यकथा पं. गौरीदत्त कृत 'देवरानी जेठानी की कहानी' (1870) है, जो तत्कालीन जीवन के यथार्थ से जुड़ी होने के कारण हिंदी का प्रथम उपन्यास है। पर इसकी कथावस्तु इकहरी और वर्णनात्मक है, इसलिए कुछ विद्वान इसे उपन्यास नहीं मानते। लाला श्री निवास दास कृत 'परीक्षा गुरु' (1882) कथावस्तु और शिल्प दोनों ही द ष्टियों से उपन्यास की शर्तें पूरी करता है, इसलिए अनेक आलोचक इसे ही हिंदी का पहला उपन्यास मानते हैं। 'परीक्षा गुरु' से यथार्थपरक उपन्यासों की एक परंपरा आरंभ हुई, जिसके लेखकों में बालकृष्ण भट्ट, भुवनेश्वर मिश्र, लज्जाराम शर्मा, ब्रजनंदन सहाय आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके उपन्यासों में यथार्थ चित्रण के साथ-साथ उपदेश देने की प्रव त्ति भी मिलती है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में घटना प्रधान उपन्यासों की परंपरा आरंभ हुई जिसके प्रमुख लेखक देवकी नंदन खत्री, गोपाल राम गहमरी और किशोरी लाल गोस्वामी हैं। खत्री जी ने तिलस्म ऐयाशी प्रधान उपन्यास, गहमरी जी ने जासूसी उपन्यास और गोस्वामी जी ने घटना प्रधान उपन्यासों के साथ-साथ ऐतिहासिक रोमांस भी लिखे। इन उपन्यासों की सबसे बड़ी उपलब्धि यह मानी जाती है कि इन्होंने हिंदी कथा-पाठकों की संख्या में बहुत व द्धि की। हिंदी उपन्यास के विकास के लिए पाठक वर्ग का विकास भी जरूरी था। यह कार्य इन घटना प्रधान उपन्यासों के द्वारा संभव हुआ।

सन् 1918 ई. तक हिंदी उपन्यास में घटना प्रधान और यथार्थपरक (किंतु उपदेशात्मक) उपन्यासों की प्रधानता रही। इसमें बदलाव प्रेमचंद के 'सेवासदन' नामक उपन्यास से हुआ। प्रेमचंद ने हिंदी में ऐसे यथार्थवादी उपन्यासों की परंपरा की नींव डाली, जिनमें घटनाएँ और उपदेश तत्त्व कम-से-कम होते हैं। 1918-36 ई. की अवधि में प्रेमचंद ने 'सेवा सदन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'गोदान' आदि उपन्यास लिखे, जिनमें उत्तर भारत के किसानों की और मध्य वर्ग की जिंदगी साकार हो उठी है। प्रेमचंद के समकालीन उपन्यासकारों में सुदर्शन, विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक, जयशंकर प्रसाद, बेचैन शर्मा 'उग्र', जैनेंद्र कुमार, भगवतीचरण वर्मा, व ंदावन लाल वर्मा आदि उल्लेखनीय हैं।

प्रेमचंद के बाद हिंदी उपन्यास का बहुमुखी विकास हुआ है। विषय की द ष्टि से इसे ग्राम जीवन, नगरीय मध्य वर्ग और राजनीतिक जीवन पर आधारित, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, आंचलिक, जीवनीपरक आदि प्रकारों में विभाजित कर सकते हैं। इस काल के ग्रामीण जीवन का चित्रण करने वाले प्रमुख उपन्यासकार नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, राही मासूम रज़ा, रामदरश मिश्र, शिवप्रसाद सिंह, श्रीलाल शुक्ल, विवेकी राय, मैत्रेयी पुष्पा आदि हैं। नगरीय मध्य वर्ग पर आधारित उपन्यास लिखने वालों में अम तलाल नागर, कमलाकांत त्रिपाठी आदि हैं। व ंदावन लाल वर्मा, हजारीप्रसाद द्विवेदी, शिवप्रसाद सिंह आदि इस काल के प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं।

ऐतिहासिक जीवनीपरक उपन्यास लिखने वालों में हजारीप्रसाद द्विवेदी और अम तलाल नागर अग्रगण्य हैं। हाल ही में भारत के निकट अतीत को आधार बनाकर कुछ उपन्यास लिखे गए हैं इनमें अमरकांत का 'इन्हीं हथियारों से', भारत छोड़ो आंदोलन पर आधारित उपन्यास है। भारत-विभाजन की त्रासदी को लेकर यशपाल का 'झूठा-सच' और भीष्म साहनी का 'तमस' उपन्यास की रचना उल्लेखनीय हैं। पुरानी काव्यकृतियों, रामायण और महाभारत, पर आधारित उपन्यास लिखने में नरेंद्र कोहली को भी अच्छी सफलता मिली है।

प्रेमचंदोत्तर काल में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के रचयिता जैनेंद्र कुमार, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आंचलिक उपन्यासकारों के रूप में फणीश्वरनाथ रेणु, उदय शंकर भट्ट, रांगेय राघव, शानी, रामदरश मिश्र आदि के नाम अग्रगण्य हैं। नारी मन की भावनाओं का चित्रण यों तो हिंदी के अधिकांश उपन्यासों में मिलता है पर विगत तीन दशकों में अनेक महिला उपन्यासकारों ने नारी का चित्रण अधिक धारदार ढंग से किया है। इन उपन्यासकारों में कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, अलका सरावगी, शशिप्रभा शास्त्री, राजी सेठ, प्रभा खेतान, नासिरा शर्मा आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

## 32.14 पाठांत प्रश्न

1. 'विराटा की पद्‌मिनी' की कथा संक्षेप में देते हुए उसके किसी एक मार्मिक प्रसंग का उल्लेख कीजिए।
2. 'विराटा की पद्‌मिनी' उपन्यास में इतिहास और लोक तत्त्व का समन्वय है, इस कथन का विवेचन कीजिए।
3. 'विराटा की पद्‌मिनी' का केंद्रीय पात्र कौन है ? उसकी चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
4. 'विराटा की पद्‌मिनी' के आधार पर कुंजर सिंह के चरित्र का संक्षेप में परिचय दीजिए।
5. 'विराटा की पद्‌मिनी' का कौन-सा वीर पात्र आपको सबसे अधिक प्रभावित करता है ? और क्यों ?
6. कालपी के नवाब अलीमर्दान की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता क्या है ?
7. 'विराटा की पद्‌मिनी' में वर्णित प्रकृति सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए।
8. बुंदेलखंडी लोक-गीत और लोक-भाषा के प्रयोग से उपन्यास में क्या विशेषता आ गई है ?
9. ''विराटा की पद्‌मिनी में ऐतिहासिक हलचल के भीतर एक प्रेमकथा अपनी पूरी मार्मिकता के साथ विद्‌यमान है।'' इस कथन का स्पष्टीकरण कीजिए।
10. ''विराटा की पद्‌मिनी' में राजमहलों में होने वाले षड्‌यंत्रों की एक झलक देखने को मिलती है।'' इस कथन की सोदाहरण पुष्टि कीजिए।
11. 'विराटा की पद्‌मिनी' की संवाद-योजना पर सोदाहरण टिप्पणी कीजिए।
12. 'विराटा की पद्‌मिनी' की भाषा-शैली पर टिप्पणी कीजिए।

13. 'विराटा की पद्मिनी' में बुंदेलखंड अंचल अपनी सजीवता में विद्यमान है। कथन की पुष्टि कीजिए।

## 32.15 उत्तरमाला

### पाठगत प्रश्नों के उत्तर

**37.1** 1. (ख) 2. (क) 3. (घ) 4. (ग)

5. पालर झील में नहाने के लिए पर्याप्त पानी था।
6. वह जन्म से ही अत्यंत सुंदर और तेजवान थी। जब वह गर्भ में थी, उसकी माँ विचित्र स्वप्न देखा करती थी, लड़की के जन्म लेने पर उसके पिता को ऐसा जान पड़ा जैसे प्रकाशपुंज ने घर में जन्म लिया हो।
7. कुंजर सिंह और लोचन सिंह दुर्गा के दर्शन के लिए गए थे। उसी समय दो मुसलमान सैनिक भी दर्शन के लिए पहुँचे। पर उनमें दुर्गा और उसकी पुजारिन के प्रति अपेक्षित श्रद्धाभाव न था। इस कारण दोनों दलों में विवाद हो गया, जो बढ़ते-बढ़ते मारकाट में परिणत हो गया ?
8. नायक सिंह ने रामदयाल को आदेश दिया कि वह दाँगी कन्या कुमुद को तत्काल उसके महल में पहुँचा दे।
9. नायक सिंह कुमुद को अपने महल में लाना चाहता था। कुंजर सिंह ने उसका समर्थन नहीं किया और कुमुद की रक्षा के लए पहरा देता रहा।
10. उस समय देवी सिंह दूल्हे के वेश में विवाह करने जा रहा था।

**37.2** 1. (ख) 2. (क) 3.(ग) 4. (घ)

5. देवी सिंह के राजा बनने के बाद जनार्दन शर्मा प्रधान मंत्री के पद पर नियुक्त हुआ।
6. छोटी रानी ने रामदयाल को प्रथम आदेश यह दिया कि वह जनार्दन शर्मा का सिर काट कर ले आए।
7. अलीमर्दान की सहायता प्राप्त करने के लिए छोटी रानी ने उसके पास राखी भेजी और उसे राखीबंद भाई बनाया।
8. देवी सिंह के राजा बन जाने पर कुंजर सिंह ने विद्रोह कर दिया और सिंहगढ़ पर अधिकार कर सैन्य संगठन करने लगा।
9. गोमती ने दुर्गा से वरदान माँगा कि कुंजर सिंह का नाश हो, अलीमर्दान मर्दित हो और दलीप नगर के राजा को विजय प्राप्त हो।
10. अलीमर्दान ने रामदयाल से यह पता लगाने को कहा कि दुर्गा के अवतार के रूप में प्रसिद्ध कुमुद पालर के दुर्गामंदिर से निकल कर कहाँ गई।

**37.3** 1. (क) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ग)

5. सिंहगढ़ की लड़ाई में हारने के बाद कुंजर सिंह मुसावली में एक अहीर के घर पहुँचा और कुछ दिन उसका अतिथि बन कर रहा।
6. छोटी रानी ने अपनी मीठी और चिकनी-चुपड़ी बातों से बड़ी रानी को अपने पक्ष में कर लिया। उसने बड़ी रानी को यह विश्वास भी दिलाया

टिप्पणी

कि उनके महल से बाहर निकलते ही देवी सिंह से असंतुष्ट सरदार उनकी सहायता के लिए पहुँच जाएँगे।

7. रामनगर के गढ़ में राव पतराखन के पास पहुँची और उसका आश्रय ग्रहण किया।
8. विराटा के दुर्गामंदिर में।
9. नरपति सिंह कुंजर सिंह को विराटा के राजा सबदल सिंह के पास ले गई। उसके अनुरोध पर सबदल सिंह ने कुंजर सिंह को आश्रय और सहायता देने का वचन दिया।
10. उसने हकीम आगा खाँ को दिल्ली भेजा ताकि वह कालपी के नवाब के नाम सैयद बंधुओं की चिट्ठी लाए जिसमें अलीमर्दान को सेना के साथ दिल्ली आने का बुलावा हो।

**32.4** 1. (ग) 2. (क) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग)

6. अलीमर्दान कुमुद के लोभ से ही उनका साथ देगा। उसने आशा व्यक्त की कि विराटा पर अलीमर्दान का कब्जा होने के पहले ही कुमुद कुंजर सिंह के साथ किसी सुरक्षित स्थान में चली जाएगी और इस प्रकार वह अलीमर्दान से बच जाएगी।
7. दाँगी कन्या कुमुद विराटा के दुर्गा मंदिर में है, और कुछ ठीक नहीं कि वह कब कुंजर सिंह के साथ भाग जाए।
8. वह मंदिर में रहे और वहीं से अलीमर्दान की सेना पर तोप दागने का काम करे।
9. कुंजर सिंह मंदिर की रक्षा के लिए कड़ा पहरा बिठा देता है। वह मंदिर की दीवार के पास, एक टोर की आड़ में, कंधे से बंदूक लगाए मुस्तैदी से अपने स्थान पर डटा रहता है।
10. देवी सिंह छद्म वेश में, कफन सिंह बुंदेला नाम बताकर लोचन सिंह की सहायता के लिए पहुँचा। उसने लोचन सिंह के समक्ष दुर्ग के फाटक पर ज़ोर का आक्रमण करने का प्रस्ताव रखा। लोचन सिंह के आदेश पर वह अकेले फाटक पर पहुँच कर ज़ोर से चिल्लाया और फाटक खोलने को कहा। प्रहरी घबरा गए और लोचन सिंह तथा उसके साथी कमंद की सीढ़ी लगा कर गढ़ में प्रवेश कर गए। इस प्रकार रामनगर गढ़ पर देवी सिंह की सेना की विजय हुई।
11. देवी सिंह ने कहा कि लड़ाई हो रही है। तोपें गोले उगल रही हैं। मार–काट मची हुई है। जब शांति हो जाए तब इस प्रश्न पर विचार हो सकता है।

## बोध प्रश्नों के उत्तर

1. नायक सिंह ने देवी सिंह को ऐसा पुरस्कार देने का वचन दिया, जैसा उसने कभी न पाया होगा।
2. वह उन्हें कोई ऐसी दवा दे, जिससे उनकी जीवन लीला समाप्त हो जाए।
3. विराटा में बेतवा नदी में स्थित टापू पर स्थित दुर्गामंदिर में।
4. देवी सिंह को।

टिप्पणी

5. कुंजर सिंह नहीं चाहता था कि दलीप नगर के ग ह-कलह में कोई बाहरी शक्ति हस्तक्षेप करे और उसके बदले में राज्य के किसी हिस्से पर अधिकार कर ले।
6. लोचन सिंह देवी सिंह से बिना पूछे सिंहगढ़ छोड़ कर दलीप नगर का विद्रोह दबाने चला गया था, जिसके लिए देवी सिंह ने उसे फटकारा था। जनार्दन से यह सूचना पाकर लोचन सिंह नाराज़ हो गया और अपने घर चला गया।
7. जनार्दन ने लोचन सिंह के घर जाकर अपनी विनम्रता और चतुराई से मना लिया।
8. सिंहगढ़ पर विजय प्राप्त करने के बाद लोचन सिंह ने छोटी रानी को कैद कर लिया। पर देवी सिंह ने उसे राजमाता समझ कर क्षमा कर दिया और उसे बड़ी रानी के महल में रखने की व्यवस्था कर दी।
9. अलीमर्दान की प्रतिक्रिया थी कि वह मंदिर की पुजारिन के साथ कोई ज़्यादती नहीं करना चाहता। उसने हिंदुओं का जी दुखाने वाला कोई काम करने के प्रति अनिच्छा व्यक्त की।
10. काले खाँ ने सबदल सिंह से कहा कि अलीमर्दान दुर्गामंदिर की पुजारिन लड़की को अपनी रानी बनाना चाहता है, अतः वह इसका विरोध न करे।
11. नरपति सिंह विराटा के राजा सबदल सिंह का पत्र लेकर दलीप नगर इसलिए जाता है कि विराटा तथा दुर्गा की पुजारिन कुमुद की अलीमर्दान से रक्षा करने में दलीप नगर की सहायता प्राप्त हो।
12. विराटा लौट कर कुंजर सिंह ने कुमुद से कहा कि कालपी का नवाब अलीमर्दान उसका शत्रु है, पर देवी सिंह ने भी अन्याय से उसकी राजगद्दी हड़प ली है, अतः वह दोनों का प्रतिकार करेगा।
13. कुंजर सिंह ने सबदल सिंह को बताया कि देवी सिंह नहीं, बल्कि मुसलमान सैनिक हिंदुस्तानी वेश में किले में घुस आए थे। उसने यह भी कहा कि रामनगर देवी सिंह के कब्जे में नहीं आया है। ये दोनों बातें झूठ थीं।
14. कुंजर सिंह कुमुद को विराटा के दुर्गामंदिर से हटा कर किसी अन्य सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने का प्रस्ताव रखता है पर कुमुद इसे स्वीकार नहीं करती, क्योंकि उसे कुंजर सिंह की शक्ति पर विश्वास है।
15. कुंजर सिंह पहले कुमुद से अंतिम विदा माँगता है। वह कहता कि आज की संध्या देखने का अवसर मुझे न मिलेगा। चार छह घंटे में यह गढ़ ध्वस्त हो जाएगा और रामनगर की सेनाएँ प्रवेश करेंगी।
16. एक तो अलीमर्दान कुमुद को पाने के लिए स्वयं ही शीघ्र युद्ध समाप्त करना चाहता था, दूसरे दिल्ली से उसके पास फरमान आ गया था कि वह अपनी सेना के साथ शीघ्र दिल्ली आए। यदि वह शीघ्रतापूर्वक विजय नहीं प्राप्त करता तो उसे देवी सिंह से सुलह करनी पड़ती।
17. विराटा के पतन की संभावना देख कर सबदल सिंह ने जौहर करने का निश्चय किया। उसने प्रस्ताव रखा कि स्त्रियाँ और बच्चे चिता में जल कर प्राण विसर्जन कर दें और योद्धा गढ़ी से निकल कर शत्रुओं से लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हों।
18. कुमुद बेतवा नदी की ढालू चट्टान के छोर पर पहुँच गई, उसने 'मलिनिया फुलवा ल्याओ नंदन वन के' गीत गाया और बेतवा नदी में छलाँग लगा ली।